



MAED-506 (Semester-I)

शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

Psychological Bases of Education



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

अध्ययन बोर्ड			
प्रोफेसर जे०के० जोशी निदेशक शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी उत्तराखण्ड ,	प्रोफेसर के०बी०बुधोरी (सदस्य) शिक्षा संकाय एच०एन०बी०विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड	प्रोफेसर बी०आर० कुक्रेती (सदस्य) शिक्षा संकाय एम० जे० पी० रोहिलखंड , उत्तरप्रदेश ,विश्वविद्यालय बरेली	प्रोफेसर रम्भा जोशी शिक्षा संकाय कुमाऊँ विश्वविद्यालय अल्मोड़ा ,
डॉ दिनेश कुमार सहायक प्राध्यापक उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	डॉ प्रवीण कुमार तिवारी सहायक प्राध्यापक उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	डॉ ममता कुमारी सहायक प्राध्यापक उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	डॉ कल्पना पाटनी लखेड़ा सहायक प्राध्यापक उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड
डॉ मनीषा पंत परमर्शदाता उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय	डॉ सिद्धार्थ पोखरियाल संविदा शिक्षक उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय		
पाठ्यक्रम संयोजक एवं संपादक		इकाई संयोजक एवं संपादक	
डॉ दिनेश कुमार सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड		डॉ ममता कुमारी सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	
इकाई लेखन	इकाई संख्या	इकाई लेखन	इकाई संख्या
प्रोफेसर जे०के० जोशी , निदेशक , शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी, उत्तराखण्ड	3	डॉ ममता कुमारी सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय	8
डॉ० रजनी रंजन सिंह सहायक प्राचार्य शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी,	4	डॉ० बिजेन्द्र कुमार सहायक प्राचार्य शिक्षा संकाय डी० एन० पी० जी० कॉलेज ,मेरठ	1,2,9,10.
डॉ० शिरीष पाल सिंह सहायक प्राचार्य शिक्षा संकाय श्री गुरु राम राय, पी० जी० कॉलेज, देहरादून	5,6,7		

ISBN-13-978-93-84632-45-8

समस्त लेखों पाठों से/सम्बंधित किसी भी विवाद के लिए संबंधित लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का जूरिसडिक्शन हल्द्वानी होगा (नैनीताल)।

कापीराइट: उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय प्रकाशन वर्ष: 2014 पुनः प्रकाशन 2020

संस्करण: सीमित वितरण हेतु पूर्व प्रकाशन प्रति

प्रकाशक: एम०पी०डी०डी०, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी-263139, (नैनीताल)

शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार
Psychological Bases of Education
MAED - 506

द्वितीय सेमेस्टर		
01	बुद्धि :- परिभाषा, 1904 से बुद्धि के सम्बन्ध में अध्ययन के प्रयास एवं बुद्धि मापन Intelligence: definitions, efforts made since 1904 to understand and measure intelligence.	1-25
02	बुद्धि के सिद्धान्त Theories of Intelligence	26-38
03	भावात्मक बुद्धि:- अर्थ, आयाम तथा महत्व Emotional Intelligence: - Meaning, Dimensions and Significance	39-56
04	बुद्धि परीक्षण Intelligence Tests	57-99
05	व्यक्तित्व: अर्थ तथा विकास, व्यक्तित्व के सिद्धान्त Personality: Concept and development, Theories of Personality	100-120
06	व्यक्तित्व विकास में प्रभावी कारक	76-94
07	व्यक्तित्व मापन की विधियाँ Assessment of Personality: Techniques	121-140
08	सृजनात्मकता Creativity	141-154
09	अभिप्रेरणा: परिभाषाएं तथा सिद्धान्त, अधिगम पर प्रभाव, अधिगमकर्ता को अभिप्रेरित करने में शिक्षक की भूमिका Motivation –Definitions and Theories, Impact on Learning. Role of Teacher in Motivating the Learners	155-175
10	समायोजन:- अर्थ एवं प्रक्रिया, समायोजित तथा कुसमायोजित व्यक्तियों के लक्षण, समायोजन के निर्धारक, समायोजन की विधियाँ , अध्यापकों तथा परिवार के दायित्व Adjustment- meaning and process, characteristics of an adjusted and maladjusted person. Determinants of Adjustment, Techniques of Adjustment, Role of teachers and family.	176-190

इकाई 01- बुद्धि :- परिभाषा, 1904 से बुद्धि के सम्बन्ध में
अध्ययन के प्रयास एवं बुद्धि मापन

**Intelligence: Definitions, Efforts
made since 1904 to Understand and
Measure Intelligence**

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 बुद्धि की परिभाषाएँ
- 1.4 बुद्धि के प्रकार
- 1.5 बुद्धि का मापन
 - 1.5.1 बुद्धि मापन की आवश्यकता
 - 1.5.2 बुद्धि मापन का इतिहास
- 1.6 मानसिक आयु तथा बुद्धिलब्धि
- 1.7 बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण
- 1.8 बौद्धिक विकास तथा ह्रास
- 1.9 बुद्धि परीक्षणों के प्रकार
 - 1.9.1 सामूहिक बुद्धि परीक्षण
 - 1.9.2 वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण
 - 1.9.3 शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
 - 1.9.4 अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- 1.10 बुद्धि परीक्षणों का प्रतिवेदन
- 1.11 कुछ प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम
- 1.12 बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता
- 1.13 सारांश
- 1.14 शब्दावली
- 1.15 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 1.16 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.17 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

बुद्धि क्या है? यह ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर देना बुद्धिमानों के लिए एक समस्या रही है, वर्तमान में भी है तथा भविष्य में भी रहने की सम्भावना है। इस शब्द पर मनोवैज्ञानिकों में मतभेद रहा है। इस मतभेद को दूर करने के लिए अंग्रेज मनोवैज्ञानिकों की एक सभा 1910 में हुई। अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों की सभा 1921 में हुई, विश्व के मनोवैज्ञानिकों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस सभा 1923 में हुई। परन्तु वे यह नहीं स्पष्ट कर सके कि बुद्धि में स्मृति, कल्पना, भाषा, अवधान, गामक तथा संवेदनशीलता सम्मिलित है या नहीं। अलग-अलग मनोवैज्ञानिक बुद्धि को अपने अलग अलग अंदाज में परिभाषित करते रहे हैं।

गीता में व्यवसायात्मक बुद्धि का उल्लेख अध्याय 2 के 41 वें श्लोक में किया गया है। व्यवसायात्मक बुद्धि से अभिप्राय उस बुद्धि से है, जो व्यक्ति को निरन्तर प्रयास करने की प्रेरणा देती है। व्यवसाय का अर्थ है- प्रयत्न, उद्योग, निरन्तर यत्न, उत्साह कर्मण्यता, पुनःपुनः अथक प्रयास करने का स्वभाव, निश्चय, व्यापार-व्यवहार, आचार, सदाचार, युक्ति उपाय-योजना, कर्मकुशलता चातुर्य आदि (पुरुषार्थ बोधिनी श्रीमद् भगवद्गीता पं० सातवलेकर)

गीता में ही योग बुद्धि का उल्लेख अध्याय 2 श्लोक 39 में आया है। योग बुद्धि वह बुद्धि है, जो निष्काम कर्म के लिए प्रेरित करे।

न्याय मत में बुद्धि वह शक्ति है, जिसके द्वारा चिरन्तन का चिंतन किया गया है। बुद्धिप्रत्ययों की रचना और विकास में सहायक होती है। बुद्धि मन की वह शक्ति है, जिसके द्वारा मन सफलता और अनिश्चय करता है। न्याय मत में बुद्धि, उपलब्धि तथा ज्ञान पर्याय माने गए हैं।

भारतीय विद्वानों ने “बुद्धिर्यस्य बलं तस्य” कहा है।

गीता में बुद्धि के प्रकारों का वर्णन करते हुए उसे तीन प्रकार का बताया गया है।

राजसिक, तामसिक तथा सात्विक बुद्धि। सात्विक बुद्धि वह है, जो (अध्याय 18 श्लोक 30) कर्तव्य-अकर्तव्य, भय-अभय, प्रवृत्ति और निवृत्ति, बंध और मोक्ष का भान कराए। राजसिक बुद्धि वह है, जिस बुद्धि द्वारा मनुष्य धर्म और अधर्म, कर्तव्य और अकर्तव्य को नहीं जानता, वह राजसिक बुद्धि है (अध्याय 18 श्लोक 31) अठारहवें अध्याय के 32 वें श्लोक में तामसिक बुद्धि को वह बुद्धि बताया है, जो व्यक्ति अधर्म को धर्म तथा धर्म को अधर्म मानने लगता है, वह तामसिक बुद्धि वाला होता है।

भारतीय साहित्य में बुद्धि के धी, प्रज्ञा, मति, मेधा पर्यायवाची हैं।

भारतीय साहित्य में बुद्धि के वर्णन पर अनुसंधान करने की आवश्यकता पर यहाँ हमने सरसरी दृष्टि से ही अवलोकन किए हैं। यह अवलोकन अत्यन्त उत्प्रेरक एवं लाभकारी प्रतीत हो रहा है।

आगे हम बुद्धि की आधुनिक परिभाषाओं को जानने का प्रयास करेंगे।

1.2 उद्देश्य

आदि काल से मानव समाज की बुद्धि के सम्बन्ध में अपनी सोच रही है। शास्त्रों में कहा गया है- बुद्धिर्यस्य बलं तस्य अर्थात् जिसके पास बुद्धि है उसके पास बल अथवा शक्ति होती है। पुरातन और आधुनिक सभी शिक्षाशास्त्री बुद्धि को महत्व देते रहे हैं। कहीं-कहीं पर पुरातन चिन्तकों का अभिमत आधुनिक चिन्तकों से भी गहरा दिखाई पड़ता है। पुरातन मतों पर पुनर्विषण की आवश्यकता तो है ही आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों के अभिमतों का सारांश भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. भारतीय साहित्य के आधार पर चिन्तकों के मतों को अपने शब्दों में प्रस्तुत कर सकेंगे।
2. बुद्धि की विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर बुद्धि के सम्प्रत्य की व्याख्या सकेंगे।
3. बुद्धिमापन के विभिन्न परीक्षणों उन की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
4. विभिन्न प्रकार के बुद्धि परीक्षणों की सीमाओं (Limitations) से परिचित हो सकेंगे।
5. बुद्धि परीक्षणों की पारस्परिक तुलना कर सकेंगे।
6. शिक्षण तथा शोधकार्यों में उपयोग करने के लिए उपयुक्त परीक्षण या परीक्षणों का चुनाव कर सकेंगे।

1.3 बुद्धि की परिभाषाएँ

बकिन्धम के अनुसार “सीखने की योग्यता ही बुद्धि है”।

“Intelligence is the ability to learn.” –Buckingham.

स्टर्न के अनुसार, “बुद्धि जीवन की नई परिस्थितियों तथा समस्याओं के अनुरूप समायोजन करने की सामान्य योग्यता है”।

“Intelligence is the general adaptation to new conditions and problems of life.

टरमन के अनुसार, “व्यक्ति उतना ही बुद्धिमान होता है, जितनी उसमें अमूर्त चिन्तन की योग्यता है।

“An individual is intelligent in proportion as he is able to carry on abstract thinking.”

वैश्वर ने बुद्धि को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है-“बुद्धि किसी व्यक्ति के द्वारा उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने, तार्किक चिन्तन करने तथा वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से क्रिया करने की सामूहिक योग्यता है।”।

“Intelligence is the aggregate or global capacity of the individual to act purposefully to think rationally and to deal effectively with his environment.” - D. Wechsler

बर्ट के अनुसार - “बुद्धि अपेक्षाकृत नई परिस्थितियों में समायोजन करने की जन्मजात क्षमता है।”

“Intelligence is the innate capacity to adopt relatively to new situations.”-Burt

डियरबोन के अनुसार - “बुद्धि अधिगम करने की क्षमता अथवा अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता है।”

“Intelligence is the capacity to learn or to profit by experience.

स्टोडार्ड के अनुसार -“बुद्धि कठिनता, अमूर्तता जटिलता, मितव्ययता लक्ष्य की अनुकूलता, सामाजिक मूल्य व मौलिकता की उत्पत्ति से युक्त क्रियाओं को करने तथा शक्ति की एकाग्रता तथा संवेगात्मक दबावों का प्रतिरोध करने की आवश्यकता वाली परिस्थितियों में इन क्रियाओं को बनाए रखने की योग्यता है।”

“Intelligence is the ability to undertake activities that are characterized by difficulty, complexity, abstractness, economy. Adaptiveness to a goal, social value, and the emergence of originals and to maintain such activities under conditions that demand a concentration of energy and resistance to emotional forces.” -Stoddard

इन परिभाषाओं तथा अन्य अध्ययनों के आधार पर विदित होता है कि बुद्धि-

1. सीखने की योग्यता (Ability to Learn) है।
2. अमूर्त चिन्तन(Abstract Thinking) की योग्यता है।
3. समस्या समाधान (Problem Solving) की योग्यता है।
4. अनुभव का लाभ उठाने (Profit by Experience) की योग्यता है।
5. सम्बन्धों को समझने (Perceive Relationship) की योग्यता है।
6. पर्यावरण से सामन्जस्य (Adjust to Environment) स्थापित करने की योग्यता है।

इसी के साथ हमें यह भी समझाना है कि बुद्धि में निम्नलिखित विशेषताएँ भी होती हैं।

विशेषताएँ :

1. यह एक जन्मजात शक्ति है।
2. यह अमूर्त चिन्तन)Abstract Reasoning) की योग्यता प्रदान करती है।
3. यह सीखने में सहायता प्रदान करती है।

4. यह पूर्व अनुभवों से लाभ उठाने की योग्यता प्रदान करती है।
5. यह जटिल समस्याओं को सरल बनाती है।
6. यह नवीन परिस्थितियों से सामन्जस्य स्थापन में सहायक होती है।
7. बुद्धि अच्छे, बुरे सत्य असत्य, नैतिक, अनैतिक कार्यों में अन्तर कर सकने की योग्यता प्रदान करती है।
8. बुद्धि के वितरण का लिंग, जाति एवं प्रजाति के आधार पर अन्तर नहीं है।

1.4 बुद्धि के प्रकार

यहाँ इतना समझना ही पर्याप्त है कि बुद्धि के निम्नलिखित प्रकार होते हैं-

1. मूर्त तथा अमूर्त बुद्धि
2. सामाजिक बुद्धि
3. यांत्रिक बुद्धि

1.5 बुद्धि का मापन (Measurement of Intelligence)

बुद्धि के सम्बन्ध में विद्वान एकमत नहीं हैं। बुद्धि के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में अध्ययन करने के बाद यह बात और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है कि जब बुद्धि के स्वरूप का ही परिचय नहीं है तो फिर बुद्धि का मापन कैसे किया जा सकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर शिक्षा जगत में ख्याति प्राप्त लेखक द्रय क्रो एण्ड क्रो ने लिखा है। “सम्भवतया कोई भी बुद्धि परीक्षण पूर्ण नहीं है।” इसका अर्थ यह नहीं है कि जब कोई भी बुद्धि परीक्षण पूर्ण नहीं है तो फिर बुद्धि का मापन ही बंद कर दें। शिक्षा जगत में बुद्धि मापन की इतनी अधिक आवश्यकता है कि इसका मापन आवश्यक हो जाता है। क्रोएण्ड क्रो का पूर्ण सम्मान रखते हुए हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि एक बुद्धि परीक्षण पर सहज रूप से विश्वास न करके एक से अधिक बुद्धि परीक्षणों का उपयोग कर सकते हैं। फिर शैक्षिक कार्यों के लिए बुद्धि लब्धि के अंकों को अन्तिम सत्य न मानकर निर्देशन कार्यों के लिए एक सहयोगी उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इस चर्चा को दीर्घीकृत न करके भी इसे यहीं पूर्ण करते हैं आगे की पंक्तियों में बुद्धि परीक्षणों की आवश्यकता उनके मापन के इतिहास, प्रकार तथा कुछ बुद्धि परीक्षणों के सम्बन्ध में अध्ययन करेंगे।

1.5.1 बुद्धि मापन की आवश्यकता

विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में स्वाभाविक रूप में अन्तर पाया जाता है, जो प्रकृतिजन्य भी होता है और समाजजन्य भी होता है। इसी कारण विद्यार्थी समान रूप से प्रगति नहीं कर पाते हैं। एक शिक्षक जो कि सभी बच्चों को एक साथ शिक्षित करने के लिए अध्यापन-कार्य करता है। फिर बच्चों की प्रगति में यह अन्तर क्यों है? किसी छात्र को ध्यान एकाग्र करने की समस्या है, कोई पारिवारिक

समस्याओं से ग्रस्त है, किसी को घर पर पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है, कोई निरन्तर अपनी स्वयं की वास्तविक या अवास्तविक समस्याओं से ग्रस्त है। बहुत सारे कारक बच्चों की प्रगति में बाधक हो सकते हैं। एक महत्वपूर्ण कारक यह भी हो सकता है कि वह मानसिक योग्यता में ही तो कम नहीं है। मानसिक योग्यता की जानकारी प्राप्त करने के लिए उसकी बुद्धि को मापने की आवश्यकता होती है।

आजकल बड़े विद्यालयों का जमाना है। कुछ विद्यालयों में एक ही कक्षा के 10-12 तक विभाग होते हैं। यदि हम सैक्शन बनाते समय अकारादि क्रम का उपयोग करते हैं तो सभी कक्षाओं में कम तथा अधिक बुद्धि लब्धि छात्रों का वितरण समान रूप से हो जाएगा। जिससे उच्च बुद्धि लब्धि वाले तथा कम बुद्धि लब्धि वाले दोनों ही तरह के छात्र प्रताड़ित होंगे, उन्हें दोनों को ही हानि होगी, क्योंकि अध्यापक औसत बुद्धि लब्धि वाले छात्रों को ध्यान में रखकर अध्यापन करेंगे तथा करते हैं। यदि हम उच्च बुद्धि वाले छात्रों तथा औसत बुद्धि वाले छात्रों का वर्गीकरण करके सैक्शन का निर्माण कर देंगे तो प्रतिभाशाली छात्रों के सैक्शन की पढ़ाई की व्यवस्था अलग की जा सकेगी, कम प्रतिभाशाली छात्रों की शिक्षण व्यवस्था अलग से की जा सकती है। यद्यपि वर्तमान लोकतांत्रित समाज व्यवस्था में इस प्रकार की व्यवस्था करना कठिन कार्य है, फिर भी यदि प्रयास किया जाए तो यह सम्भव अवश्य हो सकता है।

बुद्धि परीक्षण में यदि कोई छात्र अच्छा रैंक पता है और विद्यालय की परीक्षाओं में उसे वह रैंक उपलब्ध नहीं हो पता है तो इससे यह सिद्ध हो जाता है कि उसकी प्रगति उसके स्तर के अनुसार नहीं है। जिससे उसकी प्रगति में अवरोधी कारकों का अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से पता लगाया जा सकता है। निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि “विद्यालयों में बुद्धि परीक्षणों का उपयोग यह अनुमान लगाने के लिए करते हैं कि बालक विद्यालयी कार्यों में कितनी सफलता अर्जित कर सकता है”।

1.5.2 बुद्धि मापन का इतिहास (History of Intelligence Measurement)

नालन्दा विश्वविद्यालय में द्वार पंडित हुआ करते थे, जो प्रवेशार्थियों से प्रश्न पूछकर उन्हें विश्वविद्यालय में प्रवेश देने अथवा न देने का निर्णय लिया करते थे। इस बात के प्रमाण हमारे पास नहीं है कि वे प्रवेशार्थी की मानसिक योग्यता को परखते थे या उस समय तक ग्रहण किए गए ज्ञान को परखते थे। यक्ष द्वारा युधिष्ठिर से पूछे गए प्रश्न उनके ज्ञान का परीक्षण है या उनकी बुद्धि का परीक्षण है। आज से 50 वर्ष पहले अध्यापक अपनी मेज पर कुछ सामग्री रख देता था। उसके ऊपर मेजपोश रखकर उन्हें ढक देता था। छात्रों को मेज के चारों ओर खड़ा करके यह निर्देश देता था कि वे मेज पर रखी वस्तुओं का अवलोकन करें, वे तुम्हें बतानी है। फिर कुछ देर के लिए मेज से कपड़ा हटाकर पुनः ढक देता था। छात्रों को उन सामग्रियों का नाम लिखने के लिए कहता था। जो छात्र सभी सामग्रियों के नाम लिख देते थे, वे प्रतिभाशाली माने जाते थे अन्य अलग की श्रेणी बना लेते। ये सब बुद्धि परीक्षणों के प्रारम्भिक स्वरूप थे। मेलों में तारों से बने कुछ यंत्र बिका करते थे हैं जिन्हें गोरखधन्धा कहा जाता है। ये बुद्धि मापन के यंत्र हैं। इस प्रकार पहिलियां, गणित के विशिष्ट प्रश्न बुद्धि परीक्षण के रूप में प्रयोग किए जाते रहे हैं। शारीरिक आधार पर बुद्धि परीक्षण का प्रयोग आम लोग करते रहे है। जैसे हस्तरेखाओं के आधार पर किसी को बुद्धिमान घोषित कर देते हैं।

ऐसी ही एक घटना विश्व के सर्वप्रथम तथा श्रेष्ठतम व्याकरणाचार्य पाणिनी के साथ घटी बताई गई है। पाणिनी के गुरुजी ने पाणिनी के पाठ स्मरण न करने पर उनके हाथ पर डण्डा मारने के लिए फैलायी गई हथेली का अवलोकन किया तो पाणिनी के गुरु आश्चर्य चकित रह गए कि इस छात्र के हाथ में तो बुद्धि की रेखा ही नहीं है। उस गुरु ने पाणिनी से क्षमा याचना करते हुए कहा कि मैं निरर्थक ही तुम्हें अध्ययन न करने का दोषी ठहराता रहा। तुम्हारे हाथ में तो विद्या की रेखा ही नहीं है। अब तुम्हें पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। अपने घर चले जाओ। पाणिनी के स्वाभिमान को ठेस लगी। उन्होंने गुरुजी से पूछा कि विद्या की रेखा कहाँ होती है। गुरुजी ने उन्हें वह स्थान बता दिया कहते हैं कि गुरुजी द्वारा बताए स्थान पर उन्होंने तीव्र चाकू से हाथ में विद्या की रेखा के स्थान पर घाव कर दिया। यद्यपि यह कथानक/घटना व्यक्ति के उत्प्रेरण से सम्बन्धित है परन्तु इससे यह भी प्रकट होता है कि शायद हस्तर रेखा देखकर भी बुद्धि का अनुमान लगाया जाता हो। एक कहावत है -“छिद्र दंता क्वचित् मूर्खा, क्वचित् खल्लवाटा निर्धना”। अर्थात् छिदे दाँतों वाला कोई-कोई ही मूर्ख होता है तथा जिसके सिर के बाल उड़े हुए हों वह कोई-कोई ही निर्धन होता है। यानि छिदे दाँतों वाले बुद्धिमान और गंजे धनवान हुआ करते हैं। ऐसी ही जिन व्यक्तियों की भौं परस्पर मिली रहती है उन लोगों को तेज-तर्रार बुद्धिमान बताया गया है। इसी प्रकार आज भी कुछ लोग व्यक्ति का चेहरा-मोहरा देखकर बुद्धि का अनुमान लगाने का दावा करते हैं। लैवेस्टर (स्विट्जरलैण्ड) ने 1772 में शरीराकृति के आधार पर बुद्धि मापन को प्रस्तुत किया। यहाँ पर प्रस्तुत कुछ बातें प्रसंगवश प्रस्तुत कर दी गई हैं।

1879 में विलियम वुण्ट ने जर्मनी के लीपजिंग नगर में अपनी मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित करके बुद्धि मापन के कार्य को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। इस प्रयोगशाला में बुद्धि मापन का कार्य यंत्रों के माध्यम से किया जाता था। अतः हम वुण्ट (Wundt) को बुद्धि परीक्षणों का पिता घोषित कर सकते हैं।

वुण्ट के बाद बिनो (Binet) ने फ्रांस में, विंच (Winch) ने इंग्लैण्ड में मेनान (Menann) ने जर्मनी में तथा थॉर्नडाइक और टर्मन (Thorndike and Terman) ने अमेरिका में बुद्धिमापन के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। बिनो और साइमन का बुद्धि परीक्षण “बिनो-साइमन बुद्धि-मापन” निर्मित हुआ। जिसे टर्मन ने संशोधन करके उसे “स्टेफोर्ड-बिनो मानक्रम” नाम दिया।

इसके बाद बुद्धि परीक्षणों की बहुतायत हो गई। सभी देशों की मनोविज्ञान प्रयोगशालों ने बुद्धि परीक्षण बनाने का कार्य किया। आज सैकड़ों की संख्या में बुद्धि परीक्षण उपलब्ध है।

1.6 मानसिक आयु तथा बुद्धि लब्धि (Mental Age and I.Q.)

जब हम बुद्धि का मापन किसी परीक्षण के माध्यम से करते हैं तो उससे बुद्धि लब्धि ज्ञात करते हैं। बुद्धि लब्धि किसी व्यक्ति के मानसिक स्तर को 100 के आधार पर बताती है। यदि व्यक्ति की बुद्धि लब्धि 100

है तो उसका बौद्धिक स्तर सामान्य है। यदि 100 से अधिक है तो बौद्धिक स्तर सामान्य से अधिक है। 100 कम होने पर बौद्धिक स्तर से कम होता है। बुद्धि लब्धि से मानसिक स्तर की जानकारी प्राप्त होती है।

‘बुद्धि लब्धि’ जानने के लिए मानसिक आयु तथा वास्तविक आयु जानना आवश्यक है। मानसिक आयु ज्ञात करने के लिए व्यक्ति को बुद्धि परीक्षण देना होता है। मानसिक आयु का सम्प्रत्यय ‘बिने’ ने प्रतिपादित किया। मानसिक आयु किसी व्यक्ति द्वारा किए जा सकने वाले मानसिक कार्यों से ज्ञात की जाती है, जिसकी उस आयु वर्ग से अपेक्षा की जाती है। यदि वह अपनी आयु के लिए निर्धारित कार्यों से अधिक कार्य करता है तो उसकी मानसिक आयु अधिक होगी और यदि वह अपनी आयु के लिए निर्धारित कार्यों से कम कार्य करता है तो उसकी मानसिक आयु उसकी वास्तविक आयु से कम होगी।

मानसिक परीक्षण तैयार करते समय मानसिक आयु के अनुरूप कार्यों का चयन असल में बहुत कठिन कार्य रहा है। परन्तु अब यह उतना कठिन नहीं माना जा रहा है। हम यहाँ शाब्दिक बुद्धि परीक्षण का उदाहरण देकर यह बात समझने का प्रयास कर रहे हैं।

हमें एक बुद्धि परीक्षण का निर्माण करना है। इसमें बुद्धि परीक्षण में, प्रेक्षण, अंकयोग्यता शाब्दिक योग्यता, वाक्शक्ति, स्मरण शक्ति, तार्किक योग्यता, पर्यवेक्षण योग्यता, समस्या समाधान, निगमनात्मक योग्यता, आगमन योग्यता आदि के प्रश्न सम्मिलित कर लिए। इन प्रश्नों का स्तर 12 वर्ष से 19 वर्ष की आयु वर्ग के विद्यालयों में पढ़ने वाले बालकों के स्तर को ध्यान में रख कर किया। जब हम इस परीक्षण को हजारों की संख्या में इसी आयु वर्ग के छात्रों पर प्रशासित करते हैं तो उनके कुछ अंक आते हैं। उन अंकों को आयु के आधार पर सारणीकृत कर लेते हैं मानलिया 15 वर्ष की आयु के बालकों के मध्यमान अंक 60 आए तो इस आधार पर हम कह सकते हैं कि 60 अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों की मानसिक आयु 15 है।

इसी परीक्षण में 60 अंक प्राप्त करने वाले कुछ परीक्षार्थी 15 वर्ष के होंगे, कुछ 13 वर्ष, 13.5 वर्ष 14 वर्ष, 14.5 वर्ष, 15 वर्ष, 15.5 वर्ष, 16 वर्ष, 16.5 वर्ष, 17 वर्ष, 17.5 वर्ष, 18 वर्ष, 18.5 वर्ष तथा 19 वर्ष के भी होंगे। इन सभी 60 अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों की मानसिक आयु 15 वर्ष मानी जाएगी।

मानसिक आयु ज्ञात हो जाने पर उसकी वास्तविक आयु से भाग देकर 100 से गुणा करके बुद्धि लब्धि ज्ञात कर ली जाती है। मानसिक आयु बुद्धि परीक्षणों में प्राप्त अंकों के आधार पर बनाई गई सारणी से ज्ञात की जाती है, जो कि उस परीक्षण के मैनुअल में दी गई होती है। इस प्रकार –

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \text{मानसिक आयु}$$

$$\times 100$$

$$\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}}$$

पीछे दिए गए उदाहरणों के आधार पर बुद्धि लब्धि की गणना नीचे की सारणी में की जा रही है।

सारणी 1.1

बुद्धि-लब्धि की गणना

मानसिक आयु	वास्तविक आयु	बुद्धि लब्धि पूर्णांकों में
15	13.5	$(15/13.5) \times 100 = 111$
15	14.0	$(15/14) \times 100 = 107$
15	14.5	$(15/14.5) \times 100 = 103$
15	15.0	$(15/15) \times 100 = 100$
15	15.5	$(15/15.5) \times 100 = 97$
15	16.0	$(15/16) \times 100 = 94$
15	16.5	$(15/16.5) \times 100 = 91$
15	17.0	$(15/17) \times 100 = 88$
15	17.5	$(15/17.5) \times 100 = 86$
15	18.0	$(15/18) \times 100 = 83$
15	18.5	$(15/18.5) \times 100 = 81$
15	19.0	$(15/19) \times 100 = 79$

ऊपर दिया गया उदाहरण एक काल्पनिक उदाहरण है। इसे मानसिक आयु तथा बुद्धि लब्धि को समझने के लिए प्रयोग किया गया है।

1.7 बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण (Classification of I.Q.)

बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण अलग-अलग बुद्धि परीक्षणों में अलग-अलग किया गया है। यहाँ पर हम स्टेनफोर्ड बिने के आधार पर बुद्धि लब्धि प्राप्तांकों का वर्गीकरण सारणी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

सारणी 1.2

स्टेनफोर्ड-बिने के आधार पर बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण

बुद्धि लब्धि	व्याख्या	जनसंख्या में प्रतिशत
140 या अधिक	प्रतिभाशाली (Genius)	1 %

120-139	अति श्रेष्ठ (Very Superior)	7%
110-119	श्रेष्ठ (Superior)	16 %
90-109	सामान्य (Normal)	50 %
80-89	मन्द (Dull)	16 %
70-79	सीमान्तमन्दबुद्धि (Borderline Feeble minded)	7%
60-69	मूर्ख (Moron)	3 %
20-59	मूढ़ (Imbecile)	
20 से कम	जड़ (Idiot)	

कई एक अनुसंधायकों ने अपने अलग वर्गीकरण प्रस्तुत किए हैं। वर्ग के नामों में भी अन्तर है। यहाँ पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि जिस परीक्षण से बुद्धि लब्धि की गणना की गई है, उसी के आधार पर वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाना चाहिए। बुद्धि के मापन के क्षेत्र में वेश्लर का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने भी विश्वस्तरीय बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया है। वेश्लर ने सामान्य सम्भावयता वक्र (Normal Probability Curve) के आधार पर स्पष्ट किया है। लगभग 50 प्रतिशत लोगों को प्राप्तांक औसत प्रसार (Average Range) अर्थात् 90-110 के बीच पड़ता है। बुद्धि लब्धि का वितरण चित्र 11.7 में दर्शाया गया है। इस चित्र से बुद्धि-लब्धि की अन्य सीमाओं के बीच पड़ने वाले प्राप्तांकों को भी प्रदर्शित किया गया है। वेश्लर का निष्कर्ष है कि केवल पाँच प्रतिशत व्यक्ति ही 130 बुद्धि लब्धि या इस से अधिक या 70 बुद्धि लब्धि से कम बुद्धि लब्धि वाले होते हैं।

1.8 बौद्धिक विकास तथा हास (Intelligence Development and Depreciation)

यहाँ यह पहले स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि बुद्धि लब्धि जिसे हम विभिन्न परीक्षणों से नापते हैं, वह एक व्यक्ति की बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक एक ही रहती है। उसमें यदि थोड़ा बहुत अन्तर आता है तो वह मापन में होने वाली त्रुटियों के कारण ही होता है। जहाँ तक मानसिक विकास का प्रश्न है, वह होता है। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि बाल्यकाल में बौद्धिक विकास तीव्र गति से होता है। जैसे ही बच्चा 12-13 वर्ष की आयु में पहुँचता है तो बौद्धिक विकास तो होता रहता है परन्तु उसकी गति धीमी हो जाती है। कुछ मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि बौद्धिक विकास 14 वर्ष तक की आयु तक होता है। कुछ मानते हैं कि 16 वर्ष की आयु तक होता है, जबकि कुछ अन्य मानते हैं कि 20 वर्ष की आयु तक विकास होता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि कुछ व्यक्तियों में यह विकास 26 वर्ष की

आयु तक भी हो सकता है, जबकि कुछ यह मानते हैं कि इस आयु में बौद्धिक हास प्रारम्भ हो सकता है। कहने का तात्पर्य है कि बौद्धिक विकास की अवधि में भी मत-विभेद होते हैं।

बेले (Bayley) के दीर्घकालिक अध्ययन के परिणाम चित्र में प्रस्तुत किए गए हैं इससे यह स्पष्ट होता है कि तीव्र गति से बौद्धिक विकास 14 वर्ष की आयु तक होता है फिर उसके विकास में धीमापन आ जाता है। 18 वर्ष की आयु तक स्थिर हो जाता है। इसके बाद विकास नहीं होता। इन्होंने उसे वक्र द्वारा प्रस्तुत किया, जिसे चित्र 11.8 में प्रदर्शित किया गया है।

शाई तथा स्ट्राथर के अनुसार 40 वर्ष की आयु के बाद मानसिक हास की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। 60 वर्ष की आयु के बाद अचानक हास तीव्र गति से होना प्रारम्भ हो जाता है। इस अध्ययन का यह भी निष्कर्ष है कि मध्यावस्था तथा वृद्धावस्था में हास का कारण स्वास्थ्य तथा योग्यता के प्रकार पर भी निर्भर करता है। जिन व्यक्तियों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं, उनके हास की गति धीमी रहती है। शारीरिक दोष तथा रक्ताल्पता भी हास की गति को बढ़ाती है। शाई तथा स्ट्राथर के आधार बौद्धिक योग्यता के हास का प्रस्तुतीकरण चित्र 11.9 में प्रदर्शित किया गया है।

1.9 बुद्धि परीक्षणों के प्रकार (Types of Intelligence Tests)

बुद्धि परीक्षणों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है, जैसे-कुछ बुद्धि परीक्षण केवल एक समय में एक व्यक्ति पर ही प्रशासित किए जाते हैं कुछ परीक्षण समूह पर प्रशासित किए जा सकते हैं।

इस प्रकार पहला वर्गीकरण हुआ-

- i. सामूहिक बुद्धि परीक्षण (Group Intelligence Test)
- ii. वैयक्तिगत बुद्धि परीक्षण (Individual Intelligence Test)

वैयक्तिगत बुद्धि परीक्षणों में अधिक समय लगता है। इनमें विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। ये छोटे बच्चों के लिए विशेष रूप से उपयोगी होते हैं जबकि सामूहिक परीक्षणों में कम समय लगता है, विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। ये बड़े बच्चों के लिए प्रयोग होते हैं।

सारणी 1.3

व्यक्तिगत तथा सामूहिक बुद्धि परीक्षणों में अन्तर

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण	सामूहिक बुद्धि परीक्षण
एक समय में केवल एक ही व्यक्ति पर प्रशासित किया जा सकता है।	एक साथ व्यक्तियों के समूह पर प्रशासित किया जा सकता है।

इन परीक्षणों के प्रशासन में अधिक समय लगता है।	सामान्यता 45 से 90 मिनट का समय प्रशासन में लगता है।
ये परीक्षण प्रशासन व समय की दृष्टि से अधिक व्यय साध्य होते हैं।	ये प्रशासन व समय की दृष्टि से अपेक्षाकृत मितव्ययी होते हैं।
इन परीक्षणों के प्रशासन के लिए प्रशिक्षित व अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।	सामान्य व्यक्ति भी इनका प्रशासन अल्प प्रशिक्षण प्राप्त करके कर सकते हैं।
ये परीक्षण पूर्णतया वैध तथा विश्वसनीय होते हैं।	इनके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष कम प्रमाणित होते हैं।
प्रायः इन परीक्षणों की समय सीमा निर्धारित नहीं होती है।	इन परीक्षणों की समय-सीमा पूर्व निर्धारित होती है।
इन परीक्षणों का अंकन कार्य कम वस्तुनिष्ठ होता है।	इनका अंकन पूर्णरूपेण वस्तुनिष्ठ होता है।
प्रायः ये परीक्षण मौखिक प्रकृति के होते हैं।	ये परीक्षण लिखित होते हैं।
इनका प्रयोग अनपढ़ व्यक्तियों पर भी किया जा सकता है।	इनका प्रयोग पढ़े लिखे व्यक्तियों पर ही किया जाता है।
इन परीक्षणों में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है।	इन परीक्षणों में केवल सामान्य प्रोत्साहन ही दिया जा सकता है।
इन परीक्षणों में छात्र व परीक्षक के मध्य सम्पर्क स्थापित होता है।	इन परीक्षणों में छात्र व परीक्षक के मध्य सम्पर्क स्थापित नहीं हो पाता।
इन परीक्षणों में प्रश्न प्रायः कठिन प्रकृति के होते हैं।	इन परीक्षणों में प्रश्न प्रायः सरल प्रकृति के होते हैं।

सारणी: 1.4

व्यक्तिगत व सामूहिक बुद्धि परीक्षणों के कुछ उदाहरण

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण (Individual Intelligence Test)	समूहिक बुद्धि परीक्षण (Group Intelligence Test)
बिने साइमन परीक्षण	जलोटा का साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण
स्टैनफोर्ड-टरमन संशोधन	आर्मी ऐल्फा परीक्षण
गुड एनफ ड्रा-एक मैन परीक्षण	टंडन व मेहता का सामान्य बुद्धि परीक्षण
भाटिया बैटरी	आर्मी सामान्य वर्गीकरण परीक्षण
पोर्टियस भूल भुलैयों परीक्षण	आर्मी बीटा परीक्षण

बुद्धि परीक्षणों का दूसरा वर्गीकरण है-

1. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Verbal Intelligence test)
2. अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Non-verbal Intelligence Test)

शाब्दिक बुद्धि परीक्षणों में भाषा का ज्ञान आवश्यक होता है। इसमें सम्मिलित प्रश्नों का उत्तर परीक्षार्थी लिखकर देता है। ये परीक्षण अनपढ़, मूकबधिर, दृष्टिहीनों के लिए उपयोगी नहीं हो सकते। छोटे बच्चों पर इन परीक्षणों को उपयोग नहीं किया जा सकता।

सारणी: 1.5

शाब्दिक तथा अशाब्दिक बुद्धि परीक्षणों में अन्तर

शाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Verbal Intelligence Test)	अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Non-Verbal Intelligence Test)
इनका प्रयोग केवल पढ़े लिखे व्यक्तियों पर ही संभव है।	इनका प्रयोग निरक्षर, छोटे बालकों तथा मंदबुद्धि बालकों पर भी किया जा सकता है।
ये कम व्यय साध्य होते हैं	ये अपेक्षाकृत अधिक व्यय साध्य होते हैं।

इन परीक्षणों में भाषा के माध्यम से बुद्धि का परीक्षण किया जाता है।	इन परीक्षणों में चित्रों, सामग्रियों, तथा क्रियाओं के माध्यम से मानसिक योग्यता का परीक्षण किया जाता है।
इन परीक्षणों में प्रश्नों की प्रतिक्रिया भाषा के माध्यम से दी जाती है।	इनमें क्रियाओं द्वारा प्रत्युत्तर दिया जाता है।
इन परीक्षणों के परिणाम परीक्षार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित रहते हैं।	इन परीक्षणों के परिणाम परीक्षार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अप्रभावित रहते हैं।

शाब्दिक तथा अशाब्दिक बुद्धि परीक्षणों में से प्रमुख के नाम निम्न लिखित वर्गीकरण में प्रस्तुत किए गए हैं।

सारणी 1.6

शाब्दिक तथा अशाब्दिक बुद्धि परीक्षणों के कुछ नाम

शाब्दिक बुद्धि परीक्षण	अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण (डॉ० एम० सी० जोशी)	गुडएनफ का ड्रा ए मैनेस्ट (डॉ० प्रमिला पाठक के मानक) (डॉ० के० एल० श्रीमाली के मानक)
सामूहिक बुद्धि परीक्षण (डॉ० प्रयाग मेहता)	रेविन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स (इलाहाबाद मनोविज्ञान शाला के मानक)
साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण(डॉ० जलोटा)	नान वर्बल ग्रुप टेस्ट ऑफ इन्टेलीजेन्स (रघुवंश त्रिपाठी के मानक)
सामूहिक बुद्धि परीक्षण (इलाहाबाद मनोविज्ञान प्रयोगशाला)	ह्यूमैन फीगर ड्राइंग टेस्ट (सी.आई.ई. के मानक)
सामूहिक बुद्धि परीक्षण (सी०आई०ई०)	जेनकिन्स का अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण (सी.आई. ई. के मानक) पिजन का अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण (सी. आई. ई. के मानक) कैटिल का कल्चर फ्री टेस्ट कोहज ब्लाक डिजाइन भाटिया बैट्री

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण (Individual Intelligence test) कुछ उदाहरण:**भाटिया की निष्पत्ति परीक्षणमाला**

बुद्धि परीक्षण की इस निष्पत्ति परीक्षणमाला का निर्माण डा० चन्द्रमोहन भाटिया ने किया था। डा० भाटिया उत्तर प्रदेश मनोविज्ञानशाला इलाहाबाद के संचालक रहे हैं। इन्होंने इस टेस्ट को 900 बालकों पर प्रयोग करके मानकीकृत किया। इस परीक्षणमाला में 5 टेस्ट सम्मिलित हैं-

1. **कोहज ब्लॉक डिजाइन टेस्ट** - कोहज ने अपने बुद्धि परीक्षण के लिए 17 डिजाइनों का प्रयोग किया था। डा० भाटिया ने उनमें से 10 डिजाइनों का चयन किया इनमें से 5 डिजाइनों के लिए 2 मिनट तथा अन्तिम 5 डिजाइनों के लिए 3 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। इस परीक्षण में 10 कार्ड होते हैं, जिन पर डिजाइन बने रहते हैं। इन डिजाइनों को देखकर घनाकार रंगीन गुटकों से डिजाइन तैयार करना होता है। रंगीन गुटके घनाकार होते हैं। तथा उनकी प्रत्येक सतह एक या अधिक रंगों से रंगी होती है।
2. **अलेक्जेन्डर पास एलॉग टेस्ट**- यह अलेक्जेन्डर (कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस) द्वारा 1932 में प्रकाशित किया गया था। इस पास एलॉग टेस्ट के तीन भाग हैं। भिन्न आकार के चार लकड़ी के बॉक्स, विभिन्न आकार के लाल तथा नीले रंग से रंगे लकड़ी के गुटके तथा विभिन्न आकृति के आठ चित्र जिन पर आकृतियां प्रिंट रहती हैं। इन आकृतियों को देखकर परीक्षार्थी आकृति का निर्माण करता है इन आकृतियों पर कठिन स्तर के आधार पर नम्बर छपे रहते हैं। परीक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व परीक्षार्थी को निर्देश दिए जाते हैं। इनमें दो आकृतियों को एक के बाद दूसरा न बनाने पर आगे के पैटर्न नहीं दिए जाते हैं।
3. **पैटर्न ड्राइंग टेस्ट**-इसे आकृति चित्रण भी कहते हैं यह संरचना डा० भाटिया की स्वयं की है। इसमें आठ कार्ड होते हैं। प्रत्येक कार्ड पर एक आरेख बना होता है। परीक्षार्थी को बिना पैसिल उठाए आरेख का निर्माण करना होता है। पहले चार आरेखों के लिए 2 मिनट का समय तथा अन्तिम चार आरेखों के लिए 3 मिनट का समय निर्धारण होता है।
4. **तत्काल स्मृति परीक्षण (Immediate Memory Test)** इस टेस्ट में तत्काल स्मृति का परीक्षण करने के लिए परीक्षणकर्ता द्वारा बोले गए अंकों को तथा अक्षरों को परीक्षार्थी द्वारा दोहराया जाता है। इसके बाद परीक्षार्थी को परीक्षणकर्ता द्वारा बोले गए अंक तथा अक्षरों को व्युत्क्रम (उल्टा) दोहराना पड़ता है। जैसे- 3, 5, 7, को 7, 5, 3, तथा 4, 6, 9, 7 को 7, 9, 6, 4 आदि पहले सीधे क्रम में दो अंक बोले जाते हैं। इनके दोहराने पर क्रमशः तीन, चार पाँच तथा इसी प्रकार एक से नौ तक अंकों के दोहराने का क्रम रहता है। अक्षरों में यह संख्या 8 तक रहती है। व्युत्क्रम में अंकों की संख्या 3 से प्रारम्भ होकर 5 तक रहती है और अक्षरों में व्युत्क्रम की संख्या 3 से प्रारम्भ होकर 6 तक रहती है। परीक्षार्थी के एक बार गलत बोलने पर दो अवसर दिए जाते हैं। लेकिन ये अवसर पूर्व वाले अंकों या अक्षरों के न होकर अलग सैट के होते हैं। अक्षर

तथा अंकों के बोलने की गति भी पूर्व निर्धारित होती है। प्रत्येक अंक अथवा अक्षर में 1-1 सैकण्ड का अन्तर रखा जाता है।

5. **चित्र-रचना परीक्षण:** इस टेस्ट में कुल पांच चित्र होते हैं। इन पांचों चित्रों को क्रमशः 2, 4, 6, 8 तथा 12 टुकड़ों में विभाजित कर दिया गया होता है। पहले तीन चित्रों के लिए 2 मिनट का समय तथा अन्तिम 2 चित्रों के लिए 3 मिनट का समय निर्धारित रहता है।

भाटिया बैटरी के प्रशासन में कुल एक घण्टे का समय लगता है। अधिकतम अंक 95 निर्धारित होते हैं। विभिन्न 1 से 5 भागों के लिए क्रमशः 25, 20, 20, 15, 15 अंक निर्धारित किए गए हैं अंकों की प्राप्ति के आधार पर मैनुअल में दिए गए अनुसार परीक्षार्थी की मानसिक आयु की जानकारी प्राप्त की जाती है, जिसके आधार पर बुद्धि लब्धि की गणना की जाती है।

सामूहिक बुद्धि परीक्षण (Group Intelligence Test)

टरमन मानसिक योग्यता परीक्षण: आर्मी अल्फा परीक्षण के आधार पर सन् 1920 में टरमन ने मानसिक योग्यता के सामूहिक परीक्षण का निर्माण किया। इस परीक्षण में 10 उप परीक्षण हैं जोकि इस प्रकार हैं -

1. सूचना
2. कहावतों तथा अन्य तथ्यों का निर्वचन
3. शब्दों के अर्थ तथा उनके विलोम शब्द
4. तर्क संगत चयन
5. गणितीय समस्याएँ
6. वाक्यों का अर्थ
7. आनुपात पूर्ति-
8. अव्यवस्थित वाक्य
9. वर्गीकरण
10. अंक श्रंखला की पूर्ति

इस परीक्षण के प्रशासन की समय सीमा 35-40 मिनट है तथा परीक्षण में कुल 185 प्रश्न सम्मिलित हैं। यह परीक्षण सामान्य वर्गीकरण करने तथा शैक्षिक सफलता का आंकलन करने की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। इस परीक्षण का हाईस्कूल एवं कॉलेज स्तरों पर सामान्यतया उपयोग किया जाता है।

अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Non verbal Intelligence test)

1. रेविन की प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स

यह सांस्कृतिक प्रभावों से मुक्त परीक्षण है। इस परीक्षण द्वारा बालकों से लेकर वृद्धों तक की बुद्धि का मापन किया जाता है। यह भाषा मुक्त परीक्षण है। निर्देश देने के अलावा परीक्षण में भाषा की आवश्यकता नहीं होती, जिससे इस टेस्ट से अनपढ़ व्यक्तियों की बुद्धिका मापन भी किया जाता सकता है। इस परीक्षण द्वारा प्रत्यक्षीकरण तार्किक योग्यता (Perceptual Reasoning) के द्वारा बुद्धि का मापन किया जाता है। इस परीक्षण के दो रूप हैं-

- i. **रंगीन प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स-** इस मैट्रिक्स के 3 खण्ड हैं- ए, एबी तथा बी। प्रत्येक खण्ड में 12-12 आकृतियां हैं इस प्रकार 36 आकृतियां हैं। इन आकृतियों को बच्चों के ध्यानाकर्षण के लिए रंगीन बनाया गया है। आकृतियों को काठिन्य स्तर के अनुसार क्रमशः समायोजित किया गया है। इसका अर्थ है पहली आकृति अति सरल तथा 36वीं आकृति अत्यन्त कठिन होती है। प्रत्येक ठीक प्रश्न पर एक अंक दिया जाता है। मैनुअल में देखकर आयु के आधार पर बुद्धि लब्धि की गणना की जाती है। इसके प्रशासन में 30 मिनट का समय लगता है।
- ii. **स्टैन्डर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स -** इस मैट्रिक्स के 5 भाग होते हैं। प्रत्येक भाग में 12 रचनाएँ होती हैं इस प्रकार कुल 60 संरचनाएँ होती हैं। जैसे यह व्यक्तिगत परीक्षण हैं लेकिन समूह में भी अलग-अलग प्रतियां देकर प्रशासित किया जा सकता है। यह युवाओं तथा व्यस्कों के लिए है। इस मैट्रिक्स में भी 6 आकृतियों में से एक का चयन बड़े चित्र के खाली स्थान की पूर्ति के लिए किया जाता है। जिसमें भी सही उत्तर के लिए एक अंक प्रदान किया जाता है। अधिकतम अंक 60 हो सकते हैं। अंकों तथा आयु के आधार पर प्रतिशत नोर्म्स तथा बुद्धि लब्धि ज्ञात की जाती है।

रेविन की प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स को मनोविज्ञान जगत में एक अत्यन्त विश्वसनीय बुद्धि परीक्षण माना जाता है। अन्य परीक्षणों की अपेक्षा इसका उपयोग भी अधिक होता है।

शाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Verbal Intelligence Test)

आरके0 ओझा तथा के राय चौधरी

इस परीक्षण का निर्माण श्री आर.के. ओझा मनोविज्ञान विभाग के.जी. कॉलेज मुरादाबाद तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय मनोविज्ञान विभाग से सेवानिवृत्त श्री के. राय चौधरी के द्वारा 1964 से 1970 के बीच किया गया। यह परीक्षण वस्तुनिष्ठ परीक्षण है, इसमें आठ प्रकार के प्रश्न हैं। यह प्रश्न निम्नलिखित प्रकार के हैं -

1. **वर्गीकरण:** इस वर्ग में पद संख्या 15 है तथा इसमें 5 शब्द हैं एक शब्द ऐसा है जो अन्य चार से भिन्न है। भिन्न शब्द को रेखांकित करते हैं।
2. **तुल्यात्मक:** इस वर्ग में भी पदों की संख्या 15 ही है। प्रत्येक पद के चार विकल्प हैं पहले जोड़े का एक सम्बन्ध है। तीसरे शब्द के लिए कोष्ठक में दिए हुए चार विकल्पों में से एक शब्द को रेखांकित करना है।

3. **पर्याय:** पर्याय: इस वर्ग में 20 शब्द दिए गए हैं। परीक्षार्थी प्रत्येक पद में एक शब्द तथा कोष्ठक में चार विकल्पों में से एक को रेखांकित करता है।
4. **संख्यात्मक:** इस वर्ग में 12 पद हैं प्रत्येक पद में 6 संख्याएँ दी गई हैं और सातवीं संख्या रिक्त स्थान में लिखनी होती है। उत्तरदाता को वह उचित संख्या लिखनी होती है जो उस क्रम को पूरा करती है।
5. **पूर्ति परीक्षण:** इस वर्ग में चार गद्यांश दिए गए हैं पहले गद्यांश में पांच स्थान खाली स्थान की पूर्ति के लिए छोड़े गए हैं। प्रत्येक रिक्त स्थान के लिए चार विकल्पों में से एक का चयन करके रेखांकित करना है। इसी प्रकार गद्यांश 2 में 2 स्थान, गद्यांश 3 में 4 स्थानों, गद्यांश 4 में 2 स्थानों के लिए उचित शब्दों को रेखांकित करना है। इस प्रकार इस उप-परीक्षण में कुल 13 उत्तर लिखने हैं, जिनका फलांक 13 ही होगा।
6. **परिच्छेद परीक्षण:** इस परीक्षण में एक रेखाचित्र दिया गया है, जिसमें पारिवारिक सम्बन्धों को दिखाया गया है। इसके बाद 10 प्रश्न लिखे गए हैं। जिनके उत्तर सम्बन्ध के रूप में लिखने होते हैं।
7. **उत्तम तर्क:** इस वर्ग में 10 प्रश्न दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न के चार उत्तरों में से एक का चयन करना होता है।
8. **सरल तर्क:** इस वर्ग को दो भागों में बांटा गया है। वर्णमाला मात्राओं के साथ दी गई है, जिनके ऊपर 1 से 57 तक संख्या लिखी गई है। इसके बाद 10 पद लिखे गए हैं। प्रत्येक पद में संख्याएँ लिखी हैं, संख्याओं के सामने वर्णमाला के अक्षरों को लिखना है। दूसरे भाग में 7 विकल्प प्रश्न हैं पहले 5 प्रश्नों के 3 विकल्प हैं और अन्तिम दो प्रश्नों के लिए चार विकल्प हैं। सही विकल्प को रेखांकित करना होता है।

इस प्रकार परीक्षण में कुछ 112 प्रश्न हैं, जिनके फलांकों का कुल योग भी 112 ही है। परीक्षण में कुल 40 मिनट निर्धारित है। प्रत्येक भाग के लिए निर्धारित समय तथा प्रत्येक भाग के निर्देशों को साथ लिखा गया होता है।

इस प्रकार परीक्षण में कुछ 112 प्रश्न हैं, जिनके फलांकों का कुल योग भी 112 ही है। परीक्षण में कुल 40 मिनट निर्धारित है। प्रत्येक भाग के लिए निर्धारित समय तथा प्रत्येक भाग के निर्देशों को साथ लिखा गया होता है।

अंकन- अंकन कार्य अंकन कुंजी (Scoring key) के माध्य से किया जाता है।

मानकीकरण - इस परीक्षण का मानकीकरण 1200 छात्रों पर किया गया। इस परीक्षण के माननीकरण में यद्यपि 13 वर्ष से 20 वर्ष तक की आयु के 200 छात्र 9 से 12 कक्षा के सम्मिलित रहे हैं लेकिन इस परीक्षण को 13-16 वर्ष के छात्रों को ही उपयोग करने के लिए अभिस्ताविक किया गया है।

विश्वसनीयता- विश्वसनीयता की गणना अर्धविच्छेदी तथा कूडर रिचर्डसन सूत्र से की गई जो कि क्रमशः 0.87 तथा 0.97 प्राप्त हुई। अलग-अलग विभिन्न आठों भागों को विश्वसनीयता को भी जाना गया है।

वैधता- वैधता की गणना 6 परीक्षणों से भी तथा विभिन्न भागों में भी पारस्परिक सहसम्बन्ध जाना गया।

मानक- विभिन्न आयु वर्गों के लिए शतांकमान तथा आयु के आधार पर टी. फलांक (T-Score) प्रस्तुत किए गए हैं फलांकों के आधार पर वर्ग निश्चित किए गए हैं तथा सम्भावित त्रुटि (P.E)की सीमाएँ भी दी गई हैं।

1.10 बुद्धि परीक्षणों का प्रतिवेदन

बुद्धि परीक्षणों का प्रतिवेदन लिखने से पहले यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि परीक्षक यह जान ले कि यह एक अत्यन्त गोपनीय प्रतिवेदन होता है। उत्तरदाता को या अनाधिकृत व्यक्तियों को यह प्रतिवेदन या बुद्धि लब्धि के अंकों को नहीं बताना चाहिये, क्योंकि इससे उत्तरदाता के मन में उच्च भावना या हीनभावना पनप सकती है। अतः प्रतिवेदन को अत्यन्त गोपनीय रखा जाना चाहिए। प्रशिक्षार्थियों को (प्रतिवेदनलिखना होता है, उसमें भी यह ध्यान रखना आवश्यक है। प्रतिवेदन का प्रारूप यह हो सकता है।

अत्यन्त गोपनीय

बुद्धि परीक्षण का प्रतिवेदन (सामान्य जानकारी)

परीक्षण का नाम	:	
अनुक्रमांक	:	
उत्तरदाताका नाम	:	कक्षा:
विद्यालय का नाम	:	अनुक्रमांक:
जन्मतिथि	:	आयु:
परीक्षण की तिथि	:	
परीक्षण का नाम	:	
उत्तरदाता की शारीरिक स्थिति	:	
उत्तरदाता की संवेगात्मक स्थिति	:	
परीक्षण के समय पर्यावरण	:	
परीक्षण में प्रयुक्त सामग्री	:	

1. परीक्षण का उद्देश्य
2. बुद्धि मापन की आवश्यकता
3. प्रयुक्त परीक्षण की विशिष्टताएँ यह सब परीक्षण के मैनुअल में लिखी रहती है। इसमें -प्रश्नों की संख्या, प्रश्नों के प्रकार, परीक्षण की विश्वसनीयता, वैधता, तथा मानक आदि का वर्णन करना चाहिये।
4. परीक्षक द्वारा दिए गए निर्देश,
5. परीक्षण के लिए दिया गया समय,
6. उत्तरों के मूल्यांकन की विधि,
7. उत्तरदाताद्वारा प्राप्त अंक,
8. मानसिक आयु,
9. वास्तविक आयु
10. बुद्धि लब्धि
11. उत्तरदाताके विद्यालयी परीक्षा में प्राप्त अंक,
12. निर्वचन (Interpretation)
13. सुझाव
 - (क) अध्यापकों को सुझाव
 - (ख) अभिभावकों को सुझाव
 - (ग) उत्तरदाता को सुझाव।
14. सारांश -पुनः स्मरण कराना आवश्यक है कि अध्यापकों, अभिभावकों तथा उत्तरदाताको सिर्फ सुझाव ही दिए जाएँ। उत्तरदाता को बुद्धि-लब्धि आदि की जानकारी नहीं देनी चाहिये और यदि गोपनीयता भंग होने की सम्भावना हो तो उत्तरदाता को नाम न लिखने के निर्देश दिए जाएँ, उसके स्थान पर परीक्षक के द्वारा दिया गया गोपनीय पहचान अनुक्रमांक दिया जाए।

1.11 बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता Use of Intelligence Tests

व्यवहारिक विज्ञान में जिसके अन्तर्गत शिक्षा, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र को सम्मिलित किया जाना है, बुद्धि परीक्षणों का व्यापक उपयोग किया जाता है। बुद्धि परीक्षण बुद्धि का मापन करने के लिए उत्तम यन्त्र है, किन्तु इनकी श्रेष्ठता उनके उचित रीति से किए गए उपयोग पर निर्भर करती है। बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता के सम्बन्ध में गेट्स का निम्नलिखित कथन उल्लेखनीय है कि 'बुद्धि परीक्षाएँ' व्यक्ति की सम्पूर्ण योग्यता का माप नहीं करती है। पर वे उसके एक अति महत्वपूर्ण पहलू का अनुमान कराती है, जिसका शैक्षिक सफलता से और कुछ मात्रा में अधिकांश अन्य क्षेत्रों से निश्चित सम्बंध है। यही कारण है कि बुद्धि परीक्षाएँ शिक्षा की महत्वपूर्ण साधन बन गई हैं।'

बुद्धि परीक्षणों के कुछ प्रमुख उपयोग निम्नलिखित हैं-

1. **सर्वोत्तम का चुनाव (Selection of Best)-** बुद्धि परीक्षणों की सहायता से विद्यालय में प्रवेश देने हेतु, छात्रवृत्तियों के लिए श्रेष्ठ बालकों के चुनाव में, विभिन्न प्रतियोगिता जैसे वाद-विवाद, सामान्यज्ञान तथा कक्षा में विभिन्न उपयोगी जिम्मेदारी के निर्वाहन के लिए बालकों के चुनाव करने में सहायता मिलती है-
2. **विषयों के चयन में (Selection of the Subjects) :** विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों की प्रकृति एक दूसरे से बहुत भिन्न होती है। कुछ विषय जैसे-गणित, विज्ञान आदि विषयों की प्रकृति कठिन मानी जाती हैं जबकि कुछ विषय जैसे -सामाजिक विज्ञान की प्रकृति सरल मानी जाती है। इसी तरह प्रत्येक छात्र भी एक दूसरे से भिन्न होता है यह भिन्नता विभिन्न क्षेत्रों जैसे बुद्धि, अभिरुचि, अभियोग्यता से सम्बन्धित होती है। छात्रों की इस भिन्नता का मापन करने उनके अनुकूल विषय के चयन में बुद्धि परीक्षणों का महत्वपूर्ण योगदान है।
3. **बालकों का वर्गीकरण (Classification of Children) :** बुद्धि परीक्षणों के आधार पर कक्षा के बालकों को प्रखर बुद्धि, औसत बुद्धि तथा मन्दबुद्धि में विभक्त करने का कार्य भी बुद्धि परीक्षणों के आधार पर किया जाता है। तथा बालकों के प्रकार के अनुकूल उसी स्तर के अधिगम अनुभव प्रदान करने के सुझाव दिए जाते हैं।
4. **छात्रों की भावी सफलता का ज्ञान (Knowledge of Results)-** बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त परिणामों के आधार पर छात्रों की भावी सफलताओं की भविष्यवाणी की जाती है। छात्रों की बौद्धिक योग्यताओं के आधार पर उनके अभिभावक तथा शिक्षक, शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था कर सकते हैं। फलस्वरूप बालक अपने भावी जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।
5. **विद्यार्थियों के पिछड़ने का पता लगाने के लिए-** कभी-कभी बालक पढ़ने में किसी कारणवश पिछड़ जाते हैं। बुद्धि परीक्षणों की सहायता से विद्यार्थियों के पिछड़ेपन का पता लगाकर उसी अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था करने में सहायता मिलती है।
6. **अनुसंधान कार्य में सहायक (For help in Research work)-** शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अनुसंधान कार्यों में बुद्धि परीक्षणों का व्यापक उपयोग किया जाता है। बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त परिणाम इस प्रकार के अनुसंधान कार्यों के लिए आधार का कार्य करते हैं।
7. **बालकों की व्यावसायिक योग्यता का ज्ञान (Knowledge of vocational abilities of children) -** बुद्धि परीक्षणों का प्रयोग बालकों की व्यावसायिक योग्यता का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है। इसके द्वारा उन्हें अपनी योग्यता के अनुसार व्यावसायों का चयन करने के लिए परामर्श दिया जा सकता है।
8. **निदानात्मक उद्देश्यों के लिए (For Diagnostic Purpose):** बुद्धि परीक्षणों का प्रयोग नैदानिक उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है। बुद्धि परीक्षण छात्रों को अधिगम में उत्पन्न हो रही कठिनाइयों का ज्ञान प्रदान करने में सहायता करता है। बालकों की बुद्धि का ज्ञान करके उनकी

शैक्षिक प्रगति, समायोजन तथा अधिगम आदि को अच्छी तरह से संचालित किया जा सकता है।

1.12 कुछ प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम (Name of Some Main Intelligence Tests)

बुद्धि के मापन के लिए बहुत से बुद्धि परीक्षणों का निर्माण मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। इनमें से कुछ प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम निम्नलिखित हैं-

1. बिने साइमन परीक्षण-अल्फ्रेड बिने तथा साइमन (1905)
2. बिने साइमन परीक्षण -अल्फ्रेड बिने तथा साइमन (1908)
3. पिन्ट पैटसन स्केल ऑफ परफोमेंन्स-आर. पिन्टर तथा डी. पैटरसन (1917)
4. आर्मी एल्फा परीक्षण-आर्थर एस. ओटिस (1917)
5. आर्मी बीटा परीक्षण-आर्थर एस. आटिस (1919)
6. पोर्टियल भूल भूलैया परीक्षण-एस. डी. पोर्टियस (1924)
7. रेविन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स जे.सी. रेविन (1938)
8. संस्कृति मुक्त परीक्षण आर. वी. कैटल (1944)
9. वैश्लर बुद्धि परीक्षण- डी.वैश्लर (1949)
10. वैश्लर बुद्धि परीक्षण (प्रौढ़ों के लिए) डी. वैश्लर (1955)

भारत में निर्मित कुछ प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम निम्नलिखित हैं-

1. मानसिक योग्यता मापन का सामूहिक परीक्षण-एल.के. शाह (1937)
2. बुद्धि का अशाब्दिक परीक्षण-मेन्जल (1938)
3. बुद्धि मापन का शाब्दिक परीक्षण-मनोविज्ञान शाला, इलाहाबाद (1954)
4. निष्पादन परीक्षण माला -डा. सी. एम. भाटिया (1955)
5. सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण -डा. आर. के. टण्डन (1961)
6. सामूहिक बुद्धि परीक्षण-प्रयाग मेहता (1961)
7. साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण -डा. एस. जलोटा (1963)
8. भारतीय बच्चों के लिए वैश्लर बुद्धि मापनी-मालिन्स (1969)
9. मानसिक योग्यता का सामूहिक परीक्षण -डा. आर.के. टण्डन (1970)
10. मिश्रित प्रकार का बुद्धि परीक्षण-डा. पी. एन. मेहरोत्रा (1971)
11. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण-के. रायचौधरी तथा आर.के. ओझा (1971)
12. सामान्य बुद्धि परीक्षण-पाल तथा मिश्रा (1987)

1.13 सारांश

इस इकाई में हमने सीखा कि कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसमें कोई भी गुण ना हो। व्यक्ति के गुणों का पारखी होना आवश्यक है। हमारे प्राचीन साहित्य में बुद्धि के अनेक नाम हैं-धी, मेधा, मति, प्रज्ञा आदि प्रमुख रूप से प्रचलित है। बुद्धि के अनेक प्रकार हैं जैसे मूर्त तथा अमूर्त बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, यांत्रिक बुद्धि, सीखने की योग्यता, अमूर्त चिन्तन की योग्यता, सम्बन्धों समाधान की योग्यता, अनुभव की योग्यता, समस्या समाधान की योग्यता, अमूर्त चिन्तन की योग्यता, समस्या समाधान की योग्यता, अनुभव का लाभ उठाने की योग्यता, सम्बन्धी को समझने की योग्यता तथा पर्यावरण से सामान्यस्थ स्थापित करने की योग्यता है। बुद्धि मापन के सम्बन्ध में क्रो एण्ड क्रो का यह कथन कि “सम्भवतया बुद्धि मापन का कोई भी परीक्षण पूर्ण नहीं है।” को लगभग सत्य मानते हुए भी हमें शिक्षण कार्य को अधिक उपयोगी बनाने के लिए तथा बच्चों को परामर्श देने के लिए बुद्धि परीक्षणों का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है। अधिक सत्यता जानने के लिए एक के साथ दूसरे परीक्षण का भी उपयोग करते हैं। ताकि हम बच्चे की बुद्धि लब्धि का अधिक ठीक अनुमान लगा सकें। बुद्धिमापन के लिए प्रयुक्त परीक्षण के मैनुअल के आधार पर बुद्धि लब्धि को ज्ञात किया जाता है। हम यह भी समझें हैंकि बुद्धि परीक्षणों के मानक तैयार करना लगातार और बड़ी जनसंख्या में व्यक्तियों पर प्रशासन करके प्राप्त किए जाते हैं। बुद्धि परीक्षणों का उपयोग-सर्वोत्तम के चुनाव, विषयों के चयन, बच्चों के वर्गीकरण, बच्चों की भावी सफलता का पूर्वानुमान, शिक्षा में पिछड़ने के कारण का पता लगाने, शैक्षिक अनुसंधानों में, बच्चों की व्यावसायिक योग्यता का अनुमान लगाने के लिए तथा उनकी अधिगम से सम्बन्धित कठिनाइयों को जानने के लिए किया जाता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. स्टर्न के अनुसार, बुद्धि को परिभाषित कीजिए।
2. बुद्धि की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
3. _____ को बुद्धि परीक्षणों का पिता घोषित किया जा सकता है।
4. किन्हीं दो प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम लिखिए।
5. भारत में निर्मित किन्हीं दो प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम लिखिए।

1.14 शब्दावली

- जन्मजात - जन्म से ही उत्पन्न होने वाली।
- वास्तविक आयु-तिथि से सम्बन्धित वास्तविक आयु

- मानसिक आयु-मानसिक योग्यता से संबंधित आयु।
- बुद्धि लब्धि-जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को ज्ञात किया जाता है।

1.15 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. स्टर्न के अनुसार, “बुद्धि जीवन की नई परिस्थितियों तथा समस्याओं के अनुरूप समायोजन करने की सामान्य योग्यता है”।
2. बुद्धि की कोई दो विशेषताएँ निम्न हैं-
 - i. यह एक जन्मजात शक्ति है।
 - ii. यह अमूर्त चिन्तन (Abstract Reasoning) की योग्यता प्रदान करती है।
3. वुण्ट
4. दो प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम हैं-
 - a. बिने साइमन परीक्षण-अल्फ्रेड बिने तथा साइमन (1905)
 - b. आर्मी एल्फा परीक्षण-आर्थर एस. ओटिस (1917)
5. भारत में निर्मित किन्हीं दो प्रमुख बुद्धि परीक्षणों के नाम हैं-
 - a. मानसिक योग्यता मापन का सामूहिक परीक्षण-एल.के. शाह (1937)
 - b. बुद्धि का अशाब्दिक परीक्षण-मेन्जल (1938)

1.16 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Cronbach, I.J. (1970), Essentials of Psychological Testing, 3rd ed., New York. Harper and Row Publishers.
2. Dandapani, S. (2007). Advanced Educational Psychology, New Delhi. Anmol Publications Pvt. Ltd.
3. Ebel, Robert L., (1979), Essentials of Psychological Measurement, London. Prentice Hall International Inc.
4. Freeman, Frank S. (1962); Theory and Practice of Psychological Testing, New Delhi. Oxford and IBN Publishing Co.
5. Kuppaswamy, B. (2006), Advanced Educational Psychology, New Delhi. Sterling Publishers Private Ltd.

-
6. Mangal, S.K. (2007), Advanced Educational Psychology, New Delhi. Prentice Hall of India Private Limited.
 7. Mathur, S.S. (2007), Educational Psychology, Agra .Vinod Pustak Mandir.
 8. Thorndike, R.L. & Hagen, E.P. (1969).Measurement and Evaluation in Psychology and Education 3rd ed; New York. John Wily & Sons Inc.

1.17 निबंधात्मक प्रश्न

1. बुद्धि को परिभाषित कीजिए। बुद्धि के शैक्षिक महत्व को समझाइए?
2. शाब्दिक व अशाब्दिक बुद्धि परीक्षणों में अन्तर लिखिए।
3. व्यक्तिगत व सामूहिक बुद्धि परीक्षणों में अन्तर लिखिए।
4. बुद्धि मापन के इतिहास पर एक निबंध लिखिए।

इकाई 2- बुद्धि के सिद्धान्त

Theories of Intelligence

- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 उद्देश्य
- 2.3 बिने का एक कारक सिद्धान्त
- 2.4 स्पीयर मैन का द्विकारक सिद्धान्त
- 2.5 थॉर्नडाइक का बहु-कारक सिद्धान्त
- 2.6 थर्स्टन का समूह कारक सिद्धान्त
- 2.7 थाम्पसन का प्रतिदर्श सिद्धान्त
- 2.8 बर्ट तथा बर्नन का पदानुक्रम सिद्धान्त
- 2.9 गिल्फोर्ड का त्रिआयामी सिद्धान्त
- 2.10 होवार्ड गार्डनर का बहु-बुद्धि सिद्धान्त
- 2.11 सारांश
- 2.12 शब्दावली
- 2.13 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 2.14 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 2.15 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

बुद्धि के अस्तित्व को सभी स्वीकार करते हैं। बुद्धि के मापन के लिए कोई सर्व सम्मत राय भी नहीं है फिर भी बुद्धिमापन आवश्यक एवं उपयोगी कार्य है। बुद्धि क्या है? वह कैसे कार्य करती है? इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए अनेक मनोवैज्ञानिकों ने कार्य किया। इसके फलस्वरूप बुद्धि के सम्बन्ध में कई सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है। ये सिद्धान्त बुद्धि के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। आगे की पंक्तियों में हम बुद्धि के सिद्धान्तों का अध्ययन कर रहे हैं।

इस अध्ययन से हम 'बुद्धि' की वास्तविकता के सम्बन्ध में अपनी राय का निर्माण कर सकेंगे। यद्यपि अध्ययन के उपरान्त भी हम किसी एक निर्णय पर नहीं पहुँच सकेंगे तथापि बुद्धि के स्वरूप के सम्बन्ध में हमें वास्तविकता का आभास होगा। प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन आगे प्रस्तुत किया गया है।

2.2 उद्देश्य

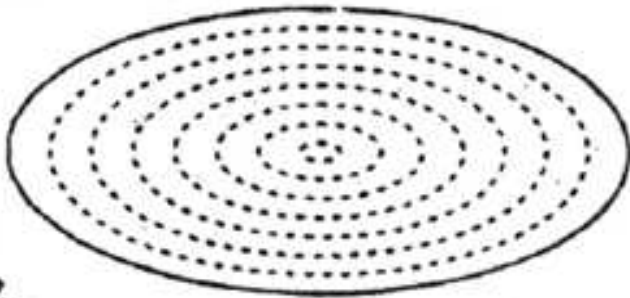
इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. बुद्धि में सिद्धान्तों के क्रमिक-विकास को समझ सकेंगे।
2. बिने के एक कारक सिद्धान्त को अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
3. स्पीयर मैन के द्विकारक सिद्धान्त की चर्चा कर सकेंगे।
4. थॉर्नडाइक के बहुकारक सिद्धान्त की व्याख्या अपने शब्दों में कर पाएंगे।
5. थर्स्टन के समूह कारक सिद्धान्त की व्याख्या कर पाएंगे।
6. थाम्पसन के प्रतिदर्श सिद्धान्त की व्याख्या कर पाएंगे।
7. बर्ट तथा बर्नन के पदानुक्रम सिद्धान्तकी व्याख्या कर पाएंगे।
8. गिल्फोर्ड के त्रिआयामी सिद्धान्त तथा उसकी तीनों विमाओं को स्पष्ट कर सकेंगे।
9. हावर्ड गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धान्त की व्याख्या कर सकेंगे।

2.3 बिने का एक कारक सिद्धान्त (Unifactor Theory of Binet)

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक बिने हैं इन्होंने 1911 में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। इसके बाद टर्मन, स्टर्न तथा एम्बिहास ने इस सिद्धान्त पर कार्य किया इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि के खण्ड नहीं होते, वह एकात्मक होती है। इसकी मात्रा सब व्यक्तियों में अलग-अलग होती है। बुद्धि सभी मानसिक क्रियाओं पर एक जैसा प्रभाव डालती है। किसी व्यक्ति की एक क्षेत्र में निपुणता अन्य क्षेत्रों में भी उसे निपुण ही सिद्ध करती है।

यह सिद्धान्त अधिक दिन नहीं टिक सका, इसकी प्रस्तुति के बाद ही इसकी आलोचना प्रारम्भ हो गई थी।

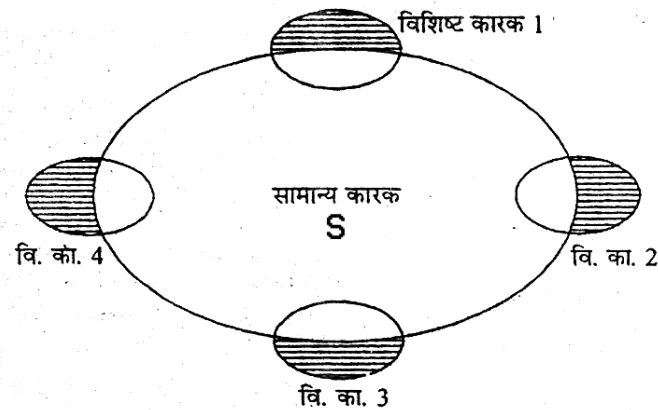


2

चित्र-12.1. बुद्धि का एक कारक सिद्धान्त

2.4 स्पीयरमैन का द्विकारक सिद्धान्त (Two Factor Theory of Spearman)

स्पीयरमैन ने द्विकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन 1904 में किया। इन्होंने बुद्धि का दो कारकों में विभाजन किया। पहले कारक को उन्होंने सामान्य कारक कहा। यह व्यक्ति की समस्त मानसिक क्रियाओं में निहित होता है। यह कारक विभिन्न व्यक्तियों में अलग-अलग होता है। सामान्य कारक जन्मजात होता है। विशिष्ट कारक अलग-अलग मानसिक क्रियाओं के लिए होते हैं। एक ही व्यक्ति में कई विशिष्ट कारक पाए जा सकते हैं। विशिष्ट कारकों को इन्होंने अर्जित माना। सन् 1911 में स्पीयरमैन ने अपने द्विकारक सिद्धान्त को बदलकर तीन कारक सिद्धान्त कर दिया, साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि विशिष्ट कारक में सामान्य कारक भी प्रभावी रहता है।



चित्र 12.2, स्पीयरमैन का द्विकारक सिद्धान्त।

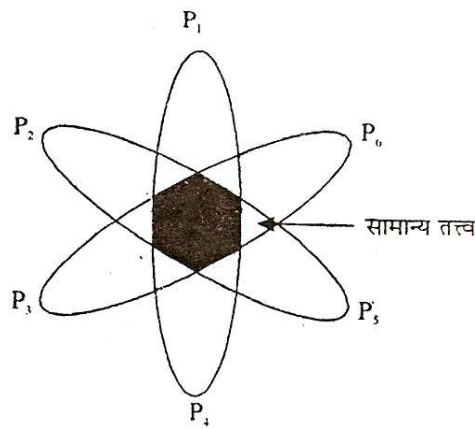
विशिष्ट कारक तथा सामान्य कारक दोनों मिलकर ही किसी कार्य को सम्पन्न करने की क्षमता प्रदान करते हैं। स्पीयरमैन ने सामान्य कारक को वास्तविक मानसिक शक्ति माना। क्योंकि यह सभी मानसिक क्रियाओं के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

2.5 थॉर्नडाइक का बहु-कारक या अल्पतंत्रीय सिद्धान्त (Multi-factor Theory of Thorndike)

थॉर्नडाइक के इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि विभिन्न कारकों का मिश्रण है। थॉर्नडाइक ने सामान्य कारक की सत्ता को स्वीकार नहीं किया बल्कि उन्होंने मूल कारक तथा सामान्य कारक दो कारकों के विचार का श्री गणेश किया। इनके अनुसार मूल कारकों में आंकिक, शाब्दिक तथा तार्किक योग्यताएँ होती हैं। ये

व्यक्ति की समस्त मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करती हैं। इसके साथ थॉर्नडाइक ने व्यक्तित्व में किसी न किसी विशिष्ट कारक अथवा योग्यता को भी स्वीकार किया।

इस सिद्धान्त को थॉर्नडाइक का सम्बन्धवाद सिद्धान्त भी कहते हैं। इनके अनुसार जब कोई आवेग तंत्रिकातंत्र में परिभ्रमण करता है तो कुछ मानसिक सम्बन्ध बनते हैं। इन सम्बन्धों की संख्या जितनी अधिक होती है, उतना ही अधिक वह व्यक्ति बुद्धिमान माना जाता है, किन्तु व्यक्ति की विषय की मूल योग्यता से दूसरे विषय की मूल योग्यता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।



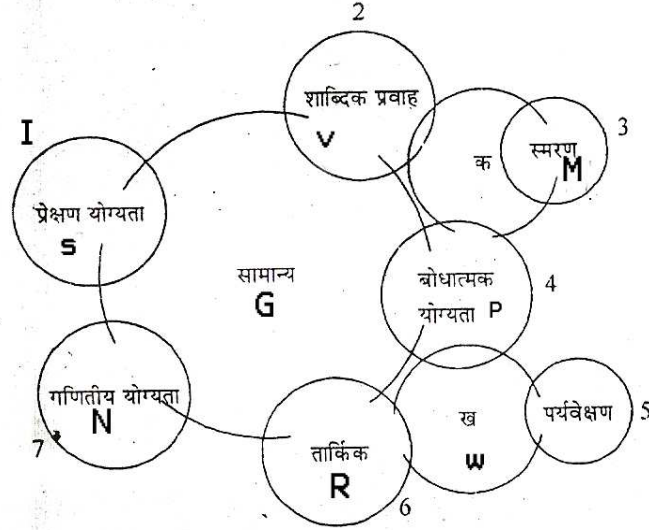
चित्र 12.3 : थॉर्नडाइक का बहु-कारक सिद्धान्त।

सामान्य कारक का कुछ अंश तो सामान्य मानसिक क्रियाओं में निहित होता है, जबकि प्रत्येक क्रिया का कोई न कोई मूल कारक होता है। इस सिद्धान्त को चित्र रूप में 12.3 पर प्रदर्शित किया गया है।

2.6 थर्स्टन का समूह तत्व सिद्धान्त (Thurstone's Group Factor Theory)

यह सिद्धान्त स्पीयरमैन के द्विकारक सिद्धान्त तथा थॉर्नडाइक के बहु-कारक सिद्धान्त का मध्यमार्गी सिद्धान्त है।

थर्स्टन अपने कारक विश्लेषण (Factor Analysis) के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। थर्स्टन के अनुसार बुद्धि न तो सामान्य कारकों का ही पुंज है, न ही विशिष्ट कारकों का पुंज है। ये इसे समूह कारक के रूप में देखते हैं इन्होंने विश्वविद्यालय के छात्रों पर 56 मनोवैज्ञानिक परीक्षण कर प्राथमिक योग्यताओं का निर्धारण किया। ये योग्यताएँ सात हैं-



चित्र 12.4: थर्स्टन के समूह तत्त्व सिद्धान्त की रेखीय प्रस्तुती।

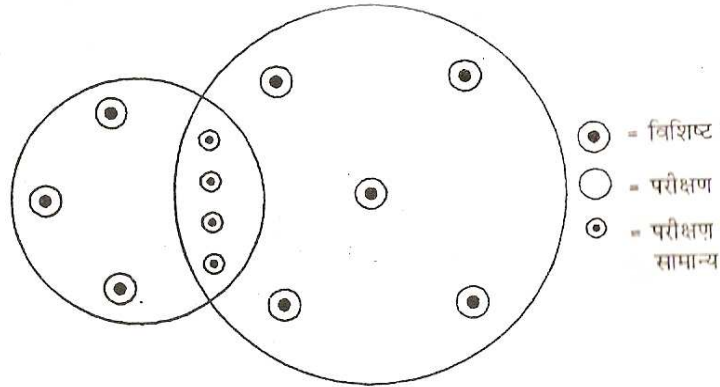
1. प्रेक्षण योग्यता (Spatial Ability-S)
2. गणितीय योग्यता (Number Ability-N)
3. शाब्दिक योग्यता (Verbal Ability-V)
4. शब्द प्रवाह (Word Fluency –W)
5. स्मरण शक्ति (Memory Ability-M)
6. तर्किक योग्यता (Reasoning Ability-R)
7. बोधात्मक योग्यता (Perceptual Ability-P)

इन समस्त मूल कारकों में अलग-अलग मात्रा में सहसम्बन्ध होता है। दो मूल कारकों में जितना अधिक सहसम्बन्ध होता है, उनके बीच में उतना ही अधिक हस्तान्तरण भी होता है। बुद्धि = $S+N+V+W+M+R+P$

2.7 थाम्पसन का प्रतिदर्श सिद्धान्त (Sampling Theory of Thompson)

थाम्पसन के सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक कार्य कुछ निश्चित योग्यताओं के द्वारा पूर्ण होता है। इन विभिन्न योग्यताओं में से थोड़ा-थोड़ा प्रतिदर्श लेकर किसी कार्य को पूरा करते हैं, जिससे एक नई योग्यता विकसित होती है। जैसे ही कार्य पूरा हो जाता है, वैसे ही नया संगठन पुनः विच्छेदित हो जाता है। प्रतिदर्श

के रूप में उन्हीं योग्यताओं का चयन होता है, जिनकी उस कार्य को पूरा करने में आवश्यकता होती है। अथवा उन योग्यताओं का कार्य से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।



चित्र 12.5 : थाम्पसन का प्रतिदर्श सिद्धान्त।

2.8 बर्ट तथा वर्नर का पदानुक्रम सिद्धान्त (Hierarchical Theory of Vernon and Burt)

बर्ट और वर्नर ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1965 में किया इन्होंने अपने सिद्धान्त में कहा कि सामान्य मानसिक योग्यताओं को दो श्रेणियों में विभक्त किया। पहली प्रयोगिक, यांत्रिक प्रेक्षण तथा भौतिक, सामान्य मानसिक योग्यताएँ तथा दूसरी शाब्दिक, आंकिक तथा शैक्षिक। इस वर्गीकरण का कारक विश्लेषण विधि के द्वारा परीक्षण किया गया। इनके पदानुक्रम को निम्नलिखित चार्ट में प्रस्तुत किया गया है।

चार्ट 2.1 मानसिक योग्यता

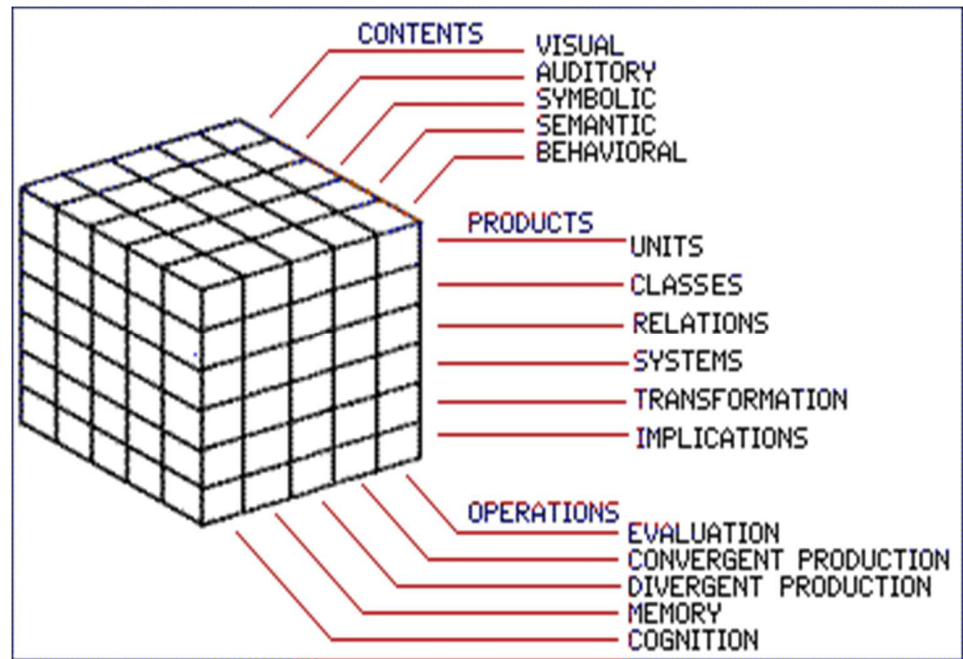
(1) सामान्य	(2) विशेष मानसिक योग्यताएँ
स्मरण, चिंतन, तर्कतथा कल्पना	
प्रयोगिक, यांत्रिक	शाब्दिक, आंकिक
भौतिक	शैक्षिक

2.9 गिल्फोर्ड का त्रिआयामी सिद्धान्त (Guilford's Model of Intellect)

गिल्फोर्ड ने 1967 में मानसिक योग्यताओं को तीन आयामों में वर्गीकृत किया-

1. संक्रिया (Operations)
2. विषय वस्तु (Contents)

3. उत्पाद (Products)



इन्होंने मानसिक योग्यताओं के इन क्षेत्रों का फैक्टर-एनेलेसिस (Factor Analysis) किया तथा निष्कर्षों के आधार पर एक त्रिआयामी प्रतिरूप (मॉडल) प्रस्तुत किया, जिसमें 5x5x6 वर्ग बनाए। इस प्रकार कुल 150 सैल (कोष) प्रस्तुत किए। इन्होंने अपने अनुसंधानसार में 80 कारकों का आपसी सम्बन्ध पाया। इनके सिद्धान्त में सम्मिलित कारकों का वर्गीकरण चार्ट 2.2 में प्रस्तुत किया गया है। तथा त्रिआयामी मॉडल को चित्र 2.6 में प्रस्तुत किया गया है।

चार्ट 2.2

सामान्य मानसिक बुद्धि

मानसिक क्रियाएँ Operations	विषयवस्तु Content	उत्पाद Products
मूल्यांकन Evaluation	Visual	इकाई Unit
अभिसारित चिंतन Convergent Thinking	Auditory	वर्ग Classes
अवसारित चिंतन Divergent Thinking	प्रतीकात्मक Symbolic	सम्बन्ध Relations
स्मृति Memory	अर्थगत Sematic	प्रणाली System
संज्ञान Cognition	व्यावहारिक Behavioural	रूपान्तरण Transformation
		निहितार्थ Implications

2.10 हावर्ड अर्ल गार्डनर का बहु-बुद्धि सिद्धान्त

Howard Earl Gardner's Multiple Intelligence Theory

हावर्ड अर्ल गार्डनर ने 1983 में बहुबुद्धि सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इनका मानना है कि बुद्धि का एकात्मक रूप न होकर बहुप्रकारिय होता है। अर्थात् बुद्धि सात तरह की होती है। ये सातों प्रकारकी बुद्धि एक दूसरे से अलग होती है। बुद्धि के सात प्रकार निम्नलिखित हैं-

1. भाषाई बुद्धि (Linguistic Intelligence)
2. तार्किक गणितीय बुद्धि (Logical -Mathematical)
3. स्थानिक बुद्धि (Spatial)
4. शरीर गति की बुद्धि (Body - Kinesthetic)
5. संगीत बुद्धि (Musical)
6. वैयक्तिक-आत्म बुद्धि (Intra Personal)
7. वैयक्तिक अन्य बुद्धि (Inter Personal)

इन्हीं के इन सात प्रकारों को रोबर्ट स्लाविन (Robert Slavion) ने 2009 में सात के स्थान पर 9 प्रकारों तक विस्तृत कर दिया और 2 प्रकारों को ओर जोड़ दिया जो कि निम्नलिखित हैं।

8. प्रकृति वादी (Naturalistic)
9. अस्तित्वामक (Existential)

1. **भाषाई बुद्धि:** भाषाई बुद्धि में शब्दों तथा भाषा सम्बन्धी योग्यताएँ आती हैं। इस में लिखित तथा वाचिक योग्यताएँ सम्मिलित हैं। कथा, कहानियों का पढ़ना, लिखना, उन्हें याद रखना, नोट्स तैयार करना, भाषण-सुनना, वाद-विवाद तथा परिचर्चा (Discussion) करना, शाब्दिक-स्मृति, विदेशी भाषा को शीघ्र सीख लेना, शब्दों का विस्तृत भण्डार, शब्दों को याद रखना तथा उनको प्रयोग करना। इस तरह की मानसिक योग्यता वाले व्यक्ति लेखक, वकील (अधिवक्ता), पुलिसकर्मी, दर्शनशास्त्री, पत्रकार, राजनीतिज्ञ, कवि तथा अध्यापक सम्बन्धी व्यवसायों में सफलता प्राप्त करते हैं।
2. **तार्किक गणितीय बुद्धि:** इस बुद्धि में तर्क करने की योग्यता, निष्कर्ष निम्नत करना, गणना करने, शतरंज की चालें, कम्प्यूटर प्रोग्राम निर्मित करना, जटिल गणनाएँ करना आदि योग्यताएँ आती हैं। इस बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति वैज्ञानिक, भौतिकशास्त्री, गणितज्ञ, अभियन्ता, डाक्टर, अर्थशास्त्री तथा दर्शनशास्त्र जैसे क्षेत्रों में सफल होते हैं।
3. **स्थानिक बुद्धि:** इसमें कलात्मक अभिकल्प, वास्तुशिल्पी (Architects) पहेली तथा समस्या समाधान आदि योग्यताएँ सम्मिलित हैं।
4. **शरीर गतिकी बुद्धि:** इस योग्यता में वस्तुओं को विधि पूर्वक सतर्कतापूर्ण कुशलतापूर्वक उपयोग करना, शारीरिक गति पर नियन्त्रण में प्रवीणता, लक्ष्य का निर्धारण, खेलकूद तथा नृत्य, अभिनय, शाब्दिक स्मृति, संगीत-स्मृति आदि योग्यताएँ सम्मिलित हैं। ऐसे व्यक्ति खिलाड़ी, नर्तक, संगीतकार, अभिनेता, शल्य चिकित्सक, डाक्टर, भवन निर्माता, पुलिस अधिकारी तथा सैनिक अच्छे होते हैं।
5. **संगीत-बुद्धि:** जिसमें संगीत, नाट्य गायन, वादन, तथा इन्हें कम्पोज करने की योग्यता होती है उनमें यह बुद्धि पाई जाती है इस योग्यता वाले अच्छे वक्ता, लेखक, कम्पोजर आदि होते हैं।
6. **वैयक्तिक आत्मबुद्धि:** इस बुद्धि के धनी व्यक्ति अंतर्मुखी होते हैं। इन व्यक्तियों में अपना आत्म विश्लेषण और आत्म चिंतन करने की क्षमता होती है। ये स्वयं की गहरी समझ रखते हैं। ये अपने ताकत व कमजोरियों से भली भांति परिचित रहते हैं।
7. **वैयक्तिक अन्य बुद्धि:** इस बुद्धि से युक्त व्यक्ति में अन्य लोगों की इच्छा अपेक्षा आवश्यकता आदि की समझ तथा दूसरों के व्यवहार का आत्मकथन की योग्यता होती है। इस बुद्धि के धनी व्यक्ति बहिर्मुखी होते हैं। ये दूसरों का मूड पहचानने, भावनाओं को जानने, उनका उत्प्रेरण स्तर जानने में कुशल होते हैं। इनकी वार्ता करने का ढंग प्रभावी, दूसरों की संवेदनाओं को समझने में कुशल होते हैं। वाद-विवाद तथा वार्ताओं में आनन्द लेते हैं, ये अच्छे व्यापारी, राजनेता, मैनेजर, सामाजिक कार्यकर्ता एवं सफल अध्यापक हो सकते हैं।
8. **प्रकृतिवादी बुद्धि:** प्रकृतिवादी बुद्धि में प्राकृतिक कार्यविधियों को समझने की योग्यता होती है। इस बुद्धि के धनी अच्छे कृषक तथा बागवान हो सकते हैं।
9. **अस्तित्वात्मक बुद्धि:** इस प्रकार की बुद्धि से सम्पन्न व्यक्तियों में ध्यान केन्द्रित करने की बुद्धि, अथवा इन्द्रियों के संज्ञानात्मक व्यवहार से परे का आभास होता है।

कुल मिलाकर मनोविज्ञानिकों द्वारा गार्डनर के अभिमतों को स्वीकृति तथा आलोचना का सामना बराबर मिला है। कुल मिला कर इनके सिद्धान्तों का सदुपयोग बुद्धिमापन में किया जाना शुभ कार्य सिद्ध हो सकता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. बुद्धि का द्विकारक सिद्धान्त दिया है-
 (क) बिने (ख) टरमन
 (ग) स्पीयरमैन (घ) गिलफोर्ड
2. थर्स्टन ने बुद्धि को कितनी प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का समुच्चय कहा है?
 (क) पाँच (ख) सात
 (ग) चार (घ) नौ
3. निम्नलिखित में कौन सा कारक थर्स्टन के सिद्धान्त में नहीं है।
 (क) प्रेक्षण (ख) तार्किक योग्यता
 (ग) कल्पना (घ) स्मरण
4. निम्नलिखित में से क्या मानसिक क्रियाओं में नहीं आता?
 (क) सम्बन्ध (ख) मूल्यांकन
 (ग) स्मृति (घ) संज्ञान
5. बिने ने _____ कारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
6. थॉर्नडाइक ने बुद्धि के _____ प्रकार बताए।
7. गिलफोर्ड ने सामान्य बुद्धि को _____ भागों में बाटां।
8. _____ ने बुद्धि का प्रतिदर्श सिद्धान्त दिया।
9. बहुबुद्धि सिद्धान्त का प्रतिपादन _____ ने किया है।
10. थर्स्टन ने बुद्धि के _____ सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
11. गिलफोर्ड ने बुद्धि के _____ सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
12. गिल्फार्ड का बुद्धि सिद्धान्त _____ आयामी है।
13. गार्डनर का पूरा नाम _____ है।
14. प्रतिदर्श सिद्धान्त का प्रतिपादन _____ ने किया था।

2.11 सारांश

इस इकाई में बुद्धि के सिद्धान्तों में से बिने का एक कारक सिद्धान्त, स्पीयरमैन का द्विकारक सिद्धान्त, थॉर्नडाइक का बहुकारक सिद्धान्त, थर्स्टन का समूहतत्व सिद्धान्त, थाम्पसन का प्रतिदर्श, सिद्धान्त,

गिल्फोर्ड का त्रिआयामी सिद्धान्त और हावर्ड अर्ल गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धान्त आदि सिद्धान्तों का अध्ययन किया। इन सिद्धान्तों के एकमत होने का तो अर्थ ही नहीं है क्योंकि ये स्वयं अलग-अलग हैं परन्तु कालक्रमानुसार इस सिद्धान्तों का निर्माण हुआ है। कोई भी सर्वसम्मत मत अभी निकट भविष्य में आने की सम्भावना भी नहीं है।

2.12 शब्दावली

1. **बुद्धि (Intelligence):-** चुनौतियों का सामना करते समय, संसाधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग करने, सविवेक चिंतन करने और जगत को समझने की क्षमता।
2. **बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient, IQ):-** कालानुक्रमिक आयु से मानसिक आयु का अनुपात इंगित करने वाला मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त एक सूचकांक।
3. **बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test):-** किसी व्यक्ति का स्तर मापने के लिए अभिकल्पित परीक्षण।
4. **मानसिक आयु (Mental Age):-** आयु के रूप में अभिव्यक्त बौद्धिक कार्यशीलता का मापक।

2.13 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) स्पीयरमैन
2. (ख) सात
3. (ग) कल्पना
4. (क) सम्बन्ध
5. एक
6. तीन
7. तीन
8. थाम्पसन
9. गार्डनर
10. समूह तत्व
11. त्रिआमी
12. त्रिआयामी
13. हावर्ड अर्ल गार्डनर
14. थाम्पसन

2.14 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Clifford T. Morgan, Richard A. King, John R. Weisz, John Schopler. (1993); Introduction to Advanced Educational Psychology, 17 ed, New Delhi. TATA McGraw-Hill edition.
2. Cronbach, I.J. (1970), Essentials of Psychological Testing, 3rd ed., New York; Harper and Row Publishers.
3. Charles, E. Skinner (1990) : Education Psychology (Hindi) New Delhi, Disha Publications
4. Gardner, Howard (1999): The Disciplined Mind. **New York:** Simon Schuster
5. Dandapani, S. (2007). Advanced Educational Psychology, New Delhi. Anmol Publications Pvt. Ltd.
6. Ebel, Robert L., (1979), Essentials of Psychological Measurement, London; Prentice Hall International Inc.
7. Freeman, Frank S. (1962); Theory and Practice of Psychological Testing, New Delhi; Oxford and IBN Publishing Co.
8. Kuppaswamy, B. (2006), Advanced Educational Psychology, New Delhi. Sterling Publishers Private Ltd.
9. Lindquist, E.F (1951), Educational Measurement, Washington D C. American Council on Education.
10. Mangal, S.K. (2007) Advanced Educational Psychology, New Delhi. Prentice Hall of India Private Limited.
11. Mathur, S.S. (2007), Educational Psychology, Agra Vinod Pustak Mandir.
12. Thorndike, R.L. & Hagen, E.P. (1969). Measurement and Evaluation in Psychology and Education 3rd ed; New York; John Wiley & Sons Inc
13. Williams, W.M. et al (1996): Practical Intelligence. New York: Harper Collins College Publications.
14. गुप्ता एस.पी. ; (2002) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
15. शुक्ल ओ.पी.; (2002) शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ: भारत प्रकाशन।
16. सिंह, शिरीष पाल ; (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।

2.15 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गिलफोर्ड के बुद्धि के सिद्धान्त की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
2. गार्डनर के बहु बुद्धि सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

इकाई 3- भावात्मक बुद्धि :- अर्थ, आयाम तथा महत्व
Emotional Intelligence : - Meaning,
Dimensions and Significance

- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 उद्देश्य
- 3.3 भावात्मक बुद्धि- प्रत्यय
- 3.4 भावात्मक बुद्धि के प्रमुख आयाम
- 3.5 भावात्मक बुद्धि में सन्निहित प्रमुख प्राथमिक भाव
- 3.6 अभिनव प्रत्यय के रूप में भावात्मक बुद्धि- महत्व एवं उपयोग
- 3.7 अकादमिक बुद्धि तथा भावात्मक बुद्धि के संदर्भ में बीसवीं शताब्दी में हुए शोध कार्यों के निष्कर्ष
- 3.8 भावात्मक बुद्धि सम्बन्धी महत्वपूर्ण शोध कार्यों के प्रमुख निष्कर्ष
- 3.9 सारांश
- 3.10 शब्दावली
- 3.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 3.12 संदर्भ ग्रंथ सूची
- 3.13 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

मानव एक बुद्धिमान प्राणी है और बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों के सम्पादन के सन्दर्भ में सम्भवतः सर्वश्रेष्ठ है। बुद्धि को जानने, समझने तथा इसका मापन करने के अनेकानेक प्रयास विभिन्न मानव समुदायों द्वारा निरन्तर किए जाते रहे हैं। इन प्रयासों के फलस्वरूप बुद्धि की प्रकृति, उसके गुणों तथा उसको प्रभावित करने में सक्षम कारकों के सन्दर्भ में अनेक सिद्धान्त विकसित किए गए हैं। बुद्धि को मन से जुड़ा हुआ मानने की परम्परा ने बुद्धि सम्बन्धी विकास को मानसिक विकास के रूप में समझने का प्रयास किया है। मानसिक विकास के लिए अंग्रेजी भाषा में Mental Development का प्रयोग होता है। शब्दकोष Mental को निम्नवत परिभाषित करते हैं-

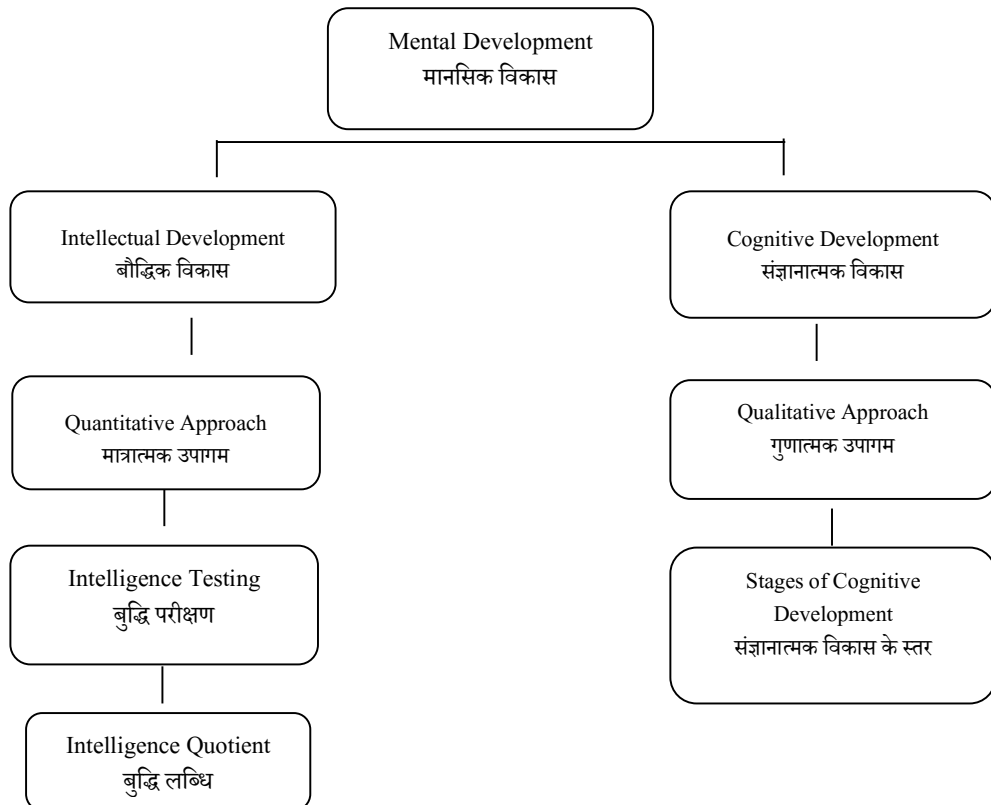
- pertaining to mind मन से सम्बन्धित

- happening in mind मन में होने वाला
- of the mind मन का
- made in mind मन में बना

अंग्रेजी भाषा में Mental नाम के विशेषण के पर्यायवाची हैं-

- psychological मनोवैज्ञानिक
- cerebral मस्तिष्क
- rational तार्किक
- intellectual बौद्धिक
- spiritual आध्यात्मिक

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक सम्पूर्ण मानवता द्वारा मानसिक विकास को समझने के प्रयासों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।



3.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

- भावात्मक बुद्धि को परिभाषित कर सकेंगे।
- भावात्मक बुद्धि तथा अकादमिक बुद्धि में अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे।
- भावात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों के नाम जान सकेंगे।
- भावात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों का वर्णन कर सकेंगे।
- भावात्मक बुद्धि के मापन हेतु किए गए प्रयासों से परिचित हो सकेंगे।
- भावात्मक बुद्धि के महत्व की विवेचना कर सकेंगे।

3.3 भावात्मक बुद्धि: अर्थ तथा महत्व

वर्ष 1990 में येल विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक पीटर सेलोवे तथा न्यूहेम्पशायर विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक जॉन मेयर द्वारा संयुक्त रूप से भावात्मक बुद्धि के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया गया। वर्ष 1995 में डेनियल गोलमान की पुस्तक “Emotional Intelligence- Why it can matter more than I Q” के प्रकाशन से भावात्मक बुद्धि के महत्व से अकादमिक जगत परिचित हुआ।

पिछले 100 वर्षों से बुद्धि को बहुत बड़ी सीमा तक जन्मजात क्षमता के रूप में जाना जाता रहा है। चिंतन करने, मनन करने तथा समस्याओं का समाधान करने की इस अमूर्त योग्यता को भावनाओं से असम्बद्ध माना जाता रहा। तर्कपूर्ण ढंग से सोचने-समझने की योग्यता का विश्लेषण करने तथा उसका मापन करने के प्रयासों के फलस्वरूप बुद्धि परीक्षण विकसित किए गए। इन प्रयासों के आधार पर पहले मानसिक आयु (Mental Age) के प्रत्यय को जन्म दिया गया। तत्पश्चात् निम्नलिखित सूत्र के आधार पर बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient-IQ) की गणना करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई -

$$IQ = \frac{M.A.}{C.A.} \times 100$$

(C.A. → Chronological Age, शारीरिक आयु)

इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि प्रारम्भ में Culture-Free Intelligence Tests (जो विभिन्न संस्कृतियों/मानव समुदायों में समान रूप से प्रयोग हो सकें) विकसित करने के प्रयास हुए। तत्पश्चात यह जानकारी प्राप्त होने पर कि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विकसित मानव संस्कृतियों में बुद्धि के प्रत्यय के

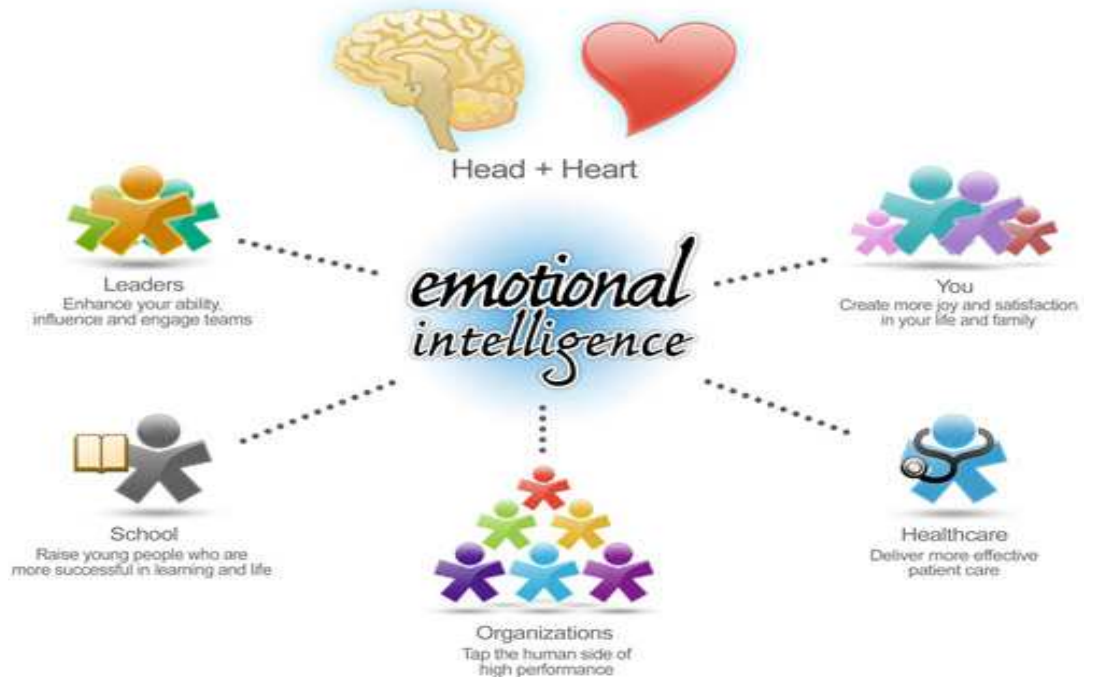
सन्दर्भ में विभिन्नताएँ हैं, Culture-Fair Intelligence Tests (जो विभिन्न संस्कृतियों/मानव समुदायों में किंचित उपयुक्त परिवर्तन करके प्रयोग हो सकें) विकसित करने के प्रयास हुए।

3.4 भावात्मक बुद्धि के पाँच आयाम

1. स्वयं के भावों को जानना।
2. भावों को नियंत्रित/व्यवस्थित करना।
3. स्वयं को अभिप्रेरित करना।
4. दूसरों के भावों की पहचान कर सकना।
5. मानवीय सम्बन्धों को निभाना।

1. स्वयं के भावों को जानना

स्वयं की जानकारी- स्वयं का ज्ञान- स्व बोध भावात्मक बुद्धि का मूल है। मनोवैज्ञानिक अर्न्तदृष्टि तथा स्वयं की समझ हेतु भावनाओं को अनवरत रूप से मानीटर करने की योग्यता अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अपनी वास्तविक भावनाओं को पहचानने की योग्यता न होने पर व्यक्ति भावनाओं की दया पर निर्भर हो जाता है। अपनी भावनाओं को ठीक तरह से पहचानने की योग्यता होने पर व्यक्ति अपने जीवन को अधिक उपयुक्त ढंग से जी सकता है तथा वैयक्तिक निर्णयों को अधिक अच्छे तरीके से ले सकता है।



2. भावों को नियंत्रित/व्यवस्थित करना

अनुभूतियों को ठीक प्रकार से समझना स्व बोध के लिए आवश्यक है। चिन्ताओं, असफलताओं, विषाद, चिढ़ आदि पर नियन्त्रण रखना तथा स्वयं को इन विपरीत परिस्थितियों में शान्त रख सकना भावात्मक बुद्धि सम्बन्धी योग्यता के अन्तर्गत आते हैं। जीवन के उतार-चढ़ावों को सहज रूप से स्वीकार करना भी इसी के अन्तर्गत आता है। दुःख, विपत्ति तथा कष्ट को सम्यक रूप से झेल कर उनसे छुटकारा पाने की योग्यता भी इसके अन्तर्गत आती है।

3. स्वयं को अभिप्रेरित करना

सृजनात्मकता, स्व-अभिप्रेरण, महत्वपूर्ण चीजों पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु तथा उद्देश्य प्राप्ति के लिए भावों का यथोचित उपयोग किया जाना चाहिए। भावात्मक आत्म-नियन्त्रण, संतोष, आवेगों पर अंकुश अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। धारा के साथ बहने से कम शक्ति में अधिक उपलब्धि की सम्भावना बड़ जाती है।

4. दूसरों के भावों की पहचान कर सकना

भावात्मक आत्म-बोध हेतु परानुभूति (Empathy) मौलिक कौशल है। परहितवाद का जन्म ही परानुभूति से ही होता है। दूसरों को जानने, समझने तथा उनके साथ रह सकने के लिए परानुभूति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। तुलसी का वचन उद्धरित किए जाने योग्य है-

परहित सरिस धरम नहीं भाई।

परपीड़ा सम नहीं अधमाई ॥

साथ ही प्राचीन मनीषियों के उद्गार भी स्मरणीय हैं-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन् द्वयम्।

परोपकाराय पुण्याय पापाय पर पीडणम् ॥

दूसरों की मुख-मुद्रा/हाव-भाव 'बॉडी लैंग्वेज' से ही यह जान सकना कि वे क्या चाहते हैं- या उन्हें किस चीज की आवश्यकता है, इस प्रकार की योग्यता भावात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है। शिक्षण, प्रबन्धन तथा मार्केटिंग व्यवसायों में ऐसे व्यक्तियों के सफल होने की अधिक सम्भावनाएँ होती हैं। भावात्मक रूप से तान-बधिर- tone deaf (जो दूसरों के मनोभावों को पढ़ने की योग्यता से वंचित होते हैं) व्यक्ति समाज में लोकप्रिय नहीं होते हैं। लोग उनसे बचना चाहते हैं।

5. मानवीय सम्बन्धों को निभाना

दूसरों के मनोभावों को पहचान कर तदनुसार पारस्परिक मानवीय सम्बन्धों को निभाना अत्यधिक महत्वपूर्ण योग्यता है। समाज में प्रसिद्धि, नेतृत्व तथा महत्व ऐसे ही लोगों को मिलता

है। दूसरों को प्रसन्न रख सकना- उनके दुःख/दर्द तथा कष्ट कम कर सकना इस योग्यता में सम्मिलित हैं।

“कोई भी क्रोधी बन सकता है- यह आसान है। लेकिन ठीक तरह से, किसी सही उद्देश्य से, उचित समय पर, सम्यक मात्रा में किसी व्यक्ति विशेष के प्रति क्रोध प्रदर्शित करना आसान नहीं है”। अरस्तु

3.5 भावात्मक बुद्धि में सन्निहित प्रमुख प्राथमिक भाव

आठ प्राथमिक/आधारभूत भाव तथा उनके अन्तर्गत सम्मिलित किए जा सकने वाले प्रकार निम्नवत हैं-

- **उदासी:** शोक, विषाद, दुःख, व्यथा, क्लेश, अनुताप, विलाप, खिन्नता, अनमनापन, निराशा, चिन्ताग्रस्त, चिन्तामग्न, आत्मदया, अकेलापन, हताश, अवसाद, ग्लानि।
- **भय:** डर, भीति, आशंका, अन्देश, चिन्ता, फिक्र, घबराहट, उद्विग्नता, आतंक, संत्रास, संदेह, विभीषिका, दहशत।
- **आनन्द:** सुख, हर्ष, खुशी, आह्लाद, राहत, आराम, सन्तोष, मनोरंजन, मनोविनोद, गर्व, भोग-विलास, रोमांच, पुलकित, तुष्टि, मौज, उल्लास, उन्माद।
- **प्रेम:** सहमति, मित्रता, विश्वास, आस्था, भरोसा, सहारा, आसरा, दयालुता, घनिष्ठता, श्रद्धा, भक्ति, निष्ठा, अनुरक्ति, समर्पण, आराधना, सम्मोह, आसक्ति।
- **आश्चर्य:** अचरज, अंचभा, ताज्जुब, विस्मय, हैरत, सदमा, आघात।
- **घृणा:** तिरस्कार, अवज्ञा, अवमान, अवमानना, अवहेलना, अपमान, अनादर, नफरत, वीभत्सा, विद्वेष, अरूचि।
- **लज्जा:** पाप, दोष, अपराध, घबराहट, परेशानी, उलझन, कठिनाई, बाधा, सन्ताप, खीज, अनुताप, पश्चात्ताप, पछताना, अफसोस करना, खेद।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. भावात्मक बुद्धि का सिद्धान्त कब और किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया?
2. पुस्तक “Emotional Intelligence- Why it can matter more than I Q” के लेखक का नाम लिखिए।
3. बुद्धि लब्धि की गणना करने के सूत्र को लिखिए।
4. भावात्मक बुद्धि में सन्निहित प्रमुख प्राथमिक भावों के नाम लिखिए।

3.6 अभिनव प्रत्यय के रूप में भावात्मक बुद्धि –महत्व एवं उपयोग

कुछ वर्षों पूर्व तक मनोविज्ञान भावों/संवेगों के विषय में बहुत कम जानता था। पिछले दो दशकों से इस सन्दर्भ में कई जानकारियाँ मिली हैं। आई0क्यू0 को ही सब कुछ समझ कर केवल उसी आधार पर जीवन सम्बन्धी निर्णय लेने की परम्परा अब पीछे छूटती जा रही है। बच्चे और अधिक अच्छी तरह से जीवन जी सकें- इसके लिए भावात्मक बुद्धि सम्बन्धी योग्यताओं पर ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रकार की योग्यताओं के अन्तर्गत आत्म-नियन्त्रण, उत्साह/जोश, दृढ़ता तथा स्वयं को अभिप्रेरित कर सकना सम्मिलित हैं। इन योग्यताओं के लिए बच्चों को प्रशिक्षित किया जा सकता है- तब भी जब प्रकृति ने उन्हें आई0क्यू0 से सम्बन्धित अलग-अलग क्षमतायें प्रदान कर रखी हों।

महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि भाव में बुद्धि कैसे लायी जाए ? How to bring intelligence to emotions?

हमारे जीवन को चलाने के लिए आवश्यक भावात्मक आदतों की नींव बालपन और किशोरावस्था में ही पड़ जाती है। आनुवांशिक विरासत (genetic heritage) से हमें अपने मिजाज/स्वभाव को निर्मित करने वाले भावात्मक तत्व प्राप्त होते हैं। लेकिन मस्तिष्क तंत्रिका की कार्यशैली का असाधारण रूप से परिवर्तित किए जा सकने योग्य होने के कारण मिजाज/स्वभाव किसी का भाग्य नहीं बनता है। जीवन को व्यवस्थित ढंग से चलाने हेतु आवश्यक भावात्मक तथा सामाजिक कौशलों को बच्चों को सिखाया जा सकता है। विद्यालयों में स्व-बोध, आत्म-नियन्त्रण, परानुभूति (Empathy) के विकास तथा दूसरों की बातों को भी सुनने की कला, सहयोग तथा जीवन संघर्षों/द्वंद्वों को सुलझाने के लिए यथोचित कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।

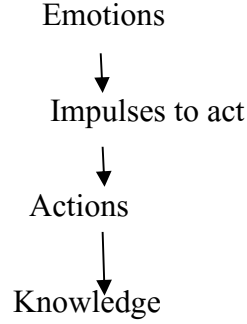
मानव मन में भावों/संवेगों को जो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है उसके कारण हृदय को मस्तिष्क की तुलना में अधिक महत्ता प्राप्त है। वास्तव में मनुष्य मात्र Thinking Species ही नहीं वरन feeling species भी हैं। विचारों की तुलना में अनुभूतियाँ अधिक शक्तिशाली हैं। मनोभावों के अव्यवस्थित होने की दशा में बुद्धि किंकर्तव्य -विमूढ़ हो जाती है।

सामाजिक प्रतिबन्धों के होते हुए भी समय-समय पर हमारे मनोभाव तर्कों पर भारी पड़ जाते हैं।

All emotions are impulses to act. सभी भाव कर्म के प्रेरक हैं।

लैटिन भाषा के शब्द emotion का अर्थ “move away” है।

तथा “ सर्व कर्माखिलम् पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते” and all actions ultimately culminate into knowledge यह श्रीमद्भगवद्गीता का कथन है।



वास्तव में हमारे पास दो 'मन' हैं-

One that thinks	एक जो सोचता है, और
One that feels	एक जो महसूस करता है।

पहला तार्किक मन है, दूसरा भावात्मक मन है। परम्परागत रूप से दिमाग और दिल की बात इसी सन्दर्भ में की जाती रही है।

जीवन के अधिकांश क्षणों में दोनों मन पूर्ण समन्वयन से कार्य करते हैं। विचारों के लिए भाव आवश्यक हैं तथा भावों के लिए विचार। पर जब उद्वेलित परिस्थितियों में भाव विचारों पर भारी पड़ जाते हैं भाव मन- तर्क मन को झुका देता है। तब निर्णय बुद्धि से नहीं- तर्क से नहीं वरन भावनाओं से होने लगते हैं।

मस्तिष्क में भाव सम्बन्धी केन्द्रों के विकसित हो जाने के लाखों वर्ष बाद नियो कोर्टेक्स Neocortex the thinking brain विकसित हुआ। मस्तिष्क का यह भाग 'विचार' का स्थान- seat of thought है। यह भाग इन्द्रियों से प्राप्त सूचनाओं को समझता है। यह महसूस करने तथा सोचने की प्रक्रियाओं को समन्वित करता है। संस्कृति-सभ्यता का उदय और विकास इसी सोचने वाले मन से सम्भव हो सका है।

The ability to have feelings about our feeling.

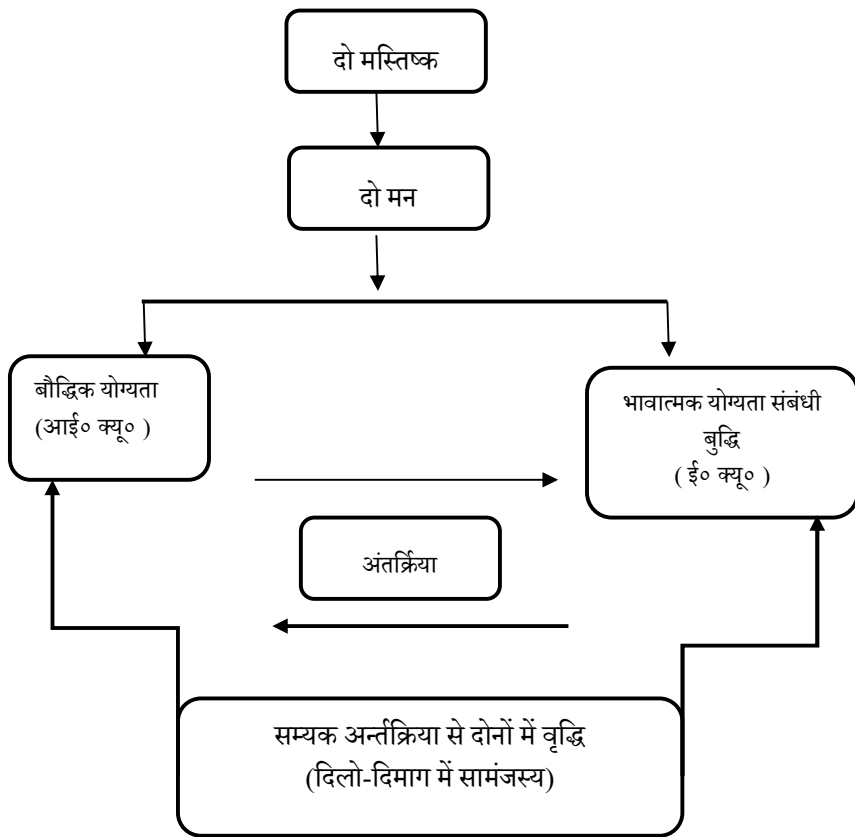
अपने भावों/अनुभूतियों को महसूस कर सकने की योग्यता।

यह भावात्मक बुद्धि का आधार है। जब भाव-अनुभूतियाँ तर्क पर हावी हो जाती हैं तब तार्किक बुद्धि से नहीं वरन भावात्मक बुद्धि का उपयोग अधिक उपयुक्त होता है।

मस्तिष्क का भावात्मक सिस्टम नियो कोर्टेक्स (Neocortex) - The Thinking Brain - (सोचने वाला मन) से स्वतंत्र रहकर भी कार्य कर सकता है। मस्तिष्क के अध्ययन से सम्बन्धी वैज्ञानिक बताते हैं कि हमारे भावों का भी अपना एक मन होता है तथा यह मन हमारे तार्किक मन से भिन्न अपना

स्वयं का दृष्टिकोण विकसित कर सकता है। ये वैज्ञानिक यह भी बताते हैं कि प्रभावशाली ढंग से विचार करने, बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने तथा स्पष्ट ढंग से चिन्तन करने हेतु भाव अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। यही कारण है कि भावात्मक रूप से विचलित या असन्तुलित होने की स्थिति में हम ठीक ढंग से निर्णय नहीं ले पाते हैं।

बच्चों के सन्दर्भ में भावात्मक समस्याएँ सीखने की क्षमता तथा बौद्धिक योग्यता पर हानिकारक प्रभाव डालती हैं। भावात्मक रूप से विचलित होने के कारण बौद्धिक रूप से योग्य होने पर भी विद्यार्थी परीक्षा में अच्छे अंक नहीं प्राप्त कर पाते हैं। वास्तव में तार्किक योग्यता में चिन्तन करने वाला मन तथा भावात्मक मन दोनों ही सम्मिलित होते हैं।



भावात्मक जीवन के साथ अकादमिक बुद्धि (Academic Intelligence) का बहुत कम लेना-देना है। बहुत उच्च अकादमिक बुद्धि वाले व्यक्ति भी क्रोध, भय, चिंता, घृणा, तिरस्कार, उदासी आदि के असंतुलित आवेगों से ग्रस्त होते पाए जाते हैं। अनियंत्रित आवेगों के कारण ये व्यक्ति अपने जीवन के अच्छे पायलट नहीं होते हैं।

जीवन में सफल होना-खुश रहना-संतुष्ट रहना अकादमिक बुद्धि (आई0क्यू0) पर निर्भर नहीं होता है। शोध कार्य के परिणाम बताते हैं कि सम्भवतः इस मामले में आई0क्यू0 का योगदान मात्र 20 प्रतिशत है। शेष 80 प्रतिशत आई0क्यू0 के अतिरिक्त अन्य कारकों पर निर्भर करता है। इस 80 प्रतिशत में भावात्मक बुद्धि एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है।

भावात्मक बुद्धि को निम्नलिखित योग्यताओं के समुच्चय (समूह) के रूप में समझा जा सकता है:-

- स्वयं को कार्य करने हेतु प्रेरित करने की योग्यता।
- आवेगों पर उपयुक्त नियन्त्रण कर सकने की योग्यता।
- हतोत्साहित होने पर पुनः कार्य में संलग्न हो सकने की योग्यता।
- अपने भावों को समझने की योग्यता।
- आवश्यक होने पर तुरन्त संतुष्टि प्राप्त करने को विलम्बित कर सकना (delaying the gratification)
- दुख-व्यथा-विपत्ति पड़ने पर संतुलित रह सकना।
- उम्मीद बनाए रखना-आशान्वित रहना।
- परानुभूति (empathy) की योग्यता (दूसरों के कष्ट, दुख को समझ सकना)।

बचपन से ही हार/पराजय का सामना कर सकना, आवेगों पर नियन्त्रण कर सकना तथा दूसरों के साथ मिल-जुलकर रह सकने की योग्यताएँ विकसित होने लगती हैं। विद्यालय को जीवन कौशलों को अर्जित करने का केन्द्र बनाया जा सकता है। जीने की कला (Art of Living) भी बच्चों को सिखाई जा सकती है।

अब समय आ गया है कि बच्चों की परीक्षा लेकर उन्हें उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण घोषित करना, उन्हें ग्रेड देना, उनकी पारस्परिक तुलना करने पर ही पूरी शक्ति लगाने की जगह उन्हें उनकी सहज योग्यताओं को पहचानने योग्य बनाकर अच्छा इन्सान बनने में उनकी सहायता करनी चाहिए।

अब पता चल गया है कि भावों/अनुभूतियों में 'बुद्धि' होती है तथा इस 'बुद्धि' में वृद्धि की जा सकती है। तर्क करन, चिन्तन करने, सोचने की योग्यता पर भावों का प्रभाव पड़ता है। सोचने की योग्यता पर महसूस

कर सकने की योग्यता के प्रभाव को अब स्वीकार कर लिया गया है। श्रद्धा, विश्वास, आशा, समर्पण तथा प्रेम के महत्व को विद्यालय के क्रिया-कलापों में यथोचित स्थान दिया जाना आवश्यक है।

जीवन की ऊँच-नीच में, उठा-पटक में, जीवन-संघर्षों में अकादमिक बुद्धि के स्थान पर भावात्मक बुद्धि अधिक काम आती है।

यह याद रखना होगा कि मानव को मानव बनाने में भावात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका है। आवेगो/संवेगों की पहचान, भावों/अनुभूतियों के प्रति जागरूक रहना, स्वयं के भावों पर सम्यक नियन्त्रण, दूसरों के भावों की पहचान कर तदनुसार पारस्परिक सम्बन्धों को विकसित कर सकना-आदि की ओर शैक्षिक कार्यक्रमों को ध्यान देना होगा।

3.7 अकादमिक बुद्धि तथा भावात्मक बुद्धि के संदर्भ में बीसवीं शताब्दी में हुए शोध कार्यों के निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी में हुए शोध कार्यों के परिणाम स्वरूप निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातें सामने आई हैं -

1. बुद्धि के प्रत्यय के सम्बन्ध में विभिन्न मानव समुदायों में भिन्नताएँ हैं।
2. बुद्धि के मापन हेतु किए गए अनेकानेक सराहनीय प्रयासों के बावजूद अभी तक सर्वमान्य-सर्वस्वीकार्य उपकरण निर्मित नहीं हो पाए हैं।
3. बुद्धि को विकसित करने में बाह्य शैक्षिक दखल (External Educational Intervention) की भूमिका सीमित तथा सम्भवतः विवादास्पद है।
4. बुद्धि की मात्रा तथा विशेषता के सन्दर्भ में वंशानुक्रम तथा वातावरण के मध्य अन्तर्क्रिया की भूमिका के विषय में अन्तिम निर्णय अभी तक नहीं लिए जा सके हैं।
5. बुद्धि का वह प्रकार जिसके माध्यम से पढ़ाई-लिखाई के सन्दर्भ में सीधा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है तथा जो सामान्यतया तर्क करने, चिंतन करने आदि अमूर्त कार्यों में संलग्न होने के लिए आवश्यक सी जान पड़ती है और जिसको बुद्धि लब्धि (IQ) से व्यक्त करने की सामान्य परम्परा रही है, की सफल जीवन, सुखी, प्रसन्न जीवन के सन्दर्भ में भूमिका सीमित है। यदि इस प्रकार की बुद्धि को 'अकादमिक बुद्धि' (Academic Intelligence) से व्यक्त किया जाए तो कहा जा सकता है कि इस प्रकार की बुद्धि सफल, सुखी तथा प्रसन्न जीवन की गारंटी नहीं है।
6. अकादमिक बुद्धि (जो सामान्यतया आई0क्यू0 से परिलक्षित मानी जाती है) के प्रत्यय के सन्दर्भ में विकसित अनेकानेक सिद्धान्तों, इसके मापन के लिए निर्मित विभिन्न उपकरणों तथा इसके सन्दर्भ में प्राप्त अनेक प्रकार की जानकारियों का ज्ञान यदि किसी एक व्यक्ति को हो जाए तो इन सबसे उसकी 'बुद्धि' विकसित हो जाएगी ऐसा अभी तक प्रमाणित नहीं हुआ है।

7. अकादमिक बुद्धि से भिन्न बुद्धि का एक प्रकार जिसे भावात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) कहा जाता है अत्यधिक उपयोगी तथा महत्वपूर्ण है।
8. भावात्मक बुद्धि सम्बन्धी जानकारी का ज्ञान, उनकी समझ तथा उनका उपयोग इस दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि इस प्रकार का ज्ञान, समझ तथा उपयोग 'भावात्मक बुद्धि' को विकसित करने में उल्लेखनीय योगदान करता है।
The Dictum is "Knowing it, increases it".
9. जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आई0 क्यू0 का योगदान सम्भवतः मात्र 20 प्रतिशत तक ही सीमित है। शेष 80 प्रतिशत में भावात्मक बुद्धि का अत्यधिक प्रभाव है।

निम्नलिखित विवरण को पढ़ने के उपरान्त आपको भावात्मक बुद्धि के प्रत्यय को जानने तथा समझने में आसानी होगी -

आंग्ल भाषा के Emotion का शाब्दिक अर्थ 'भाव' अथवा 'संवेग' है।

The Oxford English Dictionary defines emotion as "any agitation or disturbance of mind, feeling, and passion, any vehement or excited mental state".

डेनियल गोलमान(1995:289)के अनुसार "emotion refers to a feeling and its distinctive thoughts, psychological and biological states, and range of propensities to act". (Goleman, D. Emotional Intelligence. Bantam Book. 1995.)

संवेग अथवा भाव एक अनुभूति तथा उसके विशिष्ट विचारों, मनोवैज्ञानिक तथा जैविक दशाओं तथा कार्य करने के लिए प्रवृत्त होने के क्षेत्र/पहुँच को बताता है।

आधारभूत अथवा प्राथमिक भावों तथा उनके पारस्परिक मिलन, अर्न्तक्रिया, रूपान्तरण तथा सूक्ष्म अन्तर्गों के सन्दर्भ में शोध कर्ताओं द्वारा अनेकानेक विवरण प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। प्राथमिक भावों को समझने हेतु अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए हैं।

3.8 भावात्मक बुद्धि पर सम्पन्न शोध कार्यों के निष्कर्ष

भारतीय परिवेश

तिवारी, माला (1999) द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही छात्राओं की भावात्मक बुद्धि पर किए गए शोध कार्य के परिणाम-

1. आत्म बोध के विभिन्न स्तरों की प्राप्ति की प्रक्रिया भावात्मक बुद्धि से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित है। आत्म बोध सम्बंधी द्वंद को सुलझाने में भावात्मक बुद्धि सहायक होती है। उच्च भावात्मक बुद्धि युक्त छात्राएँ इस द्वंद को अपेक्षाकृत आसानीसे सुलझा लेती हैं।
2. जीवन सम्बंधी विभिन्न द्वंदों को सुलझाने में निम्नलिखित भावात्मक बुद्धि सम्बंधी योग्यताएँ सहायक होती हैं-
 - क. उच्च आत्म बोध
 - ख. भावों के प्रबंधन की योग्यता
 - ग. स्व-प्रेरणा की योग्यता
 - घ. दूसरों के भावों को पहचानने की योग्यता
 - ङ. मानवीय सम्बंधों का निर्वहन करने की योग्यता
3. उच्च आर्थिक स्तर के परिवारों की छात्राएँ निम्न आर्थिक स्तर के परिवारों की छात्राओं की तुलना में अधिक भावात्मक बुद्धि युक्त पाए गईं।
4. उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राएँ निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं की तुलना में अधिक भावात्मक बुद्धि युक्त पाई गईं।
5. उच्च रूप से शिक्षित माता-पिताओं की पुत्रियाँ निम्न रूप से शिक्षित माता-पिताओं की पुत्रियों की तुलना में अधिक भावात्मक बुद्धि युक्त पाई गईं।

कुमार, डी0 (2001) द्वारा प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भावात्मक बुद्धि पर किए गए शोध कार्य के परिणाम –

1. पुरुष शिक्षकों तथा महिला शिक्षकों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत वरिष्ठ शिक्षकों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत कनिष्ठ शिक्षकों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
3. वर्ण आधारित शिक्षकों के वर्गों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
4. शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण अनुभव के आधारित विभिन्न वर्गों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक शहरी क्षेत्रों में कार्यरत प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक भावात्मक बुद्धि युक्त पाए गए।

दीक्षा, चौधरी (2002) द्वारा विश्वविद्यालय तथा कॉलेजों के शिक्षकों की भावात्मक बुद्धि पर किए गए शोध कार्य के परिणाम-

1. पुरुष शिक्षकों तथा महिला शिक्षकों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
2. कला संकाय के शिक्षकों में अपेक्षतया कम भावात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की संख्या उच्च कम भावात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की संख्या से सार्थक रूप से अधिक पाई गई।

पांडे, टी0 सी0 (2002) द्वारा कक्षा 11 में अध्ययनरत किशोर-किशोरियों की भावात्मक बुद्धिपर किए गए शोध कार्य के परिणाम-

1. हिंदु धर्म के विभिन्न वर्णों के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
2. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
3. विभिन्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
4. परिवार के आकार के आधार पर विभाजित विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
5. जन्म क्रम के आधार पर विभाजित विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
6. किशोरों की भावात्मक बुद्धि तथा आधुनिकीकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति के मध्य सार्थक घनात्मक सहसम्बंध पाया गया।
7. किशोरियों की भावात्मक बुद्धि तथा आधुनिकीकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति के मध्य सार्थक घनात्मक सहसम्बंध पाया गया।

देवलाल, जी0 एन0 (2003) द्वारा किशोरावस्था के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि पर किए गए शोध कार्य के परिणाम-

1. उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
2. विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि कला वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक उच्च पाई गई।
3. विद्यार्थियों की सामान्य बौद्धिक योग्यता तथा भावात्मक बुद्धि के मध्य सार्थक घनात्मक सहसम्बंध पाया गया।
4. शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक उच्च पाई गई।

मिश्रा, कामाक्षा (2007) द्वारा शैक्षिक प्रशासकों की भावात्मक बुद्धि पर किए गए शोध कार्य के परिणाम-

1. पुरुष शैक्षिक प्रशासकों तथा महिला शैक्षिक प्रशासकों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।

2. शिक्षक प्रशासकों की भावात्मक बुद्धि तथा उनके आत्मघाती बुद्धि लक्षण सम्मुख से खतरे के मध्य कोई सम्बंध नहीं पाया गया।

जोशी, अमीता (2008) द्वारा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की भावात्मक बुद्धि पर किए गए कार्य के परिणाम-

1. पुरुष प्रशिक्षणार्थियों तथा महिला प्रशिक्षणार्थियों की भावात्मक बुद्धि में अंतर नहीं पाया गया।
2. आरक्षित वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की भावात्मक बुद्धि अनारक्षित वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कम पाई गई।

पांडे, एम0के0 (2010) द्वारा सर्वशिक्षा अभियान से जुड़े शिक्षकों तथा अधिकारियों की भावात्मक बुद्धि पर किए शोध कार्य के परिणाम-

1. सर्वशिक्षा अभियान से जुड़े शिक्षकों तथा अधिकारियों के लिंग के आधार पर विभाजित दो वर्गों की भावात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं पाया गया।
2. सर्वशिक्षा अभियान से जुड़े इन व्यक्तियों की भावात्मक बुद्धि तथा उनकी जीवन के प्रति संतुष्टि के मध्य सार्थक घनात्मक सहसम्बंध पाया गया।
3. व्यावसायिक अनुभव के आधार पर विभाजित इन व्यक्तियों के दो समूहों की भावात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। अपेक्षतया कम अनुभवी वर्ग की भावात्मक बुद्धि अधिक अनुभवी वर्ग की तुलना में उच्च पाई गई।

3.9 सारांश

वर्ष 1990 में येल विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक पीटर सेलोवे तथा न्यूहेम्पशायर विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक जॉन मेयर द्वारा संयुक्त रूप से भावात्मक बुद्धि के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया गया। वर्ष 1995 में डेनियल गोलमान की पुस्तक के प्रकाशन से भावात्मक बुद्धि के महत्व से अकादमिक जगत परिचित हुआ।

भावात्मक बुद्धि के पाँच आयामों से सम्बन्धी योग्यताएँ हैं- स्वयं के भावों को जानना, भावों को नियंत्रित/व्यवस्थित करना, स्वयं को अभिप्रेरित करना, दूसरों के भावों की पहचान कर सकना, मानवीय सम्बन्धों को निभाना।

क्रोध, उदासी, भय, आनंद, प्रेम, आश्चर्य, घृणा तथा लज्जा भावात्मक बुद्धि में सन्निहित प्रमुख प्राथमिक भाव हैं।

कुछ वर्षों पूर्व तक मनोविज्ञान भावों/संवेगों के विषय में बहुत कम जानता था। पिछले दो दशकों से इस सन्दर्भ में कई जानकारियाँ मिली हैं। बच्चे और अधिक अच्छी तरह से जीवन जी सकें- इसके लिए

भावात्मक बुद्धि सम्बन्धी योग्यताओं पर ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रकार की योग्यताओं के अन्तर्गत आत्म-नियन्त्रण, उत्साह/जोश, दृढ़ता तथा स्वयं को अभिप्रेरित कर सकना सम्मिलित हैं। अब पता चल गया है कि भावों/अनुभूतियों में 'बुद्धि' होती है तथा इस 'बुद्धि' में वृद्धि की जा सकती है। तर्क करने-चिन्तन करने, सोचने की योग्यता पर भावों का प्रभाव पड़ता है। सोचने की योग्यता पर महसूस कर सकने की योग्यता के प्रभाव को अब स्वीकार कर लिया गया है। श्रद्धा, विश्वास, आशा, समर्पण तथा प्रेम के महत्व को विद्यालय के क्रिया-कलापों में यथोचित स्थान दिया जाना आवश्यक है।

आत्म बोध के विभिन्न स्तरों की प्राप्ति की प्रक्रिया भावात्मक बुद्धि से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित है। आत्म बोध सम्बंधी द्वंद को सुलझाने में भावात्मक बुद्धि सहायक होती है।

3.10 शब्दावली

1. **बुद्धि (Intelligence):-** चुनौतियों का सामना करते समय, संसाधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग करने, सविवेक चिंतन करने और जगत को समझने की क्षमता।
2. **भावात्मक बुद्धि-** अपने भावों/अनुभूतियों को महसूस कर सकने की योग्यता
3. **बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient, IQ):-** कालानुक्रमिक आयु से मानसिक आयु का अनुपात इंगित करने वाला मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त एक सूचकांक।

3.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. वर्ष 1990 में येल विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक पीटर सेलोवे तथा न्यूहेम्पशायर विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक जॉन मेयर द्वारा संयुक्त रूप से भावात्मक बुद्धि के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया गया।
2. डेनियल गोलमान
3.
$$IQ = \frac{M.A.}{C.A} \times 100$$
4. भावात्मक बुद्धि में सन्निहित प्रमुख प्राथमिक भावों के नाम हैं- क्रोध, उदासी, भय, आनन्द, प्रेम, आश्चर्य, घृणा, लज्जा

3.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Cooper, R.K. & Sawaf, A Executive E.Q. Orion Publishing Group Ltd., Great Britain, 1997

2. Goleman, D. Emotional Intelligence. Bantom Books, New York, 1995
3. Gottman, J. The Heart of Parenting: Raising An Emotionally Intelligent Child, 1996
4. Epstein, S. You're Smarter than You Think, Simon & Schuster. New York, 1993
5. Pandey, M.K. Study of Emotional Intelligence and Satisfaction with Life of Education for All (EFA) Programme Functionaries of Uttarakhand in relation to their Gender and Academic Factors. Ph.D (Education) Dissertation, Kumaon University, Nainital, 2010.
6. Tewary, Mala. Study of Identity Statuses and emotional Intelligence of Female College students in relation to their Gender and Professional Experience. Ph.D (Education) Dissertation, Kumaon University, Nainital, 1999.
7. Kumar, D. Study of Emotional Intelligence of primary School Teachers in relation to their Gender, age, Caste and Teaching experience. M.Ed. Dissertation, Kumaon University, Nainital, 2001.
8. Chaudhary, Diksha. Study of Self-destructive Intelligence Syndrome and Emotional Intelligence of University and College Teachers in relation to Gender and Academic factors. Ph.D (Education) Dissertation, Kumaon University, Nainital, 2002.
9. Deolal, G.N. Study of Emotional Intelligence and general Intellectual Ability of Kumaoni Adolescents in relation to their Academic Achievement and Academic Stream. Ph.D (Education) Dissertation, Kumaon University, Nainital, 2003.
10. Mishra, Kamaksha. Study of the vulnerability towards self-destructive Intelligence Syndrome and emotional intelligence related abilities of educational Administrators of Kumaon Region of Uttarakhand. Ph.D (Education) Dissertation, Kumaon University, Nainital, 2007.
11. Joshi, Amita. Study of Spiritual Intelligence and Emotional Intelligence related abilities of Teacher Trainees in relation to their gender and some socio-educational factors. Ph.D (Education) Dissertation, Kumaon University, Nainital, 2008.

3.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. भावात्मक बुद्धि के प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए इसे परिभाषित कीजिए।
2. भावात्मक बुद्धि और अकादमिक बुद्धि के मध्य के महत्वपूर्ण अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
3. भावात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों का वर्णन कीजिए।
4. मानव जीवन में भावात्मक बुद्धि के महत्व पर विवेचनात्मक टिप्पणी लिखिए।

इकाई 4 - बुद्धि परीक्षण

Intelligence Tests

- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 उद्देश्य
- 4.3 बुद्धि की प्रकृति
- 4.4 बुद्धि के सिद्धांतों को प्रदर्शित करती सारणी
- 4.5 बुद्धि के प्रकार
- 4.6 बुद्धि मापन या परीक्षण का अर्थ
- 4.7 बुद्धि मापन या परीक्षण का अर्थ
- 4.8 बुद्धि मापांक के अवयव
- 4.9 बुद्धि लब्धि प्राप्तांक का वितरण
- 4.10 बुद्धि लब्धि की सीमाएँ
- 4.11 बुद्धि लब्धि की सीमाएँ
- 4.12 बुद्धि परीक्षण की उपयोगिताएँ
- 4.13 बुद्धि परीक्षणों के प्रकार
- 4.14 बुद्धि परीक्षणों की समानताएँ एवं विषमताएँ
- 4.15 भारत में विकसित कुछ मुख्य बुद्धि परीक्षण
- 4.16 बुद्धि परीक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन
- 4.17 बुद्धि परीक्षण की सीमाएँ
- 4.18 सारांश
- 4.19 शब्दावली
- 4.20 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 4.21 सन्दर्भ ग्रंथ सूची
- 4.22 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

मानव अपनी बुद्धि के कारण ही अन्य सभी प्राणियों से सर्वश्रेष्ठ है। बुद्धि वह योग्यता है जिससे मनुष्य अपनी नई आवश्यकताओं के अनुकूल अपने चिंतन को चेतन रूप से अभियोजित कर लेता है। बुद्धि को मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग तरह से परिभाषित किया है। आज तक बुद्धि की कोई सर्वसम्मत परिभाषा नहीं है। कोई इसे समायोजन की योग्यता मानते हैं तो कोई मानव की समस्त वैश्विक योग्यता। बुद्धिचाहे मनुष्य की जैसी भी योग्यता हो लेकिन ये मानव की खुद के लिए व अंतोगत्वा राष्ट्र की प्रगति के लिए एक अहम निर्धारक तत्व है। अतः इस योग्यता को जानने, जाँचने व परखने के लिए मनुष्य सभ्यता के शुरुआती दौर से ही प्रयासरत व जिज्ञासु रहा है। चीनी सभ्यता में परीक्षा प्रणाली के माध्यम से लोक-नियोजन प्रक्रिया में वैधानिकता और वैज्ञानिकता लाना यह लोगों के बुद्धि मापन से ही संबंधित रहा है। प्राचीन काल में भारत में शास्त्रार्थ का आयोजन, दार्शनिक प्रश्नों त्तरी के माध्यम से विवेक व ज्ञान का परीक्षण, बुद्धि के मापन कार्य से ही संबंधित है। आजकल विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु परीक्षा का आयोजन हो या नौकरी पाने के लिए साक्षात्कार की प्रक्रिया से गुजरना सभी किसी न किसी तरह बुद्धि मापन से संबंधित है। अर्थात् बुद्धि मापन की प्रक्रिया को जानना व समझना, बहुत ही आवश्यक है ताकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बहुत ही प्रभावशाली बनाया जा सके। अतः प्रस्तुत इकाई में आपको बुद्धि मापन के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी। इस क्रम में आपको संक्षिप्त रूप से बुद्धि की प्रकृति और बुद्धि मापन से संबंधित तथ्यों को भी बताया जाएगा।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. बुद्धि की प्रकृति को बता पाएंगे।
2. बुद्धि के मापन के संप्रत्यय की व्याख्या कर सकेंगे।
3. बुद्धि मापन के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे।
4. बुद्धि के स्वरूप का वर्णन कर सकेंगे।
5. बुद्धि मापन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की व्याख्या कर पाएंगे।
6. बुद्धि मापन के गुण-दोषों को स्पष्ट कर सकेंगे।
7. बुद्धि परीक्षणों का वर्गीकरण कर सकेंगे।

4.3 बुद्धि की प्रकृति

बुद्धि एक समग्र क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्य पूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिन्तन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है (वेश्लर, 1944) अर्थात् बुद्धि को कई तरह की क्षमताओं का योग माना है। स्टोडार्ड (1941) के अनुसार “बुद्धि उन क्रियाओं को समझने की

क्षमता है जो जटिल, कठिन, अमूर्त, मितव्यय, किसी लक्ष्य के प्रति अनुकूलनशील, सामाजिक व मौलिक हो तथा कुछ परिस्थिति में वैसी क्रियाओं को करना जो शक्ति की एकाग्रता तथा सांवेगिक कारकों का प्रतिरोध दिखाता हो। राबिन्सन तथा राबिन्सन, 1965 ने भी बुद्धि को संज्ञानात्मक व्यवहारों का संपूर्ण समूह माना है जो व्यक्ति में सूझ द्वारा समस्या समाधान करने की क्षमता, नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता, अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता तथा अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता को परिलक्षित करता है। बोरिंग 1923, के अनुसार बुद्धि वही है, जो बुद्धि परीक्षण मापता है। इन सभी तथ्यों से बुद्धि की प्रकृति के बारे में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला जा सकता है-

1. बुद्धि वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करने की क्षमता है।
2. बुद्धि सीखने की क्षमता है।
3. बुद्धि अमूर्त चिंतन करने की क्षमता है।
4. बुद्धि विभिन्न क्षमताओं का समग्र योग है।
5. यह व्यक्ति के समस्या समाधान करने की योग्यता को प्रदर्शित करता है।
6. बुद्धि द्वारा ही किसी समस्या के समाधान में गत अनुभूतियों का लाभ मिलता है।
7. बुद्धि विवेकशील चिंतन करने की योग्यता है।
8. बुद्धि को प्रत्यक्ष व्यवहार के आधार पर मापा जा सकता है।
9. बुद्धि के विकास के लिए आनुवांशिकी व वातावरण दोनों ही उत्तरदायी कारक हैं।
10. यह अपनी ऊर्जा को किसी कार्य को करने में संकेन्द्रण की क्षमता है।
11. बुद्धि मानसिक परिपक्वता का द्योतक है।
12. यह आगमन विधि व निगमन विधि द्वारा तर्क करने की योग्यता है।
13. यह उच्च श्रेणी के चिंतन प्रक्रिया के लिए आवश्यक है।
14. यह एक प्रत्यक्षण/सूझ की योग्यता है।
15. यह जटिल, कठिन, मितव्यय, अमूर्त व सामाजिक मूल्यों वाले कार्य को करने की योग्यता है।
16. बुद्धि शाब्दिक व अशाब्दिक योग्यता है।
17. बुद्धि एक परिकल्पित सम्प्रत्यय है।
18. बुद्धि को सतर्कता, धारणा, विचार एवं प्रतीक, स्वयं की आलोचना करने की क्षमता, आत्मविश्वास और तीव्र प्रेरणा की क्षमता के रूप में समझा जा सकता है।
19. बुद्धि में व्यक्तिगत भिन्नताएँ पाई जाती हैं।
20. बुद्धि को किसी कार्य करने की प्रणाली के द्वारा अवलोकन किया जा सकता है।

बुद्धि को समझने के लिए बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है व सिद्धांतों के रूप में इसे आबद्ध किया है। ये सिद्धान्त बुद्धि की मापन की प्रकृति को समझने के लिए आवश्यक हैं जिसकी वृहत चर्चा पूर्व के अध्याओं में की गई है। यहाँ केवल इन सिद्धांतों के नाम की पुनरावृत्ति करेंगे

ताकि आपको इन सिद्धांतों को पुनः याद करने में आसानी हो व बुद्धि मापन की प्रक्रिया को समझने में सरलता का अनुभव हो।

4.4 बुद्धि के सिद्धांतों को प्रदर्शित करती सारणी

क्र० सं०	सिद्धान्त का नाम	सिद्धान्त के विकासकर्ता	वर्ष	मुख्य सन्दर्भ
1.	एक तत्व सिद्धान्त Monarchic theory	अल्फ्रेड बिन	1903	एक तत्व अर्थात् नई परिस्थिति के साथ समायोजन की योग्यता
2.	द्वि-तत्व सिद्धांत Two Factor/Diarchic Theory	चार्ल्स स्पीयरमैन	1904	सामान्य कारक (General Factor) व विशिष्ट कारक (Specific Factor) बुद्धि = G+S
3.	बहुतत्वीय सिद्धांत या परमाण्विक सिद्धांत Multifactor Theory or Anarchic Theory Atomistic Theory	ई०एल० थॉर्नडाइक		बुद्धि को कार्य की चार विशेषताओं के आधार पर मापा जा सकता है- 1. स्तर (कार्य की कठिनाई सूचकांक) 2. परास (कार्य की संख्या) 3. क्षेत्र (परिस्थितियों की संख्या) 4. गति (कार्य को पूर्ण करने की समय सीमा)
4.	प्राथमिक मानसिक योग्यता का सिद्धांत Primary Mental Abilities (PMA) Theory	एल०एल० थर्स्टन इनके मुख्य पुस्तक का नाम जिसमें इस सिद्धांत का जिक्र है:- 1. The Nature of Intelligence(1924) 2.Primary Mental Abilities (1938) 3.Multifactor Analysis (1947)		बुद्धि को सात प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का योग माना है ● स्थानिक संबंध Spatial Relation ● प्रत्यक्षात्मक गति Perceptual Speed ● संख्यात्मक योग्यता Numerical Ability ● वाचिक अवबोधन Verbal Comprehension ● स्मरण Memory ● शब्द प्रवाह Word Fluency ● तार्किक योग्यता Reasoning
4.	न्यादर्शन सिद्धांत Sampling Theory	जी०एच० थाम्पसन	1939	बुद्धि मानसिक योग्यताओं का योग है।
5.	मानसिक कार्यो का त्रि	आर्थर जेन्सन		बुद्धि में मानसिक योग्यताओं का दो स्तर होता है:-

	योग्यता सिद्धांत Triarchic Theory of Mental Functioning			1. साहचर्यात्मक अधिगम क्षमता (Associative Learning Capacity) 2. संज्ञानात्मक क्षमता अथवा, संप्रत्यात्मक क्षमता (Conceptual Abilities)
6.	बुद्धि का संरचना मॉडल Structure of Intellect Model	जे0पी0 गिलफोर्ड	1967	बौद्धिक विशेषताओं को तीन विभागों में वर्गीकृत:- 1. संक्रियाएँ (Process) – <ul style="list-style-type: none"> ● संज्ञान ● स्मृति अभिलेखन ● स्मृति प्रतिधारण ● अपसारी उत्पादन ● अभिसारी उत्पादन ● मूल्यांकन 2. विषयवस्तु (Content) <ul style="list-style-type: none"> ● चाक्षुष (Visual) ● श्रवणात्मक (Auditory) ● प्रतीकात्मक (Symbolic) ● अर्थ विषयक (Semantic) ● व्यवहारात्मक (Behavioural) 3. उत्पाद (Product Output) <ul style="list-style-type: none"> ● इकाई ● वर्ग ● संबंध ● व्यवस्था ● रूपांतरण ● निहितार्थ
7.	बहुबुद्धि का सिद्धान्त Multiple Intelligence	हावर्ड गार्डनर (Howard Gardner)	1983	बुद्धि को नौ प्रकार की योग्यताओं का योग माना गया है:- <ul style="list-style-type: none"> ● भाषागत ● तार्किक /गणितीय ● दैशिक ● संगीतात्मक ● शारीरिक गतिसंवेदी

				<ul style="list-style-type: none"> • अंतःवैयक्तिक • अंतर्वैयक्तिक • प्रकृतिवादी • अस्तित्वात्मक
8.	बुद्धि का त्रि- तंत्र सिद्धांत Triarchic Theory of Intelligence	राबर्ट स्टर्नबर्ग Robert Sternberg	1985	<p>बुद्धि तीन प्रकार की होती है:-</p> <ul style="list-style-type: none"> • घटकीय बुद्धि (Componential Intelligence) • आनुभविक बुद्धि (Experiential Intelligence) • सांदर्भिक बुद्धि (Contextual Intelligence)
9.	PASS बुद्धि का मॉडल	J.P. Das Jack Naglieri Kirby	1994	<p>बौद्धिक क्रियाएँ तीन तंत्रकीय या स्नामुविक तंत्रों की क्रियाओं द्वारा संपादित होती है:-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. योजना (Planning) 2. अवधान/भाव प्रबोधन Attention/Arousal 3. सहकालिक तथा आनुक्रमिक प्रक्रमण (Simultaneous and Successive Process)
10.	बुद्धि का पदानुक्रम सिद्धांत	पी०एफ० वर्नन P.F. Vernon	1950	<p>बुद्धि मानवीय योग्यताओं का पदानुक्रमित व्यवस्थापन है।</p>
11.	कैटेल का बुद्धि सिद्धांत	आर०बी० कैटेल R.B. Cattell	1963, 1987	<p>बुद्धि में दो महत्वपूर्ण तत्व होते हैं:-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. तरल बुद्धि Fluid Intelligence 2. ठोस बुद्धि Crystallized Intelligence
12.	बुद्धि का द्वि स्तरीय	कैम्पियन एवं ब्राउन (Campion & Brown)		<p>बौद्धिक कार्य दो स्तरों पर सम्पन्न होता है:-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. जैविक आधारित संरचना प्रणाली 2. वातावरण आधारित क्रियान्वयन प्रणाली

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. बुद्धि का द्वि-तत्व सिद्धांत _____ द्वारा प्रतिपादित किया गया है।
2. कैटेल के बुद्धि सिद्धांत में दो महत्वपूर्ण तत्व हैं _____ और _____।
3. बुद्धि का त्रि- तंत्र सिद्धांत _____ द्वारा प्रतिपादित किया गया है।
4. बुद्धि का PASS मॉडल में P का अर्थ _____ है।

4.6 बुद्धि के प्रकार

बुद्धि के विभिन्न परिभाषाओं और सिद्धांतों से इसके स्वरूप व प्रकार का पता चलता है। बुद्धि का स्वरूप कुछ ऐसा होता है जिसे किसी एक कारक (Factor) या क्षमता के आधार पर नहीं समझा जा सकता है। बुद्धि विभिन्न क्षमताओं के समग्रता को परिलक्षित करती है। ई0एल0 थॉर्नडाइक, डोनेल्ड हेब और वर्नन जैसे मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को निम्न प्रकारों में विभक्त किया है:-

1. आनुवांशिक क्षमता के रूप में बुद्धि (Intelligence as Genetic Capacity):- इसके अनुसार बुद्धि को पूर्णतः वंशानुगत माना जाता है। इसे हेबब (Hebb, 1978) ने बुद्धि 'ए' (Intelligence 'A') की संज्ञा दी है। स्पष्टतः यह बुद्धि का एक जीनोटाइपिक (Genotypic) प्रकार है तथा इसमें बुद्धि को व्यक्ति का आनुवांशिक गुण माना जाता है।
2. अवलोकित व्यवहार के रूप में बुद्धि (Intelligence as an observable behaviour):- इस परिप्रेक्ष्य में बुद्धि को आनुवांशिकता व वातावरण के अंतःक्रिया का परिणाम माना जाता है। जिस सीमा तक व्यक्ति नए वातावरण या अपने वर्तमान वातावरण के साथ समायोजित करता है, इस सीमा तक उसे बुद्धिमान समझा जाता है। इसे हेबब ने बुद्धि 'बी' (Intelligence 'B') की संज्ञा दी है जिसका अर्थ फेनोटाइपिक (Phenotypic) प्रारूप पर आधारित है।
3. परीक्षण श्रेयांक के रूप में बुद्धि (Intelligence as test score):- बुद्धि एक परिकल्पनात्मक संप्रत्यय है। इसके मापन के लिए इसका संक्रियात्मक परिभाषा का होना आवश्यक है। बोरिंग के अनुसार "बुद्धि वही है जो बुद्धि परीक्षण मापता है"। इसे हेबब ने बुद्धि 'सी' (Intelligence 'C') की संज्ञा दी है।

सैट्लर (Sattler, 1974) के अनुसार बुद्धि 'ए' 'बी' तथा 'सी' से संबंधित बहुत से ऐसे कारक हैं जो परीक्षार्थी के परीक्षण निष्पादन को प्रभावित करते हैं। इन कारकों में परीक्षार्थी की संज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक विशेषताएँ, परीक्षक की विशेषताएँ व परीक्षा की विशेषताओं से संबंधित तत्व हैं। 'ए' 'बी' तथा 'सी' बुद्धि में सिर्फ 'सी' बुद्धि को ही परीक्षण द्वारा मापा जा सकता है।

थॉर्नडाइक के अनुसार बुद्धि को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है:-

- i. अमूर्त बुद्धि (Abstract Intelligence):- यह बुद्धि अमूर्त समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है। यह विचारों के परिचालित करने की क्षमता से संबंधित है।

- ii. मूर्त बुद्धि (Concrete Intelligence):- यह बुद्धि मूर्त समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है। यह वस्तुओं के परिचालित करने की क्षमता से संबंधित है।
- iii. सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence):- यह बुद्धि सामाजिक समायोजन की क्षमता से संबंधित है। यह बुद्धि व्यक्तियों के सामाजिक संबंधों को बेहतर बनाने के लिए काम आती है।

इसके अतिरिक्त आजकल बुद्धि के और दो प्रकारों की चर्चा की जाती है, जो निम्नलिखित हैं:-

1. संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence):- यह बुद्धि अपने संवेग व दूसरों के संवेगों को समझने में सहायक है। यह संवेगात्मक समस्याओं को हल करने में मदद करती है।
2. आध्यात्मिक बुद्धि (Spiritual Intelligence):- यह व्यक्ति के आध्यात्मिक परिपक्वता का सूचकांक है। ऐसी बुद्धि वाले व्यक्ति स्व अनुशासित, कर्तव्य परायण, परोपकारी, चेतना का विकसित स्वरूप वाले होते हैं। इसके सोचने का तरीका मानवतावादी उपागम पर आधारित होता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

5. _____ बुद्धि व्यक्ति के आध्यात्मिक परिपक्वता का सूचकांक है।
6. _____ बुद्धि अपने संवेग व दूसरों के संवेगों को समझने में सहायक है।
7. _____ बुद्धि अमूर्त समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है।
8. बुद्धि _____ जिसका अर्थ फेनोटाइपिक (Phenotypic) प्रारूप पर आधारित है।
9. “बुद्धि वही है जो बुद्धि परीक्षण मापता है”। इसे हेबब ने बुद्धि _____ की संज्ञा दी है।

उपरोक्त संदर्भ में आपने बुद्धि की प्रकृति, परिभाषा सिद्धान्त व प्रकार का अध्ययन किया जो कि बुद्धि के अर्थ, मापन व इसके प्रकार को समझने के लिए अत्यावश्यक है। अब यहाँ हम लोग बुद्धि की मापन के अर्थ व इसके प्रकार का अध्ययन करेंगे।

4.7 बुद्धि मापन या परीक्षण का अर्थ

बाह्य व्यवहार द्वारा मानसिक योग्यता, संज्ञानात्मक परिपक्वता और समायोजन की क्षमता का मापन बुद्धि मापन कहलाता है। बुद्धि मापन का कार्य विभिन्न प्रकार के परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है। इस परीक्षणों में सम्मिलित पदों की प्रकृति व प्रकार के आधार पर बुद्धि लब्धि सूचकांक तैयार किया जाता है।

बुद्धि परीक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:- बुद्धि मापन की अनौपचारिक क्रिया शायद मानव सभ्यता के शुरुआत से ही रही है। मानव सभ्यता के शुरुआती दौर से ही वैयक्तिक विभिन्नताओं को जानने के विभिन्न तरीकों का प्रयोग होता आ रहा है। विभिन्नता के कारण ही प्रायः एक ही पाठ्य सामग्री, पाठ्य

विधि एवं सुविधाओं के उपलब्ध कराये जाने के बावजूद भी दो छात्र समान रूप से प्रगति नहीं कर पाते हैं। उनके अनुसार वह योग्यता जो व्यक्ति को सुगमता, शीघ्रता एवं उचित प्रकार से सीखने के लिए प्रेरित करती है, बुद्धि कहलाती है। व्यक्ति के भौतिक स्वरूप में अंतर के साथ ही बुद्धि में भी अन्तर पाया जाता है। निम्नलिखित समय रेखा के माध्यम से बुद्धि मापन के ऐतिहासिक विकास को समझा जा सकता है।

- 1775-78 में लेवेटर ने चेहरे से व्यक्ति के मानसिक योग्यताओं को आकलित करने की बात बताई।
- 1807 में गॉल ने सिर व ललाट की विशेषता को बुद्धि परीक्षण का आधार माना।
- 1871 में लम्ब्रोजो ने सिर की बनावट से बुद्धि को पता लगाने के ढंग बताए।
- 1805 में इंग्लैण्ड के फ्रांसिस गाल्टन ने बुद्धि के मापने में सांख्यिकीय रीति अपनाने की बात पर जोर डाला।
- 1904 में स्पीयरमैन ने बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत का विकास सहसंबंध विधि द्वारा किया।
- 1890 आर०बी० कैटिल ने 'मानसिक परीक्षण व मूल्यांकन' Mental test and Evaluation नामक अपनी पुस्तक में सर्वप्रथम 'मानसिक परीक्षण' शब्द की शुरुआत की।
- 1905 में अल्फ्रेड बिने ने औपचारिक रूप से बुद्धि परीक्षण की शुरुआत की।
- 1908 में बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण मापदंड का पहला संशोधन हुआ और इसमें इन्होंने मानसिक आयु का संप्रत्यय दिया।
- 1910 में बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण का दूसरा संशोधन हुआ।
- 1912 में विलियम स्टर्न ने बुद्धि को मापने के लिए मानसिक आयु व तैथिक आयु के अनुपात को प्रयोग करने की सलाह दी।
- 1916 में मानसिक आयु व तैथिक आयु के अनुपात में 100 से गुणन को बुद्धिलब्धि की संज्ञा दी।

4.8 बुद्धि मापांक के अवयव (Components of Intelligence Quotient)

1. **तैथिक या कालक्रमिक आयु (Chronological Age):-** किसी व्यक्ति के वास्तविक जन्मतिथि से वर्तमान समय के अवधि को तैथिक या कालक्रमिक आयु की संज्ञा दी जाती है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की कालक्रमिक आयु (chronological age, CA) जन्म लेने के बाद बीत चुकी अवधि होती है। इसकी जानकारी व्यक्ति (परीक्षार्थी) या उनके माता-पिता से पूछकर अथवा जन्मकुंडली, विद्यालय के रिकार्ड (Record) को देखकर प्राप्त की जा सकती है।

2. **मानसिक आयु (Mental Age):-** सर्वप्रथम 1905 में अल्फ्रेड बिनने तथा थियोडोर साइमन (Theodore Simon) ने औपचारिक रूप में बुद्धि के मापन का सफल प्रयास किया। 1908 में अपनी मापनी का संशोधन करते समय उन्होंने मानसिक आयु (Mental Age, MA) का संप्रत्यय दिया। मानसिक आयु के माप का अभिप्राय है, किसी व्यक्ति के मानसिक परिपक्वता का सूचकांक अर्थात् किसी व्यक्ति का बौद्धिक विकास अपनी आयु वर्ग के अन्य व्यक्तियों की तुलना में कितना हुआ है। यदि किसी बच्चे की मानसिक आयु 5 वर्ष है तो इसका अर्थ है कि किसी बुद्धि परीक्षण पर उस बच्चे का निष्पादन 5 वर्ष वाले बच्चे के औसत निष्पादन के बराबर है।
3. **बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient, IQ):-** 1912 में विलियम स्टर्न ने बुद्धि को मापने के लिए मानसिक लब्धि के संप्रत्यय का विकास किया जिसका सूत्र निम्न प्रकार से है।

$$\text{मानसिक लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{कालानुक्रमिक आयु}}$$

1916 में टरमन (Terman) ने मानसिक लब्धि के स्थान पर बुद्धि लब्धि के संप्रत्यय को जन्म दिया।

$$\text{बुद्धि लब्धि (IQ)} = \frac{\text{मानसिक आयु (MA)}}{\text{कालानुक्रमिक आयु (CA)}} \times 100$$

अर्थात् किसी व्यक्ति की मानसिक आयु को उसकी कालानुक्रमिक आयु से भाग देने के बाद उसको 100 से गुणा करने से उसकी बुद्धि लब्धि प्राप्त हो जाती है। गुणा करने में 100 की संख्या का उपयोग दशमलव बिन्दु समाप्त करने के लिए किया जाता है।

इस सूत्र के माध्यम से बुद्धि लब्धि के मापन में तीन प्रकार की स्थितियाँ हो सकती हैं:-

1. जब मानसिक आयु (MA) = कालानुक्रमिक आयु (CA) तो IQ = 100 होगा।
2. जब मानसिक आयु (MA) > कालानुक्रमिक आयु (CA) तो IQ का मान 100 से अधिक होगा।
3. जब मानसिक आयु (MA) < कालानुक्रमिक आयु (CA) तो IQ का मान 100 से कम होगा।

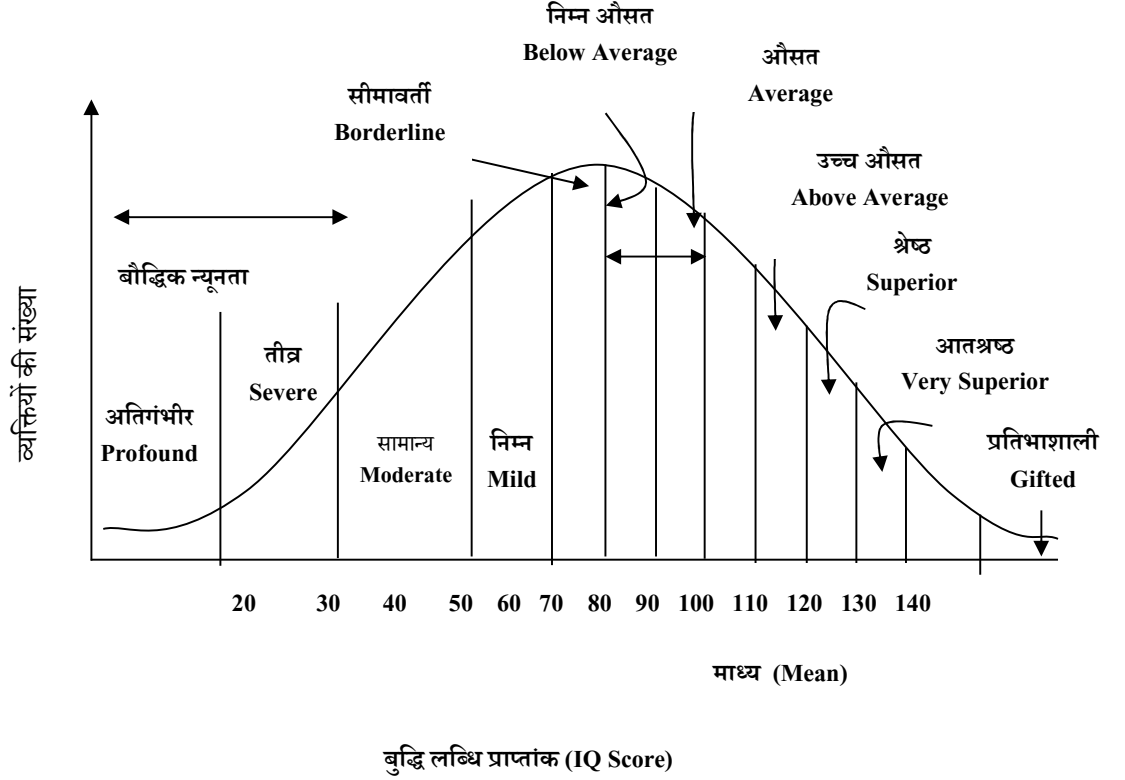
उदाहरण के लिए एक 8 वर्ष के बच्चे की मानसिक आयु (MA) 10 वर्ष हो तो उसकी बुद्धि लब्धि (IQ) 125 $(10/8 \times 100)$ होगी। परन्तु उसी बच्चे की मानसिक आयु यदि 6 वर्ष होती तो उसकी बुद्धि लब्धि 75 $(6 \times 100/8)$ होती। प्रत्येक आयु स्तर पर व्यक्तियों की समष्टि की औसत बुद्धि लब्धि 100 होती है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

10. बुद्धि लब्धि (IQ) = $\frac{\text{कालानुक्रमिक आयु (CA)}}{\text{मानसिक आयु (MA)}} \times 100$ (सत्य / असत्य)
11. जब मानसिक आयु (MA), कालानुक्रमिक आयु (CA) के समान हो तो IQ का मान 100 से अधिक होगा। (सत्य / असत्य)
12. जब मानसिक आयु (MA) > कालानुक्रमिक आयु (CA) तो IQ का मान 100 से अधिक होगा। (सत्य / असत्य)
13. जब मानसिक आयु (MA) < कालानुक्रमिक आयु (CA) तो IQ का मान 100 से अधिक होगा। (सत्य / असत्य)

4.9 बुद्धि लब्धि प्राप्तांक का वितरण

बुद्धि लब्धि प्राप्तांक का वितरण किसी जनसंख्या में सामान्य प्रायिकता वितरण के अनुसार होता है। अधिकांश लोगों का बुद्धि लब्धि प्राप्तांक मध्य क्षेत्र में तथा बहुत कम लोगों के बुद्धि लब्धि प्राप्तांक बहुत अधिक या बहुत कम होता है। बुद्धि लब्धि प्राप्तांकों का यदि एक आवृत्ति वितरण वक्र (Frequency Distribution Curve) बनाया जाए तो यह लगभग एक घंटाकार वक्र (Bell Shaped Curve) के सदृश होता है। इस वक्र को सामान्य वक्र (Normal Curve) कहा जाता है। ऐसा वक्र अपने केन्द्रीय माध्य के दोनों ओर सममित (Symmetrical) आकार का होता है। एक सामान्य वितरण के रूप में बुद्धि लब्धि प्राप्तांकों के वितरण को निम्न रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है।



बुद्धि लब्धि प्राप्तांक (IQ Score)

किसी भी जनसंख्या में बुद्धि लब्धि प्राप्तांक का वितरण सामान्य वक्र के अनुरूप होता है। किसी जनसंख्या की बुद्धि लब्धि प्राप्तांक का माध्य(औसत) 100 होता है। जिन व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि प्राप्तांक 90 से 110 के बीच होती है उन्हें सामान्य बुद्धि वाला कहा जाता है। जिनकी बुद्धि लब्धि 70 से भी कम होती है वे मानसिक मंदता (Mental Retardation) से प्रभावित समझे जाते हैं और जिनकी बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है वे आसाधारण रूप से प्रतिभाशाली समझे जाते हैं। किसी व्यक्ति के बुद्धि लब्धि प्राप्तांक की व्याख्या निम्न तालिका की मदद से की जा सकती है-

बुद्धि लब्धि के (IQ) के आधार पर व्यक्तियों का वर्गीकरण

(IQ) वर्ग	वर्णनात्मक वर्गनाम	जनसंख्या प्रतिशत
130+	अतिश्रेष्ठ	2.2
120-130	श्रेष्ठ	6.7
110-119	उच्च औसत	16.1
90-109	औसत	50.0
80-89	निम्न औसत	16.1
70-79	सीमावर्ती मानसिक मंद	6.7
55-69	निम्न मानसिक मंद	} 2.2
40-54	सामान्य मानसिक मंद	
25-39	तीव्र मानसिक मंद	
0-24	अतिगंभीर मानसिक मंद	

इस तालिका में वर्णित पहले वर्ग के लोगों को बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली (Intelligence wise Gifted) कहा जाता है, जबकि दूसरे वर्ग के लोगों को मानसिक रूप से चुनौती ग्रस्त (Mentally Challenged) या मानसिक रूप से मंद (Mentally Retarded) कहा जाता है। ये दोनों वर्ग अपनी संज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा अभिप्रेरणात्मक विशेषताओं में सामान्य लोगों की अपेक्षा पर्याप्त भिन्न होते हैं।

4.10 बुद्धि लब्धि की सीमाएँ

बुद्धि लब्धि का संप्रत्यय दोष-रहित नहीं है। वर्तमान समय में IQ का संप्रत्यय संदिग्ध बन गया है, जिसमें कई त्रुटियाँ हैं। सामान्यतः यह माना जाता है कि 16 वर्ष की आयु तक मानसिक आयु का विकास होता है, इसके बाद इसमें हास होता जाता है, जबकि कालानुक्रमिक आयु बढ़ती जाती है। MA का स्थिर हो जाना या इसमें हास होना तथा CA का निरंतर बढ़ना, IQ के संप्रत्यय को भ्रामक बना देता है। अर्थात् यह संप्रत्यय वयस्क व्यक्तियों की बौद्धिक योग्यता को व्यक्त करने में सक्षम नहीं है। वेश्लर ने सन् 1981 में वेश्लर वयस्क बुद्धि मापनी (Wechsler Adult Intelligence Scale, WAIS) को संशोधित कर IQ के बदले विचलन बुद्धि लब्धि (Deviation Intelligence Quotient, IQ) का संप्रत्यय दिया जो मानसिक आयु तथा कालानुक्रमिक आयु का अनुपात न होकर एक प्रामाणिक अंक (Standard Score) या Z-Score के सूत्र के आधार पर निकाला जाता है। Z-Score को निकालने का सूत्र निम्नवत है:-

$$Z = \frac{\text{प्रयोज्य द्वारा प्राप्त अंक (X) - मध्यमान (M)}}{\text{मानक विचलन (SD)}}$$

मानक विचलन (SD)

Z score के आधार पर ही DIQ का सूचकांक निकाला जाता है।

$$DIQ = 100 + 16 Z$$

DIQ एक ऐसा मानक प्राप्तांक (Standard Score) है जिसका विकास आर्थर ओटिस (Arthur Otis) के शोधों से हुआ है। यह प्राप्तांक आज बुद्धि परीक्षण के मापन के क्षेत्र में एक लोकप्रिय मापक बन गया है। IQ के सूत्र के साथ समस्या यह उत्पन्न हुई कि व्यक्ति की कालानुक्रमिक आयु तो हमेशा बढ़ती है परन्तु 17-18 की आयु के बाद मानसिक आयु तेजी व क्रमिक रूप से सामान्यतः नहीं बढ़ती है। अतः IQ का पारंपरिक सूचकांक एक भ्रामक परिणाम देता है। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए DIQ के संप्रत्यय का विकास हुआ।

किसी बुद्धि परीक्षण पर एक व्यक्ति का प्राप्तांक उसी व्यक्ति की आयु समूह के अन्य व्यक्तियों के प्राप्तांकों के औसत (माध्य) से कितनी दूरी (प्रमाप विचलन) पर है, इसका पता DIQ से चलता है। DIQ ज्ञात करने के लिए प्रत्येक आयु समूह के लिए Z- प्राप्तांक ज्ञात किया जाता है और फिर उस Z प्राप्तांक को एक ऐसे वितरण में बदल दिया जाता है जिसका माध्य = 100 तथा प्रमाप विचलन = 16 होता है। इसका सूत्र निम्न प्रकार से है:-

$$DIQ = 16 Z + 100$$

$$\text{जहाँ } Z = \frac{X - \text{माध्य}}{\text{प्रमाप विचलन}}$$

प्रमाप विचलन

X = व्यक्ति का किसी बुद्धि परीक्षण पर उसका प्राप्तांक

Wechsler Adult Intelligence Scale (WAIS) में DIQ का उपयोग किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति का इस बुद्धि परीक्षण पर प्राप्तांक एक प्रमाप विचलन इकाई माध्य से ऊपर है, तो उसका $DIQ = 16 \times 1 + 100 = 116$ होगा जिससे पता चलता है कि उसका DIQ अपनी आयु समूह के व्यक्तियों के औसत से ऊपर है। उसी तरह से यदि किसी व्यक्ति का प्राप्तांक यदि माध्य से एक प्रमाप विचलन कम है तो उसका DIQ प्राप्तांक 84 होगा जिसका अर्थ है कि उसका DIQ अपने आयु समूह के व्यक्तियों के औसत से नीचे है। इस तरह DIQ में प्रत्येक उच्च स्तर पर प्रमाप विचलन (Standard deviation) का

एक स्थिर मान होता है, जिसके परिणामस्वरूप IQ में होने वाली असामान्य परिवर्तनशीलता को नियंत्रित करता है।

वेश्लर के अनुसार IQ के साथ एक कठिनाई यह है कि 15-16 साल की आयु के बाद मानसिक आयु (MA) तेजी व क्रमिक रूप से नहीं बढ़ती है। दूसरी कठिनाई यह है कि व्यक्तियों के लिए मानसिक आयु का संप्रत्यय अर्थहीन है। अतः IQ के बदले DIQ का संप्रत्यय बुद्धि का मूल्यांकन करने में ज्यादा सक्षम है। दूसरे शब्दों में किसी व्यक्ति का बुद्धिलब्धि प्राप्तांक से यह पता चलता है कि औसत जिसे IQ कहा गया है, से किसी बुद्धि परीक्षण पर व्यक्ति का निष्पादन कितना विचलित है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

11. $DIQ = 16 (\quad) + 100$
12. DIQ एक \quad है जिसका विकास आर्थर ओटिस (Arthur Otis) के शोधों से हुआ है।
13. DIQ का माध्य \quad तथा प्रमाप विचलन \quad होता है।
14. \quad ने WAIS को संशोधित कर IQ के बदले विचलन बुद्धि लब्धि (Deviation Intelligence Quotient, DIQ) का संप्रत्यय दिया।

4.11 बुद्धि परीक्षण की उपयोगिताएँ

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षा में बुद्धि परीक्षण की अनेक उपयोगिताओं का वर्णन किया है जिनमें मुख्य हैं:-

1. कक्षोन्नति के निर्णय में।
2. शिक्षकों के चयन में।
3. विभिन्न प्रकार के निर्देशन देने में (व्यक्तिगत, व्यावसायिक व शैक्षिक निर्देशन में)।
4. छात्रों के श्रेणीकरण में।
5. शैक्षिक दुर्बलता के निदान में।
6. विद्यार्थियों के समायोजन में।
7. मानसिक बीमारियों के इलाज में।
8. कक्षा में प्रवेश लेने में।
9. अनुशासन की समस्या के समाधान में।
10. पाठ्यक्रमों तथा व्यवसाय चयन में।

4.12 बुद्धि परीक्षणों के प्रकार

बुद्धि परीक्षण कई प्रकार के होते हैं। इनके वर्गीकरण के निम्नलिखित आधार हो सकते हैं:-

1. परीक्षणों को प्रशासित करने की प्रक्रिया के आधार पर-
 - अ. व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण।
 - ब. सामूहिक बुद्धि परीक्षण।
2. परीक्षण के एकांश के स्वरूप के आधार पर-
 - अ. शाब्दिक या वाचिक बुद्धि परीक्षण।
 - ब. अशाब्दिक या अवाचिक बुद्धि परीक्षण।
 - स. निष्पादन बुद्धि परीक्षण।
3. परीक्षण के एकांश में संस्कृति के प्रतिबिम्बन के आधार पर-
 - अ. संस्कृति मुक्त बुद्धि परीक्षण।
 - ब. संस्कृति स्वच्छ बुद्धि परीक्षण।
 - स. संस्कृति अभिनत बुद्धि परीक्षण।

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण तथा सामूहिक बुद्धि परीक्षण:- वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण वह परीक्षण होता है जिसके द्वारा एक समय में एक ही व्यक्ति का बुद्धि परीक्षण किया जा सकता है। समूह बुद्धि परीक्षण को एक साथ बहुत से व्यक्तियों पर प्रशासित किया जाता है। वैयक्तिक परीक्षण में आवश्यक होता है कि परीक्षणकर्ता परीक्षार्थी से सौहार्द स्थापित करे और परीक्षण सत्र के समय उसकी भावनाओं और अभिव्यक्तियों के प्रति संवेदनशील रहे। समूह परीक्षण में परीक्षणकर्ता को परीक्षार्थियों की निजी भावनाओं से परिचित होने का अवसर नहीं मिलता। वैयक्तिक परीक्षणों में परीक्षार्थी पूछे गए प्रश्नों का मौखिक अथवा लिखित रूप में भी उत्तर दे सकता है अथवा परीक्षणकर्ता के आदेशानुसार वस्तुओं का प्रहस्तन भी कर सकता है। समूह परीक्षण में परीक्षार्थी सामान्यतः लिखित उत्तर देता है और प्रश्न भी प्रायः बहुविकल्पी स्वरूप के होते हैं।

शाब्दिक, अशाब्दिक तथा निष्पादन परीक्षण:- एक बुद्धि परीक्षण पूर्णतः शाब्दिक, पूर्णतः अशाब्दिक या अवाचिक अथवा पूर्णतः निष्पादन परीक्षण हो सकता है। इसके अतिरिक्त कोई बुद्धि परीक्षण इन तीनों प्रकार के परीक्षणों के एकांशों का मिश्रित रूप भी हो सकता है। शाब्दिक परीक्षणों में परीक्षार्थी को मौखिक अथवा लिखित रूप में शाब्दिक अनुक्रियाएँ करनी होती हैं। इसलिए शाब्दिक परीक्षण केवल साक्षर व्यक्तियों को ही दिया जा सकता है। अशाब्दिक परीक्षणों में एकांशों के रूप में चित्रों अथवा चित्र निरूपणों का उपयोग किया जाता है।

वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण शाब्दिक (Verbal) तथा अशाब्दिक (Non-Verbal) दोनों हो सकता है। बिन-साइमन परीक्षण (Binet Simon Test), स्टैन्फोर्ड-बिने मापनी (Stanford- Binet Scale), वेस्लर-वेलेव्यू स्केल (Wechsler- Bellevue Scale) आदि वैयक्तिक शाब्दिक परीक्षण के उदाहरण हैं। पास एलांग टैस्ट (Pass Along Test), ब्लॉक डिजाइन टैस्ट (Block Design Test), क्यूब कंस्ट्रक्शन टैस्ट (Cube Construction Test) आदि अशाब्दिक परीक्षण के उदाहरण हैं।

सामूहिक परीक्षण भी शाब्दिक तथा अशाब्दिक दोनों हो सकते हैं। मोहसिन सामान्य बुद्धि परीक्षण (Mohsin General Intelligence Test), आर्मी अल्फा टैस्ट (Army Alpha Test), आदि सामूहिक शाब्दिक परीक्षण के उदाहरण हैं। इसी प्रकार आर्मी बीटा टैस्ट (Army Beta Test), रैवेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज (RPM) आदि सामूहिक अशाब्दिक परीक्षण के उदाहरण हैं।

संस्कृति निष्पक्ष तथा संस्कृति- अभिनत परीक्षण (Culture Fair and Culture Loaded Test):- बुद्धि परीक्षण संस्कृति निष्पक्ष अथवा संस्कृत-अभिनत हो सकते हैं। बहुत से बुद्धि परीक्षण उस संस्कृति के प्रति अभिनति प्रदर्शित करते हैं, जिसमें वे बुद्धि परीक्षण विकसित किए जाते हैं। अमेरिका तथा यूरोप में विकसित किए गए बुद्धि परीक्षण नगरीय तथा मध्यवर्गीय सांस्कृतिक लोकाचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए इन परीक्षणों पर उस देश के शिक्षित मध्यवर्गीय श्वेत व्यक्ति सामान्यतः अच्छा निष्पादन कर लेते हैं। इन परीक्षणों के एकांश (प्रश्न) एशिया या अफ्रीका के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का ध्यान नहीं रखते। इन परीक्षणों के मानकों का निर्माण भी पश्चिमी संस्कृति के व्यक्तियों के समूहों से किया गया है।

किसी ऐसे परीक्षण का निर्माण करना लगभग असम्भव कार्य है जो सभी संस्कृतियों के लोगों पर एकसमान सार्थक रूप से अनुप्रयुक्त किया जा सके। मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे परीक्षणों का निर्माण करने का प्रयास किया है जो संस्कृति निष्पक्ष हो या सभी संस्कृति के लिए संस्कृति-उपयुक्त हों अर्थात् जो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों में भेदभाव न करें। ऐसे परीक्षणों में एकांशों की रचना इस प्रकार की जाती है कि वे सभी संस्कृतियों में सर्वनिष्ठ रूप से होने वाले अनुभवों का मूल्यांकन करे या उस परीक्षण में ऐसे प्रश्न रखे जायें जिनमें भाषा का उपयोग न हो। शाब्दिक परीक्षणों में पाई जाने वाली सांस्कृतिक अभिनति अशाब्दिक तथा निष्पादन परीक्षण में कम हो जाती है।

इस तरह स्पष्ट है कि बुद्धि परीक्षण के कई प्रकार हैं, जिनमें तीन प्रमुख हैं- शाब्दिक बुद्धि परीक्षण, अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण, क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण तथा संस्कृति स्वच्छ/निष्पक्ष परीक्षण। इन चारों परीक्षणों की मौलिक विशेषताओं को निम्न तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है-

4.13 बुद्धि परीक्षणों की समानताएँ एवं विषमताएँ

बुद्धि परीक्षण के प्रकार	निर्देश में भाषा	एकांश में	वस्तुओं का	उदाहरण (Example)
--------------------------	------------------	-----------	------------	------------------

	का प्रयोग (Use of Language in its instruction)	भाषा का प्रयोग (Use of Language in items)	वास्तविक जोड़-तोड़ (Actual manipulation of objects)	
शाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Verbal Intelligence Test)	✓	✓	X	स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण, आर्मी अल्फा टेस्ट, डा10 जलोटा बुद्धि परीक्षण वैश्लर-वैलेव्यू बुद्धि परीक्षण, बर्ट तर्क परीक्षा, टरमन मानसिक योग्यता समूह परीक्षण
अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण (Non-Verbal Intelligence Test)	✓	X	X	रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज
अभाषाई बुद्धि परीक्षण/संस्कृति स्वच्छ परीक्षण (Non language Intelligence Test/Culture Fair Test)	X	X	X	गुडएनफ ड्रा-ए-मैन परीक्षण कैटेल संस्कृति मुक्त परीक्षण
क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण (Performance Intelligence Test)	✓	X	✓	भाटिया क्रियात्मक परीक्षण, माला, आकार फलक परीक्षण मैरिल पामर ब्लॉक बिल्डिंग परीक्षण, पैटर्न ड्राइंग टेस्ट

बुद्धि को विभिन्न तरीके से मापने के लिए विश्वस्तर पर व भारत में बहुत प्रकार के बुद्धि परीक्षणों का विकास किया है। यहाँ पर वैश्विक स्तर पर विकसित बुद्धि परीक्षणों व भारत में विकसित बुद्धि परीक्षणों के उदाहरण दिए गए हैं ताकि आप मुख्य बुद्धि परीक्षणों से अवगत हो सकें।

वैश्विक स्तर पर बुद्धि परीक्षण के उदाहरण:-

- बिने साइमन मापनी (1905)
- बिने साइमन संशोधित मापनी (1908)
- पुनः संशोधन बिने-साइमन मापनी (1911)
- स्टेनफोर्ड बिने संशोधित परीक्षण (1916)
- स्टेनफोर्ड पुनः संशोधन (1937)
- स्टेनफोर्ड पुनः संशोधन (1960)

- मैरिल पामर मापनी
- मिनिसोटा पूर्व-विद्यालय मापनी
- वॉन चित्र शब्दावली
- गुडएनफ ड्राइंग-ए-मैन परीक्षण
- रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज
- वैश्लर वयस्क बुद्धि मापनी
- अलेक्जेंडर पुरस्सरण क्रियात्मक परीक्षण
- आर0बी0 कैटिल संस्कृति युक्त बुद्धि परीक्षण मापनी
- बर्ट तर्क शक्ति परीक्षण
- गैसिल विकास अनुसूची
- कुहलमन-एण्डरसन बुद्धि परीक्षण
- टरमन मानसिक योग्यता समूह परीक्षण
- टरमन मैक्नेमर मानसिक योग्यता परीक्षण
- मिलर अनुपात-पूर्ति परीक्षण
- पिन्टनर-पैटर्सन निष्पादन परीक्षण
- आर्थर निष्पादन मापदण्ड

4.14 भारत में विकसित कुछ मुख्य बुद्धि परीक्षण

- पं0 लज्जाशंकर झा(1933) - रिचार्डसन सिम्पलेक्स मेन्टल परीक्षण का हिन्दी अनुकूलन
- आर0आर0 कुमारिया सामूहिक बुद्धि परीक्षण (1937)
- एल0के0 शाह सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण
- सी0टी0 फिलिप्स (1930) सामूहिक शाब्दिक मानसिक योग्यता परीक्षण
- डा0 सोहनलाल (1942) इलाहाबाद बुद्धि परीक्षण
- सिलवा (1942) बर्ट शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- डा0 टी0सी0 बिकरी (1942) अशाब्दिक समूह परीक्षण (हिन्दी-उर्दू)
- वी0जी0 झिंगरन (1950) सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण

- मनोविज्ञानशाला इलाहाबाद (1954) सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- सी0एम0 भाटिया (1955) उपलब्धि परीक्षण श्रंखला
- मनोविज्ञानशाला इलाहाबाद (1956) बिने साइमन L प्रारूप अनुकूलन
- एस0एम0 मोहसिन (1943) बिहार सामान्य बुद्धि परीक्षण
- केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (CIE) (1950-60) सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- मेन्जिल (1938) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- विकरी एवं ड्रेपर (1942) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- जी0एच0 नाफडे (1942) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- रामनाथ कुन्दु (1959) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- एम0जी0 प्रेमलता (1959) सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- मनोविज्ञानशाला (1956) टेवन प्रोगेसिव मैट्रिक्स अनुकूलन तथा पिजन के अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- प्रमिला पाठक (1959) ड्राइंग-ए-मैन टैस्ट
- डा0 एम0सी0 जोशी (1960) सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण
- प्रयाग मेहता (1961) सामूहिक बुद्धि परीक्षण
- डा0 आर0के0 टण्डन (1961) सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण
- डा0 राय चौधरी (1961) वयस्क बुद्धि परीक्षण
- डा0 एस0 जलोटा (1963) साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण
- मजूमदार (1964) वेश्लर वयस्क मापनी अनुकूलन
- ए0एन0 मिश्रा (1966) मानव आकृति ड्राइंग टैस्ट
- जी0सी0 आहूजा (1966) सामूहिक बुद्धि परीक्षण
- चटर्जी एवं मुखर्जी (1967) अभाषीय बुद्धि परीक्षण
- डी0एम0 बहोसर (1967) सामूहिक अशाब्दिक परीक्षण
- डा0 जी0पी0 शैरी (1970) वयस्क बुद्धि परीक्षण
- प्रमिला आहूजा (1970) सामूहिक बुद्धि परीक्षण
- डा0 आर0के0 टण्डन- बच्चों के लिए सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण
- डा0 पी0एन0 महरोत्रा (1971) मिश्रित सामूहिक बुद्धि परीक्षण

- ओझा एवं चौधरी (1971) शाब्दिक बुद्धि परीक्षण
- एस0पी0 कुलश्रेष्ठ (1971) बिने साइमन परीक्षण- भारतीय अनुकूलन
- उदय शंकर- CIE शाब्दिक समूह बुद्धि परीक्षण

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

15. मोहसिन सामान्य बुद्धि परीक्षण (Mohsin General Intelligence Test) और आर्मी अल्फा टैस्ट (Army Alpha Test) _____ परीक्षण के उदाहरण हैं।
16. आर्मी बीटा टैस्ट (Army Beta Test) और रैवेन्स प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज (RPM) _____ सामूहिक _____ के उदाहरण हैं।

4.15 बुद्धि परीक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन

जितने भी प्रकार के बुद्धि परीक्षणों का आपने अध्ययन किया है सभी की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। कोई भी परीक्षण अपने आप में पूर्ण नहीं है। अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार बुद्धि परीक्षण का चुनाव किया जाता है। यहाँ पर हम लोग व्यक्तिगत व सामूहिक बुद्धि परीक्षण तथा शाब्दिक व अशाब्दिक बुद्धि परीक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण व सामूहिक बुद्धि परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन:-

क्रम संख्या	व्यक्तिगत परीक्षण	सामूहिक परीक्षण
1.	वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण के द्वारा एक समय में एक ही व्यक्ति का बुद्धि परीक्षण किया जा सकता है, जैसे स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण	सामूहिक बुद्धि परीक्षण को एक साथ बहुत से व्यक्तियों को समूह में दिया जा सकता है। जैसे- आर्मी अल्फा परीक्षण
2.	इस परीक्षण को प्रशासित करने के लिए अनुभवी व्यक्ति चाहिए	यह परीक्षा सामान्य योग्यता का व्यक्ति भी ले सकता है।
3.	समय, धन व मेहनत की दृष्टिकोण से यह परीक्षण मितव्ययी नहीं है।	यह अपेक्षाकृत मितव्ययी है।
4.	इस परीक्षण के माध्यम से परीक्षार्थी के असफलता के कारणों का पता लगाया जा सकता है।	अपेक्षाकृत जटिल व दुरूह कार्य है।

5.	इस परीक्षा में परीक्षार्थी व परीक्षक का निकट संबंध होता है।	इसमें निकट संबंध की सम्भावना नहीं के बराबर होती है।
6.	प्रश्नों की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है।	प्रश्नों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है।
7.	परीक्षणों का निर्माण कठिन कार्य है।	परीक्षणों का निर्माण अपेक्षाकृत आसान है।
8.	इस परीक्षा के माध्यम से परीक्षार्थी की भाषा और व्यवहार का पूर्ण ज्ञान हो जाता है।	इस परीक्षा में इन बातों का आंशिक ज्ञान हो पाता है।
9.	इन परीक्षणों की विश्वसनीयता व वैधता अधिक होती है।	विश्वसनीयता व वैधता अपेक्षाकृत कम होती है।

शाब्दिक बुद्धि परीक्षण व अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण की तुलना:-

क्रम संख्या	शाब्दिक परीक्षण (Verbal Test)	अशाब्दिक परीक्षण (Non Verbal Test)
1.	इस तरह के बुद्धि परीक्षणों में एकांशों को भाषा के माध्यम से प्रकट किया जाता है।	एकांशों को संकेत, चित्र या वस्तुओं के माध्यम से प्रकट किया जाता है।
2.	यह संस्कृति अभिनति परीक्षण होता है।	यह अपेक्षाकृत संस्कृति स्वच्छ परीक्षण होता है।
3.	शाब्दिक परीक्षणों में परीक्षार्थी को मौखिक अथवा लिखित रूप में शाब्दिक अनुक्रियाएँ करनी होती हैं।	एकांशों का उत्तर देने के लिए लिखित भाषा के उपयोग की आवश्यकता नहीं होती।
4.	यह परीक्षण भिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों को नहीं दिया जा सकता है, बल्कि केवल उन्हीं व्यक्तियों को दिया जा सकता है, जिस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में वह परीक्षण निर्मित हुआ है।	यह भिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों को आसानी से दिया जा सकता है।
5.	यह परीक्षण केवल साक्षरों के लिए उपयुक्त है।	यह परीक्षण असाक्षर व साक्षर दोनों के बुद्धि परीक्षण के लिए उपयुक्त है।
6.	इन परीक्षाओं के माध्यम से परीक्षार्थी की वाचन शक्ति, वर्गीकरण क्षमता, सादृश्य सम्बन्ध स्थापन शक्ति (Analogy) आदि योग्यताओं का मापन किया जाता है।	इन परीक्षाओं के माध्यम से चित्र-रचना, आकृति चित्रण निर्दिष्ट आकार के गुटके बनाने इत्यादि योग्यताओं का परीक्षण किया जाता है।

4.16 बुद्धि परीक्षण की सीमाएँ

बुद्धि परीक्षण कई उपयोगी उद्देश्य को पूर्ण करता है जैसे- चयन, परामर्श, निर्देशन, आत्मविश्लेषण और निदान में। जब तक ये परीक्षण किसी प्रशिक्षित परीक्षणकर्ता द्वारा उपयोग नहीं किए जाते, जानबूझकर या अनजाने में इनका दुरुपयोग हो सकता है। अप्रशिक्षित परीक्षणकर्ताओं द्वारा किए गए बुद्धि परीक्षणों के कुछ दुष्परिणाम निम्नलिखित हैं:-

- किसी परीक्षण पर किसी व्यक्ति का खराब प्रदर्शन, उसके निष्पादन व आत्मसम्मान पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।
- परीक्षण द्वारा माता-पिता, अध्यापकों तथा बड़ों के भेद-भावपूर्ण आचरण को बढ़ावा मिलने का भय बना रहता है।
- मध्यवर्गीय और उच्चवर्गीय जनसंख्याओं के पक्ष में अभिनत बुद्धि परीक्षण समाज के सुविधांचित समूहों से आने वाले बच्चों की IQ को कम आंकने की सम्भावना बनी रहती है।
- बुद्धि परीक्षण सृजनात्मक संभाव्यताओं और बुद्धि के व्यावहारिक पक्ष का माप नहीं कर पाता है और उनका जीवन में सफलता से ज्यादा संबंध नहीं होता। बुद्धि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों का एक संभाव्य कारक हो सकती है।

4.17 सारांश

बुद्धि एक समग्र क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्य पूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिन्तन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है अर्थात् बुद्धि को कई तरह की क्षमताओं का योग माना जाता है।

बुद्धि उन क्रियाओं को समझने की क्षमता है जो जटिल, कठिन, अमूर्त, मितव्यय, किसी लक्ष्य के प्रति अनुकूलनशील, सामाजिक व मौलिक हो तथा कुछ परिस्थिति में वैसी क्रियाओं को करना जो शक्ति की एकाग्रता तथा सांवेगिक कारकों का प्रतिरोध दिखाता हो।

बुद्धि को संज्ञानात्मक व्यवहारों का संपूर्ण समूह माना गया है जो व्यक्ति में सूझ द्वारा समस्या समाधान करने की क्षमता, नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की क्षमता, अमूर्त रूप से सोचने की क्षमता तथा अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता को परिलक्षित करता है।

बुद्धि को समझने के लिए बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है व सिद्धांतों के रूप में इसे आबद्ध किया है। ये सिद्धान्त बुद्धि की मापन की प्रकृति को समझने के लिए आवश्यक है।

बुद्धि विभिन्न क्षमताओं के समग्रता को परिलक्षित करता है। ई0एल0 थॉर्नडाइक, डोनेल्ड हेब और वर्नन जैसे मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को विभिन्न प्रकारों में विभक्त किया है।

बुद्धि परीक्षण के कई प्रकार हैं, जिनमें तीन प्रमुख हैं- शाब्दिक बुद्धि परीक्षण, अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण, क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण तथा संस्कृति स्वच्छ/निष्पक्ष परीक्षण।

4.18 शब्दावली

1. संज्ञानात्मक मूल्यांकन प्रणाली (Cognitive Assessment System) परीक्षणों की एक माला जिसका निर्माण चार आधारभूत प्रतिक्रियाओं-योजना-अवधान-सहकालिक-आनुक्रमिक का मापन करने के लिए किया गया है।
2. घटकीय बुद्धि (Components Intelligence)- स्टर्नबर्ग के त्रि-घटकीय सिद्धान्त में यह आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टि से सोचने की योग्यता का द्योतक है।
3. सांदर्भिक बुद्धि (Contextual Intelligence):- स्टर्नबर्ग के त्रि-घटकीय सिद्धान्त में यह व्यावहारिक बुद्धि है, जिसका उपयोग दैनिक समस्याओं के समाधान में किया जाता है।
4. सांस्कृतिक निरपेक्ष परीक्षण (Culture fair test):- ऐसा परीक्षण जो परीक्षार्थियों में सांस्कृतिक अनुभवों के आधार पर विभेदन नहीं करता है।
5. सा-कारक (G-factor):- बुद्धि की सभी अभिव्यक्तियों में निहित मूल बौद्धिक क्षमता का संकेत देने वाला सामान्य बुद्धि कारक।
6. आनुभविक बुद्धि (Experiential Intelligence):- स्टर्नबर्ग के त्रिघटकीय सिद्धान्त में पूर्णतः नई समस्याओं का समाधान करने के लिए सृजनात्मकता ढंग से विगत अनुभव के उपयोग की योग्यता।
7. तरल बुद्धि (Fluid Intelligence):- जटिल संबंधों का प्रत्यक्षण करने, अमूर्त रूप से तर्क करने तथा समस्याओं का समाधान करने की योग्यता।
8. समूह परीक्षण (Group Test):- वैयक्तिक परीक्षण के विपरीत एक ही समय पर एक से अधिक व्यक्तियों व्यक्तियों को देने के लिए अभिकल्पित परीक्षण।
9. वैयक्तिक परीक्षण (Individual Test):- ऐसा परीक्षण जो विशेष रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा एक समय में किसी एक अकेले व्यक्ति को ही दिया जा सकता है। बिने और वेश्लर बुद्धि परीक्षण, वैयक्तिक परीक्षणों के उदाहरण हैं।
10. बौद्धिक प्रतिभाशीलता (Intellectual Giftedness):- विविध प्रकार के कृत्यों में श्रेष्ठ निष्पादन के रूप में प्रदर्शित असाधारण सामान्य बौद्धिक क्षमता।
11. बुद्धि (Intelligence):- चुनौतियों का सामना करते समय, संसाधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग करने, सविवेक चिंतन करने और जगत को समझने की क्षमता।
12. बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient, IQ) :- कालानुक्रमिक आयु से मानसिक आयु का अनुपात इंगित करने वाला मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त एक सूचकांक।

13. बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test):- किसी व्यक्ति का स्तर मापने के लिए अभिकल्पित परीक्षण।
14. मानसिक आयु (Mental Age) :- आयु के रूप में अभिव्यक्त बौद्धिक कार्यशीलता का मापक।
15. प्रसामान्य संभाव्यता वक्र (Normal Probability Curve):- सममितीय घंटाकार, आवृत्ति वितरण अधिकांश प्राप्तांक मध्य में पाए जाते हैं और दोनों छोरों की ओर समानुपातिक ढंग से कम होते जाते हैं। बहुत से मनोवैज्ञानिक चर इसी रूप में वितरित होते हैं।
16. निष्पादन परीक्षण (Performance Test) :- ऐसा परीक्षण जिसमें भाषा की भूमिका न्यूनतम होती है क्योंकि उस कार्य में वाचिक अनुक्रियाओं की अपेक्षा प्रकट गत्यात्मक या पेशीय अनुक्रियाओं की आवश्यकता पड़ती है।
17. शाब्दिक परीक्षण (Verbal Test) :- ऐसा परीक्षण जिसमें अपेक्षित अनुक्रियाएँ करने के लिए परीक्षार्थी की शब्दों एवं संप्रत्ययों को समझने और उनका उपयोग करने की योग्यता महत्वपूर्ण होती है।

4.19 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. चार्ल्सस्पीयरमैन
2. तरल बुद्धि (Fluid Intelligence) व ठोस बुद्धि (Crystallized Intelligence)
3. राबर्ट स्टर्नबर्ग
4. योजना (Planning)
5. आध्यात्मिक बुद्धि (Spiritual Intelligence)
6. संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence)
7. अमूर्त बुद्धि (Abstract Intelligence)
8. बुद्धि 'बी' (Intelligence 'B')
9. बुद्धि 'सी' (Intelligence 'C')
10. गलत
11. गलत
12. सही
13. गलत
14. Z
15. मानक प्राप्तांक (Standard Score)
16. 100 और 16
17. वेश्लर
18. समूहिक शाब्दिक परीक्षण

19. अशाब्दिक परीक्षण

4.20 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. एन0सी0ई0आर0टी0 (2007)- मनोविज्ञान (कक्षा-12) के लिए पाठ्य पुस्तकें।
2. सिंह, ए0के0 (2008)- शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीभवन, पटना।
3. भटनागर, ए0बी0 (2009)- अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, आर0लाल0, प्रकाशक, मेरठ।
4. बैरन आर0ए0 (2001)- साइकोलॉजी (पाँचवा संस्करण), एलिन एँ ड बेकन।
5. लाहे, बी0बी0 (1998)- साइकोलॉजी-एन इंट्रोडक्शन, टाटा मैकग्रा हिल।

4.21 निबन्धात्मक प्रश्न

1. “बुद्धि विभिन्न क्षमताओं के समग्रता को परिलक्षित करता है।” इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. बुद्धि परीक्षण के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।
3. सांस्कृतिक निरपेक्ष परीक्षण व सांस्कृतिक सापेक्ष परीक्षण के मध्य तुलना कीजिए।
4. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण व अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण की तुलना कीजिए।
5. बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient, IQ) की सीमाओं का वर्णन करते हुए विचलन बुद्धि लब्धि (Deviation Intelligence Quotient, IQ) का मूल्यांकन कीजिए।
6. बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता व उनकी सीमाओं का वर्णन कीजिए।
7. बुद्धि लब्धि प्राप्तांक के वितरण का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

इकाई 5- व्यक्तित्व का अर्थ, विकास तथा व्यक्तित्व के सिद्धान्त

**Personality: Concept and Development,
Theories of Personality**

- 5.1 प्रस्तावना
- 5.2 उद्देश्य
- 5.3 व्यक्तित्व का अर्थ
- 5.4 व्यक्तित्व की परिभाषाएँ
- 5.5 व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय
- 5.6 व्यक्तित्व के प्रकारानुसार वर्गीकरण
- 5.7 व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धान्त
- 5.8 ऑलपोर्ट का शीलगुण सिद्धान्त
- 5.9 कैटल का शीलगुण सिद्धान्त
- 5.10 आइजेनक का वर्गीकरण
- 5.11 नीओ. पी.आई.आर.
- 5.12 शीलगुण उपागम की समालोचना
- 5.13 सारांश
- 5.14 शब्दावली
- 5.15 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 5.16 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 5.17 निबंधात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्ययों से सबसे अधिक जटिल तथा व्यापक सम्प्रत्यय व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय है। शिक्षा का चरम लक्ष्य (goal) बालक के व्यक्तित्व का विकास करना है। व्यक्तित्व कोई इस प्रकार की वस्तु नहीं है, जिसके गुणधर्मों की व्याख्या रसायनशास्त्र में की जाने वाली किसी तत्व की तरह ही की जा सके। यह एक ऐसा सम्प्रत्यय है, जिसकी व्याख्या भिन्न तरह से की जाती है। अलग-अलग दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों तथा ऋषियों ने व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय को अपने दृष्टिकोण से देखा है। यहाँ पर हम व्यक्तित्व

के विभिन्न आयामों का अध्ययन अपने उद्देश्यों के अनुसार व्यक्तित्व का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति, व्यक्तित्व के प्रकार तथा सिद्धान्तों का अध्ययन कर रहे हैं।

5.2 उद्देश्य

इकाई के अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. व्यक्तित्व का अर्थ समझ सकेंगे।
2. व्यक्तित्व की परिभाषाओं को जान सकेंगे।
3. व्यक्तित्व की परिभाषाओं का विश्लेषण कर व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय से परिचित हो सकेंगे।
4. भारतीय मनोविज्ञान का अध्ययन करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।
5. भारतीय मनीषियों के द्वारा व्यक्त विचारों का परिचय प्राप्त करेंगे।

5.3 व्यक्तित्व का अर्थ Meaning of Personality

व्यक्तित्व अंग्रेजी शब्द पर्सनेलिटी का अनुवाद है। पर्सनेलिटी शब्द लेटिन के शब्द परसोना (Persona) से बना है, जिसका अर्थ होता है, मुखौटा। ग्रीक अभिनेता अभिनय करते समय चरित्र के अनुसार मुखौटा पहना करते थे। इसी के आधार पर व्यक्तित्व का अर्थ बाह्य रंग-रूप, आकार-प्रकार से लिया जाता है। परन्तु व्यक्तित्व के इस अर्थ को सन्तोषप्रद नहीं माना जा सकता, क्योंकि मनुष्य की आकृति से उसके व्यक्तित्व का बोध नहीं हो सकता। ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनका बाह्य रंग-रूप प्रभावी नहीं था। परन्तु आन्तरिक गुणों के कारण विश्वविख्यात हुए। उदाहरण के लिए सुकरात, अब्राहम लिंकन, अष्टावक्र गांधीजी, लालबहादुर शास्त्री आदि अनेक हस्तियां चारित्रिक दृष्टि से अनुकरणीय रही हैं। अतः बाह्य आकृति, रंग-रूप का व्यक्तित्व से वह सम्बन्ध नहीं है, जिसे आम आदमी समझा करता है। रूप और कुरूपता देखने की नहीं बल्कि समझने की बात है।

आगे की पंक्तियों में हम व्यक्तित्व के भारतीय दृष्टिकोण से परिचय प्राप्त कर रहे हैं।

सत, रज, तम

भारतीय साहित्य ने व्यक्तियों की तीन श्रेणियां सत, रज तथा तमोगुण बताई है। महाभारत के आश्वमेधिक पर्व में तमोगुणी व्यक्ति के लक्षणों का वर्णन किया गया है। तमोगुणी व्यक्ति में मोह, अज्ञान, त्याग का अभाव, कर्मों का निर्णय न कर सकना, निद्रा, गर्व, भय, लोभ, शोक, दोषदर्शन, स्मरण शक्ति का अभाव, परिणाम की न सोचना, नास्तिकता, दुश्चरित्रता, निर्विशेषता (अच्छे बुरे के विवेक का अभाव) हिंसा आदि में प्रवृत्तता, अकार्य को कार्य समझना, अज्ञान को ज्ञान मानना, शत्रुता, काम में मन न लगाना, अश्रद्धा मूर्खतापूर्ण विचार, कुटिलता, नासमझी, पाप करना, अज्ञान, आलस्य के कारण शरीर का भारी होना,

अजितेन्द्रियता और नीच कार्यों में अनुराग, ये सभी दुर्गुण तमोगुणी व्यक्ति में होते हैं। इसके अतिरिक्त और जो भी बातें निषिद्ध बताई गई हैं, वे सभी तमोगुण प्रवृत्तियां हैं। तम (अविधा), मोह (अस्मिता), महामोह (राग), क्रोध (सामिन्ध्र) तथा अंधतामिन्ध्र ये पांच प्रकार की तामसिक प्रवृत्तियां हैं।

रजोगुणी व्यक्ति में संताप, मन का प्रसन्न न रहना, बल, शूरता, मद, रोंष, व्यायाम, कलह, ईर्ष्या चुगली करना, छेदन भेदन और विदारण का प्रयत्न, उग्रता, दूसरों में छिद्र निकालना (दोषदर्शन), निष्ठुरता, निन्दा, स्तुति, स्वार्थ के लिए सेवा, तृष्णा, प्रमा (अपव्यय), परिग्रह ये सभी रजोगुण के कार्य हैं। द्रोह, माया, शठता, मान, चोरी, हिंसा, घृणा, दम्भ, दर्प, राग, विषय प्रेम, प्रमोद, धूतक्रीड़ा, वाद-विवाद, स्त्रियों से सम्बन्ध बढ़ाना, नाचगान में आसक्ता ये राजस गुण हैं। मनमाना बर्ताव करना, भोगों की समृद्धि को आनन्द मानना, वर्तमान, भूत और भविष्य पदार्थों की चिन्ता, धर्म, अर्थ तथा काम त्रिवर्ण में लगे रहने वाले व्यक्ति रजोगुणी होते हैं। जिस भाव या क्रिया में लोभ स्वार्थ तथा आसक्ति का सम्बन्ध हो तथा जिसका फल क्षणिक सुख की प्राप्ति और अन्तिम परिणाम दुःख हो उसे राजस समझना चाहिए।

सतोगुणी व्यक्ति आनन्द, प्रसन्नता, उन्नति, प्रकाश, सुख कृपणता का अभाव, निर्भयता, सन्तोष श्रद्धा, क्षमा, धैर्य, अहिंसा, समता, सत्य, सरलता, क्रोध का अभाव, किसी में दोषदर्शन न करना, पवित्रता, चतुरता, पराक्रम ये सत गुण के कार्य हैं। जिस भाव या क्रिया का सम्बन्ध स्वार्थ से न हो, आसक्ति एवं ममता न हो तथा जिसका फल भगवत्प्राप्ति हो उसे सात्विक जानना चाहिए।

सत, रज तथा तमो गुण-युक्त व्यक्ति पृथक-पृथक नहीं होते। इनका मिश्रण होता है, जिसमें जो गुण अधिक होता है, वह उस गुण से प्रधान माना जाता है। अतः सत, रज, तम इन गुणों की न्यूनता तथा अधिकता व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

गुणातीत- गुणातीत व्यक्ति वह होता है, जिसमें सत, रज तथा तम आदि गुणावगुणों से परे होता है। गीता में गुणातीत व्यक्ति के लक्षणों का वर्णन किया गया है।

**समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ॥14/24॥
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥14/25॥**

अर्थात् जो निरन्तर आत्मभाव में स्थित, दुःख-सुख को समान समझने वाला, मिट्टी, पत्थर तथा स्वर्ण में समान भाव वाला, ज्ञानी, प्रिय तथा अप्रिय को एक-सा मानने वाला और निन्दा स्तुति में भी समान भाव रखने वाला होता है। (14/24) जो मान और अपमान में सम है, मित्र और बैरी के पक्ष में भी सम है। एवं सम्पूर्ण आरम्भ में कर्तापन के अभिमान से रहित है, वह पुरुष गुणातीत कहा जाता है। (14/25) कहने का अभिप्राय यह है जिस व्यक्ति में राग, द्वेष, हर्ष, शोक, अविद्या और अभिमान थोड़ा भी शेष हो वह

गुणातीत नहीं हो सकता। सतत् अभ्यास से व्यक्ति सत, रज और तम आदि से विमुक्त होकर गुणातीत के पद को प्राप्त कर सकता है। अतः मानव का चरम लक्ष्य गुणातीत होना है।

भारतीय साहित्य में व्यक्ति के बाह्य रूपाकृति के वर्णन तो मिलते हैं परन्तु उसे व्यक्तित्व के साथ युक्तिकृत नहीं किया गया है अर्थात् बह्याकृति को व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लेशमात्र भी महत्व नहीं दिया गया है, जिसका उदाहरण ऋषि अष्टावक्र ने जनक की राज्य सभा में हुए प्रथम वार्तालाप से स्पष्ट है। आगे हम पश्चिमी विद्वानों द्वारा व्यक्तित्व की दी गई परिभाषाओं को प्रस्तुत कर वर्तमान काल में व्यक्तित्व के अर्थ से परिचित होने का प्रयास करेंगे।

5.4 व्यक्तित्व की परिभाषाएँ Definitions of Personality

पश्चिमी मनोवैज्ञानिक द्वारा व्यक्तित्व की परिभाषाओं में से कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

आर०एस० वुडवर्थ के अनुसार “ व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की समग्र गुणात्मकता है।”

“Personality is the entire qualitiveness of person.” – Woodworth

जी.डबल्यू. आलपोर्ट के अनुसार- “व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक तंत्र का गतिशील संगठन है जिसे उसके पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित के लिए आवश्यक शीलगुणों के एक संकलित नमूने के रूप में परिभाषित कर सकते हैं”

“Personality is the dynamic organization within the individual of those Psycho-Physical systems that determine his unique adjustment to his environment.” - Allport

गिल्फोर्ड के अनुसार “ हम व्यक्तित्व को शीलगुणों के एक संकलित नमूने के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।”

“We may define personality as sum inter grated pattern of traits.” -Guilford

ड्रेवर के अनुसार- व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक मानसिक, नैतिक व सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है, जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन का आदान-प्रदान करता है।”

“Personality is the term used for the integrated and dynamic organization of the physical, mental and social qualities of the individual as that manifest itself to other people, in the give and take of social life.” –Drever

शिक्षा परिभाषा कोश-केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के शब्दावली आयोग की परिभाषा -

1. “व्यक्ति के ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक और शारीरिक विशेषकों (Traits) का एकीकृत संगठन जैसा कि वह अन्य व्यक्तियों को दिखाई देता है”।
2. “व्यक्ति के वे शारीरिक और प्रभावशाली गुण जो संश्लिष्ट रूप से अन्य व्यक्तियों को आकर्षित करते हैं”

उपर्युक्त परिभाषाएँ जो आशय प्रकट करती हैं, उन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है-

1. व्यक्ति के व्यवहार की समग्रता,
2. जन्मजात तथा अर्जित स्वभावों का योग,
3. व्यक्ति की संरचना, व्यवहार के रूप अभिरुचियों, अभिक्षमताओं (Aptitude) योग्यताओं, क्षमताओं (Capacity) का विशिष्ट संगठन,
4. पर्यावरण से सामंजस्य
5. शीलगुणों (Traits) के समग्र रूप
6. व्यक्ति के गुणों (सामाजिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक) का समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ आदान-प्रदान।

उपर्युक्त सभी बिन्दुओं को गैरीसन (Garrison) ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

“व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यक्ति है, जिसमें उसकी अभिक्षमताएँ, क्षमताएँ एवं समस्त भूतकालीन अधिगम सम्मिलित हैं और इन सभी कारकों तथा संगठन तथा संश्लेषण उसके व्यवहारगत प्रतिमाओं, विचारों, आदर्शों, मूल्यों तथा अपेक्षाओं में अभिव्यक्त होता है।”

5.5 व्यक्तित्व का संप्रत्यय **Concept of Personality**

जैसा कि गैरीसन का मत है कि “व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यक्ति है। जिसमें उसकी अभिक्षमताएँ, क्षमताएँ एवं समस्त भूतकालीन अधिगम सम्मिलित हैं और इन सभी कारकों तथा संगठन का संश्लेषण उसके व्यवहारगत प्रतिमानों, विचारों, आदर्शों, मूल्यों तथा अपेक्षाओं में अभिव्यक्त होता है।” इन सब का विकास बाल्यकाल से प्रारम्भ होकर व्यक्ति की अन्तिम अवस्था तक क्रियात्मक पहलू, सामाजिक पहलू तथा कारण सम्बन्धी पहलू। ये पहलू मानव की भावुकता, शान्ति, विनोद प्रियता, मानसिक योग्यता, दूसरों के द्वारा डाले जाने वाले प्रभाव, व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले कार्यों के प्रति लोगों की प्रतिक्रियाओं, व्यक्तियों द्वारा डाले जाने वाले प्रभावों, व्यक्ति के स्वयं के द्वारा स्वीकार विचार, भावनाएँ तथा

अभिवृत्तियों आदि। यद्यपि ये पहलू व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं परन्तु ये सभी या कोई एक व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करे यह सम्भव नहीं है।

बीसेन्ज तथा बीसेन्ज के शब्दों में- “ व्यक्तित्व मनुष्य की आदतों, अभिवृत्तियों तथा विशेषताओं का संगठन है। यह जैविक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारणों के द्वारा संयुक्त प्रभावों से निर्मित होता है।” व्यक्तित्व के निर्माण में अनेक तथ्य तथा परिस्थितियाँ प्रभावकारी होती हैं। प्रमुख परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं।

आत्मचेतना, सामाजिकता, सामन्जस्य स्थापन, लक्ष्य प्राप्ति, इच्छाशक्ति, शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, गुणों में समरसता तथा विकास की निरन्तरता का होना।

यहाँ आत्म चेतना का अर्थ है कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं तथा उसकी सोच को मैं किस प्रकार लेता हूँ। यदि लोग मेरे बारे में अच्छा सोचते हैं तो मुझे और अधिक अच्छा बनने की प्रेरणा मिलती है यदि कुछ सुधारने के लिए प्रेरणा लेता हूँ या अपने अन्दर हीनभाव का विकास करता हूँ इसी प्रकार सामाजिकता का होना व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत आवश्यक है। समाज से कट कर रहने का अर्थ है- व्यक्तित्व के विकास में अवरोध आना सामन्जस्य स्थापन का अर्थ है अपने से सम्बंधित व्यक्तियों की भावनाओं को समझना उनके अनुकूल कार्य करना। व्यक्ति अपने लक्ष्यों के प्रति कितना सजग है यह व्यक्तित्व निर्माण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जिस व्यक्ति की इच्छा शक्ति कुण्ठित हो गई है वह व्यक्ति न तो अपने आपके लिए उपयोगी हो सकता है न वह समाज के लिए उपयोगी होगा। व्यक्तित्व के विकास में व्यक्ति का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है हमारी मानसिक, शारीरिक, नैतिक, आध्यात्मिक संवेगात्मक शक्तियों में समरसता तथा एकीकरण होना व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। क्योंकि व्यक्ति का सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा संवेगात्मक विकास उसकी आयु के साथ-साथ वृद्धिमान होना रहता है अतः व्यक्तित्व में परिवर्तन भी होना अवश्यसम्भावी है।

उपर्युक्त के आधार पर हम कह सकते हैं कि व्यक्तित्व का संगठन व्यक्ति की परिस्थितियों, सुविधाओं तथा स्वयं की इच्छा के अनुसार परिवर्तनशील रहता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. पर्सनेलिटी शब्द लेटिन के शब्द _____ से बना है।
2. भारतीय साहित्य ने व्यक्तियों की कौन सी तीन श्रेणियाँ बताई हैं।
3. गुणातीत व्यक्ति कौन होता है?
4. जी.डबल्यू. आलपोर्ट द्वारा दी गई व्यक्तित्व की परिभाषा दीजिए।

5.6 व्यक्तित्व का प्रकारानुसार वर्गीकरण

Classification of Personality- Type Approach

प्रकारों के आधार पर व्यक्तित्व का अध्ययन, व्यक्तित्व के अध्ययन के प्रारम्भिक काल में किया गया। आजकल प्रकारात्मक वर्गीकरण के स्थान पर शीलगुणों के आधार पर किए गए वर्गीकरण को अधिक माना जा रहा है। फिर भी इनकी ऐतिहासिकता तथा महत्व को हम नजरअन्दाज नहीं कर सकते। आगे प्रकार के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. हिपोक्रेट्स (Hippocrates)

हिपोक्रेट्स को पश्चिमी जगत् में चिकित्सा जगत् का पिता कहा जाता है। ये यूनानी चिकित्सक थे। हिपोक्रेट्स ने (460-370 वर्ष ईस्वी पूर्व) शरीर-द्रव्यों के आधार पर व्यक्तित्व को चार श्रेणियों में विभक्त किया। ये चार प्रकार के द्रव्य हैं-पीला पित्त (Yellow Bile), काला पित्त (Black Bile), रक्त (Blood) तथा कफ (Phlegm)। प्रत्येक व्यक्ति में इन चार द्रव्यों में से किसी एक द्रव्य की अधिकता रहती है। इस अधिक द्रव्य के कारण व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्धारित होता है। इन द्रव्यों के आधार पर व्यक्तित्व का संक्षिप्त विवरण सारणी रूप में प्रस्तुत है

सारणी -5.1

हिपोक्रेट्स का वर्गीकरण

प्रकार	मुख्य गुण	अन्य विशेषताएँ
रक्त	आशावादी (Sanguine)	आशावादी, उत्साही, प्रसन्नचित, सक्रिय
काला पित्त	विशादी (Melancholic)	उदास, कुंठित, निराशावादी
पीला पित्त	क्रोधी (Choleric)	आक्रामक, चिड़चिड़ा कोपशील शीत प्रकृति,
कफ	श्लेष्मिक (Phelegmatic)	प्रकृति, निष्क्रिय, दुर्बल, उत्तेजनाविहीन

2. आयुर्वेद - आयुर्वेद में व्यक्ति की प्रकृति को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है ये भेद हैं-

- i. वात-प्रकृति,
- ii. पित्त-प्रकृति, तथा
- iii. कफ-प्रकृति

वात-प्रकृति के व्यक्ति रुक्ष, कृश तथा पतले शरीर वाले होते हैं, उनका स्वर फटा हुआ तथा मन्द होता है। उन्हें नींद कम आती है। शरीर चंचल होता है। वह व्यक्ति अधिक बोलता है। कार्य को शीघ्रता से बिना सोच-समझे करता है। इन्हें क्रोध तथा प्रेम शीघ्रता से हो जाता है। शीत सहन करने में असमर्थ रहता है। हाथ पैर ठण्डे रहते हैं। केश, नख, रोंम, दन्त आदि कठोर रहते हैं। सोते समय आंखें अधखुली रहती है। सोते हुए दांत किटकिटाते हैं। इन्हें आकाश में उड़ने के, वृक्षों को लांघने के स्वप्न आते हैं। ये कलह प्रिय, गीत वाद्य, नृत्य, हास्य, तथा विलासप्रिय होते हैं।

पित्त प्रकृति के व्यक्तित्व के अंगों में सुकुमारता होती है। शरीर का रंग पाण्डु, शरीर पर तिल तथा मस्से अधिक होते हैं। भूख-प्यास अधिक लगती है, बाल शीघ्र ही सफेद हो जाते हैं तथा उड़ जाते हैं, ये क्लेश को सहन नहीं कर पाते, पराक्रमी, मेधावी, प्रतिभा-सम्पन्न होते हैं कम आयु में शरीर पर झुर्रियां पड़ जाती हैं। पसीना अधिक आता है, मुख, कांख, केश आदि से दुर्गन्ध आती है, दांत पीले होते हैं, इन्हें आग लगने, तड़ित गिरने के तथा अमलताश तथा फ्लाश आदि रक्त वर्ण के पुष्पों वाले स्वप्न आते हैं। ये मध्य आयु मध्य बल, मध्य ज्ञान, मध्य धन तथा मध्य साधन वाले होते हैं।

कफ प्रकृति वाले व्यक्ति चिकने शरीर वाले, मधुरभाषी, सुडौल शरीर तथा इनका स्वभाव गम्भीर, सहनशील तथा धैर्ययुक्त होता है, पसीना कम आता है, गर्मी कम लगती है, प्यास कम लगती है। वाणी में मधुरता तथा स्पष्टता होती है। ये शान्त, सौम्य, धनवान विद्वान, ओजस्वी तथा दीर्घायु होते हैं।

वात, पित्त, कफादि प्रकृति के कारण व्यक्ति का व्यवहार निर्धारित होता है। इसी के आधार पर चिकित्सा की जानी चाहिए। कुछ व्यक्तियों में द्विदोषज प्रकृति होती है। व्यक्तित्व की प्रकृति में परिवर्तन नहीं होता है, यदि प्रकृति में अचानक परिवर्तन आ जाए तो उसे अरिष्ट सूचक माना जाता है। मनस प्रकृति या महा प्रकृति अर्थात् सत, रज, तथा तम गुणों में परिवर्तन यज्ञ, ज्ञान, तप के द्वारा सत, रज, तम गुणों में परिवर्तन सम्भव है। परन्तु वात, पित्त तथा कफ में परिवर्तन नहीं होता।

3. **क्रेश्मर (Kretschmers) वर्गीकरण-** क्रेश्मर ने व्यक्तित्व को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया है। ये मानसिक रोग चिकित्सक थे। इनका अध्ययन मनोविदलता (Schizophrenia) उत्साह विषाद (Manic Depressive) मनोविक्षिप्तता (Psychosis) के रोगियों के लक्षणों पर आधारित था। शरीर रचना के आधार पर चित्तवृत्ति का वर्गीकरण अग्रलिखित सारणी में प्रस्तुत है-

सारणी-5.2

क्रेश्मर का वर्गीकरण

क्रम	प्रकार	स्वभाव	विशेषताएँ
1.	स्थूलकाय	सइक्लोआइड	छोटे, मोटे, गोलाकार, गर्दन मोटी, टांग भुजाएँ मोटी, प्रसन्नचित, मिलनसार, आराम पसन्द, मित्र संख्या अधिक, दुःख-सुख से शीघ्र प्रभावित।
2	कृशकाय	सिजोइड	कमजोर, पतले, हाथ-पैर पतले लम्बे, दुर्बल, आत्मकेन्द्रित, एकान्तप्रिय, चिड़चिड़ापन, कल्पनाशील, भावना प्रधान, शरीर भार कम, महत्वाकांक्षी भावुक, समाज के नियमों का पालन करने वाले, अन्तर्मुखी।
3.	पुष्टकाय	-	सुन्दर, वक्षचौड़ा, पतली कमर, कंधा चौड़ा, सीना उभरा, निर्भीक, जोश, साहस, उत्साह, सुखदुःख

			का प्रभाव कम, सामंजस्यवादी प्रसन्नचित समाज में प्रतिष्ठित।
4.	मिश्रितकाय	-	मिश्रित लक्षण

क्रेशमर का वर्गीकरण मनोरोगियों की दृष्टि से तो उचित माना जाता है परन्तु सामान्य व्यक्तियों की व्याख्या के लिए यह सिद्धान्त अधिक उपयोगी नहीं माना जाता।

4. **शेल्डन का वर्गीकरण Sheldon's Classification** - शेल्डन का व्यक्तित्व वर्गीकरण शरीर रचना पर आधारित है। इसका संक्षिप्त विवरण सारणी में प्रस्तुत है-

सारणी- 5.3

शेल्डन का व्यक्तित्व वर्गीकरण

क्रम	प्रकार	स्वभाव	विशेषताएँ
1.	गोलाकार Edomorphy	Viserotonic	मोटे, भारी गोलाकार, आराम, पसन्द, सामाजिक, सक्रियता मिलनसार, सरल, स्वभाव, निद्रा अधिक, सहिष्णु, खाने के शौकीन, शिष्टाचार प्रेमी, चिन्ताकम, रंजिश न मानने वाले, हमदर्दी
2.	आयताकार Mesomorphy	Sometotonic	स्वस्थ, गठीला शरीर, साहसी, परिश्रमी, लक्ष्योन्मुख, समर्पित, कर्मठ, महत्वाकांक्षी, स्वास्थ्य के प्रति सतर्क, दमदार आवाज, संवेगात्मक रूप से स्थिर, व्यवहार परिपक्व।
3.	लम्बाकार Extomorphic	Cerebratonic	दुबले, लम्बे, शीघ्र थकान, बाहरी जगत् में कम रुचिशील, संयमी, मानसिक कार्यों में रुचि, आत्मकेन्द्रित, शीघ्र घबराना, अन्तर्मुखी, कलात्मक गोपनीयता रखने वाले, शीघ्र उत्तेजित, शर्मीलापन, संकोची।

शेल्डन का मानना है कि सन्तुलित व्यक्तित्व वह है, जिसमें तीनों वर्गों के कम से कम चार-चार गुण पाए जाएँ ।

5. **युंग का वर्गीकरण (Jung's Classification)** - कार्ल युंग (1875-1961) ने 1921 में व्यक्तित्व का वर्गीकरण अन्तर्मुखी (Introvert) तथा बहिर्मुखी (Extrovert) के रूप में किया।

इनके वर्गीकरण को मनोवैज्ञानिक प्रकार भी कहा जाता है, क्योंकि इनका वर्गीकरण व्यवहार की प्रवृत्तियों पर आधारित है।

सारणी- 5.4

युंग का व्यक्तित्व वर्गीकरण

क्रम	प्रकार	विशेषताएँ
1.	अन्तर्मुखी	आत्मकेन्द्रित, लज्जालु, संकोची, दबू, विचार प्रधान, निर्णय में विलम्ब, भविष्य के प्रति चिन्तित, सामाजिक कामों के प्रति कम दिलचस्पी, कल्पनाशील, आलोचना से घबराना, एकाकी, शान्त प्रकृति।
2.	बहिर्मुखी	बाह्यकेन्द्रित मिलनसार, असंकोची, दबंग, वाक्पटु, व्यवहार कुशल, तुरन्त निर्णय, वर्तमान जीवी, सामाजिक, वास्तविक जगत में रहने वाले, आलोचनाओं की परवाह नहीं करते, समूह में रहने वाले, क्रियाशील।
3.	उभयमुखी	कुछ व्यक्ति न तो अन्तर्मुखी होते हैं न ही बहिर्मुखी होते हैं। Neyman & Yacorzynki (1942)ने एक नया वर्ग बनाया, जिसे उभयमुखी कहा। इनमें दोनों वर्गों की विशेषताएँ पाई जाती हैं।

6. अडानो का लोकतांत्रिक बनाम निरंकुश व्यक्तित्व (Adano's Democratic versus Authoritarian Personality) अडानो (1950) तथा साथियों ने व्यक्तित्व को लोकतांत्रिक एवं निरंकुश दो प्रकारों में वर्गीकृत किया है। इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. लोकतांत्रिक- मन (1967) के अनुसार लोकतांत्रिक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति में सामूहिकता, भाईचारा, पारस्परिक सहयोग, अधिकारों का विकेन्द्रीयकरण जैसे गुण पाए जाते हैं।
2. निरंकुश-निरंकुश व्यक्तित्व वाले व्यक्ति यौन के चिन्तक, धर्मभीरु विध्वंसक, कटु, कठोर, अंधविश्वासी तथा सनकी होते हैं।

5.7 व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धान्त Trait Approach of Personality

कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व को कुछ शीलगुण निर्धारित एवं नियंत्रित करते हैं शीलगुण सिद्धान्त का अध्ययन करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि शीलगुण क्या है? शीलगुण की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

क्रेच तथा क्रचफील्ड(Krech & Crutchfield) शीलगुण, व्यक्ति की स्थाई विशेषता है। जिसके द्वारा व्यक्ति का व्यवहार विभिन्न परिस्थितियों में लगभग एक-सा रहता है।

डी०एन० श्रीवास्तव- शीलगुण किसी परिस्थिति विशेष में सामान्यीकृत व्यवहार करने का ढंग है, जो अपेक्षाकृत स्थाई होते हैं। इनके द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में लगभग एक जैसा व्यवहार होता है। शीलगुण अपूर्व (Unique) और सार्वभौमिक होते हैं, ये व्यक्तित्व के सम्पूर्ण व्यवहार का प्रमुख आधार हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि शीलगुण-

1. व्यवहार करने का तरीका है।
2. अपेक्षाकृत स्थाई होते हैं।
3. परिस्थितियाबदलने पर भी शीलगुण पूर्ववत् होते हैं।
4. ये व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार का प्रमुख आधार होते हैं।

शीलगुणों के सम्बन्ध में कुछ सिद्धान्त इस प्रकार है-

5.7.1 अलापोर्ट का शीलगुण सिद्धान्त Allport's Trait Approach

अलापोर्ट ने शीलगुणों को दो प्रकारों से वर्गीकृत किया है-

1. सामान्य शीलगुण,
 2. वैयक्तित्व शीलगुण।
1. **सामान्य शीलगुण-** एक समाज अथवा संस्कृति में समग्र रूप से पाए जाते हैं तथा उस संस्कृति अथवा समाज की पहचान होते हैं। इसके लिए हम न्यू-गुयाना के आरापेश पर्वतों पर रहने वाली जनजाति के व्यवहार का उदाहरण दे सकते हैं, जिनका अध्ययन महान् समाजशास्त्री मागरेट मीड ने 1935 में किया था। उन्होंने बताया था कि आरापेश जनजाति के स्त्री-पुरुष में शिष्टता, नम्रता, शान्तचित्तता के गुण होते हैं। इनमें सहयोग, सद्भावना, सहानुभूति तथा प्रेम जैसे गुण पाए जाते हैं, जबकि न्यू-गुयान की ही एक अन्य जनजाति जिसे मुन्डगमार जनजाति कहते हैं कि स्त्री तथा पुरुष अहंकारी, ईर्ष्यालु, शंकालु, प्रतिद्वन्द्वी होते हैं। इनका स्वभाव आक्रामक होता है।

भारत के लोगों का सामान्य गुण सर्वधर्म सद्भाव है। यहाँ के निवासियों में सभी धर्मों के प्रति श्रद्धा भाव पाया जाता है।

2. **वैयक्तिक शीलगुण**-वैयक्तिक शीलगुणों को आलपोर्ट ने तीन भागों में बांटा है।
 - i. **मूल शीलगुण**- इन वैयक्तिक शीलगुणों के कारण व्यक्ति चर्चा में आ जाता है। यह शीलगुण बहुत कम संख्या में होते हैं फिर भी इनका प्रभाव विशिष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उदाहरण के लिए महात्मा गांधी के व्यवहार के दो शीलगुणों ने उन्हें विश्व स्तर पर सम्मानीय बना दिया। ये शीलगुण थे- सत्य और अहिंसा।
 - ii. **केन्द्रीय शीलगुण** -आलपोर्ट ने इस प्रकार के शीलगुणों को व्यक्ति के व्यवहार की निर्माण सामग्री(ईंट) माना है तथा व्यक्ति में इनकी संख्या 5 से 10 मानी है। समय पालन, सामाजिकता तथा आत्मविश्वास आदि शीलगुण केन्द्रीय शीलगुण हैं।
 - iii. **द्वितीयक शीलगुण**-इन शीलगुणों को व्यक्ति बहुत अधिक महत्व नहीं देकर सामान्य महत्व देता है। कुछ व्यक्तियों में जो केन्द्रीयशील गुण होते हैं, दूसरों के लिए वे द्वितीयक शीलगुण हो सकते हैं।

5.7.2 कैटेल का शीलगुण सिद्धान्त Cattell's Trait Approach

आर.वी. कैटेल ने शीलगुणों के आधार पर व्यक्तित्व सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इन्होंने स्रोत के आधार पर शीलगुणों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया-

1. पर्यावरण प्रभावित शीलगुण- ये शीलगुण पर्यावरण से प्रभावित होते हैं। अर्थात् जिस पर्यावरण में व्यक्ति रहेगा उसी के अनुकूल शीलगुणों को ग्रहण करेगा।
2. स्वाभाविक शीलगुण- वे शीलगुण जो पर्यावरण से प्रभावित नहीं होते हैं, बल्कि व्यक्ति की आनुवंशिकता से प्रभावित होते हैं।

कैटेल ने ही शीलगुणों के अन्य प्रकार से वर्गीकृत करते हुए दो प्रकार के शीलगुण बताए -सतही तथा मूल शीलगुण।

1. **सतही शीलगुण (Surface Trait)** - वे शीलगुण जो कि व्यक्ति दैनिक क्रियाओं से परिलक्षित होते हैं, जैसे-सत्यनिष्ठा ,प्रसन्नमुखता तथा परोपकारिता।
2. **मूल शीलगुण (Source Trait)**- व्यक्ति की संरचना में कैटेल ने मूल शीलगुणों को महत्वपूर्ण माना ये शीलगुण सतही शीलगुणों की अपेक्षा संख्या में कम होते हैं। इनका अवलोकन प्रत्यक्ष रूप से नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए मित्रता, शीलगुण कई एक सतही शीलगुणों के मेल से बनता है जैसे सामुदायिकता, निस्वार्थता तथा हास्य आदि।

कैटेल ने 16 मूल शीलगुणों का चयन व्यक्तित्व मापन के लिए किया, जिसे 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16 Personality Factor Questionnaire) कहा जाता है इसमें प्रयुक्त शीलगुण निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

सारणी- 5.5
कैटेल का शीलगुण वर्गीकरण

क्रम	कारक	शीलगुणों के नाम	
		निम्न	उच्च
1	A	आत्मकेन्द्रित	उदार
2	B	कम बुद्धि	अधिक बुद्धि
3	C	संवेगी	स्थिर
4	E	विनम्र	प्रभुत्ववादी
5	F	गम्भीर	प्रसन्नचित्त
6	G	स्वार्थ साधक	सद्विवेकी
7	H	लज्जालु	साहसी
8	I	कठोर	संवेदनशील
9	L	विश्वास करने वाला	शंकालु
10	M	व्यावहारिक	काल्पनिक
11	N	स्पष्ट वादी	चालाक
12	O	आत्मविश्वस्त	आशंकित
13	Q 1	रूढ़िवादी	प्रगतिशील
14	Q2	समूहाश्रित	आत्माश्रित
15	Q3	अनियंत्रित	नियंत्रित
16	Q4	विश्रांत	तनावयुक्त

5.7.3 नीओ- पी0आई0आर0 वर्गीकरण (Neo- P.I.R Classification)

शीलगुणों की पांच विमाओं के आधार पर कोस्टामैक्रे ने एक संशोधित नवव्यक्तित्व अनुसूची- (Neo-Personality Inventory Revised) का निर्माण किया। इसकी 5 विमाओं में (1) बहिर्मुखता, (2) सहमतिजन्यता, (3) कर्तव्यनिष्ठता, (4) मनस्तापी तथा (5) अनुभूतियों का खुलापनमें वर्गीकृत किया।

5.7.4 आइजेनक Eysenck's Classification

आइजेनक ने व्यक्तित्व की तीन विमाओं का वर्णन किया है। इनका यह अध्ययन 10,000 व्यक्तियों पर आधारित है। इनके अध्ययन में सामान्य तथा मनस्तापी सम्मिलित थे। इनके वर्गीकरण में व्यक्तित्व प्रकार इस प्रकार हैं-

1. अन्तर्मुखता बहिर्मुखी-इन्होंने अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी को अलग-अलग न मानकर एक ही प्रकार के दो छोर माना है। उदाहरण के रूप में अन्तर्मुखी दण्ड प्रभावित होते हैं, जबकि बहिर्मुखी पुरस्कार से प्रभावित होते हैं अन्तर्मुखी किसी सामाजिक निषेध को सरलता से स्वीकार, कर लेते हैं, जबकि बहिर्मुखी देर से स्वीकार करते हैं।
2. स्नायु विकृति एवं स्नायुविक स्थिरता- स्नायु विकृत व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों में संवेगात्मक नियंत्रण कम होता है, जबकि स्नायुविक स्थिर व्यक्तियों में संवेगात्मक नियंत्रण अधिक होता है। इनमें से कुछ व्यक्ति स्नायु विकृति के चरम छोर पर होते हैं, जबकि कुछ व्यक्ति स्नायु स्थिरता के दूसरे छोर पर होते हैं जैसे-विकृति कम होती चली जाती है, स्थिरता बढ़ती जाती है।
3. मनोविकृतता, पराहम् की क्रियाएँ - मनोविकृतता तथा पराहम् ये दो छोर हैं तथा इनका एक छोर-मनोविकृतता के छोर पर मनोविक्षिप्तता के लक्षण पाए जाते हैं, जैसे- क्षीणएकाग्रता, क्षीणस्मृति, असंवेदनशीलता तथा क्रूरता आदिजबकि दूसरे छोर पर उच्च एकाग्रता, उच्चस्मृति संवेदनशीलता तथा अक्रूरता होते हैं।

5.8 शीलगुण उपागम की समालोचना

शीलगुणों का व्यक्तित्व के मापन में अपना महत्वपूर्ण स्थान है, परन्तु शीलगुणों के आधार पर व्यक्तित्व की व्याख्या प्रभावी रूप में नहीं की जा सकती। इस सम्बन्ध में जो आलोचनाएँ की जा सकती हैं। उन्हें संक्षेप में निम्नलिखित बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है-

1. शीलगुणों की संख्या के बारे में एकमतता नहीं है।
2. सभी शीलगुणों के विरोधी शीलगुण स्पष्ट नहीं है।
3. शीलगुणों में परिस्थितिजन्य कारकों को महत्व नहीं दिया गया है।
4. व्यक्तित्व सम्बन्धी शीलगुणों के विकास के बारे में जानकारी नहीं दी गई है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

5. आयुर्वेद में व्यक्ति की प्रकृति को कितने भागों में वर्गीकृत किया गया ?
6. शेल्डन का व्यक्तित्व वर्गीकरण _____ पर आधारित है।

7. आलपोर्ट द्वारा वर्गीकृत शीलगुणों के प्रकार लिखिए।
8. 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली किसकी देन है।
9. युंग के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार लिखिए।
अन्तर्मुखी बहिर्मुखी उभयमुखी

5.9 सारांश

इस खण्ड के आमुख में हमने सीखा कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन करना अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि व्यक्ति अपने अवगुणों को छिपाता है, गुणों का प्रकट करता है। कोई भी व्यक्ति आप को आपकी स्वीकृति के बिना हीन महसूस नहीं करा सकता। हमें गुणवान व्यक्तियों की संगत में रहना चाहिए। हमें अपने व्यवहार को सुसंगत, यथायोग्य बनाना हमारे हित में है। इस इकाई में हमने भारतीय साहित्य तथा पश्चिमी साहित्य के संक्षिप्त अध्ययन के द्वारा व्यक्तित्व को समझने का प्रयास किया है तथा इस की परिभाषाओं का अध्ययन किया है। व्यक्तित्व के प्रकार को समझने के लिए नए तथा पुराने वर्गीकरण का विवेचन किया है तथा शीलगुण सिद्धान्तों का समालोचनात्मक अध्ययन किया है।

5.10 शब्दावली

1. पर्सनेलिटी - शब्द लेटिन के शब्द परसोना (Persona) से बना है, जिसका अर्थ होता है मुखौटा
2. वात-प्रकृति- वात-प्रकृति के व्यक्ति रुक्ष, कृश तथा पतले शरीर वाले होते हैं।
3. पित्त प्रकृति- पित्त प्रकृति के व्यक्तित्व के अंगों में सुकुमारता होती है।

5.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. परसोना (Persona)
2. भारतीय साहित्य ने व्यक्तियों की तीन श्रेणियां बताई है- सत, रज तथा तमोगुण।
3. गुणातीत व्यक्ति वह होता है, जो सत, रज तथा तम आदि गुणावगुणों से परे होता है।
4. जी.डबल्यू. आलपोर्ट के अनुसार- “व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक तंत्र का गतिशील संगठन है जिसे उसके पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित करने के लिए आवश्यक शीलगुणों के एक संकलित नमूने के रूप में परिभाषित कर सकते हैं”
5. आयुर्वेद में व्यक्ति की प्रकृति को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है
 - i. वात-प्रकृति,

-
- ii. पित्त-प्रकृति, तथा
 - iii. कफ-प्रकृति
6. शरीर रचना
 7. आलपोर्ट द्वारा वर्गीकृत शीलगुणों के प्रकार हैं-
 - i. सामान्य शीलगुण,
 - ii. वैयक्तिक शीलगुण।
 8. 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली कैटेल की देन है।
 9. युंग के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार हैं-
 - अन्तर्मुखी
 - बहिर्मुखी
 - उभयमुखी
-

5.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Cronbach, I.J. (1970), Essentials of Psychological Testing, 3rd ed., New York; Harper and Row Publishers.
 2. Charles, E. Skinner (1990) : Education Psychology (Hindi) New Delhi, Disha Publications
 3. Gardner, Howard (1999): The Disciplined Mind. New York: Simon Schuster
 4. Gupta, S.P. (2002) :उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
 5. Dandapani, S. (2007). Advanced Educational Psychology, New Delhi. Anmol Publications Pvt.Ltd.
 6. Ebel, Robert L.,(1979), Essentials of Psychological Measurement, London; Prentice Hall International Inc.
 7. Freeman, Frank S. (1962); Theory and Practice of Psychological Testing, New Delhi Oxford and IBN Publishing Co.
 8. Kuppaswamy, B.(2006), Advanced Educational Psychology ,New Delhi Sterling Publishers Private Ltd.
 9. Lindquist, E.F (1951), Educational Measurement, Washington D C .American Council on Education.
 10. Mangal, S.K. (2007) Advanced Educational Psychology, New Delhi. Prentice Hall of India Private Limited.
 11. Sukla, O.P. (2002):शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ, भारत प्रकाशन।
-

-
12. Singh, Shireesh Pal (2009) : शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
 13. Thorendike, R.L. & Hagen, E.P. (1969). Measurement and Evaluation in Psychology and Education 3rd ed; New York; John Wily&Sons Inc
 14. Williams, W.M. et al (1996): Practical Intelligence. New york, Harper CollinsCollege Publications.

5.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. व्यक्तित्व को परिभाषित कीजिए।
2. व्यक्तित्व की विशेषताएँ कौन सी होती हैं?
3. व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में कौन-कौन से सिद्धान्त हैं?
4. व्यक्तित्व के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।
5. व्यक्तित्व के निर्धारकों की सूची बनाइए।
6. हिपोक्रेट्स के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार बताइए।
7. व्यक्तित्व का शेल्डन वर्गीकरण लिखिए।
8. आलपोर्ट ने कितने प्रकार के शीलगुण बताए हैं। शीलगुण सिद्धान्तों की समालोचना कीजिए। व्यक्तित्व के बौद्धिक निर्धारक कौन-कौन से हैं?

इकाई 6- व्यक्तित्व विकास में प्रभावी कारक
Effective Factors in Personality
Development

- 6.1 प्रस्तावना
- 6.2 उद्देश्य
- 6.3 व्यक्तित्व विकास में प्रभावी कारकों का अध्ययन
- 6.4 आनुवंशिक तथा दैहिक कारक
- 6.5 व्यक्तित्व के बौद्धिक निर्धारक
- 6.6 व्यक्तित्व के यौन निर्धारक
- 6.7 संवेगों का व्यक्तित्व पर प्रभाव
- 6.8 व्यक्तित्व पर सफलता तथा असफलता का प्रभाव
- 6.9 आकांक्षा स्तर का व्यक्तित्व पर प्रभाव
- 6.10 व्यक्तित्व विकास के सिद्धान्त
- 6.11 फ्राइड का मनोविश्लेषणवाद
- 6.12 व्यक्तित्व विकास और इरिकसन का मनोसामाजिक सिद्धान्त
- 6.13 सारांश
- 6.14 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 6.15 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 6.16 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व का विकास एक इतना उलझा हुआ सम्प्रत्यय है, जिसका एक निश्चित पैटर्न प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। हम जानते हैं कि व्यक्ति की रचना आत्म-प्रत्यय और शीलगुणों से मिलकर होती है। आत्म-प्रत्यय (Self-concept) को फ्राइड-अहम् (Ego), सलीवन-आत्मतंत्र (Self-System) कहते हैं। परकिन्स (H.V. Perkins, 1958) के शब्दों में, “आत्म-प्रत्यय का अर्थ उन प्रत्यक्षीकरण, विश्वास, भावना, अभिवृत्ति और मूल्यों से है, जिन्हें व्यक्ति अपनी विशेषताओं के रूप में देखता है और शीलगुणों के बारे में यहाँ इतना ही जान लें कि शीलगुण किसी परिस्थिति विशेष में सामान्यीकृत व्यवहार करने का

ढंग हैं, जो अपेक्षाकृत स्थाई होते हैं। शीलगुण व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार का प्रमुख आधार हैं। विशेष विवरण इकाई 15 में प्रस्तुत कर दिया गया है।

व्यक्ति के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में व्यक्ति का विकास किस प्रकार होता है? यह इस इकाई की विषयवस्तु है। यहाँ हम व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में कुछ प्रतिष्ठित मनोवैज्ञानिकों के मतों का संक्षेप में अध्ययन कर रहे हैं। ताकि हम अपने छात्रों के तथा अपने स्वयं के व्यक्तित्व के उन्नयन में सहयोगी हो सकें।

इस इकाई हम व्यक्तित्व विकास में उपयोगी कारकों को जानने का प्रयास कर रहे हैं।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन पश्चात् आप-

1. व्यक्तित्व विकास में प्रभावी शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों से परिचित हो सकेंगे।
2. अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से निस्सृत स्रावों से व्यक्तित्व पर होने वाले प्रभावों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. बालकों में अतःस्रावी ग्रन्थियों के द्वारा निस्सृत स्रावों के कम या अधिक होने के कारण शरीर रचना पर होने वाले प्रभावों का वर्णन कर सकेंगे।
4. व्यक्तित्व पर संवेगों द्वारा पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या कर सकेंगे।
5. फ्राइड के मनोविश्लेषणवाद को अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
6. व्यक्तित्व विकास और इरिक्सनके मनोसामाजिक सिद्धान्त को स्पष्ट कर सकेंगे।

6.3 व्यक्तित्व विकास में प्रभावी कारकों का अध्ययन

व्यक्तित्व के विकास को अनेक कारक प्रभावित करते हैं। कुछ कारक अधिक प्रभावी होते हैं, कुछ कारक कम प्रभावी होते हैं। परन्तु कम प्रभावी कारकों को भी उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। इन प्रभावी कारकों को पांच श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है-

1. आनुवंशिक तथा दैहिक कारक,
2. पर्यावरणीय कारक,
3. मनोवैज्ञानिक कारक,
4. सामाजिक कारक, तथा
5. सांस्कृतिक कारक।

इन कारकों का अध्ययन क्रमशः आगे किया जा रहा है।

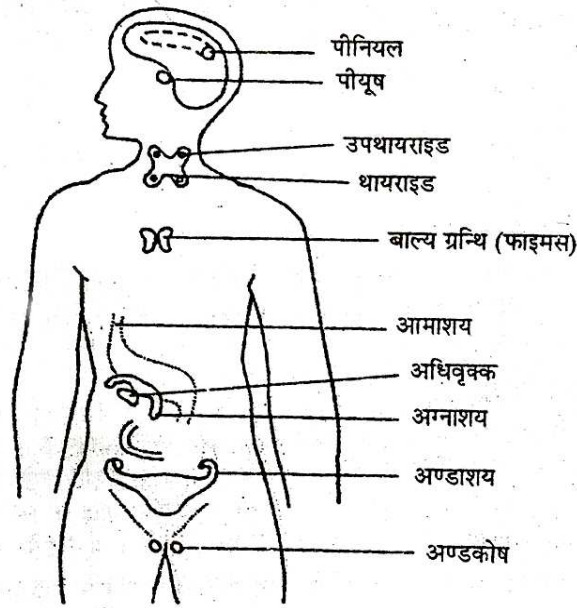
6.4 आनुवांशिक तथा दैहिक कारक

व्यक्तित्व के जैविक तथा दैहिक कारकों में अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ, शरीर रचना तथा स्वास्थ्य, शरीर के रसायन, परिपक्वता, आनुवांशिक कारक तथा स्नायुमण्डल विशेष रूप से प्रभावी होते हैं इनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

1. अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ

नलिकाविहीन ग्रन्थियों के द्वारा निम्नतः स्राव सीधे रक्त में जाता है। इनसे निकले स्रावों को हारमोन्स कहते हैं। अन्तःस्रावी ग्रन्थियों में पिट्यूटरी, लिंग ग्रन्थियाँ, एड्रेनल, थायराइड तथा अन्य ग्रन्थियाँ हैं। इन ग्रन्थियों से निकले हारमोन्स का प्रभाव व्यक्ति के विकास पर पड़ता है। फलतः उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली ग्रन्थियाँ तथा उनके कार्य इस प्रकार हैं-

- i. पेन्क्रियाज ग्रन्थि-यह ग्रन्थि आमाशय तथा छोटी आंत से मिलने के स्थान पर पाई जाती है। यह ट्रिपसिन क्राइमोट्रिपसिन, एमालेज आदि एन्जाइम का स्राव करती है, जो कि भोजन के पाचन में काम आते हैं। पाचन के अतिरिक्त पेन्क्रियेटिक ग्रन्थि दो हार्मोन्स स्रावित करती है। (1) इन्सुलिन तथा (2) ग्लूकेगोन। इन्सुलिन रक्त में ग्लूकोज की मात्रा को नियंत्रित करता है। यदि इन्सुलिन का स्राव नहीं होता तो मधुमेह रोग हो जाता है। मधुमेह रोग व्यक्ति के व्यवहार पर अच्छा प्रभाव नहीं डालता है। व्यक्ति मूड़ी हो जाता है, मानसिक योग्यता में कमी आ जाती है, शारीरिक स्वास्थ्य भी खराब रहने लगता है। इसके अतिरिक्त अन्य भी कई हानियाँ हैं। जिन के कारण व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावित होता है।
- ii. थायराइड ग्रन्थि -इस ग्रन्थि की आकृति पुराने जमाने में पहने जाने वाले कवच की तरह होती है, जिसे लेटिन में थायरोन कहते हैं। यह ग्रन्थि श्वासनली के दोनों ओर पाई जाती है। इस ग्रन्थि से निकलने वाले हारमोन को थायरोक्सिन कहते हैं। थायरोक्सिन हारमोन में आयोडाइज्ड अमीनों एसिड होता है, जिसमें आयोडीन की मात्रा 65 प्रतिशत के लगभग होती है। जिस व्यक्ति में यह हारमोन कम निकलता है, उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है। वह बौना रह जाता है, उसका मस्तिष्क का विकास नहीं हो पाता है, मानसिक विकास के अवरुद्ध होने के कारण स्मृति तथा चिन्तन कम हो जाते हैं, ध्यान का विस्तार अत्यन्त कम हो जाता है। इन सब का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है।
- iii. पैराथायराइड ग्रन्थि- यह ग्रन्थि चार मटर के आकर की ग्रन्थियों से मिलकर बनी होती है। इस ग्रन्थि के द्वारा पैराथायराइड हारमोन पैदा होता है, जो कि पेटाइड हारमोन होता है। इस हारमोन से रक्त में कैल्शियम की मात्रा नियंत्रित रहती है तथा दांतों तथा अस्थियों का विकास समुचित ढंग से होता है। यह ग्रन्थि हमारे संवेगात्मक व्यवहार तथा शान्तचित्तता को प्रभावित करती है। जो कि व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण निर्धारक है।



चित्र 16.1 अन्तःस्रावी ग्रन्थियां

- iv. एड्रीनल ग्रन्थि - ये ग्रन्थि दोनों गुदों के ऊपर पाई जाती है। प्रत्येक ग्रन्थि की बाहरी पर्त Cortex और अन्दर की पर्त को Medulla कहते हैं। इस ग्रन्थि से निकलने वाले स्राव को एड्रीनल हारमोन कहते हैं। वास्तव में ये ऐपिनेफ्रीन हारमोन होते हैं। इन हारमोन्स को आपातकालीन चेतावनी हारमोन (Emergency Warning Sire) कहते हैं। आपातकालीन परिस्थितियों में ये रक्त शर्करा के स्तर को बढ़ा देता है, हृदय की धड़कन तेज हो जाती है। रक्त दाब बढ़ जाता है, रक्त प्रवाह तेज हो जाता है। ये शरीर को लड़ने और भागने के लिए तैयार करती है। आपातकालीन स्थिति की समाप्ति पर शरीर को थकान अनुभव होती है तथा त्वचा का रंग काला पड़ जाता है।
- v. पिट्यूटरी ग्रन्थि - यह ग्रन्थि मस्तिष्क के हाइपोथैलेमस के नीचे की ओर पाई जाती है। इस ग्रन्थि के दो भाग होते हैं-पोस्टरियर तथा इन्टीरियर पिट्यूटरी ग्रन्थि। इस ग्रन्थि को मास्टर ग्रन्थि कहा जाता है, क्योंकि यह ग्रन्थि ही अन्य ग्रन्थियों से निकलने वाले स्रावों को नियंत्रित करती है। पिट्यूटरी ग्रन्थि के अधिक स्राव के कारण व्यक्ति की लम्बाई तथा आकार दोनों बढ़ जाते हैं। अमेरिका का राबर्ट बैडलॉ 22 वर्ष तक की आयु तक जिन्दा रहा। 22 वर्ष की आयु में वह किसी संक्रामक रोग से मर गया था। उस समय उसकी लम्बाई 8 फुट 11 इंच (272 सेन्टीमीटर) तथा शरीर भाग 220 किलोग्राम था। उसके शरीर के एक्स-रे से विदित हुआ कि वह पिट्यूटरी ग्रन्थि

में ट्यूमर से रोगग्रस्त था। पिट्यूटरी के अधिक स्राव से व्यक्ति की लम्बाई बढ़ जाती है तथा कम स्राव से वृद्धि अवरुद्ध हो जाती है, जिसे वैज्ञानिक भाषा में पिट्यूटरीय बौनापन कहते हैं हाइपोथैलेमस इन्टीरियर पिट्यूटरी ग्रन्थि के स्राव को नियंत्रित करता है तथा इन्टीरियर पिट्यूटरी ग्रन्थि अन्य ग्रन्थियों के स्राव को नियंत्रित करती है।

- vi. जनन ग्रन्थियां- स्त्री के अण्डाशयों तथा पुरुष के वृषणों से निकलने वाले स्रावों को गीनेडल हारमोन्स कहते हैं। ये तीन होते हैं-प्रोजेस्ट्रोन, एण्डोजन तथा इस्ट्रोजन्स। इन हारमोन्स का प्रभाव व्यक्तित्व पर बहुत अधिक पड़ता है। इन हारमोन्स के द्वारा ही पुरुष में पुरुषत्व तथा स्त्रियों में स्त्रित्व के लक्षणों का विकास होता है। इस स्रावों से ही स्त्री-पुरुष के जनन तंत्र का विकास होता है।

प्रोजेस्ट्रोन यह ओवरी से स्रावित होता है। यह हारमोन यूटरस (बच्चेदानी) को गर्भ के लिए तैयार करता है। तथा दुग्ध ग्रन्थियों का विकास करता है। टेस्टोस्ट्रोन पुरुषों में द्वितीयक कामांगों का विकास करता है तथा प्यूबर्टी में विकास को त्वरण प्रदान करता है। इसके द्वारा पुरुष जननांगों का विकास होता है तथा शुक्राणुओं के बनने की क्रिया प्रारम्भ होती है। स्ट्रुडिओल हारमोन्स के द्वारा महिलाओं में द्वितीयक कामांगों का विकास होता है तथा प्यूबर्टी में स्त्री जननतंत्र को विकसित करता है। यूटरस को गर्भधारण के लिए तैयार करता है। आमतौर पर यह देखा गया है कि जिन स्त्री-पुरुषों में यौन अंगों का विकास सन्तुलित नहीं होता, उन्हें विभिन्न प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

2. शरीर रचना – आनुपातिक रूप से शरीर के गठन को व्यक्तित्व के साथ जोड़ने की परम्परा रही है। यह अनुसंधानों से भी सिद्ध हो चुका है। शरीर रचना में विकृति का असर व्यक्ति की समायोजन क्षमता पर पड़ता है। शारीरिक रचना में कमी वाले व्यक्तियों में हीन भावना पनप जाती है।



चित्र 16.2 डाउन्स सिन्ड्रोम (मंगोलता) के प्रभाव व कारण

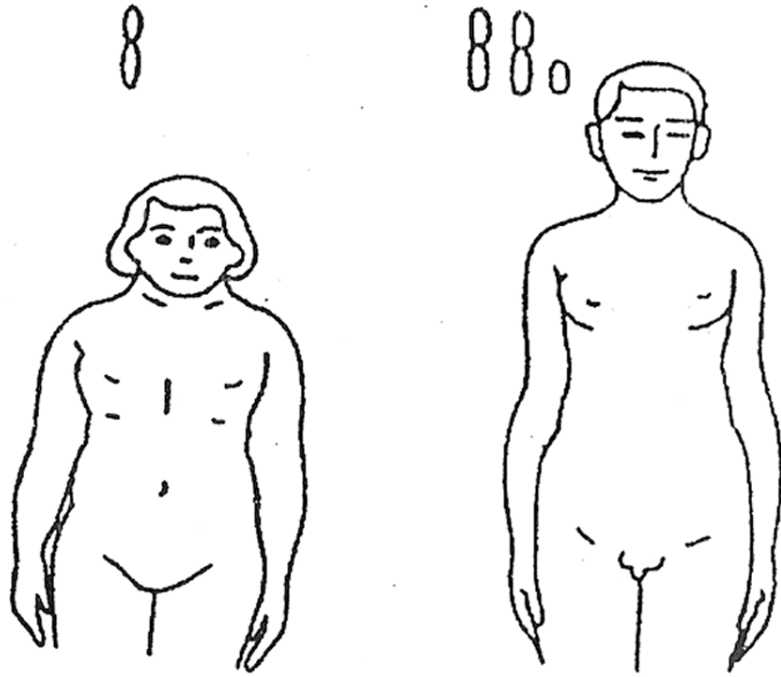
शारीरिक लक्षण: अवरुद्ध विकास, 1. छोटा गोल सिर, 2. आँखों के बीच अपेक्षतया अधिक फासला, 3. छोटी बैठी हुई नासिका, 4. विदीर्ण जीभ तथा निचला होंठ आगे को बढ़ा हुआ, 5. छोटी गर्दन, 6. हाथ चौड़े और मोटे, असामान्य हस्तरेखाएँ, कनिष्ठा अंगुली बहुत छोटी, तथा 7. अल्पविकसित जननांग। मंगोलता का कारण 21 वें नम्बर पर दो के बजाए तीन क्रोमोसोमों की उपस्थिति भी हो सकता है।

3. आनुवंशिक कारण - कुछ अज्ञात कारणों से कई बार व्यक्ति की पैतृकता को प्रभावित करने वाले क्रोमोसोम में गड़बड़ हो जाती है। जैसा कि हम जानते हैं कि सन्तान का लिंग निश्चयन का दायित्व x तथा y क्रोमोसोम का होता है। कई बार इन क्रोमोसोम की संख्या में परिवर्तन आ जाता है। पुरुष में xy तथा स्त्रियों में xx क्रोमोसोम होते हैं। कभी-कभी यह बढ़ कर xxx किसी व्यक्ति में यह xyy हो जाते हैं।

सर्वेक्षण में पाया गया है कि औसतन प्रति 10 हजार लड़कों में 10 लड़के ऐसे होते हैं, जिनकी कोशिका में एक अतिरिक्त y क्रोमोसोम होता है। इसी प्रकार प्रति 10 हजार लड़कों में से 13 में एक अतिरिक्त x क्रोमोसोम पाया जाता है।

जिन लड़कों में XXY क्रोमोसोम होता है, उनमें युवावस्था में चेहरे पर बालों का अभाव होता है, वक्ष पर कुछ उभार आ जाता है। आमतौर पर अतिरिक्त X क्रोमोसोम वाले लड़के मंद बुद्धि वाले होते हैं।

कुछ लड़कों में अतिरिक्त Y क्रोमोसोम पाया जाता है। इस सम्बन्ध में विशेष रुचि तब उत्पन्न हुई जब स्काटिश स्टेट सिक्सोरिटी हॉस्पिटल में 3 प्रतिशत व्यक्तियों की कोशिकाओं में एक अतिरिक्त Y क्रोमोसोम पाया गया।



चित्र 16.3 क्रोमोसोमजन्य यौन अपसामान्यताएँ

(बाएँ) टर्नर्स सिन्ड्रोम (अपसामान्यतः विकसित स्त्री) के लक्षण: रुद्ध विकास, मानसिक विकार (प्रायः), ठोड़ी अन्दर धंसी हुई, वैब्ड गर्दन, अल्पविकसित छतियाँ, अण्डाशय (ओवरी) अविकसित अथवा अनुपस्थित, जघन रोम (प्यूबिक हेयर) अति विरल अथवा अनुपस्थित, ऋतुस्राव का अभाव, बन्ध्यता (प्रायः), जन्मजात श्रवण विकार। कारण: दो के स्थान पर केवल एक क्रोमोसोम का होना।

(दाएँ) क्लाइन्फेल्डर सिन्ड्रोम (अपसामान्यतः विकसित पुरुष) के लक्षण- षंडाभ अंग (बहुधा) मानसिक विकृति, स्तन अति विकसित (पुरुष के लिए), अल्पविकसित जननांग और साधारणतया शुक्राणुओं का अभाव। कारण: एक X क्रोमोसोमों के स्थान पर दो या अधिक X क्रोमोसोमों की उपस्थिति।

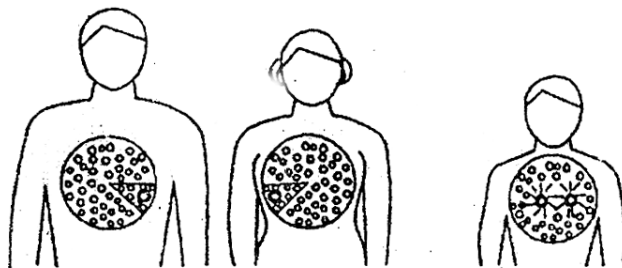
व्यक्तियों में 4 में से 1 की कोशिका में अर्थात् 25 प्रतिशत व्यक्तियों में अतिरिक्त y क्रोमोसोम उपस्थित होता है। सन् 1966 में एक अध्ययन में 6 फीट से अधिक ऊंचाई के 50 व्यक्तियों में से 12 व्यक्ति xyy क्रोमोसोम वाले थे।

क्रोमोसोम वाले व्यक्ति अल्पायु में ही अपराधवृत्ति के कारण दण्डित होते हैं वे आमतौर पर 13 वर्ष की अल्पायु में ही किसी न किसी अपराध में फंस जाते हैं उनकी प्रवृत्ति सम्पत्ति को हानि पहुँचाने की अधिक होती है व्यक्ति को हानि पहुँचाने की कम होती है। अतिरिक्त y क्रोमोसोम वाले परिवारों का अध्ययन करने पर यह भी विदित हुआ कि xyy क्रोमोसोम वाले व्यक्ति के परिवार में अपराध करने की प्रवृत्ति मौजूद नहीं होती। इस प्रकार का व्यक्ति विशेष ही अपराधी होता है उसका परिवार नहीं।

अलिंग क्रोमोसोम (ओटोसोम) की अपसामान्यता में से सबसे अधिक पाई जाने वाली अपसामान्यता डाउनसिन्ड्रोम (मंगोलता) है। मंगोलता में मंदबुद्धिता, नाटा कद, जन्मजात विरूपताएँ आदि पाई जाती है।

इसी प्रकार जिन स्त्रियों में लिंग क्रोमोसोम केवल एक होता है अर्थात् केवल एक क्रोमोसोम होता है, उनका कद छोटा, गर्दन मोटी, छाती चौड़ी, चुचकों के बीच का अन्तर अधिक, स्तन अविकसित, गर्भाशय अविकसित, बहुत छोटा तथा डिम्बग्रन्थियाँ एक तन्तुमय रेखा जैसी होती हैं। 3000 में से केवल एक स्त्री ऐसी होती है।

कुछ स्त्रियों में तीन x क्रोमोसोम पाए जाते हैं वे देखने में तो सामान्य-सी लगती है परन्तु इनकी प्रजनन क्षमता कम होती है। इन बुद्धि भी कुछ कम होती है। ऐसी स्त्रियाँ 750 में एक पाई जाती है।



चित्र 16.4 इन ब्रीडिंग का प्रभाव

सगे चचेरे, ममेरे, फुफेरे मौसरे भाई-बहिनो में कुल जीनों में 1/8 जीन समान होते हैं। यदि इनमें से कोई एक रिसेसिव जीन का वाहक तो दूसरे में वैसे ही जीन के होने की सम्भावना आठ में से एक होती है। यदि इन व्यक्तियों के परस्पर विवाह हो जाए तो सन्तान में एक ही प्रकार के दो रिसेसिव जीनों के आ जाने की और परिणामस्वरूप उसमें विकार आ जाने की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है।

खण्ड-ओष्ठ तथा खण्डतालु भी आनुवंशिक रोग हैं। इस रोग में जन्म के समय ही ओष्ठ पूरा विकसित नहीं होता। एक अनुमान के अनुसार 770 शिशुओं में से एक शिशु खण्ड-ओष्ठ का होता है। इन आनुवंशिक रोग के लिए कम बेधन क्षमता के डोमिनेन्ट जीन ही उत्तरदायी होते हैं।

मंदबुद्धिता एक महत्वपूर्ण समस्या है। मंदबुद्धिता के तीन वर्ग हैं- जड़ बुद्धि जिसकी बुद्धिलब्धि 1 से 19 तक होती है, मूढ़ता जिसमें बुद्धिलब्धि 20 से 49 तक होती है, दुर्बल बुद्धि जिसमें बुद्धिलब्धि 50 से 69 तक होती है। इसका कारण भी आनुवंशिक गुणों को माना जाता है। इसका कारण रिसेसिव जीन होते हैं। आमतौर पर कुटुम्ब के सदस्यों में विवाह करने पर अधिक प्रतिशत में मंदबुद्धि सन्तान उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। अतः चचेरे, मरेरे, फुफेरे, मौसेरे भाई-बहिनों को आपस में विवाह नहीं करना चाहिए। इस अपसामान्य स्थिति के लिए क्रोमोसोम नम्बर 21 जिम्मेदार होता है। आनुवंशिकी की भाषा में इसे समोद्भवता कहते हैं। समोद्भवता से बंध्या, गर्भपात तथा जन्मजात विकृति जैसी समस्याएँ भी आती है।

मुद्गरपाद एक आनुवंशिक रोग है इस रोग में जिसमें पैर विरूपित हो जाता है, जिसका असर व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ता है। मधुमेह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुँचता है। इस रोग के लिए भी रिसेसिव जीन ही उत्तरदायी होता है। कई प्रकार की एलर्जी भी आनुवंशिक रोग माने गए हैं। मनुष्य का सूरजमुखी (एल्बिनिज्म) होना यद्यपि आनुवंशिक रोग नहीं है फिर भी इसका सम्बन्ध जीन में हुए उत्परिवर्तन से है। उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट होता है कि आनुवंशिक कारक व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की श्रेणियों को लिखिए।
2. मंदबुद्धिता के वर्गों को लिखिए।

6.5 व्यक्तित्व के बौद्धिक निर्धारक

व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का सीधा सम्बन्ध व्यक्तित्व से है। अब मनोवैज्ञानिक यह भी मानते हैं कि बुद्धिमान वही है, जिसका समायोजन अच्छा है। कुछ बुद्धिमान व्यक्तियों में असामाजिक गुण भी पाए जाते हैं, जैसे-असहिष्णुता, नकारात्मकता, संवेगात्मक अपरिपक्वता, छलकपट, दम्भ, झूठ आदि ऐसे व्यक्तियों का व्यक्तित्व विकास अच्छा नहीं समझा जाता। कुछ विशिष्ट मानसिक योग्यता वाले व्यक्ति में आकांक्षा स्तर का निम्न होना, उदासीनता, शर्मीलापन, अन्तर्मुखता आदि भी पाए जाते हैं, जो कि समाज में उसके समाजीकरण में अवरोधक कारक होते हैं। इसी प्रकार बौद्धिक स्थिति से उच्च व्यक्तियों में जीवन मूल्यों के प्रति आस्था, उच्च नैतिक स्तर, स्तरीय हास्य आदि गुण परिपक्व व्यक्तित्व के प्रमुख आधार होते हैं, जिससे उनका समायोजन तथा समाजीकरण भी उच्च स्तर का होता है।

6.6 व्यक्तित्व के यौन निर्धारक

फ्रायड के अनुसार “धरती एक्स-धुरी पर नहीं बल्कि सेक्स धुरी पर चक्कर काटती है।” सेक्स व्यक्ति के व्यवहार का एक महत्वपूर्ण कारक है। जिस व्यक्ति का कामव्यवहार सुसंगत होगा, उसका व्यक्तित्व भी उत्तम होगा। हम कामवृत्ति से अतृप्त व्यक्ति के व्यवहार का अवलोकन कर यह जान सकते हैं कि कामवृत्ति व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। मानसिक रोगों का महत्वपूर्ण कारक व्यक्ति की दमित काम भावना होती है। इसकी विस्तृत चर्चा यहाँ पर सम्भव नहीं है केवल इतना ही कहना पर्याप्त है कि काम का सुसंगत उपयोग व्यक्तित्व के उन्नयन का प्रतीक होता है तथा काम का असंगत उपयोग करना व्यक्तित्व के विकास पर बुरा प्रभाव डालता है।

6.7 संवेगों का व्यक्तित्व पर प्रभाव

संवेग अंग्रेजी शब्द Emotion का पर्यायवाची है। यह लैटिन भाषा के Emovere शब्द से बना जिसका अर्थ है हिला देना। जेम्स डेवर संवेग को परिभाषित करते हैं कि “संवेग शरीर की जटिल अवस्था हैं, जिसमें सांस लेने, नाड़ी ग्रन्थियों, मानसिक दशा, उत्तेजना, अवरोध आदि का अनुभूति पर प्रभाव पड़ता है और मांसपेशियां निर्धारित व्यवहार करने लगती है।”

मैकडूगल ने 14 प्रकार के संवेग बताए हैं-

1. भय
2. क्रोध
3. वात्सल्य
4. घृणा,
5. करुणा
6. आश्चर्य
7. आत्महीनता
8. आत्माभिमान
9. एकाकीपन
10. कामुकता
11. भूख,
12. अधिकार भावना
13. कृतिभाव, तथा
14. आमोद

क्रोध प्राणियों में सबसे प्रमुख संवेग है। क्रोध के सम्बन्ध में गीता में बहुत ही उपयोगी प्रस्तुति स्थिर बुद्धि व्यक्ति का वर्णन करते समय की गई है-

ध्यायतो विषयान् पुंसः संस्तेषूपजाए ते॥ (2/62)

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥ (2/63)

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयान्द्रियैश्चरन्।

आत्मवश्यैविधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥ (2/64)

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से अत्यन्त मूढ़ भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़ भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है। बुद्धि नाश हो जाने से व्यक्ति अपनी स्थिति से गिर जाता है। जो व्यक्ति अन्तःकरण को अपने वश में रखता है, वह राग-द्वेष से रहित इन्द्रियों द्वारा विषयों में विचरण करता हुआ अन्तकाल की प्रसन्नता को प्राप्त कर लेता है। संवेगों पर युक्ति-युक्ति नियंत्रण अच्छे व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः संवेगों पर नियंत्रण के लिए विधिवत् प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

6.8 व्यक्तित्व पर सफलता तथा असफलता का प्रभाव

सफलताएँ तथा असफलताएँ किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित एवं निर्दिष्ट करती हैं। सफलता तथा असफलता का व्यक्ति पर प्रभाव अलग-अलग प्रकार से होता है। उसके पीछे निहित कारण यह है कि वह व्यक्ति सफलता अथवा असफलता को किस प्रकार ग्रहण करता है। वह असफलता भी बहुत बड़ी सफलता है, जिससे व्यक्ति का चिन्तन विधायक (Positive) हो जाए। सफलता की जो परिभाषा अर्ल नाइटिंगैल ने प्रस्तुत की है, वह इस प्रकार है- मूल्यवान लक्ष्य की लगातार प्राप्ति का नाम ही सफलता है। (Success is the progressive realization of a worthy.)

सफलता की इस परिभाषा में आए शब्दों का अपना विशिष्ट महत्व है। 'लगातार' का अर्थ सफर है, मंजिल नहीं जहाँ जाकर हम रुक जाएं। मूल्यवान का संकेत हमारे नैतिक मूल्यों से है। हम कहाँ जा रहे हैं, सही दिशा में या गलत दिशा में एवं लक्ष्य इसलिए महत्वपूर्ण है कि वे हमें रास्ता दिखाते हैं।

सफलता का अर्थ है कि "आप जानते हैं कि आपने सही काम सही ढंग से पूरा किया"- शिव खेड़ा

सफलता और असफलता के सम्बन्ध में बहुत-कुछ कहा जा सकता है। परन्तु हम यहाँ पर बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के सम्बन्ध में ही सोच रहे हैं इसके लिए पहली आवश्यकता है विधायक अभिवृत्ति या शुभ-शुभ सोचना। यदि हम बच्चों में विधायक अभिवृत्ति का निर्माण करने में सफल हो जाते हैं तो

सफलता तथा असफलता दोनों ही व्यक्ति निर्माण में विधायक कार्य करेंगी, अन्यथा दूसरी तरह के परिणाम आने की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

1. सफलता का प्रभाव

- i. सफलता सन्तुष्टि प्रदान करती है।
- ii. सफलता भविष्य के लिए प्रेरणा देती है।
- iii. आत्मविश्वास की भावना को विकसित करती है।
- iv. व्यक्ति को प्रसन्नता प्रदान करती है।
- v. नवीन चुनौतियों को स्वीकार करने की तत्परता प्रदान करती हैं।
- vi. अकांक्षा स्तर में वृद्धि करती है।
- vii. कई बार सफलता से अहंकार (घमण्ड) हो जाता है। व्यक्ति अपने आप को श्रेष्ठ समझने लगता है, जिससे प्रेरणा की कमी आ जाती है। इस प्रकार के अविधायक भावों का विकास न हो यह ध्यान में रखकर सफलताओं का सही उपयोग करना आना चाहिए।

2. असफलताओं का प्रभाव

- i. असफलता से हीनभाव पनपता है।
- ii. असफलता से असफलता ग्रन्थि (Failure Complex) का निर्माण हो जाता है।
- iii. इससे प्रेरणा में कमी आती है।
- iv. भविष्य की चुनौतियों से विमुख हो जाता है।
- v. दूसरों को असफलता के लिए दोषी ठहराने लगता है।
- vi. क्रोध का प्रदर्शन करना।
- vii. निरन्तर उदास रहना, अप्रसन्न रहना।
- viii. तोड़-फोड़ करने की प्रवृत्ति बढ़ती है।
- ix. आत्मप्रत्यय (Self-Concept) का दोषपूर्ण विकास होता है।

इरिक्सन के अनुसार सफलताएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन करती हैं।

छोटे बच्चों को सफलता प्राप्त कराने में अध्यापक तथा अभिभावकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, उन्हें अपना दायित्व पूर्ण करना चाहिए।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

3. “धरती एक्स-धुरी पर नहीं बल्कि सेक्स धुरी पर चक्कर काटती है” यह कथन किसका है?

4. जेम्स ड्रेवर द्वारा दी गई संवेग की परिभाषा लिखिए।
5. मैक्डूगल ने कितने प्रकार के संवेग बताए हैं?
6. मैक्डूगल द्वारा बताए गए संवेगों के नाम लिखिए।

6.9 आकांक्षा स्तर का व्यक्तित्व पर प्रभाव

आकांक्षा व्यक्ति की वे अभिलाषाएँ हैं, जिनकी वह कामना करता है। केवल आकांक्षा और कामना करने से उनकी पूर्ति नहीं होती बल्कि आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयास करने होते हैं। यदि प्रयास सही दिशा में तथा पर्याप्त है तो व्यक्ति की आकांक्षाओं की पूर्ति हो जाती है कई बार व्यक्ति की आकांक्षाएँ उसकी योग्यता तथा सामर्थ्य से उच्च होती है और उनकी प्राप्ति के लिए किए गए प्रयास पर्याप्त नहीं होते तो व्यक्ति में कुंठाएँ पनप जाती है, जिनसे अग्रधर्षण (Aggression) उत्पन्न होता है फिर यदि अग्रधर्षण सही दिशा में होता है तो पुनः प्रयास करने पर सफलता प्राप्त हो सकती है, अन्यथा व्यक्ति का व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है।

आकांक्षाएँ कई प्रकार की होती हैं-तात्कालिक आकांक्षाएँ, दूरस्थ आकांक्षाएँ और अवास्तविक आकांक्षाएँ। आकांक्षाओं का निर्धारण व्यक्ति को सोच-समझ कर करना चाहिए ताकि आकांक्षाओं की पूर्ति हो सके अन्यथा व्यक्तित्व के विकास पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है।

6.10 व्यक्तित्व विकास के सिद्धान्त

व्यक्तित्व विकास के सिद्धान्तों में प्रमुख सिद्धान्त हैं- पहला फ्राइड का मनोविश्लेषणवाद तथा दूसरा इरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धान्त। पहले हम फ्राइड के सिद्धान्त का संक्षिप्त अध्ययन कर रहे हैं।

6.11 फ्रायड का मनोविश्लेषणवाद

फ्रायड का मानना है कि तनाव के चार मुख्य स्रोतों की अनुक्रिया के फलस्वरूप व्यक्तित्व का विकास होता है। ये स्रोत हैं-

1. शारीरिक विकास
2. कुण्ठाएँ (Frustrations)
3. संघर्ष (Conflicts) तथा
4. आशंकाएँ (Threats)

फ्राइड के मनोविश्लेषणवाद उनके 40 वर्षों (1900-1940) के शोध-अनुभवों पर आधारित है। फ्रायड ने व्यक्तित्व को पांच अवस्थाओं में समझाया है।

1. मुखीय अवस्था Oral Stage -मुखीय अवस्था को दो उप-अवस्थाओं में बांटा है-

(क) मुखीय चूषण अवस्था (Oral Sucking Stage)

यह अवस्था जन्म से 8 मास की अवस्था तक रहती है। इस अवस्था में Libido का स्थिरीकरण मुंह, ओष्ठ और जीभ पर रहता है। इस अवस्था में बच्चे का व्यवहार पूर्णरूपेण इड से प्रभावित रहता है। इस अवस्था में बच्चे को चूषण में आनन्द आता है। जब बच्चे को चूषण के लिए माँ का स्तन नहीं मिलता तो वह अपने हाथ या अंगूठे को चूस कर आनन्द की प्राप्ति करता है। पूरे शरीर के कहीं भी स्पर्श करने से बच्चे को आनन्द आता है। जब दूध पीना अचानक छुड़ाया जाता है तो बच्चे की काम की असन्तुष्टि होती है। फ्रायड ने इसे प्रथम मानसिक आघात (Traumatic Experience) कहा है। इस प्रकार के अनुभवों से आगे चलकर अनेक मानसिक रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इस आयु के बाद इगों का विकास प्रारम्भ हो जाता है।

(ख) मुखीय काटना अवस्था (Oral Biting Stage)

यह अवस्था 6 मास के 18 मास तक चलती है। इस अवस्था में आनन्दानुभूति काटने और चूसने से प्राप्त करता है। बच्चा अपनी मां से प्रेम करता है, क्योंकि वह उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है तथा मां से घृणा भी करने लगता है, क्योंकि वह अपना दूध छुड़ा कर बोतल से दूध पिलाती है तथा उसका ठोस आहार प्रारम्भ करती है। बच्चे को इसी समय नई-नई आदतें भी सिखाई जाती हैं। बच्चों अपनी असन्तुष्टि को मां के स्तन को काट कर प्रकट करता है। इसे फ्रायड ने द्वितीय मानसिक आघात (Second Major Traumatic Experience) नाम दिया है।

2. गुदीय अवस्था (Anal Stage) फ्रायड ने इस अवस्था को भी दो भागों में विभक्त किया है-

(क) गुदीय निष्कासन अवस्था (Anal Expulsive Stage)

यह अवस्था 8 मास से 3 वर्ष की अवधि तक रहती है। इस अवस्था में बालक मल निष्कासन से आनन्दानुभूति करता है। इस अवस्था में इगों का विकास हो जाता है। वह व्यक्तियों को उनके लिंग के आधार पर पहचानना शुरू कर देता है। लड़का सोचने लगता है कि वह बड़ा होकर बाप बनेगा तथा लड़की सोचती है कि वह बड़ी होकर मां बनेगी।

(ख) गुदीय अवधारणात्मक अवस्था

यह अवस्था 1 से 4 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में मलमूत्र रोकने में आनन्दानुभूति करता है। कभी-कभी जब वह मलमूत्र नहीं रोक पाता तो दूसरों के सामने अपना आपमान महसूस करने लगता है। इस अवस्था में बालक यह अनुभव करने लगता है कि मां-बाप के लिए वह केन्द्र नहीं है। बल्कि मां-बाप उसके लिए केन्द्र हैं। यह बच्चे के लिए नया आघात है। यदि इन अनुभवों का शोधन हो जाए तो बच्चा आगे चलकर चित्रकार, मूर्तिकार बन सकता है। और

यदि प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction Formation) हो जाए तो व्यक्ति मलमूत्र से घृणा तथा कंजूसी जैसा व्यवहार अपना लेता है।

3. लैंगिक अवस्था (Phallic Stage)

यह अवस्था 3 से 7 वर्ष तक की आयु तक चलती है। इसमें बच्चा अपना लिंग पहचानने लगता है। विपरीत लिंगी से अपना विभेद समझने लगता है। इस अवस्था में बच्चे अपने कामांगों को छेड़कर आनन्द प्राप्त करते हैं। इसी अवस्था में बच्चे में ओडीपस कॉम्प्लेक्स, इलैक्ट्रा कॉम्प्लेक्स, कास्ट्रेसन (बधिया) कॉम्प्लेक्स तथा शिश्र ईष्या (Penis Envy) जैसे कॉम्प्लेक्स उत्पन्न होते हैं।

4. सुप्तावस्था (Latency Stage)

यह अवस्था 5 से 12 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में लिबिडो सुप्तावस्था में रहता है। इस अवस्था में बालक का सामाजिक दायरा बढ़ता है। माता के प्रति प्रेम, सम्मान में बदल जाता है। मां-बाप द्वारा प्रदर्शित प्रेम अच्छा नहीं लगता।

5. जननेन्द्रिय अवस्था (Genital Stage)

यह अवस्था लैंगिकता के प्रस्फुटन की अवस्था है। इसमें अपने यौन अंगों को जननेन्द्रिय रूप में देखने लगते हैं। लड़के-लड़कियां कहानी-किस्से पढ़ने, मनगढ़न्त कहानियां रचने, कहानियां सुनने, दिवास्वप्न, हस्तमैथुन और समलिंगी कामुकता करने लगते हैं। गन्दे कहे जाने वाले व्यवहार करने लगते हैं। लड़कियां हल्ला-गुल्ला करना बंद कर संकोची हो जाती हैं। इस अवस्था के अन्त तक समलिंगी कामुकता छूट जाती है।

फ्रायड का यह विश्लेषण युवाओं के व्यवहार विश्लेषण तथा बच्चों के पारिवारिक निरीक्षण पर आधारित Psycho-biological सिद्धान्त है। फ्रायड का मत है कि यदि इन प्रावस्थाओं में व्यक्ति का विकास सामान्य रूप से होता है तो उसका व्यवहार भी सामान्य ही होगा। परन्तु यदि विकास में असाधारणता आती है तो व्यक्ति का व्यवहार तथा व्यक्तित्व विकृत हो जाएगा।

इस प्रकार विकसित होने वाले संरचना में तीन घटक पाए जाते हैं इड, इगो तथा सुपर ईगो।

इड (Id) फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व का मूलस्रोत इड ही है। नवजात शिशु में इड ही रहता है। इसके बाद ईगो तथा सुपर ईगो का विकास होता है। इड में यौन तथा आक्रामकता आदि सभी अन्तर्नोद (Drive) रहते हैं। इसमें लैंगिक ऊर्जा भी होती है, जिसे Libido कहते हैं। इड सदैव सुखानुभूति सिद्धान्त के आधार पर कार्य करता है। इससे इच्छाओं का भण्डार कहा जाता है।

ईगो (अहम्) अहम् का विकास इड से होता है। यह वास्तविकता को अधिक महत्व देता है। यह वास्तविकता के सिद्धान्त पर कार्य करता है। यह निर्णय अहम् का ही होता है कि कौन-सी आवश्यकता की पूर्ति कब होगी। यह इड तथा परा अहम् के बीच की कड़ी है।

परा अहम् (Super Ego) पराअहम् को नैतिक मन भी कह सकते हैं। यह सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों आदर्शों तथा प्रचलनों का प्रतिनिधित्व करता है। यह व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले व्यवहार के औचित्य तथा सामाजिक मानदण्डों के सन्दर्भ में उसकी वांछनीयता का मूल्यांकन करता है। यह आदर्श के सिद्धान्त (Principle of Ideals) का अनुसरण करता है।

फ्रायड के अनुसार अवांछित तथा अप्रासंगिक इच्छाओं को परा अहम् दमन (Repression) कर देता है। और वे अचेतन मन में पड़ी रहती हैं। परन्तु अनुकूल अवसर जाने पर वे पुनः सक्रिय हो जाती हैं। प्रारम्भ में बालक अपनी प्रत्येक इच्छा को पूरा करना चाहता है परम अहम् (नैतिकता) के विकास के साथ-साथ उसमें उचित-अनुचित का ज्ञान बढ़ता है। वह इच्छा की अपेक्षा औचित्य पर अधिक ध्यान देने लगता है। बच्चे अपने माता-पिता तथा अन्य लोगों का अनुसरण करके अच्छे गुण सीखते हैं तथा उन जैसा बनने का प्रयास (तादात्म्यीकरण) भी करते हैं।

6.12 इरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धान्त

इरिक्सन (1963) भी मनोविश्लेषणवादी ही रहे हैं। परन्तु इनका विश्वास था कि व्यक्तित्व विकास में जैविक कारकों की अपेक्षा सामाजिक कारकों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है। बच्चे के जीवन में जिस प्रकार की अनुभूतियां होंगी, वह उन्हीं के अनुरूप विकास भी करेगा। फ्रायड की तरह इरिक्सन भी मानते हैं कि विकास की किसी एक अवधि में जो अनुभव होता है वह उसके आगामी विकास को भी प्रभावित करता है। इरिक्सन इड की अपेक्षा अहम् को विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। इरिक्सन ने विकास को आठ अवस्थाओं में विभक्त किया है-

1. **आस्था बनाम अनास्था (Trust Vs Mistrust)** यह अवस्था जन्म से एक वर्ष की आयु तक रहती है। इस अवस्था में बालक परिवार में रहता है, उसका सामाजिक परिवेश सीमित रहता है। प्यार मिलने के कारण उसकी माता-पिता के प्रति आस्था का विकास होता है। यदि प्यार नहीं मिला तो अनास्था का विकास होगा तथा इस अविश्वास (अनास्था) के साथ ही अगली अवस्था में प्रवेश करेगा।
2. **स्वायत्तता बनाम सन्देह (Autonomy Vs Doubt)** यह अवस्था 1 से 2 वर्ष तक की अवधि तक रहती है। इस आयु में पर्यावरण के प्रति जिज्ञासा का विकास होता है। बालक में आत्म-नियंत्रण एवं इच्छा-शक्ति का तीव्र विकास होने लगता है। प्यार मिलने पर बालक में आत्मनियंत्रण एवं इच्छा शक्ति का तीव्र विकास होने लगता है। प्यार मिलने पर बालक में आत्मविश्वास बढ़ता है। दण्डित किए जाने पर शर्महीनता तथा निराशा का विकास होता है। मजाक बनाने पर उसे अपनी क्षमता पर सन्देह होने लगता है।
3. **पहल बनाम ग्लानि (Initiative Vs Guilt)** यह अवस्था 3 से 5 वें वर्ष की होती है। इसमें बालक का सामाजिक दायरा बढ़ता है। उसके परिवेश में वृद्धि होती है। इस अवस्था में कुछ करने

की अभिलाषा तथा जिम्मेदारी की भावना का विकास होता है। कार्य में सफलता मिलने पर प्रशंसा मिलती है। बच्चे में पहल करने की भावना का विकास होता है। निन्दा करने पर वह स्वयं को दोषी ठहराता है। यदि उसे असफलता पर निन्दा मिलती है तो वह काम की तरफ से मन चुराने लगता है। अतः इस आयु में असफलता का भान नहीं होने देना चाहिए।

4. **परिश्रम बनाम हीनता (Industry Vs Inferiority)** यह अवस्था 6 से 12 वर्ष तक मानी जाती है। पूर्व अवस्था में यदि बालक को असफलता मिली होती है तो वह हीनता के भाव से ग्रस्त हो जाता है तथा कार्य से बचने की प्रक्रिया अपनाता है। उसे प्रोत्साहन देकर कार्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए ताकि वह एक सामाजिक प्राणी बन सके।
5. **अस्तित्व बनाम भूमिका द्वन्द (Identity Vs Role Conflict)** यह अवस्था 13 से 18 वर्ष तक की आयु तक मानी जाती है। इसमें व्यक्ति अपनी पहचान बनाना चाहता है। वह अपना लक्ष्य निर्धारित करता है। यदि वह असफल होता है तो वह द्वन्द की स्थिति में आ जाता है उससे उनमें कर्तव्य परायणता तथा निष्ठा का भाव अवरोधित हो जाता है।
6. **आत्मीयता बनाम पार्थक्य (Affiliation Vs Isolation)** यह अवस्था 19 से 35 वर्ष की आयु तक रहती है। इसमें मित्रता, प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग की भावना बढ़ती है। परन्तु निराशा, असफलता, हीनता एवं द्वन्द होने पर एकाकीपन की प्रवृत्ति विकसित होती है। समायोजन तथा उपलब्धि घटिया स्तर की हो जाती है।
7. **उत्पादकता बनाम निष्क्रियता (Productivity vs Inaction)** इस अवस्था का विस्तार 36 से 55 वर्ष तक होता है। इसमें व्यक्ति के (सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत) दायित्व बढ़ते हैं, जिससे क्षमता विभाजित हो जाती है। समाज तथा परिवार विभिन्न प्रकार की अपेक्षाएँ करते हैं। यदि वह अपने दायित्व का ठीक प्रकार पालन नहीं करता तो उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है।
8. **सत्यनिष्ठा बनाम निराशा (Integrity Vs Despair)** इस अवस्था का प्रारम्भ 55 वर्ष की आयु से जीवन के अन्त तक रहता है। उसे अपनी उपलब्धियों तथा अपना अतीत बार-बार याद आता है और वह अपना स्वमूल्यांकन करने लगता है। यदि भूतकाल सुखमय उपलब्धियों से भरपूर रहा है तो वह अपना जीवन उमंग और उत्साह के साथ बिताता है। और यदि वह असफल रहा है तो उसका आगामी जीवन निराशा तथा चिन्ता के द्वारा कष्टमय बन जाता है।

इरिक्शन के सिद्धान्त में एक बात बहुत महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति को भी असफलता का मुंह न देखना पड़े, उसे वह निरन्तर प्रोत्साहन, प्रेम, सहानुभूति मिलती रहे तो व्यक्तित्व का उचित विकास होता है।

यह जानकारी अध्यापकों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है कि वे बच्चों को निरन्तर प्रोत्साहित करते रहें तथा उन्हें प्रेरणा प्रदान करते रहें।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

7. आकांक्षाएँ कितने प्रकार की होती हैं?
8. मनोविश्लेषणवाद का सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया है?
9. मनोसामाजिक सिद्धान्त किसने प्रतिपादित किया है?
10. फ्रायड के अनुसार तनाव के चार मुख्य स्रोत कौन से हैं?
11. फ्रायड द्वारा दी गई व्यक्तित्व की पांच अवस्थाओं के नाम लिखिए।
12. इरिकसन ने विकास को किननी आठ अवस्थाओं में विभक्त किया है?

6.13 सारांश

व्यक्तित्व के विकास का मुद्दा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षा के माध्यम से हम बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कृत संकल्प हैं। व्यक्तित्वके विकास में अनुवंशिकता अतःस्रावी ग्रन्थियाँ व्यक्ति की शरीर रचना, बौद्धिक क्षमता, लिंग तथा संवेगों के साथ व्यक्ति का आकांक्षा स्तर तथा व्यक्ति को मिलने वाली सफलता तथा असफलता अपना प्रभाव डालती है। फ्राइड मानते हैं कि व्यक्ति के स्वयं के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में उसका विकास सामान्य होता है, तो व्यक्ति का व्यवहार सामान्य रहेगा। यदि विकास में अवरोध आता है तो व्यक्तित्व में विकृति आ जाती है। एरिकसन के सिद्धान्त से बच्चों को प्यार मिलना बहुत आवश्यक है। असफलता मिलने के कारण ग्लानि का विकास हो जाता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण जन्म से मृत्युपर्यन्त चलता रहता है। सभी सिद्धान्तों तथा मनोविज्ञान के प्रयोगों से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि बच्चों को भरपूर प्यार मिले तथा उन्हें असफलता का सामना न करना पड़े। अतः हमारा दायित्व यह बनता है कि बच्चों को रमणीयता से शिक्षा प्रदान करे तथा उन्हें असफलता का सामना न करने दें तभी हमारा शिक्षण सफल सिद्ध होगा।

6.14 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की श्रेणियाँ निम्न हैं-
 - i. आनुवंशिक तथा दैहिक कारक,
 - ii. पर्यावरणीय कारक,
 - iii. मनोवैज्ञानिक कारक,
 - iv. समाजिक कारक, तथा
 - v. सांस्कृतिक कारक

2. मंदबुद्धिता के तीन वर्ग हैं- जड़ बुद्धि जिसकी बुद्धिलब्धि 1 से 19 तक होती है, मूढ़ता जिसमें बुद्धिलब्धि 20 से 49 तक होती है, दुर्बल बुद्धि जिसमें बुद्धिलब्धि 50 से 69 तक होती है।
3. यह कथन फ्रायड का है।
4. “संवेग शरीर की जटिल अवस्था हैं, जिसमें सांस लेने, नाड़ी ग्रन्थियों, मानसिक दशा, उत्तेजना, अवरोध आदि का अनुभूति पर प्रभाव पड़ता है और मांसपेशियां निर्धारित व्यवहार करने लगती है।”
5. मैकडूगल ने 14 प्रकार के संवेग बताए हैं।
6. मैकडूगल द्वारा बताए गए संवेगों के नाम निम्न हैं-
भय, क्रोध, वात्सल्य, घृणा, करुणा, आश्चर्य, आत्महीनता, आत्माभिमान, एकाकीपन, कामुकता, भूख, अधिकार भावना, कृतिभाव, तथा आमोद
7. आकांक्षाएँ निम्न प्रकार की होती हैं-तात्कालिक आकांक्षाएँ, दूरस्थ आकांक्षाएँ और अवास्तविक आकांक्षाएँ।
8. मनोविश्लेषणवाद सिद्धांत फ्रायड ने प्रतिपादित किया है।
9. मनोसामाजिक सिद्धान्त इरिक्सन ने प्रतिपादित किया है।
10. फ्रायड के अनुसार तनाव के चार मुख्य स्रोत निम्न हैं-
 - i. शारीरिक विकास
 - ii. कुण्ठाएँ (Frustrations)
 - iii. संघर्ष (Conflicts) तथा
 - iv. आशंकाएँ (Threats)
11. फ्रायड द्वारा दी गई व्यक्तित्व की पांच अवस्थाओं के नाम निम्न हैं-
 - i. मुखीय अवस्था
 - ii. गुदीय अवस्था
 - iii. लैंगिक अवस्था (Phallic Stage)
 - iv. सुप्तावस्था (Latency Stage)
 - v. जननेन्द्रिय अवस्था (Genital Stage)
12. इरिक्सन ने विकास को आठ अवस्थाओं में विभक्त किया है।

6.15 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Clifford T. Morgon, Richard A. King, John R. Weisz, John Schopler. (1993); Introduction to Advanced Educational Psychology, 17 ed, New Delhi. TATA McGraw-Hill edition.

2. Cronbach, I.J. (1970), Essentials of Psychological Testing, 3rd ed., New York; Harper and Row Publishers.
3. Charles, E. Skinner (1990) : Education Psychology (Hindi) New Delhi, Disha Publications
4. Gardner, Howard (1999): The Disciplined Mind. New York: Simon Schuster
5. Gupta, S.P. (2002) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
6. Dandapani, S. (2007). Advanced Educational Psychology, New Delhi. Anmol Publications Pvt. Ltd.
7. Ebel, Robert L.(1979), Essentials of Psychological Measurement, London; Prentice Hall International Inc.
8. Freeman, Frank S. (1962); Theory and Practice of Psychological Testing, New Delhi; Oxford and IBN Publishing Co.
9. Kuppaswamy, B.(2006), Advanced Educational Psychology ,New Delhi. Sterling Publishers Private Ltd.
10. Lindquist, E.F (1951), Educational Measurement, Washington D C .American Council on Education.
11. Mangal, S.K. (2007) Advanced Educational Psychology, New Delhi. Prentice Hall of India Private Limited.
12. Mathur, S.S. (2007), Educational Psychology, Agra VinodPustakMandir.
13. Shukla, O.P. (2002): शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ: भारत प्रकाशन।
14. Singh, Shireesh Pal (2009) :शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
15. Thorndike, R.L. & Hagen, E.P. (1969).Measurement and Evaluation in Psychology and Education 3rded; New York; John Wily&SonsInc
16. Williams, W.M. et al (1996): Practical Intelligence. New York: Harper Collins College Publications.

6.16 निबंधात्मक प्रश्न

1. इरिक्सन के सिद्धान्तों की बिन्दुवार व्याख्या किजिए।।
2. व्यक्तित्व के विकास में फ्राइड का महत्वपूर्ण योगदान क्या है स्पष्ट करें।
3. व्यक्तित्व के विकास में अतःस्रावी ग्रन्थियों के प्रभावों की सूची का निर्माण करें
4. निम्नलिखित की व्याख्या खोज करके लिखें-
 - i. ओडीपस कॉम्प्लेक्स

- ii. इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स
- iii. कास्ट्रोशन कॉम्प्लेक्स
- iv. पैनिस एन्वी
- v. शरीर में आयोडीन तत्व की कमी के लक्षण
- vi. प्रोजेस्ट्रोन हारमोन
- vii. मधुमेह रोग का कारण तथा उस के मानसिक तथा शारीरिक प्रभाव
- viii. डाउन सिन्ड्रोम
- ix. यौन अपसामान्यताएँ ।

इकाई 7- व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

Assessment of Personality: Techniques

- 7.1 प्रस्तावना
- 7.2 उद्देश्य
- 7.3 व्यक्तित्व मापन की विधियों का वर्गीकरण
- 7.4 व्यक्तित्व मापन की प्रमुख विधियाँ
- 7.5 आत्मनिष्ठ विधियाँ
- 7.6 परिस्थिति विश्लेषण विधि
- 7.7 प्रक्षेपण विधियाँ
- 7.8 मनोविश्लेषण विधियाँ
- 7.9 सारांश
- 7.10 शब्दावली
- 7.11 स्वमूल्यांकन प्रश्नों हेतु उत्तर
- 7.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 7.13 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

व्यक्तित्व अनेक गुणों या लक्षणों का संगठन माना जाता है। इस गुणों के आधार पर हम व्यक्ति को-उत्साही, निराश मिलनसार-एकान्त प्रिय, उद्विग्न, चिन्तामुक्त, विनोदप्रिय, तुनक-मिजाज, शान्त-उद्विग्न, उत्तरदायी-लापरवाह, परिश्रमी निडूला, शिष्ट-अशिष्ट, मैत्रीपूर्ण-सन्देहशील, उत्तेजित होने वाला-सहनशील, कोमल हृदय-कठोर हृदय, आत्मस्वाभिमानी-आत्मगौरवविहीन, द्रवित होने वाला-कठोर, तेजी से काम करने वाला (चुस्त) सुस्त, सफाईपसंद-गलीच, आदि के रूप में वर्गीकृत करते रहते हैं। मनोविज्ञानी हैनरी इगौरिट ने तो यहाँ तक कहा है कि इस प्रकार के अंगरेजी शब्दों की संख्या 18,000 से अधिक है। व्यक्तित्व परीक्षण, इस प्रकार अनेक गुणावगुणों से युक्त व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन करने में सहायक होते हैं परन्तु मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व परीक्षण के लिए इन सभी गुणावगुणों को सम्मिलित न करने इन गुणावगुणों के समूह बनाए तथा समूहों को व्यक्तित्व परीक्षणों के लिए प्रयुक्त किया। यद्यपि व्यक्तित्व परीक्षण की अनेक विधियाँ है फिर भी व्यक्तित्व परीक्षणों से मनोविज्ञानी संतुष्ट नहीं है। मनोविज्ञानी राबर्ट एस. ऐलिस (Robert S.Ellis) ने तो यह कहा है कि “व्यक्तित्व के मनोविज्ञान ने अभी पर्याप्त प्रगति नहीं

की है और इसलिए व्यक्तित्व परीक्षण अभी तक जांच की कसौटी पर है।” परन्तु इस कथन से हमें निराशा होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वर्तमान में परीक्षण के उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमारे पास एक नहीं कई-कई परीक्षण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए किसी कुण्ठाग्रस्त व्यक्ति की कुण्ठा के कारणों को जानने के लिए कई परीक्षण हैं जिनमें से किसी, एक अथवा अधिक का प्रयोग कर सकते हैं। निराशा आदि के लिए भी कहा जा सकता है। इस इकाई में हम व्यक्तित्व-मापन की विधियों का संक्षेप में अध्ययन कर रहे हैं।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने पश्चात् आप-

1. व्यक्तित्व मापन की विभिन्न विधियों का वर्गीकरण कर सकेंगे।
2. व्यक्तित्व मापन की विभिन्न विधियों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. व्यक्तित्व अध्ययन के लिए प्रयुक्त विधियों के गुणों तथा कमियों को लिख सकेंगे।

7.3 व्यक्तित्व मापन की विधियों का वर्गीकरण

व्यक्तित्व मापन के परीक्षणों को हम तीन वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं।

- i. **आत्मनिष्ठ विधियाँ (Subjective Methods)** ये व्यक्ति के अनुभव एवं धारणा पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार का मापन जीवन-इतिहास, प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा आत्मकथा के आधार पर किया जाता है।
- ii. **परिस्थिति परीक्षण विधियाँ (Situation test):** व्यक्ति के व्यवहार के अध्ययन के लिए समाजमिति (Sociometry), नियंत्रित निरीक्षण, आदि विधि परिस्थिति परीक्षण श्रेणी में आते हैं।
- iii. **प्रक्षेपण विधियाँ (Projective test)** इस प्रकार के परीक्षणों में प्रत्यक्ष या परोक्ष विधि द्वारा उत्तेजक प्रस्तुत किए जाते हैं। जिन पर व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करता है। और व्यक्ति के विचारों का विश्लेषण करके परीक्षणकर्ता अपने उद्देश्य के अनुरूप निष्कर्ष पर पहुंचता है। इस प्रकार के परीक्षणों में व्यक्ति के अचेतन में व्यवहार को अभिव्यक्त किया जाता है। इस प्रकार के परीक्षणों में टी.ए.टी., सी.ए.टी. वाक्यपूर्ति, कहानी रचना, जैसे परीक्षण आते हैं। रोर्शा (Rorschach) का स्याही धब्बा परीक्षण इस श्रेणी में महत्वपूर्ण परीक्षण है।

इस प्रकार तीन श्रेणियों में विभक्त किए गए परीक्षणों में से प्रमुख परीक्षणों का अध्ययन आगे की पंक्तियों में कर रहे हैं।

7.4 व्यक्तित्व मापन की विभिन्न विधियाँ

आगे के प्रस्तुतीकरण में हम व्यक्तित्व मापन की विभिन्न विधियों तथा उनके उपयोग के बारे में अध्ययन कर रहे हैं।

7.5 आत्मनिष्ठ विधियाँ

इन विधियों में प्रमुख विधियाँ जीवन इतिहास, साक्षात्कार, आत्मकथा तथा प्रश्नावली विधियाँ आती हैं। पहले हम प्रश्नावली विधि से प्रारम्भ कर रहे हैं।

प्रश्नावली विधि:

प्रश्नावली विधि का प्रयोग जिन कार्यों के लिए किया जाता है, वे हैं- (1) व्यक्ति की चिन्ता, परेशानियों आदि से सम्बन्धित क्रमबद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए (2) व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, धार्मिक विश्वास, सामाजिक विचारों की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली का निर्माण परीक्षण के उद्देश्यों का ध्यान में रख कर किया जाता है। प्रश्नावलियाँ कई प्रकार की होती हैं।

- i. **बन्द-प्रश्नावली (Closed Questionnaire):** इस प्रश्नावली में प्रश्नों को दो या अधिक पूर्व निश्चित उत्तर रहते हैं। आमतौर पर उत्तर हाँ या नहीं में होता है। कभी तीन प्रत्युत्तर भी रहते हैं 'हाँ' तथा 'नहीं' के साथ उत्तर 'कभी-कभी' भी रहता है। उत्तरों के आधार पर अंक प्रदान किए जाते हैं।
- ii. **खुली प्रश्नावली (Open Questionnaire)** इस प्रश्नावली में प्रश्नों के उत्तर, उत्तरदाताओं को लिखना होता है इन उत्तरों का विश्लेषण किया जाता है विश्लेषण का आधार प्रश्नावली के निर्माता के द्वारा प्रश्नावली के उद्देश्य के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं जो कि परीक्षण के मैन्युअल में दिए गए होते हैं। उदाहरण के लिए अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखता की प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न सम्भावित उत्तरों की सूची में से चयन करके अंक दिए जाते हैं। यद्यपि यह प्रश्नावली, बन्द प्रश्नावली की भी अपेक्षा अंकन कार्य करने में कुछ समय अधिक लेती है। परन्तु इसकी विश्वसनीयता अपेक्षाकृत अधिक रहती है।
- iii. **सचित्र-प्रश्नावली (Pictorial Questionnaire):** इस प्रश्नावली में चित्र दिए हुए होते हैं। प्रश्न के उत्तर में किसी एक चित्र का चयन करने के लिए उत्तरदाता को कहा जाता है।
- iv. **मिश्रित प्रश्नावली (Mixed Questionnaire)** इस प्रकार की प्रश्नावली में उपर्युक्त तीनों प्रकार के प्रश्न रहते हैं। जिससे प्रश्नावली की विश्वसनीयता तथा वैधता बढ़ जाती है।

प्रश्नावली के माध्यम से व्यक्तित्व का अध्ययन करने के अपने गुण तथा सीमाएँ (Limitation) हैं। इस विधि से अध्ययन करने पर अनेक व्यक्तियों का अध्ययन किया जा सकता है। अनेक व्यक्तियों के उत्तर आने पर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इन विधि द्वारा व्यक्ति के किसी भी व्यक्तित्व

गुण का अध्ययन किया जा सकता है। प्रश्नावली विधि की सीमाओं में से प्रमुख है। व्यक्ति द्वारा किसी एक या अनेक प्रश्नों के उत्तर नहीं देना जिस से मापन में कमी आती है। कई बार उत्तरदाता प्रश्न का अभिप्राय नहीं समझ पाता, कभी-कभी व्यक्ति जानबूझकर अथवा अनजाने में गलत उत्तर दे देता है।

अनेक सीमाओं के होते हुए प्रश्नावली द्वारा व्यक्तित्व अध्ययन किया जाता है तथा अच्छे परिणाम भी प्राप्त किए जा सकते हैं आर. एस. वुडवर्थ ने अपनी पुस्तक Psychology में कहा है- “यदि प्रश्नों का निर्माण सावधानीपूर्वक किया जाए तो प्रश्नावलियों में पर्याप्त विश्वसनीयता होती है।” निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि प्रश्नावली की विश्वसनीयता तथा वैधता उसके निर्माणकर्ता की योग्यता तथा परिश्रम पर निर्भर करती है। प्रश्नावली का उदाहरण वुडवर्थ की एक प्रश्नावली के रूप में प्रस्तुत है। जो कि उन्होंने बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए निर्मित की थी।

- | | |
|--|-----------|
| 1. क्या आपको लोगों के समूह के सामने बातें करना अच्छा लगता है। | हाँ/नहीं। |
| 2. क्या आप दूसरों को सदैव अपने से सहमत करने का प्रयास करते हैं? | हाँ/नहीं। |
| 3. क्या आप आसानी से मित्र बना लेते हैं? | हाँ/नहीं। |
| 4. क्या आप परिचितों के बीच स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं? | हाँ/नहीं। |
| 5. क्या आप सामाजिक समारोहों में स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं? | हाँ/नहीं। |
| 6. क्या आप इस बात से परेशान रहते हैं कि लोग आप के बारे में क्या सोचते हैं? | हाँ/नहीं। |
| 7. क्या आपको दूसरे लोगों के इरादों पर शक रहता है? | हाँ/नहीं। |
| 8. क्या आप में हीनता की भावना है? | हाँ/नहीं। |
| 9. क्या आप छोटी-छोटी बातों से परेशान रहते हैं? | हाँ/नहीं। |
| 10. क्या आपकी भावनाओं को जल्दी ठेस लगती है | हाँ/नहीं। |

यदि पहले पांच प्रश्नों के उत्तर हाँ में हैं तो व्यक्ति बहिर्मुखी है। यदि अन्तिम पांच प्रश्नों के उत्तर हाँ में हैं तो व्यक्ति अन्तर्मुखी है।

1. फ्रीमैन ने व्यक्तित्व प्रश्नावलियों को 5 प्रकारों में विभक्त किया है।
2. विशिष्ट शीलगुणों का मापन करने वाली प्रश्नावली।
3. पर्यावरण के भिन्न पक्षों के साथ समायोजन का मूल्यांकन करने वाली प्रश्नावलियाँ।
4. विभिन्न चिकित्सकीय समूहों में वर्गीकृत करने वाली प्रश्नावली।
5. व्यक्तियों को दो अथवा दो से अधिक समूहों में वर्गीकरण करने में सहायक प्रश्नावलियाँ।
6. रुचि, मूल्य, अभिवृत्ति तथा अभिमतों का मूल्यांकन करने वाली प्रश्नावलियाँ।

सभी प्रश्नावलियों का आधारभूत सिद्धान्त है कि किसी व्यक्तित्व के व्यवहार तथा व्यक्तित्व के शील गुणों को प्रकट रूप से व्यक्त व्यवहार से जाना जा सकता है।

साक्षात्कार विधि (Interview Method)

साक्षात्कार दो प्रकार का होता है। (1) अनौपचारिक (2) औपचारिक। साक्षात्कार में व्यक्ति से उसके व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।

अनौपचारिक साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता व्यक्ति कम प्रश्न पूछता है बल्कि वह साक्षात्कारदाता को विस्तारपूर्वक उत्तर देने का अवसर प्रदान करता है। प्रश्नों के माध्यम से व्यक्ति का अध्ययन व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित होने चाहिए। या फिर जिस व्यक्तित्व गुणधर्म का हम अध्ययन करना चाहते हैं उससे सम्बन्धित होने चाहिए। व्यक्तित्व के जिन गुणों का अध्ययन साक्षात्कार के माध्यम से किया जा सकता है वे अनेक हो सकते हैं जैसे-दयालुता, सर्वधर्म सद्भाव, पंथनिरपेक्षता, आत्मकेन्द्रित, अग्रधर्षण, सरलता, झगडालूपन, हटीलापन, रौबदार, संकोची, निष्पक्षता, ईमानदारी, सुवाच्यता, गुस्सैल, गम्भीरता, मित्रतापूर्ण, खुशामिजाज, सहयोग देने वाला, आत्मश्लाघी, आत्मसंयमी, स्वाग्रही (Self assertive), आत्मसंयमी, आत्मतुष्ट, आत्मविश्वासी, आत्मनिन्दक, अहंकारी, निःस्वार्थ, हठधर्मिता, आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता बकवादी (Chatter), विनम्रता, आत्मविश्वास, विश्वसनीयता, अकखडपन (Arrogance), परिपक्वता (Maturity) आदि गुणों को परखा जा सकता है। साक्षात्कार मात्र वार्तालाप नहीं होता बल्कि हमारे पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति का साधन होता है।

आमतौर पर नौकरियों के लिए चयन करने में विषयों की लिखित परीक्षाओं के साथ में साक्षात्कार का आयोजन व्यक्तित्व परीक्षण के लिए किया जाता है। यदि साक्षात्कार में विषयवस्तु सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते हैं तो यह साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति की योग्यता है परन्तु यदि साक्षात्कार में व्यक्तित्व सम्बन्धी प्रश्नों को विषय के साथ सम्बन्ध स्थापित करके पूछा जाता है और उनका सम्बन्ध हमारे संविधान में निहित लक्ष्यों के साथ सम्बन्धित करके पूछा जाता है तो वह साक्षात्कारियों की विशिष्ट योग्यताओं का प्रदर्शित करता है।

साक्षात्कार पूर्व-संरचित (Structured) हो तो उससे साक्षात्कार की विश्वसनीयता बढ़ती है। क्योंकि इन्हीं के माध्यम से हम व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का अध्ययन कर सकते हैं। साक्षात्कार संक्षिप्त वार्तालाप के माध्यम से व्यक्ति को समझने की विधि है।

आत्मकथा लेखन (Autobiography):

व्यक्तित्व के किसी एक या अधिक गुणों की जानकारी के लिए अध्ययनकर्ता उस व्यक्ति को जिसका व्यक्तित्व परीक्षण करना है उसे एक प्रकरण पर अपनी आत्मकथा लिखने के लिए कहता है। इस कथा का विश्लेषण करके अनुसंधायक व्यक्तित्व के एक अथवा कई पक्षों पर निर्णय लेता है।

आत्मकथा लेखन का कार्य कहानी लिखने से भी पूरा किया जाता है जैसा कि सी.ए.टी. तथा टी.ए.टी. प्रक्षेपी परीक्षणों में किया जाता है। क्योंकि इन में चित्रों के आधार पर व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर कहानी को अप्रत्यक्ष रूप से लिखता है।

मानदण्ड मापनी (Rating Scale):

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन करने के लिए उस व्यक्ति के गुणों का आंकलन सम्बन्धित व्यक्तियों से कराया जाता है उदाहरण के लिए किसी अध्यापक के व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन उसके छात्रों से कराया जा सकता है। विभिन्न व्यक्तित्व गुणों के लिए एक मानदण्ड अथवा अनेक मानदण्ड निर्धारित किए जा सकते हैं। उदाहरण:

1. आपके अध्यापक का सामान्य व्यवहार कैसा है?

निरंकुश	साधारण	लोकतांत्रिक
---------	--------	-------------

2. अध्यापक की समय की पाबन्दी (Punctuality of time) का स्तर कैसा है?

अत्यन्तलापरवाह	सामान्य से कम पाबन्द	साधारणतया पाबन्द	अत्यन्त पाबन्द	उदाहरण देने लायक पाबन्द
----------------	----------------------	------------------	----------------	-------------------------

3. अध्यापक का शाब्दिक व्यवहार कैसा है?

निकृष्ट	सामान्य	मध्यम	उत्तम	अतिउत्तम
---------	---------	-------	-------	----------

4. आपके अध्यापक के विषय ज्ञान के सम्बन्ध में सूचित करें।

साधारण	मध्यम	उत्तम
--------	-------	-------

5. अध्यापक की शिक्षण शैली (Teaching style) कैसी है?

बेकार	सामान्य से निम्न	सामान्य	उत्तम	अत्यन्त उत्तम
-------	------------------	---------	-------	---------------

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. व्यक्तित्व मापन के परीक्षणों के तीन वर्गों के नाम लिखिए।
2. आत्मनिष्ठ विधि की किन्हीं दो प्रमुख विधियों के नाम लिखिए।

3. प्रश्नावली के प्रकारों के नाम लिखिए।

7.6 परिस्थिति परीक्षण विधि (Situation Tests)

जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में कार्यरत व्यक्ति के व्यवहार को जानने के लिए परिस्थिति परीक्षण विधियों का उपयोग किया जाता है। परिस्थिति परीक्षण में दो प्रमुख विधियाँ हैं (1) समाजमिति विधियाँ तथा (2) मनोनाटक (Psychodrama) इन विधियों का उपयोग, व्यक्तित्व मापन करने में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इनके बारे में संघनित जानकारी आगे प्रस्तुत की जा रही है।

समाजमिति विधि (Socio Metric Method):

इस विधि का प्रतिपदान जे.एल. मोरेनो (J.L. Moreno) ने सन् 1934में किया था। इस विधि में व्यक्तियों के समूह में सर्वोत्तम तथा निम्नतम स्थिति के व्यक्तियों का मापन किया जा सकता है।

कक्षा में शीलगुणों के मापन के लिए नीचे एक समाजमिति मापनी प्रस्तुत की जा रही है।

उदाहरण -1**शीलगुणों के मापन के लिए समाजमिति प्रपत्र**

निर्देश: नीचे कुछ व्यक्तित्व गुणों से सम्बन्धित एक दिधुरवीय सूची दी गई है आपके विचार से अपनी कक्षा के इन व्यक्तित्व शीलगुणों में सर्वश्रेष्ठ का चयन प्रत्येक गुण के आधार पर अलग-अलग छात्रों के लिए कीजिए। कृपया अपने निष्पक्ष विचार लिखें। आपके उत्तरों को गोपनीय रखा जाएगा।

आपका नाम	कक्षा		दिनांक
सर्वाधिक उपयुक्त छात्र का नाम	व्यक्तित्व शील गुण		सर्वाधिक उपयुक्त छात्र का नाम
	विनम्र	झगडालू	
	संकोची	सामाजिक	
	परिश्रमी	आलसी	
	साहसी	डरपोक	
	आत्मकेन्द्रित	व्यावहारिक	
	अपरिपक्व	परिपक्व	
	स्थिर	भ्रमित	

उदाहरण -2**समाजमिति प्रपत्र**

निर्देश: हमारे विद्यालय में हैडगर्ल का चुनाव होना है। विद्यालय की नियमावली के आधार पर केवल 5 छात्राएँ हैडगर्ल के चयन के लिए उपयुक्त पाई गई हैं। इन छात्राओं में से केवल तीन छात्राओं को अपनी सहमति देने के लिए उन्हें वरीयताक्रम देने का कार्य आपको करना है। जिसे आप सर्वश्रेष्ठ मानते हैं इसके नाम के सामने I लिखें जिसे आप दूसरे क्रम पर मान रहे हैं उस के नाम के सामने II लिखें तथा जिसे आप तीसरे क्रम पर मान रहे हैं उसके नाम के सामने III लिखें।

आशा है आप योग्यताओं का विचार करते हुए वरीयता क्रम प्रदान करेंगे। क्योंकि आपको सर्वश्रेष्ठ का चुनाव करना है।

छात्राओं के नाम	प्रदत्त वरीयता क्रम
1. नीहारिका	
2. सारिका	
3. शिवांगी	
4. शिवानी	
5. शैली	

इस समाजमिति में अंकन कार्य करने के लिए वरीयताक्रम I पर तीन अंक वरीयताक्रम II पर 2 अंक तथा वरीयताक्रम III पर एक अंक दिया जाएगा। जिस के अंक सर्वाधिक होंगे उसे हैडगर्ल का पद भार सौंप दिया जाएगा।

उदाहरण -3

हैडगर्ल के लिए नामित 5 छात्राएँ अपने में से किसी एक का चयन सांस्कृतिक सचिव के लिए करें तो उसके लिए समाजमिति प्रपत्र इस प्रकार होगा।

निर्देश: आप को अपने से किसी एक का चयन सांस्कृतिक सचिव के लिए करना है। आपकी दृष्टि में कौन सबसे उत्तम सांस्कृतिक सचिव सिद्ध होगी और कौन सबसे कम उपयुक्त सांस्कृतिक सचिव सिद्ध होगी। अपने मत व्यक्त करने के लिए यह ध्यान रखें। कि सांस्कृतिक सचिव के आम चयन पर ही आप के विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की उत्तमता निर्भर करती है। उत्तम के लिए सही का चिह्न बनाए तथा सबसे कम उपयुक्त के लिए (ग) चिह्न बनाए :

सांस्कृतिक सचिव का चयन

सांस्कृतिक सचिव के लिए अनुमोदित नाम							
	उत्तरदाता	नीहारिका	सारिका	शिवांगी	शिवानी	शैली	योग
1	नीहारिका	-	<input type="checkbox"/>			x	2
2	सारिका	<input type="checkbox"/>	-			x	2
3	शिवांगी	<input type="checkbox"/>		-	x		2
4	शिवानी	<input type="checkbox"/>	X		-		2
5	शैली		<input type="checkbox"/>		x	-	2
	योग उपयुक्त	3	2	0	0	0	5
	कम उपयुक्त	0	1	0	2	2	5

मनोनाटक (Psycho-Drama):

मनोनाटक का श्री गणेश 1946 में हुआ था। व्यक्तित्व मापन तथा मनोचिकित्सा के लिए मनोनाटक को एक उपयोगी विधि माना जाता है। मनोनाटक में दो या अधिक व्यक्ति हिस्सा लेते हैं। नाटक इन व्यक्तियों से सम्बन्धित किसी मनोवैज्ञानिक समस्या पर आधारित होता है। मनोनाटक में सम्मिलित व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए विशेषज्ञ होते हैं ये विशेषज्ञ नाटक में प्रस्तुत किए गए सम्वादों तथा भावों के आधार पर व्यक्तित्व का अध्ययन करते हैं। मनोनाटकों का आयोजन व्यक्ति या व्यक्तियों से सम्बन्धित सामाजिक स्थिति, आर्थिक, पारिवारिक समस्याओं, आकांक्षा, अभिलाषाओं के आधार पर किया जाता है।

मनोनाटकों के जैसी ही स्थिति नाटक (Sociodrama) की भी होती है। इस नाटक में समाजिक समस्याओं से सम्बन्धित विषयवस्तु होती है।

व्यक्तित्व परीक्षण से अधिक ये नाटक विरेचक (Catharsis) का काम करते हैं। ये उपचार की विधि अधिक है, मापन की विधि कम है। इनके माध्यम से व्यक्ति अपनी दमित इच्छाओं का विरेचन कर शान्त हो जाता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

4. परिस्थिति परीक्षण विधि की दो प्रमुख विधियों के नाम लिखिए।
5. समाजमिति विधि का प्रतिपदान किसने किया?
6. व्यक्तित्व मापन तथा मनोचिकित्सा के लिए _____ को एक उपयोगी विधि माना जाता है।

7.7 प्रक्षेपण विधि (Projective Method)

महाकवि तुलसीदास की चौपाई में कहा गया है- “ जाकी की रही भावना जैसी प्रभु मूरत तिन देखी तैसी”। अर्थात् श्रीराम को देखने के बाद सभा में उपस्थिति व्यक्ति की जैसी भावना थी, उन्हें वे उसी रूप में दिखाई पड़े। असल बात तो यह है कि हमारी आंखें केवल कैमरे का काम करती हैं। देखने का असल कार्य तो मस्तिष्क द्वारा किया जाता है। हम किसी प्रश्न का उत्तर अपने अवचेतन मन में जैसा स्थापित होता है, उसी के अनुरूप देते हैं। इसी सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि हमारी दमित भावनाएँ हमारे स्वप्नों के माध्यम से बाहर जाने का प्रयास कर हमें संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण में सहयोग प्रदान करती हैं। फ्राइड (Freud) का स्वप्न विश्लेषण इसी बात को स्पष्ट करता है। उदाहरण के लिए स्वप्न में सांप का दिखाई देना हमारी दमित काम भावना का प्रतीक है। इसी प्रकार इस प्रकार के चित्र देखने पर जिसमें कोई भाव स्पष्ट न होता हो व्यक्ति अपने अचेतन मन के अनुसार उनका भाव व्यक्त करता है। इसी के आधार पर व्यक्तित्व के परीक्षण के लिए प्रक्षेपण विधियों का प्रयोग किया जाने लगा। सभी प्रक्षेपण व्यक्तित्व परीक्षण इसी मुख्य भाव पर आधारित है। प्रक्षेपण विधि पर आधारित कई परीक्षण इस समय उपलब्ध है। जिसके आधार पर व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है। शिक्षा में मुख्य रूप से जो परीक्षण उपयोगी हैं उनके नाम हैं -

1. रोशा का स्याही धब्बा परीक्षण (Rorschach Ink Blot Test)
2. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (Thematic Apperception test)
3. बाल अन्तर्बोध परीक्षण (Children Apperception test)
4. चित्र कुण्ठा परीक्षण (Picture Frustration Test)
5. स्वतंत्र शब्द साहचर्य (Free Word Association Test)
6. वाक्यपूर्ति विधि (Sentence Completion Test)
7. सम्मोहन (Hypnosis)

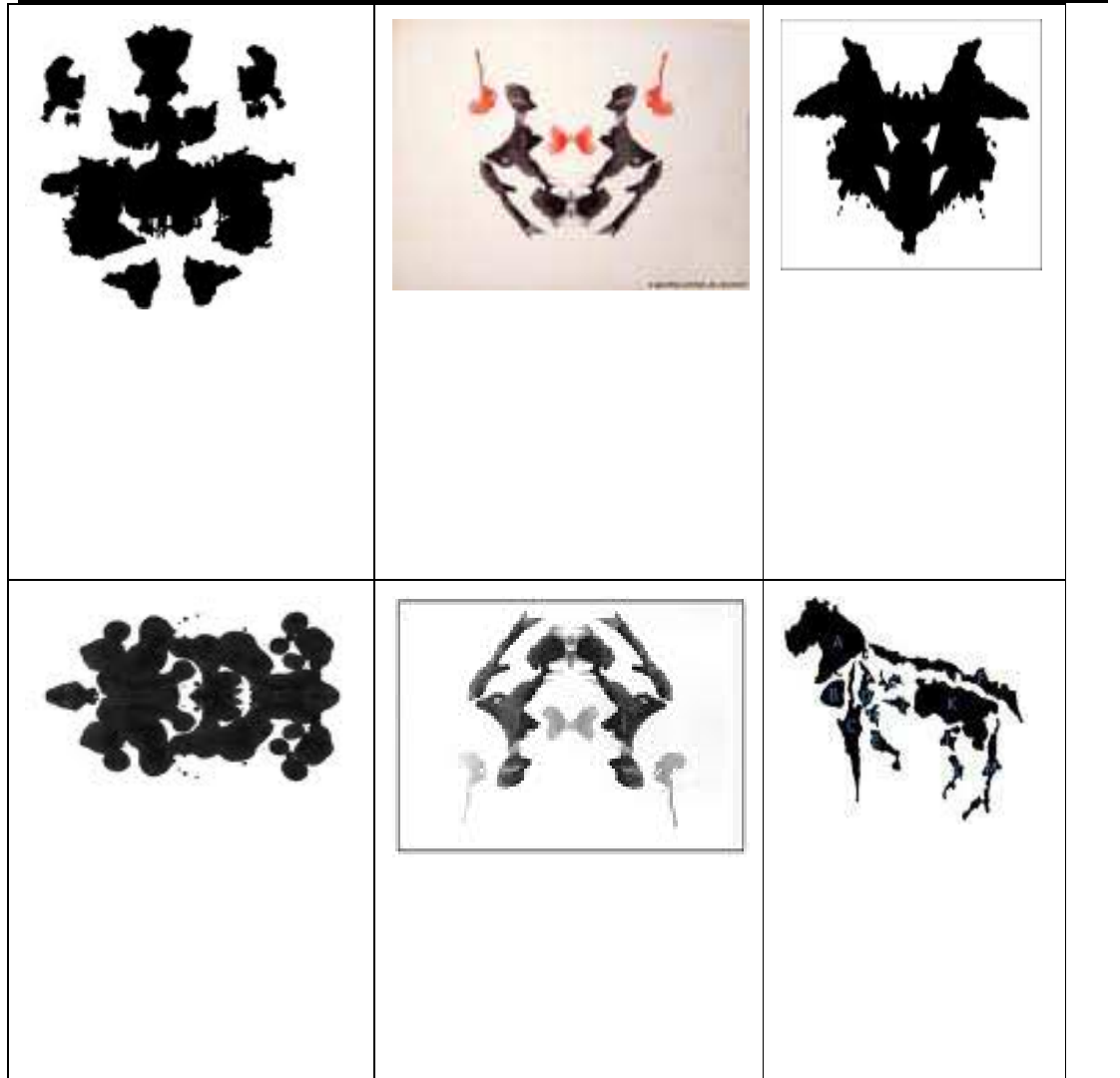
रोशा का स्याही धब्बा परीक्षण:

रोशा जर्मनी निवासी एक मनोचिकित्सक था। उसने एक बार अपने फाउण्टेन पेन की स्याही की कुछ बूंदें एक कागज पर टपका कर इस कागज को स्याही पड़े स्थान के बीच से मोड़ दिया जिससे स्याही ने कागज

पर निशान बना दिया। यह एक अजीब सा चित्र बना जिसे उसने देखा। फिर अपने परिवारजनों को दिखाया। उस चित्र के सम्बन्ध में उन सब के उत्तर अलग-अलग पाए गए जिसके आधार पर रोर्शा ने सोचा की यह उनकी दमित भावनाओं के प्रकटीकरण है। यही चित्र रोर्शा ने चिकित्सालय में जाकर अपने रोगियों तथा अन्य स्टाफ को दिखाये सब के उत्तर अलग-अलग पाए गए। उन उत्तरों से उनकी दमित भावनाओं का प्रकटीकरण हो रहा था। इसी घटना को केन्द्र में रखते हुए रोर्शा ने बहुत से कार्ड बना लिए उनमें से उसने 10 कार्डों का चयन किया तथा उनका विस्तृत विश्लेषण किया तथा वे उत्तर नोट किए जो कि मनोरोगियों के द्वारा व्यक्त किए गए थे। इन 10 कार्डों में से 5 कार्ड स्वेत श्याम, 2 कार्ड स्वेत श्याम तथा लाल धब्बों वाले तथा शेष 3 कार्ड बहुरंगी थे। इन कार्डों को रोगियों या सम्भावित रोगियों को क्रमशः दिखाया जाता है तथा उत्तर देने वाला उन चित्रों में क्या दिखाई दे रहा है, यह बताता जाता है तथा परीक्षण लेने वाला उनके उत्तरों को नोट करता जाता है। परीक्षक कार्ड में दिखाई दे रहे चित्र की स्थिति को भी पूछता है। तथा चित्रों की विषयवस्तु तथा स्थान के साथ-साथ यह भी नोट किया जाता है कि व्यक्ति सम्पूर्ण चित्र देख रहा है या किसी एक भाग को देखकर प्रतिक्रिया दे रहा है। धब्बों में व्यक्ति, पशुओं आदि की गति का वर्णन करता है या नहीं, रोगों के प्रति व्यक्त विचारों से उसकी संवेगात्मक स्थिति का प्रकटीकरण होता है। धब्बों में दिखाई देने वाले मानव के शारीरिक अंग, मानचित्र या अन्य वस्तुएँ दिखाई देती है, तो उनका भी अर्थ है। परीक्षणदाता ने किस कार्ड पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने में कितना समय लिया। कार्ड को किस ओर घुमाकर देखा। ये सब नोट करके परीक्षण के मैनुअल के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी हो जाती है रोर्शा का यह परीक्षण विशेष प्रशिक्षण चाहता है। किसी सुशिक्षित मनोविज्ञानी से इसके सम्बन्ध में प्रशिक्षण लिया जाना आवश्यक है।

इस परीक्षण द्वारा व्यक्तित्व की बुद्धि, अनुकूल अभिवृत्तियों, संवेगात्मक स्थिति के सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान हो जाता है। प्रशिक्षित निर्देशन परामर्शक द्वारा व्यक्तिगत निर्देशन देने के लिए इस परीक्षण का प्रयोग किया जा सकता है।

निःसंदेह रोर्शा के धब्बों की व्याख्या से परीक्षार्थी के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत हो जाता है।



चित्र 7.1 रोशा के द्वारा प्रस्तुत स्याही धब्बों के कुछ कार्ड

प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण Thematic Apperception Test:

इस परीक्षण का बहुश्रुत नाम T.A.T है। इस टेस्ट का निर्माण मार्गन और मुरे (Morgan and Murray) ने 1935 किया था। इस परीक्षण में 30 चित्र होते हैं। 10 चित्र पुरुषों के 10 चित्र महिलाओं के तथा 10 चित्र महिला तथा पुरुष दोनों के होते हैं।



चित्र 7.2 प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण में प्रयुक्त किए जाने वाले कुछ चित्र

चित्र इस प्रकार के बनाए गए हैं जिनमें कोई भाव नहीं होता है। चित्रकार को यह पहले से स्पष्ट किया गया था कि चित्रों में भवाभिव्यक्ति न हो पाए। परीक्षण के माध्यम से व्यक्तित्व का परीक्षण किया जाता है। परीक्षणकर्ता परीक्षार्थी को पहले केवल 10 चित्र दिखाता है। उन्हें दिखाने के बाद एक-एक चित्र देकर यह कहता है कि इस चित्र पर कहानी लिखें। कहानी में परीक्षार्थी स्वयं अपने आपको चित्र के नायक के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। उसके साथ जुड़ जाता है। अपने आप को नायक मान कर कहानी लिखना प्रारम्भ कर देता है। परीक्षणकर्ता उत्तरदाता से कुछ प्रश्न पूछता है जो कि चित्र के अनुसार पहले से ही निर्धारित होते हैं। कहानी में उत्तरदाता अपनी इच्छाओं, भावनाओं संवेगों तथा समस्याओं का वर्णन करता है। पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों को लिखकर देता है।

कहानी तथा प्रश्नों उत्तरों के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन मैनुअल के आधार पर किया जाता है तथा व्यक्तित्व को अपने व्यवहार में सुधार लाने के लिए सुझाव दिए जाते हैं।

बाल सम्प्रत्यय परीक्षण (Children Apperception Test)

इस परीक्षण का आविष्कार डॉ० अरनेस्ट क्रिस (Dr. Ernest Kris) ने किया। इस परीक्षण का उपयोग बच्चों के व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

इस परीक्षण में 10 चित्र होते हैं। ये चित्र पशुओं के होते हैं जिसमें उन्हें कोई कार्य करते हुए दिखाया गया होता है। इन चित्रों को बच्चों को एक के बाद एक करके दिखाया जाता है। बालक चित्रों को देखकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं जिन्हें परीक्षणकर्ता नोट करता जाता है। बच्चों के उत्तरों का विश्लेषण मैनुअल के आधार पर किया जाता है।

चित्र कुण्ठा परीक्षण (Picture Frustration Test):

इस परीक्षण का निर्माण रोजेनज्विंग (RosenZweig) ने 1944 में किया। चार वर्ष बाद बच्चों के लिए एक अलग परीक्षण का निर्माण 1948 में किया। जिसका नाम इन्होंने Children's Form of Rosen Zweig P.F. Study रखा। यह एक नियंत्रित प्रक्षेपण विधि है। इन्हीं के आधार पर सरदारशहर के डॉ० सी.एम. शर्मा ने विद्यालय परिस्थितियों में कुण्ठा परीक्षण का निर्माण किया। इन परीक्षणों के द्वारा व्यक्तियों तथा बच्चों की नैराश्य (कुण्ठाओं) तथा आक्रामक स्थितियों का मापन किया जाता है। प्रत्येक परीक्षण में 24 चित्र रहते हैं। जो कि स्पष्ट नहीं होते। प्रत्येक चित्र में दो व्यक्ति होते हैं एक पर कुछ परिस्थिति से सम्बन्धित कथन लिखा रहता है। जबकि उस का उत्तर देने के लिए दूसरे व्यक्ति को उत्तर देने के लिए स्थान रिक्त रहता है। रोजेनज्विंग के दोनों परीक्षणों का भारतीय परिस्थितियों में अनुकूलन डॉ० उदय पारीक ने किया है।

इन परीक्षणों से कुण्ठा और आक्रामकता का मापन किया जाता है। प्रत्येक परीक्षण में 24 चित्र जिन्हें कार्टून भी कहा जा सकता है। प्रत्येक कार्टून में दो अस्पष्ट मानव आकृति बनी होती है। एक मानव आकृति के माध्यम से कथन प्रस्तुत किया गया होता है। दूसरी आकृति के साथ उत्तर देने के लिए स्थान रिक्त रहता है। इन परीक्षणों का अध्ययन व्यक्तित्व तथा सामूहिक दोनों रूप से किया जा सकता है। उत्तरदाता कथन वाले व्यक्ति के साथ अपना तादात्म्य (Identification) कर लेता है। तथा उत्तरदाता के रूप में प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

मैनुअल के आधार पर उत्तरों का मूल्यांकन कुण्ठा की स्थिति का आंकलन करने के लिए किया जाता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

7. प्रक्षेपण विधि पर आधारित किन्हीं दो परीक्षणों के नाम लिखिए।
8. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षणका निर्माण किसने किया है?
9. बाल सम्प्रत्यय परीक्षण का आविष्कार _____ ने किया।
10. चित्र कुण्ठा परीक्षणका निर्माण _____ ने किया।

7.8 मनोविश्लेषण विधि (Psycho-Analytic Method)

मनोविश्लेषण विधियाँ आमतौर पर मनोरोगियों की चिकित्सा के लिए प्रयुक्त की जाती हैं। इन विधियों में व्यक्ति के विगत अनुभवों से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर उनकी वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है। इन विधियों में स्वप्न विश्लेषण, सम्मोहन (Hypnosis) तथा स्वतंत्र शब्दसाहचर्य का प्रयोग किया जाता है। आमतौर पर भयग्रस्त तथा अत्यधिक दुश्चिंताग्रस्त, मनोरोगियों (Psychotic), संवेगों से रहित हो जाने (Emotionless), अप्रसन्न रहने वाले तथा प्रायः विक्षुब्ध (Disturb), उत्तेजित रहने वाले व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता है।

प्रमुख मनोविश्लेषण विधियों का आगे वर्णन अत्यन्त संक्षेप में किया जा रहा है।

स्वतंत्र शब्द साहचर्य (Free Word Association Test):

अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने इस प्रकार के परीक्षणों का निर्माण किया है। इस परीक्षणों में 50 से 100 तक शब्द होते हैं। परीक्षक परीक्षार्थी को एक एक-एक करके शब्द बोलता है। परीक्षार्थी इन शब्दों के सम्बन्ध में जो भी मन में आता है उसे बोलता जाता है। परीक्षक परीक्षार्थी द्वारा की गई प्रतिक्रिया को व्यक्त करने में ली गई समयावधि को नोट करता है। व्यक्त प्रतिक्रिया तथा लिए गए समय के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन मैनुअल के आधार पर किया जाता है।

इस विधि का सर्वप्रथम प्रयोग मनोवैज्ञानिक गाल्टन ने सन 1879 में किया था। इन्होंने 79 शब्दों की एक सूची का निर्माण किया। इनके बाद युंग (Yung) ने 100 शब्दों की सूची का निर्माण किया। इस विधि में निरन्तर संशोधन होते रहे हैं, शब्दों के चयन का वर्गीकरण अलग-अलग तरह से किया जाता है। शब्दों के वर्ग में आत्म केन्द्रित (Ego-Centric), वर्गों पर (Super ordinal) विरोधी शब्द (Opposite), आदि होते हैं। इन्हें समीपस्थ प्रतिक्रिया (Close Reaction), दूरस्थ प्रतिक्रिया (Distant Reaction), परम्परागत ग्रन्थि संकेत (Traditional Complex Indicators) विषय विश्लेषण (content Analysis) तथा पुनरोत्पादक वेदना के स्वरूप में रखा जाता है। पश्चिमी परीक्षणों के भारतीय परिस्थितियों में प्रयुक्त कर उनकी विश्वसनीयता तथा वैधता ज्ञात की गई है।

वाक्यपूर्ति विधि:

इस विधि में उद्दीपक अपूर्ण वाक्यों में होते हैं। सभी वाक्य व्यक्तित्व से सम्बन्धित होते हैं प्रयोज्य इन वाक्यों को पूरा करता है। वाक्यों को पूरा करने पर प्रयोज्य की इच्छाओं, भावनाओं, अन्तर्द्वन्द्वों, मनोवृत्तियों और भावना ग्रन्थियों आदि का पता लगाया जाता है। कुछ नमूने के अर्द्धवाक्य इस प्रकार हैं-

1. मेरे पिताने
2. असफलता से मुझे
3. पत्नी के साथ मुझे
4. सामाजिक कार्यक्रम मुझे

5. अच्छी वेशभूषा मुझे

वाक्य पूर्ति परीक्षणों में 30 से 100 तक अपूर्ण वाक्य हो सकते हैं। उदाहरण के लिए व्यक्तित्व परीक्षण के लिए रॉटर्स (Rotters 1934) के परीक्षण में 40 अपूर्ण वाक्य हैं जबकि एल.एन. दुबे तथा अर्चना दुबे (1987) के परीक्षणों में 50 अपूर्ण वाक्य हैं वाक्य पूर्ति परीक्षणों के माध्यम से सामाजिकता, आत्मविश्वास, आकांक्षास्तर का अध्ययन किया जाता है। इन परीक्षणों में यदि अधिक समय दिया जाता है तो प्रयोज्य स्वाभाविक प्रक्रिया व्यक्त न करके अपने वास्तविक उत्तर न देकर स्वनिर्मित अवास्तविक उत्तर देता है। इस कारण परीक्षण की विश्वसनीयता तथा वैधता पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ जाता है।

सम्मोहन (Hypnosis)

सम्मोहन एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति अचेतन अवस्था में रहते हुए देख तथा सुन सकता है, प्रश्नों के उत्तर दे सकता है तथा निर्देशों का पालन कर सकता है। सम्मोहन का प्रयोग मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्तियों के लिए किया जाता है। आजकल नशामुक्ति के लिए इस विधि का व्यापक प्रयोग किया जाता है। इस विधि में सम्मोहक जिस व्यक्ति को सम्मोहित करता है। पहले उसे विश्वास में लेता है तथा उसे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सम्मोहित होने के लिए प्रेरित करता है। सम्मोहनकर्ता के द्वारा सम्मोहन के दौरान जो आदेश दिए जाते हैं उनका पालन, जिस व्यक्ति को सम्मोहित किया जाता है, वह सम्मोहन की स्थिति में निकलने के बाद भी करता है। आमतौर पर नशामुक्ति -धूम्रपान, शराब, अन्य कुऔषधियों का त्याग करने के लिए यह प्रभावी विधि है। केवल नशामुक्ति ही नहीं बल्कि भय, चिंताओं (Neurosis) विभ्रम (Delusion) अर्थात् वे विश्वास जो की पूरी तरह से गलत होते हैं, तथा संविभ्रम (Paranoia) (यह भ्रान्ति की लोग उसे हानि पहुँचाना चाहते हैं) आदि मनोरोगों की चिकित्सा भी की जाती है। सम्मोहन का प्रयोग व्यक्ति के व्यवहार को उन्नत बनाने में किया जाता है। कई मनोरोगों की यह औषधविहीन चिकित्सा है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

11. मनोविश्लेषण विधियाँ आमतौर पर _____ की चिकित्सा के लिए प्रयुक्त की जाती है।
12. प्रमुख मनोविश्लेषण विधियों के नाम लिखिए।
13. सम्मोहन क्या है?

7.9 सांराश

इस इकाई के अध्ययन से हमने व्यक्तित्व के मापन की विधियों से परिचय प्राप्त किया। यद्यपि व्यक्ति का मापन करना अत्यन्त कठिन कार्य है, क्योंकि व्यक्ति अपने बारे में सत्य बातें दूसरों को बताने से परहेज

करता है इसका कारण उसे परीक्षक में विश्वास नहीं होता- कि वह उसकी गोपनीय बातों को जानकर उससे व्यवहार करने का तरीका ही बदल देगा। परन्तु प्रक्षेपण विधियों आदि के द्वारा उसके अन्तर्मन की बातों को जानने के लिए सार्थक प्रयास उस व्यक्ति के हित के लिए किए जा सकते हैं। विद्यालय में बालकों के आक्रामक व्यवहार, कुष्ठाओं, निराशाओं, उपलब्धियों में आने वाली गिरावटों, मनोरोगग्रस्त बालकों की पहचान करने, चिन्ताओं को दूर करने, परीक्षा के भूत से भयग्रस्त बालकों को भयमुक्त करने के लिए व्यक्तित्व परीक्षणों को प्रयोग किया जा सकता है।

इस इकाई की विषयवस्तु को समझने के लिए यहाँ दी जाने वाली विषय वस्तु पर्याप्त इस लिए नहीं है क्योंकि यह एक प्रयोगिक कार्य है। वास्तविक परीक्षण को देखे तथा प्रयोग किए बिना इस सम्बन्ध में यथोचित ज्ञान होना सम्भव नहीं है। अतः मनोविज्ञान प्रयोगशाला में वास्तविक परीक्षणों का अध्ययन आवश्यक है। यह विषय इतना विस्तृत है कि जिसे संक्षेप में कह देना विषय के साथ अन्याय है। परीक्षणों के सर्वाधिकार निर्माताओं के होते हैं इस कारण प्रस्तुत जानकारी से अधिक जानकारी देना सम्भव नहीं है।

7.10 शब्दावली

- **प्रश्नावली:** सामान्यतः प्रश्नावली शब्द से एक ऐसे उपकरण का बोध होता है जिसमें प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए कई प्रपत्रों का उपयोग किया जाता है। जिसे सूचनादाता अपने आप भरता है।
- **साक्षात्कार:** साक्षात्कार से तात्पर्य एक ऐसी स्थिति से है, जिसमें एक व्यक्ति साक्षात्कारकर्ता आमने-सामने के पारस्परिक मौखिक आदान प्रदान से दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों को सूचना देने या अपने विचार तथा विश्वास व्यक्त करने के लिए प्रेरित करने का प्रयत्न करता है।
- **समाजमिति:** समाजमिति एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा समूहों में व्यक्तियों की स्वीकृति या अस्वीकृति के विस्तार के मापन के आधार पर उनकी सामाजिकस्थिति, संरचना तथा विकास का अन्वेषण, वर्णन एवं मूल्यांकन किया जाता है। इस विधि के द्वारा नेतृत्व, पूर्वाग्रह एवं मनोबल का भी मापन होता है।
- **सम्मोहन** - एक ऐसी स्थिति जिसमें व्यक्ति अचेतन अवस्था में रहते हुए देख तथा सुन सकता है, प्रश्नों के उत्तर दे सकता है तथा निर्देशों का पालन कर सकता है।

7.11 स्वमूल्यांकन प्रश्नों हेतु उत्तर

1. व्यक्तित्व मापन के परीक्षणों के तीन वर्गों के नाम हैं-
 - i. आत्मनिष्ठ विधियाँ
 - ii. परिस्थिति परीक्षण विधियाँ

-
- iii. प्रक्षेपण विधियाँ
 2. आत्मनिष्ठ विधि की किन्हीं दो प्रमुख विधियों के नाम हैं-
 - i. साक्षात्कार तथा प्रश्नावली विधि
 - ii. बन्द-प्रश्नावली
 3. प्रश्नावली के प्रकारों के नाम हैं-
 - i. खुली प्रश्नावली
 - ii. सचित्र-प्रश्नावली
 - iii. मिश्रित प्रश्नावली
 4. परिस्थिति परीक्षण विधि की दो प्रमुख विधियों के नाम हैं- समाजमिति विधि तथा मनोनाटक
 5. समाजमिति विधि का प्रतिपदान जे.एल. मोरेनो ने किया।
 6. मनोनाटक
 7. प्रक्षेपण विधि पर आधारित किन्हीं दो परीक्षणों के नाम हैं-
 - i. रोशा का स्याही धब्बा परीक्षण
 - ii. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण
 8. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षणका निर्माण मार्गन और मुरे ने किया है।
 9. डॉ० अरनेस्ट क्रिस
 10. रोजनज्विंग
 11. मनोरोगियों
 12. प्रमुख मनोविश्लेषण विधियों के नाम हैं-
 - i. स्वतंत्र शब्द साहचर्य
 - ii. वाक्यपूर्ति विधि
 - iii. सम्मोहन
 13. सम्मोहन एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति अचेतन अवस्था में रहते हुए देख तथा सुन सकता है, प्रश्नों के उत्तर दे सकता है तथा निर्देशों का पालन कर सकता है।
-

7.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Chauhan, S.S. (2009); Advanced Educational Psychology, 17th ed, New Delhi, Vikas Publishing House
2. Clifford T. Morgon, Richard A. King, John R. Weisz, John Schopler. (1993); Introduction to Advanced Educational Psychology, 17 ed, New Delhi. TATA McGraw-Hill edition.

3. Cronbach, I.J. (1970), Essentials of Psychological Testing, 3rd ed. New York; Harper and Row Publishers.
4. Charles, E. Skinner (1990) : Education Psychology (Hindi) New Delhi, Disha Publications
5. Gardner, Howard (1999): The Disciplined Mind. New York: Simon Schuster
6. Gupta, S.P. (2002) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
7. Dandapani, S. (2007). Advanced Educational Psychology, New Delhi. Anmol Publications Pvt. Ltd.
8. Ebel, Robert L., (1979), Essentials of Psychological Measurement, London; Prentice Hall International Inc.
9. Freeman, Frank S. (1962); Theory and Practice of Psychological Testing, New Delhi; Oxford and IBN Publishing Co.
10. Kuppaswamy, B. (2006), Advanced Educational Psychology, New Delhi. Sterling Publishers Private Ltd.
11. Lindquist, E.F (1951), Educational Measurement, Washington D C .American Council on Education.
12. Mangal, S.K. (2007) Advanced Educational Psychology, New Delhi. Prentice Hall of India Private Limited.
13. Mathur, S.S. (2007), Educational Psychology, Agra Vinod Pustak Mandir.
14. Sukla, O.P. (2002) शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ: भारत प्रकाशन।
15. सिंह .श्रीराम पाल ; 2009 रू शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
16. Thorndike, R.L. & Hagen, E.P. (1969). Measurement and Evaluation in Psychology and Education 3rd ed; New York; John Wiley & Sons Inc
17. Williams, W.M. et al (1996): Practical Intelligence. New York: Harper Collins College Publications.

7.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. खुली और बंद प्रश्नावलियों में अन्तर स्पष्ट करें। तथा संक्षेप में बताएँ कि साक्षात्कार विधि का उपयोग बालकों के अनुशासित करने में किस प्रकार करेंगे।
2. आत्मकथा लेखन किस प्रकार व्यक्तित्व परीक्षण में उपयोगी रहता है? साथ ही चित्र कुण्ठा परीक्षण क्या है, स्पष्ट करें।

-
3. मानदण्ड मापनी का प्रयोग आप किन-किन परिस्थितियों में कर सकते हैं। सूची का निर्माण करें।
 4. रोशा के स्याही धब्बों से व्यक्तित्व कैसे मापा जाता है ?साथ ही बताएँ कि सम्मोहन विधि से क्या लाभ हैं।
 5. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण का संक्षेप में वर्णन करें। तथा टी.ए.टी. तथा सी.ए.टी. के बारे में संक्षिप्त विवरण लिखें।
 6. वाक्य पूर्ति विधि से व्यक्तित्व मापन कैसे सम्भव है? पांच वाक्य पूर्ति के प्रश्न लिखें।

इकाई 8 - सृजनात्मकता Creativity

- 8.1 प्रस्तावना
- 8.2 उद्देश्य
- 8.3 सृजनात्मकता का अर्थ एवं परिभाषाएँ
- 8.4 सृजनात्मकता की विशेषताएँ
- 8.5 सृजनात्मकता के तत्व
- 8.6 सृजनात्मक प्रक्रिया
- 8.7 सृजनात्मक बालक की विशेषताएँ
- 8.8 बालकों में सृजनात्मकता विकसित करना
- 8.9 सृजनात्मकता परीक्षण
- 8.10 सारांश
- 8.11 शब्दावली
- 8.12 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 8.13 संदर्भ ग्रंथ सूची
- 8.14 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

हम में से प्रत्येक व्यक्ति अनुपम है, इसलिए सभी प्राणियों में एक ही स्तर की सृजनात्मक योग्यता विद्यमान नहीं। हम में से कई व्यक्तियों में उच्च स्तरीय सृजनात्मक प्रतिभाएँ होती हैं और यही व्यक्ति कला, साहित्य, विज्ञान, व्यापार, शिक्षण आदि विभिन्न मानवीय क्षेत्रों में संसार का नेतृत्व करते हैं। अच्छी शिक्षा, अच्छी देखभाल, सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अवसरों की व्यवस्था, सृजनात्मकता को अंकुरित एवं पोषित करती है। इसमें माता-पिता समाज तथा अध्यापक अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वे बच्चों के पालन-पोषण तथा उनकी सृजनात्मक योग्यताओं के विकास में सहायता दे सकते हैं। इसके लिए अध्यापकों तथा माता-पिताओं को सृजनात्मकता के विकास के साधनों का परिचय प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। इस इकाई में आप सृजनात्मकता और सृजनात्मकता को विकसित करने के विषय में अध्ययन करेंगे।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

1. सृजनात्मकता का अर्थ जान पाएंगे।
2. सृजनात्मकता की विभिन्न परिभाषाएँ लिख सकेंगे।
3. सृजनात्मकताकी विशेषताओं के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
4. सृजनात्मकता के तत्वों को स्पष्ट कर सकेंगे।
5. सृजनात्मकता बालकों की विशेषताएँ लिख सकेंगे।
6. सृजनात्मकता को विकसित करने हेतु विभिन्न सुझावों की व्याख्या कर सकेंगे।

8.3 सृजनात्मकता का अर्थ एवं परिभाषाएँ

Meaning and Definitions of Creativity

सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के क्रियेटिविटी का हिन्दी रूपांतरण है। सृजनात्मकता से अभिप्राय है रचना सम्बंधी योग्यता, नवीन उत्पाद की रचना। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मक स्थिति अन्वेषणात्मक होती है। विभिन्न विद्वानों ने सृजनात्मकता की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए उसे अपनी-अपनी तरह से परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। कुछ प्रसिद्ध विद्वानों की परिभाषाओं पर हम विचार करेंगे।

- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार- “सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में होती है।”
“Creativity is essentially found in new construction or production”. **James Drever**
- **क्रो एवं क्रो**- “सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को व्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।
“Creativity is a mental process to express the original outcomes” **Crow & Crow**
- **स्टेगनर एवं कार्वोस्की**- “किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन सृजनात्मकता है।”
- **ड्रेवडाहल**- “सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह उन वस्तुओं या विचारों का उत्पादन करता है जो अनिवार्य रूप से नए हो और जिन्हें वह व्यक्ति पहले से न जानता हो।
“Creativity is the capacity of a person to produce composition products or ideas which are essentially new or novel and previously unknown to the producer”. **Drevidahl**
- **विल्सन, गिलफोर्ड एवं क्रिस्टेनसैन**- सृजनात्मक-प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई नवीन (कोई नई वस्तु, विचार या पुराने तत्वों का कोई नवीन संगठन या रूप) उत्पत्ति हो। यह नवीन उत्पत्ति किसी समस्या के समाधान में सहायोगी होनी चाहिए।

- स्किनर-“सृजनात्मक चिंतन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ या निष्कर्ष नवीन, मौलिक, अन्वेषणात्मक तथा असाधारण हो। सृजनात्मक चिंतक वह है जो नए क्षेत्र की खोज करता है, नए निरीक्षण करता है, नई भविष्यवाणियाँ करता है और नए निष्कर्ष निकालता है”

यदि हम इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने का प्रयास करें जो ज्ञात होगा कि किसी नई वस्तु का निर्माण या किसी नई वस्तु की खोज इन तमाम परिभाषाओं का केन्द्रीय तत्व है। अतः हम आसानी के साथ इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नए विचार या नई वस्तु का निर्माण करता है या किसी नई वस्तु की खोज करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की यह योग्यता भी सम्मिलित है जिसके द्वारा वह पूर्व-प्राप्त ज्ञान का पुनर्गठन करता है।

8.4 सृजनात्मकता की विशेषताएँ **Characteristics of Creativity**

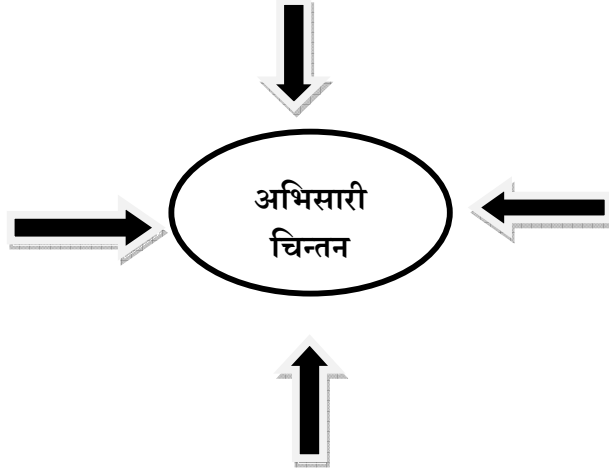
1. सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति में कुछ-न-कुछ मात्रा में सृजनात्मकता अवश्य होती है।
2. यद्यपि सृजनात्मक योग्यताएँ प्रकृति-प्रदत्त होती है परन्तु प्रशिक्षण या शिक्षा द्वारा उनको विकसित किया जा सकता है।
3. सृजनात्मक अभिव्यक्ति द्वारा किसी नई वस्तु को उत्पन्न किया जाता है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह वस्तु पूर्ण रूप से नई हो। पृथक रूप से दिए गए तत्वों से नए एवं ताजा समिश्रण का निर्माण करना: पहले से ज्ञात तथ्यो या सिद्धांतो का पुनर्गठन करना: किसी पूर्व-ज्ञात शैली में सुधार करना-आदि उतने ही सृजनात्मक कार्य हैं जितना रसायन विज्ञान का कोई नया तत्व ढूँढना या गणित का कोई नया सूत्र खोजना। ‘सृजनात्मकता’ में केवल इस बात के प्रति सावधान रहने की आवश्यकता है कि किसी ऐसी वस्तु की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए जिसका व्यक्ति को पहले से ज्ञात हो।
4. कोई भी सृजनात्मक-अभिव्यक्ति सृजक के लिए आनंद तथा संतुष्टि का स्रोत होती है। सृजक जो देखता या अनुभव करता है उसे अपने तरीके से प्रकट करता है। सृजक अपनी रचना द्वारा ही अपने आप की अभिव्यक्ति करता है। सृजक अपने ही तरीके से वस्तुओं, व्यक्तियों तथा घटनाओं को लिखता है। अतः यह आवश्यक नहीं कि रचना प्रत्येक व्यक्ति को वही अनुभव एवं वही संतोष प्रदान करे जो रचनाकार को प्राप्त हुआ हो।
5. सृजक वह व्यक्ति है जो अपने अहं को इस प्रकार प्रकट करता हो, यह मेरी रचना है, यह मेरा विचार है, मैंने इस समस्या को हल किया है। अतः निर्माणात्मक क्रिया में अहं अवश्य निहित रहता है।
6. सृजनात्मक चिंतन बधा हुआ चिंतन नहीं होता इसमें अनगिनत विकल्पों तथा इच्छित कार्यप्रणाली को चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है।

7. सृजनात्मक अभिव्यक्ति का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है। वैज्ञानिक आविष्कार कविता कहानी नाटक आदि लिखना नृत्य-संगीत, चित्रकला, शिल्पकला, राजनीति एवं सामाजिक सम्बन्ध आदि में से कोई भी क्षेत्र इस प्रकार की अभिव्यक्ति की आधार भूमि बन सकता अतः जीवन अपने समूचे रूप से रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए असंख्य अवसर प्रदान करता है।
8. जे0पी0गिलफोर्ड, टैरैन्स, ड्रैवडाहल आदि कई विद्वानों ने सृजनात्मकता के विविध तत्त्वों को खोजने का प्रयास किया है। परिणामस्वरूप प्रवाहात्मक विचारधारा, मौलिकता, लचीलापन, विविधतापूर्ण-चिन्तन, आत्म-विश्वास, संवेदनशीलता, सबन्धों को देखने तथा बनाने की योग्यता, आदि सृजनात्मक प्रक्रिया में सहायक माने गए हैं।

सृजनात्मक चिन्तन, चिन्तन का एक प्रमुख प्रकार है। सृजनात्मक चिन्तन को कई अर्थों में प्रयोग किया गया है। सृजनात्मक चिन्तन का सबसे लोकप्रिय अर्थ गिलफोर्ड (1967) द्वारा बतलाया गया है। इन्होंने चिन्तन को दो भागों में बांटा है -

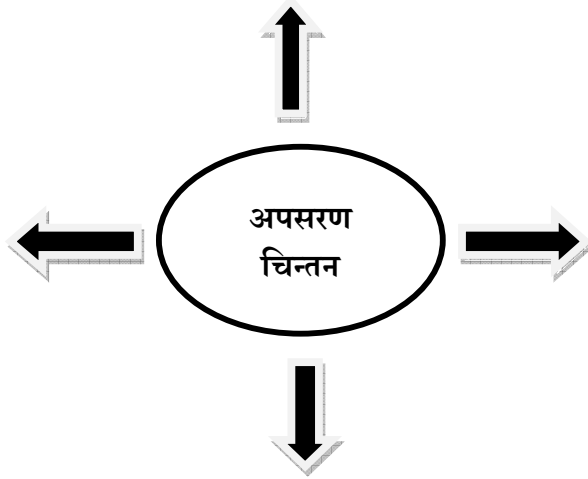
- अभिसारी चिन्तन
- अपसरण चिन्तन

- (1) **अभिसारी चिन्तन** - अभिसारी चिन्तन में व्यक्ति दिए गए तथ्यों के आधार पर किसी सही निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करता है, इस तरह के चिन्तन में व्यक्ति रुढ़िवादी तरीका अपना कर अर्थात् समस्या सम्बन्धी दी गई सूचनाओं के आधार पर उसका समाधान करता है। अभिसारी चिन्तन में व्यक्ति बहुत आसानी से एक पूर्व निश्चित क्रम में चिन्तन कर लेता है।



- (2) **अपसरण चिन्तन** - अपसरण चिन्तन में व्यक्ति भिन्न-भिन्न दशाओं में चिन्तन कर समस्या का समाधान करने की कोशिश करता है। जब वह भिन्न-भिन्न दशाओं में चिन्तन करता है तो स्वभावतः वह समस्या के कई संभावित उत्तरों पर चिन्तनता है और अपनी ओर से कुछ नए एवं मूल चीजों को जोड़ने की कोशिश करता है। इस तरह के चिन्तन की एक और विशेषता यह है

(जो इसे अभिसारी चिन्तन से अलग करती है) कि इसमें व्यक्ति आसानी से एक पूर्व सुनिश्चित कदमों के अनुसार चिन्तन नहीं कर पाता है (क्योंकि इसमें कुछ नया एवं मूल चिन्तन करना होता है) मनोवैज्ञानिकों ने अपसरण चिन्तन को सृजनात्मक चिन्तन के तुल्य माना है।



स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. ड्रेवडाहल के अनुसार सृजनात्मकता क्या है।
2. सृजनात्मकता _____ होती है।
3. गिलफोर्ड ने सृजनात्मकचिन्तन को किन दो भागों में बांटा है?
4. _____ में व्यक्ति भिन्न-भिन्न दशाओं में चिन्तन कर समस्या का समाधान करने की कोशिश करता है।

8.5 सृजनात्मकता के तत्व

सृजनात्मकता के चार प्रमुख तत्व निम्न हैं-

1. **प्रवाह (Fluency):** प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या परा अधिकाधिक विचारों या प्रत्युत्तरों की प्रस्तुति से है। प्रवाह के भी चार भाग हैं-
 - i. वैचारिक प्रवाह
 - ii. अभिव्यक्ति प्रवाह
 - iii. साहचर्य प्रवाह

2. शब्द प्रवाह **लचीलापन (Flexibility)**: लचीलापन से अभिप्राय किसी समस्या पर दिए गए प्रत्युत्तरों या विकल्पों में लचीलापन के होने से है। अतः व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किए गए विकल्प या उत्तर एक-दूसरे से कितने भिन्न हैं।
3. **मौलिकता (Originality)**: मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किए गए विकल्पों या उत्तरों का असामान्य अथवा अन्य व्यक्तियों के उत्तरों से भिन्न होने से है। इसमें यह देखा जाता है कि व्यक्ति द्वारा दिए गए उत्तर प्रचलित उत्तरों से कितने भिन्न हैं। मौलिकता मुख्यतः नवीनता से सम्बंधित होती है।
4. **विस्तारण (Elaboration)**: विस्तारण से अभिप्राय दिए गए विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या, व्यापक पूर्ति या गहन प्रस्तुतीकरण से होता है।

8.6 सृजनात्मक प्रक्रिया

सृजनात्मकता का स्वरूप काफी जटिल है। चाहे व्यक्ति सामान्य चिन्तन द्वारा किसी समस्या का समाधान कर रहा हो या वह सृजनात्मक रूप से चिन्तन कर रहा हो उसमें निम्नलिखित चार अवस्थाएँ होती हैं-

1. आयोजन - इस अवस्था में समस्या से संबंधित आवश्यक तथ्यों एवं प्रमाणों को एकत्रित करने की तैयारी का आयोजन किया जाता है। समस्या समाधान से संबंधित उसके पक्ष एवं विपक्ष में प्रमाण एकत्रित किए जाते हैं। ऐसा करने में वह प्रयत्न एवं त्रुटि का सहारा भी लेता है। आइन्सटीन, राईट तथा न्यूटन जैसे महान वैज्ञानिकों ने भी अपने सामने आई समस्या के समाधान से संबंधित तथ्यों एवं प्रमाणों को एकत्रित करके उसका विस्तृत ज्ञान हासिल किया तथा उनके आधार पर सृजनात्मक चिन्तन किया। इस तरह से प्रत्येक रचनात्मक चिन्तन विभिन्न प्रकार के तथ्यों एवं प्रमाणों को एकत्रित करने का आयोजन करता है। समस्या के स्वरूप तथा व्यक्ति के ज्ञान के अनुसार यह अवस्था लम्बे या कम समय तक होती है। यदि समस्या जटिल तथा व्यक्ति का ज्ञान सीमित है तो अवस्था का समय लम्बा परन्तु यदि समस्या सरल तथा व्यक्ति का ज्ञान भण्डार परिपक्व है तो अवस्था कम समय तक रहती है। जिम्बार्डो तथा रुक (1977) के अनुसार इस अवस्था पर व्यक्ति की आयु तथा बुद्धि का भी प्रभाव पड़ता है।
2. उद्भवन- यह दूसरी अवस्था है इसमें व्यक्ति की निष्क्रियता बढ़ जाती है, थोड़े समय के लिए व्यक्ति समस्या के बारे में चिन्तन करना छोड़ देता है जब कई तरह से कोशिश करने के बाद भी किसी समस्या का समाधान नहीं हो पाता है तो इस अवस्था की उत्पत्ति होती है। इस अवस्था में व्यक्ति चिन्तन करना छोड़कर सो जाता है या विश्राम करने लगता है। यद्यपि इस अवस्था में व्यक्ति अपना ध्यान समस्या की ओर से पूर्णतः हटा लेता है, फिर भी अचेतन रूप से उसके बारे में चिन्तन करता रहता है। इस तरह से व्यक्ति चेतन रूप से तो समस्या से मुक्त रहता है परन्तु अचेतन रूप से उसके समाधान के बारे में चिन्तन जारी रखता है।

3. प्रबोधन - यह चिन्तन की अगली अवस्था है जिसमें व्यक्ति को अचानक समस्या का समाधान दिखाई पड़ जाता है सिल्वरमैन (1978) के अनुसार "समाधान के अकस्मात् अनुभव को प्रबोधन कहा जाता है" यह अवस्था प्रत्येक सृजनात्मक चिन्तन में पाई जाती है। उद्भव अवस्था में जब व्यक्ति अचेतन रूप से समस्या के भिन्न-भिन्न पहलुओं को पुनर्संगठित करते रहता है तो अचानक उसे समस्या का समाधान नजर आ जाता है। प्रबोधन की घटना सूझ के समान है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति में उद्भव की अवस्था के बाद प्रबोधन की अवस्था कभी भी उत्पन्न हो सकती है। यहाँ तक की कभी-कभी व्यक्ति को सपने में भी प्रबोधन का अनुभव होते पाया गया है।
4. प्रमाणीकरण या सम्बोधन - यह सृजनात्मक चिन्तन की चौथी अवस्था है। इस अवस्था में प्रबोधन की अवस्था से प्राप्त समाधान का मूल्यांकन किया जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति यह देखने का प्रयत्न करता है कि उसे जो समाधान प्राप्त हुआ है वह ठीक है अथवा नहीं। जाँच करने के बाद जब व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि समाधान सही नहीं था तो वह सम्पूर्ण कार्यविधि का संशोधन करता है और पुनः दूसरे समाधान की खोज करता है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सृजनात्मक चिन्तन की चार अवस्थाएँ हैं जो एक निश्चित क्रम में होती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इन अवस्थाओं की आलोचना की और कहा कि सभी सृजनात्मक चिन्तन में ये सभी अवस्थाएँ नहीं होती हैं।

उपर्युक्त अवस्थाएँ सुनिश्चित हैं व परिवर्तनशील नहीं हैं। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक सृजनशील चिंतक इन्हीं अवस्थाओं का अनुसरण करें। किसी चिंतक को उद्भव की अवस्था से पहले भी समस्या का समाधान प्राप्त हो सकता है। यह भी हो सकता है कि चिंतक को इन अवस्थाओं का अनुसरण करने पर भी समस्या का समाधान प्राप्त न हो और उसे इन्हीं अवस्थाओं की कई बार पुनरावृत्ति करनी पड़े। फिर भी ये सोपान महान सृजनशील चिंतकों द्वारा अभिव्यक्त उच्चतम सृजनात्मक प्रक्रिया के वैज्ञानिक स्वरूप का विधिवत प्रतिनिधित्व करते हैं।

8.7 सृजनात्मक बालक की विशेषताएँ

सृजनात्मक बालक के व्यवहार में प्रायः निम्न गुणों एवं विशेषताओं की झलक मिलती है-

1. विचार और कार्य में मौलिकता का प्रदर्शन।
2. व्यवहार में आवश्यक लचीलेपन का परिचय।
3. विस्तारीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है अर्थात् वह अपने विचारों, कार्यों एवं योजनाओं के अत्यंत सूक्ष्म पहलुओं पर ध्यान देता हुआ हर बात को अधिक विस्तार से कहना और करना चाहता है।
4. वह समायोजन में सक्षम होता है एवं व उसकी साहसिक कार्यों में प्रवृत्ति होती है।

5. वह एकरसता और उबाऊपन की अपेक्षा कठिन और टेढ़े-मेढ़े जीवन पथ से आगे बढ़ना पसन्द करता है।
6. जटिलता, अपूर्णता असमरूपता के प्रति उसका लगाव होता है और वह खुले दिमाग से सोचने में विश्वास रखता है।
7. उसकी स्मरण शक्ति अच्छी होती है और उसके ज्ञान का दायरा भी विस्तृत होता है।
8. उसमें चुस्ती सजगता, ध्यान एवं एकाग्रता की प्रचुरता होती है।
9. उसमें स्वयं निर्णय लेने की पर्याप्त योग्यता होती है।
10. वह अस्पष्ट गूढ़ एवं अव्यक्त विचारों में रुचि रखता है।
11. समस्याओं के प्रति उसमें उच्च स्तर की संवेदना पाई जाती है।
12. उसकी विचार अभिव्यक्ति में अत्यधिक प्रवाहात्मकता पाई जाती है।
13. उसमें अपने सीखने या प्रशिक्षण को एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में स्थानान्तरण करने की योग्यता पाई जाती है।
14. उसके सोचने-विचारने के ढंग में केन्द्रीयकरण एवं रूढिवादिता के स्थान पर विविधता एवं प्रगतिशीलता पाई जाती है।
15. उसमें उच्च स्तर की सौन्दर्यात्मक अनुभूति, ग्राहता एवं परख क्षमता पाई जाती है।
16. समस्या के किसी नवीन हल एवं समाधान तथा योजना के किसी नवीन प्रारूप का उसकी ओर से सदैव स्वागत ही किया जाता है और इस दिशा में वह स्वयं भी अथक प्रयास करता रहता है।
17. अन्य सामान्य बालकों की अपेक्षा उसमें आत्म-सम्मान के भाव और अहं के तुष्टिकरण की आवश्यकता कुछ अधिक ही पाई जाती है। वह आत्म-अनुशासित होता है। वह अपने व्यवहार और सृजनात्मक उत्पादन में विनोदप्रियता, आनंद, उल्लास, स्वच्छंद एवं स्वतंत्र अभिव्यक्ति तथा बौद्धिक स्थिरता का प्रदर्शन करता है।
18. उसमें उच्च स्तर की विशेष कल्पनाशक्ति जिसे सृजनात्मक कल्पना का नाम दिया जाता है पाई जाती है।
19. विपरीत एवं विरोधी व्यक्तियों तथा परिस्थितियों को सहन करने तथा उनसे सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता भी उसमें पाई जाती है।
20. उसकी कल्पना एवं दिव्य स्वप्नों का संसार भी काफी अदभुत एवं महान होता है।

8.8 बालकों में सृजनात्मकता विकसित करना

सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है। हममें से प्रत्येक अपनी बाल्यावस्था में कुछ न कुछ मात्रा में सृजनात्मकता के लक्षणोंका प्रदर्शन करता है परन्तु आगे चलकर इनको भलि-भाँति पोषित और पल्लवित नहीं कर पाता। इस कमी को एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था और पालन-पोषण के उचित तरीकों द्वारा दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। एक अध्यापक को सृजनात्मक बालकोंकी पहचान से

संबंधित सभी बातों का पर्याप्त ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक होता है। ताकि व समय से ही सृजनशील बालकों को पहचान कर उनकी सृजनात्मकता के विकास में भरपूर सहायेग प्रदान कर सके। प्रवाह, मौलिकता, लचीलापन, विविध-चिंतन, आत्म-विश्वास, संवेदनशीलता सम्बन्धों को देखने तथा बनाने की योग्यता-आदि कुछ ऐसी योग्यताएँ हैं जिनका विकास सृजनात्मकता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। इन योग्यताओं को विकसित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव सहायक सिद्ध हो सकते हैं-

1. **उत्तर देने की स्वतन्त्रता-** अक्सर देखा जाता है कि अध्यापक और माता-पिता अपने बच्चों से पुराने या प्रचलित उत्तर की आशा रखते हैं। इससे बच्चों में सृजनात्मकता विकसित नहीं होती है, अतः हमें बच्चों को उत्तर देने के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए।
2. **अभिव्यक्ति के लिए अवसर-** अभिव्यक्ति की भावना बच्चों को अत्यधिक संतुष्टि प्रदान करती है। वस्तुतः वे तभी सृजनात्मक कार्यों में निश्चित रूप से जुटते हैं जब उनमें उनका अहं निहित हो अर्थात् जब वे अनुभव करें कि उनके प्रयासों से ही अमुक सृजनात्मक कार्य सभव हो सका है। अतः हमें बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जिनसे उन्हें अनुभव हो कि सृजन उनके द्वारा ही सम्पन्न हुआ है।
3. **मौलिकता तथा लचीलेपन को प्रोत्साहित करना-** बच्चों में किसी भी रूप में विद्यमान मौलिकता को प्रोत्साहित करना चाहिए। किसी समस्या का समाधान करने समय या किसी काम को सीखते समय यदि वे अपनी विधियों को परिवर्तित करना चाहते हैं तो उनको प्रोत्साहन मिलना चाहिए। उन्हें प्रचलित तरीकों से हटकर काम करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।
4. **उचित अवसर एवं वातावरण प्रदान करना-** बच्चों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए स्वस्थ एवं उचित वातावरण की व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है। बच्चे की जिज्ञासा तथा सहनशीलता को किसी भी रूप में दबाना नहीं चाहिए। सृजनशील अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने के लिए हम पाठ्य-सहगामी क्रियाओं, सामाजिक उत्सवों धार्मिक मेलों, प्रदर्शनों आदि का प्रयोग कर सकते हैं। नियमित कक्षा-कार्य को भी इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है। जिससे बच्चों में सृजनात्मक चिंतन का विकास हो।
5. **समुदाय के सृजनात्मक साधनों का प्रयोग करना-** बच्चों को सृजनात्मक-कला केन्द्रों तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक निर्माण-केन्द्रों की यात्रा करनी चाहिए। इससे उन्हें सृजनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। कभी-कभी कलाकारों वैज्ञानिकों तथा अन्य सृजनशील व्यक्तियों को भी स्कूल में आमंत्रित करना चाहिए। इस प्रकार बच्चों के ज्ञान-विस्तार में सहायता मिल सकती है और उनमें सृजनशीलता को बढ़ावा दिया जा सकता है।
6. **सृजनात्मक चिंतन के अवरोधों से बचना-** परम्परावादिता शिक्षण की त्रुटिपूर्ण विधियाँ, असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, परंपरागत कार्य, आदतें पुराने विचारों आदर्शों और दुराग्रह और नवीन के प्रति भय, छोटे-छोटे प्रत्येक कार्य में उपलब्धि की उच्च स्तर की मांग, परीक्षा में अधिक अंक अर्जित करने का दबाव, बालकों, को लीक से हटकर सोचने या कार्य करने को

निरूत्साहित करना आदि ऐसे अनेक कारण और परिस्थितियाँ हैं जिनसे बालकों में सृजनात्मकता के विकास और पोषण में बाधा पहुँचती है। अतः अध्यापक और अभिभावकों का यह कर्तव्य है कि वे इन सभी कारणों और परिस्थितियों से बालकों की सृजनात्मकता को नष्ट होने से बचाने के लिए हर संभव प्रयत्न करें।

7. **मूल्यांकन प्रणाली में सुधार-** जो कुछ भी विद्यालय में पढ़ा और पढ़ाया जाता है वह सब प्रकार से परीक्षा केंद्रित होता है। अतः जब तक परीक्षा और मूल्यांकन के ढाँचे में अनुकूल परिवर्तन नहीं आता तब तक किसी भी शिक्षा व्यवस्था के द्वारा सृजनात्मकता का पोषण नहीं किया जा सकता। परीक्षा प्रणाली में उन सभी बातों का समावेश करना चाहिए जिनके द्वारा विद्यार्थियों को ऐसे अधिगम अनुभव अर्जित करने के लिए प्रोत्साहन मिले जो सृजनात्मकता का पोषण और विकास करते हों।
8. पाठ्यक्रम अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः विद्यालय पाठ्यक्रम को इस प्रकार आयोजित किया जाना चाहिए कि वह बालकों में अधिक से अधिक सृजनात्मकता विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सके। पाठ्यक्रम काफी लचीला होना चाहिए और उसमें परीक्षा और मूल्यांकन की आवश्यकता से परे हटकर कुछ और पढ़ने-पढ़ाने एवं करने की पर्याप्त स्वतंत्रता होनी चाहिए। संक्षेप में पाठ्यक्रम का आयोजन सब प्रकार से इस तरह किया जाना चाहिए कि उसके द्वारा सृजनशीलता में सहायक विभिन्न गुणों का विकास में भरपूर सहयोग मिल सके।
9. श्रमशीलता आत्म-निर्भरता आत्म-विश्वास-आदि कुछ ऐसे गुण हैं जो सृजनात्मकता में सहायक होते हैं। बच्चों में इन गुणों का निर्माण करना चाहिए।
10. सृजनात्मकता के विकास के लिए विशेष तकनीकों का प्रयोग- सृजनात्मकता के क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुसंधानकर्ताओं ने बालकों में सृजनात्मकता के विकास के लिए जिन विशेष तकनीक एवं विधियों का उपयोग उचित ठहराया है। इनमें से कुछ का उल्लेख हम नीचे कर रहे हैं।
 - i. **मस्तिष्क उद्वेलन Brain Storming-** मस्तिष्क उद्वेलन एक ऐसी तकनीक एवं विद्या है जिसके द्वारा किसी समूह विशेष से बिना किसी रोक-टोक आलोचना मूल्यांकन या निर्णय की परवाह किए बिना किसी समस्या विशेष के हल के लिए विभिन्न प्रकार के विचारों एवं समाधानों को जल्दी-जल्दी प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है और फिर विचार-विमर्श के बाद उचित हल एवं समाधान खोजने का प्रयत्न किया जाता है।
 - ii. **शिक्षण प्रतिमानों का प्रयोग Use of Teaching Models-** शिक्षा शास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित कुछ विशेष शिक्षण प्रतिमानों का प्रयोग भी बालकों की सृजनशीलता के विकास में पर्याप्त योगदान दे सकता है। उदाहरण के लिए ब्रूनर का संप्रत्यय उपलब्धि-प्रतिमान संप्रत्ययों को ग्रहण करने के अलावा बालकों को सृजनशील बनाने में भी सहयोग देता है। और इसी तरह सचमैन का पूछताछ प्रशिक्षण प्रतिमान वैज्ञानिक ढंग से

पूछताछ करने के कौशल को विकसित करने के अतिरिक्त सृजन में सहायक विशेष गुणों को विकसित करने में पर्याप्त सहायता करता है।

- iii. **क्रीड़ा तकनीकों का प्रयोग Use of Gaming Technique-** खेल-खेल में ही सृजनात्मकता का विकास करने की दृष्टि से क्रीड़ा तकनीकों का अपना एक विशेष स्थान है। इस कार्य हेतु इन तकनीकों में जो प्रयोग सामग्री काम में लाई जाती है वह शाब्दिक और अशाब्दिक दोनों ही रूपों में होती है। प्रकार की क्रीड़ा-सामग्री द्वारा बालकों को खेल-खेल में ही निर्माण एवं सृजन के लिए जो बहुमूल्य अवसर प्राप्त होते हैं उन सभी का उनकी सृजनशीलता के विकास एवं पोषण हेतु पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सकता है।

8.9 सृजनात्मकता परीक्षण

बुद्धिमापन के लिए जिस प्रकार हम बुद्धि-परीक्षणों का प्रयोग करते हैं वैसे ही सृजनात्मकता की परखके लिए हम सृजनात्मक परीक्षणों का प्रयोग कर सकते हैं। इस कार्य के लिए विदेशों में तथा अपने देश में विभिन्न मानकीकृत उपयोगी परीक्षण मौजूद हैं। इनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

1. मानकीकृत विदेशी परीक्षण
 - i. मिनीसोटा सृजनात्मक चिंतन परीक्षण
 - ii. गिलफोर्ड का बहु-विध चिंतन उपकरण
 - iii. रिमोट एसोशियेशन परीक्षण
 - iv. बालक एवं कॉरगन का सृजनात्मकता उपकरण
 - v. सृजनात्मक योग्यता का ए0सी0परीक्षण
 - vi. टौरैन्स का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण

2. भारत में मानकीकृत परीक्षण

- i. बाकरमेहंदी सृजनात्मक चिंतन परीक्षण-हिन्दी एवं अंग्रेजी
- ii. पासी सृजनात्मक परीक्षण
- iii. शर्मा बहु-विध उत्पादन योग्यता परीक्षण
- iv. सक्सेना सृजनात्मक परीक्षण

जैसा कि पहले बताया जा चुका है सृजनात्मकता बहुत सारी योग्यताओं और व्यक्तित्व आदि गुणों का एक जटिल सम्मिश्रण है। उपरोक्त वर्णित परीक्षणों के माध्यम से सृजनात्मकता के लिए आवश्यक विशेषगुणों तथा विशेषताओं की उपस्थितिका अनुमान लगाने का प्रयत्न इन परीक्षणों में शामिल शाब्दिक तथा अशाब्दिक प्रश्नों तथा कार्यात्मक व्यवहार से किया जाता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

5. सृजनात्मकता के चार प्रमुख तत्वों के नाम लिखिए।
6. सृजनात्मकता की चार अवस्थाओं के नाम लिखिए।
7. सृजनात्मक बालक की किन्हीं दो विशेषताओं को लिखिए।
8. सृजनात्मकता के विकास के लिए विशेष तकनीक एवं विधियों के नाम लिखिए।
9. किन्हीं दो मानकीकृत विदेशी सृजनात्मकता परीक्षणों के नाम लिखिए।
10. भारत में मानकीकृत किन्हीं दो सृजनात्मकता परीक्षणों के नाम लिखिए।

8.10 सारांश

सृजनात्मकता से अभिप्राय व्यक्ति विशेष की उस विलक्षण संज्ञानात्मक क्षमता या योग्यता से होता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन विचार या वस्तु का सृजन करने उसकी खोज या उत्पादन करने में कामयाब रहता है। सृजनात्मक सार्वभौमिक होती है तथा प्रकृति प्रदत्त होने के साथ-साथ प्रशिक्षण द्वारा भी इसे विकसित किया जा सकता है।

इसकी अभिव्यक्ति का क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक होता है। इसके प्रमुख अवयवों तथा तत्वों के रूप में हम प्रवाहात्मक विचारधारा मौलिकता, लचीलापन, विविधतापूर्ण चिंतन, आत्मविश्वास, संवेदनशीलता संबंधों को देखने तथा बनाने की योग्यता आदि की चर्चा कर सकते हैं।

सृजनात्मक प्रक्रिया में कुछ विशिष्ट एवं निश्चित सोपानों का समावेश रहता है। इन सोपानों का इसी क्रम में उपस्थित रहना आवश्यक नहीं है परन्तु फिर भी इनके द्वारा सृजनशील चिंतकों द्वारा अभिव्यक्त उच्चतम सृजनात्मक प्रक्रिया के स्वरूप का विधिवत प्रतिनिधित्व हो सकता है।

सृजनात्मक बालकों की पहचान हेतु दो प्रकार के साधनों जैसे-सृजनात्मक परीक्षण तथा सृजनात्मक व्यवहार को जाँचने वाली अन्य तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। सृजनात्मक परीक्षणों से सृजनात्मकता का निदान उसी रूप में संभव है। जैसे कि बुद्धि-परीक्षणों द्वारा बुद्धि की जाँच के लिए किया जाता है। ऐसे परीक्षणों के उदाहरण रूप में हम टौरैन्स के सृजनात्मक चिंतन परीक्षण बकर मेहन्दी सृजनात्मक चिंतन परीक्षण पासी सृजनात्मक परीक्षण आदि का नाम ले सकते हैं।

विशेष प्रयत्नों तथा उचित शिक्षा-दीक्षा से बालकों में अन्तःनिहित सृजनात्मकता को विकसित किया जा सकता है। ऐसे कुछ उपायों में हम जिनका प्रमुख रूप से उल्लेख कर सकते हैं। वे हैं - बालकों को उत्तर देने की स्वतंत्रता प्रदान करना, उन्हें अपने अहं तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना उनकी मौलिकता तथा लचीलेपन को प्रोत्साहित करना सृजनात्मक चिंतन के अवरोधों से बचना पाठ्यक्रम के उचित आयोजन शिक्षण विधियों तथा मूल्यांकन प्रणाली में सुधार पर ध्यान देना, समुदाय के सृजनात्मक साधनों का प्रयोग करना तथा अपना उदाहरण एवं आदर्श प्रस्तुत करना तथा सृजनात्मकता के विकास से सम्बन्धित नवीनतम तकनीकों जैसे मस्तिष्क उद्वेलन आदि की सहायता लेना।

8.11 शब्दावली

1. **अभिसारी चिन्तन** -दिए गए तथ्यों के आधार पर किसी पूर्व निश्चित क्रम में चिन्तन करना।
2. **अपसरण चिन्तन** - भिन्न-भिन्न दशाओं में चिन्तन करना
3. **प्रवाह**-प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गई समस्या पर अधिकाधिक विचारों या प्रत्युत्तरों की प्रस्तुति से है।
4. **लचीलापन**- लचीलेपन से अभिप्राय किसी समस्या पर दिए गए प्रत्युत्तरों या विकल्पों में एक-दूसरे से भिन्नता से है।
5. **मौलिकता**- मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किए गए विकल्पों या उत्तरों का असामान्य अथवा अन्य व्यक्तियों के उत्तरों से भिन्न होने से है। मौलिकता मुख्यतः नवीनता से सम्बंधित होती है।
6. **विस्तारण**- विस्तारण का अभिप्राय दिए गए विचारों या भावों की विस्तृत व्याख्या, व्यापक पूर्ति या गहन प्रस्तुतीकरण है

8.12 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. ड्रैवडाहल के अनुसार, “सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह उन वस्तुओं या विचारों का उत्पादन करता है जो अनिवार्य रूप से नए हो और जिन्हें वह व्यक्ति पहले से न जानता हो”
2. सार्वभौमिक
3. गिलफोर्ड ने सृजनात्मकचिन्तन को निम्न दो भागों में बांटा है-
 - i. अभिसारी चिन्तन
 - ii. अपसरण चिन्तन
4. अपसरण चिन्तन
5. सृजनात्मकता के चार प्रमुख तत्वों के नाम हैं - प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता, विस्तारण।
6. सृजनात्मकता की चार अवस्थाओं के नाम हैं- आयोजन, उद्भवन, प्रबोधन, प्रमाणीकरण या सम्बोधन
7. सृजनात्मक बालक दो विशेषताएँ निम्न हैं-
 - i. विचार और कार्य में मौलिकता का प्रदर्शन।
 - ii. व्यवहार में आवश्यक लचीलेपन का परिचय।
8. सृजनात्मकता के विकास के लिए विशेष तकनीक एवं विधियों के नाम हैं-
 - i. मस्तिष्क उद्वेलन
 - ii. शिक्षण प्रतिमानों का प्रयोग
 - iii. क्रीड़ा तकनीकों का प्रयोग
9. दो मानकीकृत विदेशी सृजनात्मकता परीक्षणों के नाम हैं-

-
- i. मिनीसोटा सृजनात्मक चिंतन परीक्षण
 - ii. गिलफोर्ड का बहु-विध चिंतन उपकरण
10. भारत में मानकीकृत दो सृजनात्मकता परीक्षणों के नाम हैं-
- i. बकर मेहदी सृजनात्मक चिंतन परीक्षण-हिन्दी एवं अंग्रेजी
 - ii. पासी सृजनात्मक परीक्षण
-

8.13 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मंगल, एस0 के0 (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली, प्रेंटिस हल ऑफ इंडिया।
 2. सिंह, ए0के0 (2007): उच्चतर मनोविज्ञान, वाराणसी, मोतीलाल बनारसी दास।
 3. पाण्डा, अनिल कुमार (2011), शिक्षा मनोविज्ञान, साहित्य रत्नालय, कानपुर
 4. सिंह, ए0के0 (2007): शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन पब्लिसर्शी।
 5. अग्रवाल, सन्ध्या(2005), विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी
-

8.14 निबंधात्मक प्रश्न

1. सृजनात्मकता क्या है? सृजनात्मकता की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
2. सृजनात्मकता को परिभाषित कीजिए। सृजनात्मकता विकसित करने के लिए विद्यालयों में क्या प्रावधान किए जाने चाहिए?
3. सृजनात्मकता की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए। सृजनात्मकता के तत्वों का वर्णन कीजिए।
4. सृजनात्मकता के विकास के लिए विशेष तकनीकी एवं विधियों का वर्णन कीजिए।

इकाई 9- अभिप्रेरणा: परिभाषाएँ, सिद्धान्त तथा अधिगम पर प्रभाव, अधिगमकर्ता को अभिप्रेरित करने में शिक्षक की भूमिका
Motivation -Definitions and Theories, Impact on Learning. Role of Teacher in Motivating the Learners

- 9.1 प्रस्तावना
- 9.2 उद्देश्य
- 9.3 परिभाषाएँ
- 9.4 अभिप्रेरकों का वर्गीकरण
- 9.5 अभिप्रेरणा के घटक
- 9.6 अभिप्रेरण करने वाले कारक
- 9.7 अभिप्रेरणा के सिद्धान्त
- 9.8 अभिप्रेरणा का अधिगम पर प्रभाव
- 9.9 अधिगमकर्ता को अभिप्रेरित करने में शिक्षक की भूमिका
- 9.10 सारांश
- 9.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर
- 9.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 9.13 निबन्धात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

अभिप्रेरणा शिक्षा मनोविज्ञान का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्प्रत्यय है, जो प्राणी के व्यवहार को नियंत्रण करता है तथा उसे उचित दिशा में अग्रसारित करता है। अभिप्रेरणा कुशल अधिगम की आधारशिला है। अभिप्रेरणा के अभाव में हम उत्तम अधिगम की कल्पना नहीं कर सकते।

स्किनर के अनुसार, “ अभिप्रेरणा सीखने के लिए राजमार्ग है।”

“Motivation is the super highway to learning” Skinner

‘मोटीवेशन’ (Motivation) अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जिसकी व्युत्पत्ति लैटिन भाषा की motum धातु से हुई है। motum का अर्थ है- move, motor तथा motion.

अभिप्रेरणा के शाब्दिक अर्थ में हमें किसी अनुक्रिया को करने का बोध होता है। प्राणी की प्रत्येक अनुक्रिया में कोई न कोई उद्दीपन किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान होता है। उद्दीपन के अभाव में

किसी भी अनुक्रिया का होना असम्भव होता है। उद्दीपन दो प्रकार का होता है- आन्तरिक तथा बाह्य। अतः अभिप्रेरणा के शाब्दिक अर्थ में किसी भी बाह्य उद्दीपन को अभिप्रेरणा कहा जा सकता है। अभिप्रेरणा के मनोवैज्ञानिक अर्थ में केवल आन्तरिक उद्दीपनों को ही सम्मिलित किया जाता है, बाह्य उद्दीपनों को कोई महत्व नहीं दिया जाता। अतः मनोवैज्ञानिक अर्थ में अभिप्रेरणा एक आन्तरिक शक्ति है, जो प्राणी को अनुक्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

क्रेच एवं क्रेचफील्ड के अनुसार अभिप्रेरणा का प्रश्न स्वयं में एक प्रश्नकारक प्रश्न है।”

The question of motivation is the question of why- Krech and Crutchfield

हम शिक्षा क्यों प्राप्त करते हैं,? हम खाना क्यों खाते हैं? हम धन क्यों कमाते हैं? हम प्रेम क्यों करते हैं? इस प्रकार के सभी प्रश्नों का सम्बन्ध अभिप्रेरणा से है।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप:-

1. अभिप्रेरणा की परिभाषाओं से परिचित हो सकेंगे।
2. अभिप्रेरकों का वर्गीकरण कर सकेंगे।
3. अभिप्रेरणा के घटकों को स्पष्ट कर सकेंगे।
4. अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों की व्याख्या सकेंगे।
5. अभिप्रेरणा का अधिगम पर प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे।

9.3 अभिप्रेरणा की परिभाषाएँ (Definitions of Motivation)

अभिप्रेरणा की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं।

1. वुडवर्थ के अनुसार, “ अभिप्रेरण व्यक्ति की वह दशा है, जो किसी निश्चित, उद्देश्य की पूर्ति के लिए निश्चित व्यवहार को स्पष्ट करती है।”

“Motive is a state of individual which disposes him for certain behaviour and for seeking goals.” –Woodworth

2. गिलफोर्ड के अनुसार “अभिप्रेरणा कोई विशेष आन्तरिक कारक अथवा दशा है, जिसमें क्रिया को आरम्भ करने एवं बनाए रखने की प्रवृत्ति होती है।”

“Motive is any particular internal factor or condition that tends to initiate and to sustain activity.” –Guilford)

3. ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन के अनुसार, “ अभिप्रेरणा एक प्रक्रिया है, जिसमें सीखने वाले की आन्तरिक शक्तियां या आवश्यकताएँ उसके वातावरण में विविध लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती हैं।”

“Motivation is a process in which the learners’ internal energies or needs are directed towards various goal objects in his environment.” - Blair, Jones and Simpson

4. गुड के अनुसार, “अभिप्रेरणा क्रिया को प्रारम्भ करने, जारी रखने तथा नियंत्रित रखने की प्रक्रिया है।”

Motivation is the process of arousing, sustaining and regulating activity.” – Good

5. शफर तथा अन्य के अनुसार “अभिप्रेरणा क्रिया की एक ऐसी प्रवृत्ति है जो प्राणों दय द्वारा उत्पन्न होती है तथा समायोजन पर पूर्ण होती है।

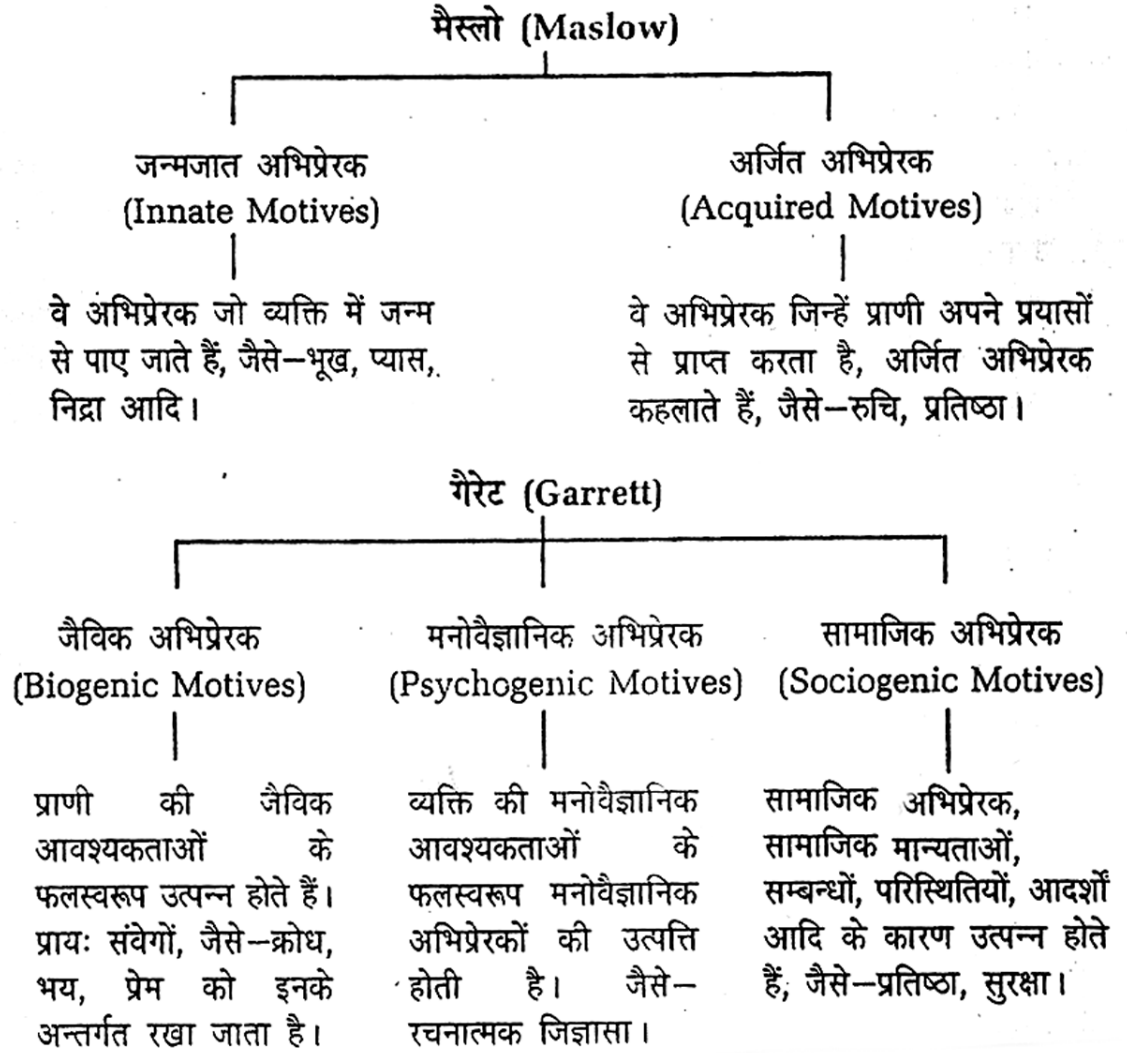
Motive may be defined as a tendency to activity initiated by drive and concluded by adjustment.”Shaffer and Others

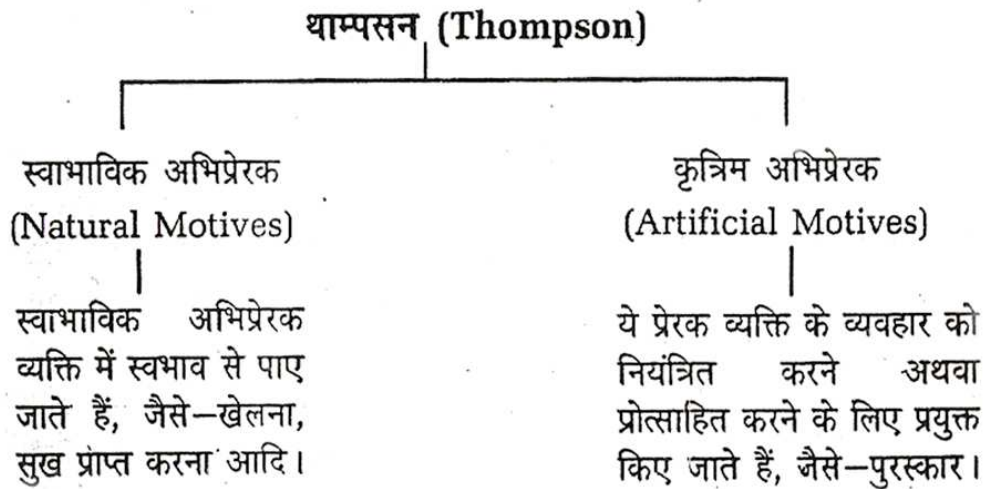
अभिप्रेरणा की उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ प्रकट होती हैं-

1. अभिप्रेरणा उद्देश्य प्राप्ति का साधन है, जो कि उद्देश्य प्राप्त करने के लिए मार्ग प्रशस्त करती है।
2. अभिप्रेरणा उद्देश्य प्राप्ति तक प्राणी को क्रियाशील बनाए रखती है।
3. अभिप्रेरणा व्यक्ति को निश्चित व्यवहार करने के लिए निर्देशित करती है।
4. अभिप्रेरणा के दो मुख्य स्रोत हैं-आन्तरिक एवं बाह्य।
5. अभिप्रेरणा व्यक्तित्व की शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशाओं के द्वारा प्रभावित होती है।
6. अभिप्रेरित व्यवहार की मुख्य तीन विशेषताएँ होती हैं -
 - i. व्यवहार की जागरूकता (Arousalness)
 - ii. अभिप्रेरित व्यक्ति का दिशा निर्देशित (Directed) होना
 - iii. अनुभव करना (Feeling)

9.4 अभिप्रेरकों का वर्गीकरण Classification of Motives

अभिप्रेरकों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जाता है। वर्गीकरण में भिन्नता मनोवैज्ञानिकों के अभिप्रेरकों के सापेक्ष दृष्टिकोणों में भिन्नता के कारण है।





9.5 अभिप्रेरणा के घटक Components of Motivation

अभिप्रेरणा के प्रत्यय की व्याख्या कई घटकों, जैसे-आवश्यकता (Need), अन्तर्नोद या चालक (Drive) प्रोत्साहन या प्रलोभन (Incentives) तथा अभिप्रेरक (Motive) की चर्चा से स्पष्ट होती है।

1. **आवश्यकताएँ (Needs)**-आवश्यकता व्यक्ति में दैहिक असन्तुलन अथवा कमी की ओर संकेत करती है। प्रत्येक प्राणी की कुछ मूलभूत जैविकीय (Biological) जैसे-भोजन, हवा, जल तथा मनोसामाजिक (Psycho-social), जैसे-सुरक्षा, स्नेह, सम्मान आदि आवश्यकताएँ होती हैं, जिनकी पूर्ति के अभाव में ये आवश्यकताएँ व्यक्ति में तनाव उत्पन्न करती है।
2. **अन्तर्नोद (Drive)**- इसे चालक भी कहते हैं। प्राणी की आवश्यकताएँ चालक को जन्म देती हैं जिससे व्यक्ति आवश्यकता को पूर्ण करने या दूर करने के लिए व्यवहार अथवा क्रिया करने के लिए क्रियाशील होता है। आवश्यकता मूलतः शारीरिक होती हैं, जबकि चालक व्यवहार से सम्बन्धित होता है, जैसे-भोजन की आवश्यकता भूख अन्तर्नोद को जन्म देती है।

बोरिंग के अनुसार, “चालक आन्तरिक शारीरिक क्रिया या दिशा है, जो उद्दीपन के द्वारा विशेष प्रकार का व्यवहार उत्पन्न करती है।” “drive is an intra – organic activity or condition of tissue supplying stimulation for particular type of behaviour.”
-Boring

3. **प्रोत्साहन (Incentives)**- जिस वस्तु से आवश्यकता तथा अन्तर्नोद की समाप्ति होती है, उसे प्रोत्साहन कहते हैं। प्रोत्साहन का सम्बन्ध निश्चित वस्तुओं से है, जिसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रयत्न करता है। जैसे भूख अन्तर्नोद के लिए भोजन एक प्रोत्साहन है।
4. **अभिप्रेरक (Motives)**-मैकडूगल के अनुसार, “अभिप्रेरक व्यक्ति के अन्दर वे दैहिक तथा मनोवैज्ञानिक दशाएँ हैं, जो उसे एक निश्चित ढंग से कार्य करने के लिए प्रवृत्त करती हैं। “Motives are conditions, physiological and psychological within the organism that dispose it to act in certain ways”. -Mc Dugall

सामान्य अर्थों में हम कह सकते हैं कि अभिप्रेरक कार्य करने की वे प्रवृत्तियाँ हैं, जो किसी आवश्यकता अथवा अन्तर्नोद से प्रारम्भ होती हैं तथा समायोजन पर पूर्ण हो जाती हैं।

9.6 अभिप्रेरणा देने वाले घटक (Factors Accounting for Motivation)

जॉन पी. डिसेको ने अभिप्रेरणा देने वाले चार घटकों (Factor) का विवेचन किया है-

1. उत्तेजना (Arousal)
2. आकांक्षा (Expectancy)
3. प्रोत्साहन (Incentive)
4. दण्ड (Punishment)

इन चारों घटकों में आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यह शिक्षक में अभिप्रेरणा देने की क्रियाएँ मानी जाती हैं-

1. उत्तेजना का कार्य (Arousal Function)
2. आकांक्षा का कार्य (expectancy Function)
3. प्रणों दन का कार्य (Incentive Function)
4. दण्ड अथवा अनुशासन का कार्य (Punishment or Disciplinary Function)

1. उत्तेजना (Arousal)- उत्तेजना शक्ति प्रदान करती है, परन्तु निर्देशन नहीं करती। जैसे किसी मशीन को चालू कर दिया जाए, परन्तु उसका मार्ग (Steering) निश्चित नहीं किया जाए। उत्तेजना व्यक्ति की सक्रियता के लिए आवश्यक घटक माना जाता है। उत्तेजना के तीन स्तर होते हैं-

- i. उच्च स्तर,
- ii. मध्य स्तर
- iii. निम्न स्तर

व्यक्ति को उत्तेजना दो स्रोतों से मिलती है-

- i. आन्तरिक उत्तेजना स्रोत,
- ii. बाह्य उत्तेजना स्रोत

1. आन्तरिक उत्तेजना स्रोत - सामान्य रूप से शारीरिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए व्यक्ति सक्रिय होता है। आन्तरिक योजना स्रोत शारीरिक निम्न स्तर की आवश्यकताओं से लेकर मानसिक उच्च की आवश्यकताओं तक होता है।
 2. बाह्य उत्तेजना स्रोत - साधारणतः वातावरण से व्यक्ति को उत्तेजना मिलती है। वातावरण के तत्व उद्दीपन का कार्य करते हैं। वातावरण की नवीनता भी बालकों को प्रेरित करती है। नीरसता को दूर करने के लिए परिवर्तन तथा वातावरण की नवीनता आवश्यक होती है। उत्सुकता तथा उत्तेजना दोनों ही भावना के स्तर को उठाने में सहायक होते हैं। उत्तेजना में भावुकता की मात्रा अधिक होती है। उत्तेजना का छात्र की निष्पत्तियों से धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।
- 2. आकांक्षा (Expectancy)-** किसी कार्य के लिए हम कितनी अपेक्षा करते हैं और कितना वास्तव में कर पाते हैं, यह अन्तर हमें उत्तेजित करता है। यह उत्तेजना प्रदान करने का एक स्रोत भी माना जाता है।

अनुदेशक के उद्देश्य भी आकांक्षा का कार्य करते हैं। इनसे शिक्षक का विशेष सम्बन्ध रहता है, परन्तु शिक्षक को छात्रों की आकांक्षाओं तथा मूल्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

छात्र जिस शक्ति से अनुदेशन उद्देश्यों को पाने का प्रयास करता है, वही उसकी आकांक्षा तथा शक्ति सन्तुलन का परिणाम होता है। इस प्रकार छात्र जिस प्रेरक को पाना चाहता है। उससे उसकी आकांक्षा तथा शक्ति सन्तुलन का पता चलता है।

आकांक्षा तथा प्रत्यक्षीकरण में अन्तर उत्तेजन स्रोत का कार्य करता है। अन्तर के आकार को छात्र की भावना निर्धारित करती है। अधिक अन्तर होने पर असन्तुष्टि की भावना विकसित होती है और कम अन्तर होने पर प्रसन्नता का अनुभव करता है। निष्पत्ति अभिप्रेरणा इसी का परिणाम होता है।

3. **प्रोत्साहन (Incentive)-** प्रोत्साहन वास्तव में मानव-जीवन का लक्ष्य होता है। हल तथा स्पेन्स का मत है कि प्राणी की क्रियाओं को लक्ष्य अथवा प्रोत्साहन द्वारा प्रेरित किया जा सकता है। जीव जो भी क्रियाएँ करता है, उनसे कुछ न कुछ पाना चाहता है। जितना प्रोत्साहन का आकार बड़ा होता है, उतनी ही अधिक प्रेरणा मिलती है। व्यक्ति के कार्य करने की शक्ति प्रोत्साहन की प्रकृति से प्रभावित होती है। बी.एफ. स्किनर पुनर्बलन को भी प्रोत्साहन मानते हैं।
4. **दण्ड तथा अनुशासन (Punishment and Discipline)-** सोलोमन के अनुसार, “दण्ड एक उद्दीपन के समान है, जिससे व्यक्ति बचने का प्रयास करता है” “Punishment is as a stimulus, the individual seeks to avoid or escape.” (Slomon 1964)

दण्ड व्यवहार को रोकने के लिए उतना ही दिया जाना चाहिए, जितने से अपना उद्देश्य प्राप्त किया जा सके। दण्ड के दो रूप होते हैं-

क. उस व्यक्ति को दिया जाए, जिसने गलत व्यवहार किया है, जिससे वह भविष्य में उस व्यवहार की पुनरावृत्ति न करे।

ख. अन्य व्यक्ति के समक्ष इसलिए दिया जाता है, जिससे वह व्यक्ति भी ऐसा व्यवहार न करे।

परन्तु सोलोमन के ये विचार बाल मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के विपरीत हैं। दण्ड का स्वरूप अधिकांश रूप में विकृत होता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. स्किनर के अनुसार, अभिप्रेरणा सीखने के लिए _____ है।
2. अभिप्रेरित व्यवहार की दो विशेषताएँ लिखिए।
3. अभिप्रेरणा के कोई दो घटकों के नाम लिखिए।
4. आवश्यकता व्यक्ति में _____ की ओर संकेत करती है।
5. _____ ने दण्ड को स्वस्थ संवेग नहीं माना है, क्योंकि इसका आधार भय होता है।

9.7 अभिप्रेरणा के सिद्धान्त (Theories of Motivation)

‘मानव व्यवहार को कौन दिशा प्रदान करता है। मानव क्यों किसी विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करता है? मानव व्यवहार किन कारकों से प्रभावित होता है? मानव अभिप्रेरणा में कौन से तत्व निहित होते हैं?’

उपर्युक्त सभी ऐसे प्रश्न हैं जिनका स्पष्ट उत्तर ढूँढ़ने के प्रयास हमेशा से किए जाते रहे हैं। परन्तु इन पर एकमत होने या समान व्याख्या प्रस्तुत करने में अभी तक असफलता ही हाथ लगी है। “जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत तिन देखी वैसी।” जैसी मनोवृत्ति में मनोवैज्ञानिक ने प्रत्यक्षण में भिन्नता होने के कारण से अभिप्रेरणा को अपने विशिष्ट तरीके से स्पष्ट किया है।

मानव व्यवहार की प्रक्रिया तथा क्रिया विधि का अभिप्रेरणा के सम्बंध में मनोवैज्ञानिकों द्वारा की गई व्याख्या या विचारों को अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों के नाम से जाना जाता है। अभिप्रेरणा के सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करते हैं कि कोई व्यक्ति किसी व्यवहार को क्यों करता है। अभिप्रेरणा का कोई एक सिद्धान्त न होकर अनेक सिद्धान्त मनोवैज्ञानिकों द्वारा अभी तक प्रतिपादित किए गए हैं। डेकार्टेस ने सर्वप्रथम व्यवहार के सिद्धान्त (Theory of Behaviour) का प्रतिपादन किया। इन्होंने मनुष्य को प्रभावित करने वाले बाह्य तत्वों के आधार पर मानव व्यवहार की व्याख्या की है। साथ ही मानव व्यवहार के प्रेरक के रूप में संवेगों की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया है। इसके बाद थॉमस हॉवस के द्वारा मनोवैज्ञानिक सुखवाद (Psychological Hedonism) के आधार पर मानव व्यवहार की व्याख्या की। जिसके अनुसार मानव उसी व्यवहार को करने की इच्छा रखता है जिससे उसे सुख व सन्तोष प्राप्त होता है तथा कष्टों से मुक्ति मिलती है। जॉन लॉक ने भी इसी से मिलते-जुलते विचार अभिप्रेरित व्यवहार के सम्बंध में प्रस्तुत किए। 19वीं शताब्दी में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के विकास के पश्चात अभिप्रेरणा के विभिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ। कुछ सिद्धान्त निम्नलिखित प्रकार से हैं-

1. अभिप्रेरणा का मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त (Instictive Theory of Motivation)

यह सिद्धान्त मैकडूगल (Mc-Daugall), जेम्स (James) तथा बर्ट (Burt) ने प्रतिपादित किया। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में जन्म से ही कुछ विशिष्ट व्यवहारिक प्रवृत्तियों विद्यमान रहती हैं। जिनकी क्रियाशीलता पर व्यक्ति इनके सापेक्ष विशिष्ट व्यवहार करता है। यह प्रदर्शित व्यवहार उसकी प्रवृत्ति की संतुष्टि करता है। मूल प्रवृत्ति के प्रत्यय का सर्वप्रथम उपयोग विलियम जेम्स (William James) द्वारा किया गया। मैकडूगल ने मूल प्रवृत्तियों की तीन विशेषताएँ बताईं

- ये जन्मजात होती है।
- ये प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान होती है।
- ये व्यवहार को प्रेरित करती है।

मूल प्रवृत्तियों के आधार पर सभी मानवों के व्यवहारों की स्पष्ट व्याख्या की जा सकती है। जब व्यक्ति में विद्यमान मूल प्रवृत्ति में से कोई भी मूलप्रवृत्ति क्रियाशील होती है। तो व्यक्ति में दैहिक व मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। जिससे मुक्ति पाने हेतु व्यक्ति विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करता है।

मैकडूगल ने 14 मूल प्रवृत्तियों की एक सूची भी प्रस्तुत की है। इनमें से प्रत्येक मूल प्रवृत्ति एक विशिष्ट संवेगात्मक स्थिति (Emotional disposition) से जुड़ी होती है।

सभी व्यवहार मूल प्रवृत्त्यात्मक होते हैं जिनमें संज्ञान, भाव तथा चेष्टा विद्यमान रहती है।

सारणी 9.1 मैकडूगल द्वारा दी गई-14 मूल प्रवृत्तियां तथा उनसे सम्बन्धित संवेग

क्रम	मूल प्रवृत्ति	संवेग
1	पलायन (Escape)	भय (Fear)
2	युयुत्सा (Combat)	क्रोध(Anger)
3	निवृत्ति(Repulsion)	घृणा(Disgust)
4	सन्तान कामना (Parental)	वात्सल्य (Temderme)
5	शरणागति (Appeal)	करुणा (Distre)
6	कामवृत्ति (sex)	कामुकता (Lust)
7	जिज्ञासा (Curiosity)	आश्चर्य (wonder)
8	दैन्य (Submission)	आत्महीनता (Negative Self Feeling)
9	आत्म गौरव (Assertion)	आत्माभिमान (Positive self felling)
10	समूहिक (Gregariousness)	एकाकीपन (Loneliness)
11	भोजनोन्वेषण (Food Seeking)	भूख (Hunger)
12	संग्रहण (Acquisition)	स्वामित्व (Ownership)
13	रचनात्मकता (Construction)	कृतिभाव (creation)
14	हास (Laughter)	आमोद Amusement)

मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त प्रारम्भ में काफी प्रचलित रहा परन्तु व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि सभी व्यवहार मूलप्रवृत्त्यामक नहीं होते हैं मूल-प्रवृत्तियों की संख्या भी निरन्तर बढ़ती गई तथा सन 1924 तक 14000 मूल प्रवृत्तियों को गिनाना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु आलोचनाओं के बाद भी इस सिद्धांत को एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त माना जाता है।

2. मैस्लो का मांग सिद्धान्त (Need theory of Maslow)

अभिप्रेरणा के मांग सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1954 में अब्राहम मैस्लो (Abraham Maslow) ने किया था। मैस्लो ऐसे प्रथम मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने आत्मानुभूति (Actualization) को एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक बतलाया इसी आधार पर 'आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त' प्रस्तुत किया। इस सिद्धान्त के अनुसार जब प्राणी अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक किसी वस्तु की कमी या मांग महसूस करता है तो उसे प्राप्त करने के लिए क्रियाशील या अभिप्रेरित हो जाता है। व्यक्ति का एक ही व्यवहार कई कमियों की पूर्ति कर सकता है इसलिए व्यवहार की प्रवृत्ति बहु-अभिप्रेरित (multi-motivative) होती है। मैस्लो ने मानव आवश्यकताओं या अभिप्रेरकों की व्याख्या एक अनुक्रम (Hierarchy) या सीढ़ी (Ladder) के रूप में की है। मैस्लो ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या आत्मानुभूति के आधार पर की है। आत्मानुभूति से तात्पर्य व्यक्ति के अन्दर छिपी हुई क्षमताओं की पहचान करके उनका ठीक प्रकार से विकास करने की आवश्यकताओं की तीव्रता के आधार पर व्याख्या की है। इनके अनुसार कुछ आवश्यकताएँ ऐसी होती हैं जिन्हें तुरन्त पूरा करना आवश्यक होता है और कुछ आवश्यकताएँ ऐसी होती हैं जो बाद में पूरी की जा सकती हैं।

मैस्लो ने जो पांच आवश्यकताएँ अथवा प्रेरक बताए हैं वे निम्न प्रकार से हैं।

1. शारीरिक आवश्यकताएँ या प्रेरक (Physiological Needs or Motives)
2. सुरक्षा आवश्यकताएँ या प्रेरक (Safety Motives or Need)
3. स्नेह या लगाव प्रेरक अथवा आवश्यकताएँ (Love and Affection Motives or Need)
4. आत्म सम्मानपरक आवश्यकताएँ या प्रेरक (Self Esteem Motives or Need)
5. आत्मानुभूति प्रेरक आवश्यकता या प्रेरक (Self Actualization motives or Need)



चित्र 9.1 मैस्लों की आवश्यकताओं की पदानुक्रमिक संरचना।

1. **शारीरिक आवश्यकताएँ या प्रेरक** - ये प्रेरक व्यक्ति में बुनियादी आवश्यकताओं के कारण उत्पन्न होते हैं, इन्हें मनोदैहिक आवश्यकता अथवा अभिप्रेरक भी कहते हैं। इनके उदाहरण हैं-भूख, प्यास, नींद, सेक्स, मूलमूत्र, त्याग इत्यादि। इनकी पूर्ति न होने पर व्यक्ति का शारीरिक संतुलन बिगड़ जाता है। इनकी पूर्ति होने पर ही व्यक्ति स्वस्थ रहता है। उच्च स्तर की आवश्यकता तभी जाग्रत होती हैं। जब इन आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाएँ ।
2. **सुरक्षा आवश्यकताएँ या प्रेरक** -जब व्यक्ति की मनोदैहिक आवश्यकताओं की पूति हो जाती है तब व्यक्ति अपने जीवन की सुरक्षा के प्रति जागरूक हो जाता है। ताकि उसके जीवन को कोई खतरा न हो। इन आवश्यकताओं के उदाहरण हैं-जीवित रहना, सुरक्षित रहना तथा आदेश देना आदि।
3. **स्नेह व लगाव प्रेरक या आवश्यकतायें**- जब व्यक्ति अपनी शारीरिक आवश्यकताओं तथा सुरक्षा को सुनिश्चित कर लेता है तो वह समाज में स्नेह, प्रेम तथा सहानुभूति की आशा करता है। इसीलिए वह अपने मित्रों, पड़ोसियों तथा सम्बन्धियों से मधुर सम्बंध कायम करना चाहता है। दूसरे से स्नेह व प्रेम की आशा करता है। ताकि वह अपना जीवन सुखी रहकर तथा उत्साह से व्यतीत कर सके।
4. **आत्म सम्मान आवश्यकताएँ या प्रेरक** - इसे उच्च स्तर की आवश्यकता अथवा प्रेरक माना जाता है। जब व्यक्ति अपने प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है तब उसे अपने आत्म सम्मान की चिन्ता होती है। व्यक्ति आत्मसम्मान चाहता है। अपने आत्मसम्मान की

रक्षा में ही उसे जीवन की सार्थकता नजर आती है। वह अपमान बर्दास्त नहीं कर सकता फलस्वरूप अपने को समर्थ बनाता है।

5. **आत्म अनुभूति आवश्यकताएँ अथवा प्रेरक-** अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् व्यक्ति अपने समाज या समुदाय के लिए कुछ योगदान करना चाहता है ताकि लोग उसे याद रखे। उसके अच्छे कार्यों की प्रशंसा करे। यह योगदान व्यक्ति आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक तथा अध्यात्मिक किसी भी रूप में हो सकता है।

आत्मानुभूति की आवश्यकता को **मार्गान, किंग, विस्ज तथा स्कोपलर** ने निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है-

“व्यक्ति की अपनी क्षमताओं को विकसित करने की आवश्यकता को आत्मानुभूति कहा जा सकता है, दूसरे शब्दों में अपनी क्षमता के अनुसार कुछ कर सकना ही आत्मानुभूति है।”

“Self actualization refers to an Individual’s need to develop his or her Potentiality in other words, to do What he or she is capable of doing” Moranm, King, Weise & Schopler.

इसी सम्बंध में **मेस्लो ने कहा कि** -“एक संगीतज्ञ को संगीत प्रस्तुत करना चाहिए, कलाकार को चित्रकारी करनी चाहिए, तथा कवि को कविता लिखनी चाहिए यदि वह आत्म संतुष्टि चाहता है। अर्थात् एक व्यक्ति को वही होना चाहिए जो वह हो सकता है।” “ A musician must make music, An artist must Paint and a poet must write if he is ultimately to be at place with himself. i.e. what a man can be, he must be.”

3. अभिप्रेरणा का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त Psychoanalytic theory of Motivation

अभिप्रेरणा के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त का प्रतिपादन सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) ने किया था। इन्होंने स्पष्ट किया है कि मानव के अचेतन मन में दबी इच्छाएँ , वासनाएँ , मूलप्रवृत्ति एवं अन्य मानसिक ग्रन्थियां मानव व्यवहार को अभिप्रेरित करती हैं। फ्रायड के अनुसार अप्रासंगिक इच्छाओं को परा अहम् (super Ego)। दमन कर देता है और वे अचेतन में पड़ी रहती हैं परन्तु अनुकूल अवसर आने पर वे पुनः सक्रिय हो जाती है। प्रारम्भ में बालक अपनी प्रत्येक इच्छा को पूरी करना चाहता है। परन्तु नैतिकता के विकास के साथ-साथ उसमें उचित अनुचित का ज्ञान बढ़ता है। वह इच्छा की अपेक्षा औचित्य पर अधिक ध्यान देने लगता है। बच्चे अपने माता-पिता तथा अन्य लोगों का अनुसरण करके अच्छे गुण सीखते हैं। फ्रायड ने मूल प्रवृत्तियों को व्यवहार का मूल कारण माना तथा दो आधारभूत मूलप्रवृत्तियों-1. जीवन मूलप्रवृत्ति (Life Instincts) 2. मृत्यु मूल प्रवृत्ति (Death Instincts) की पहचान कर इन्हीं सभी प्रकार के व्यवहारों का प्रमुख अभिप्रेरणात्मक स्रोत बताया। इनके अनुसार व्यक्ति

के सकारात्मक कार्य जीवन (मूलप्रवृत्ति) से निर्देशित व संचालित होते हैं तथा सभी विध्वंसात्मक कार्य (मृत्यु) मूलप्रवृत्ति के द्वारा संचालित होते हैं।

फ्रायड के अनुसार व्यक्ति तो अचेतन के द्वारा ही संचालित व नियंत्रित होता है। एक तरीके से कहें कि व्यक्ति अचेतन के हाथों की कठपुतली की तरह होता है तथा व्यक्ति को वही करना होता है जैसा उसका अचेतन चाहता है। इस प्रकार मानव व्यवहार में अचेतन की प्रभावी तथा महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की गई है।

4. मरे का आवश्यकता सिद्धान्त (Murray's Need theory of Motivation)

यह आवश्यकता सिद्धान्त हेनरी मरे (Henry murray) ने 1938 में प्रतिपादित किया। मरे के अनुसार आवश्यकता एक परिकल्पित शक्ति (Hypothetical Force) हैं जो मानसिक स्तर पर व्यक्ति के प्रत्यक्ष संवेदनाओं, बुद्धि आदि को संगठित कर उसके व्यवहार का नियंत्रण करती है। आवश्यकता का प्रेरणा से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। मरे के अनुसार असन्तुष्ट आवश्यकता प्राणी को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है तथा तब तक क्रियाशील रखती है जब तक आवश्यकता की संतुष्टि नहीं होती। मरे ने आवश्यकताओं को दो क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है-

1. प्राथमिक आवश्यकताएँ - प्राथमिक आवश्यकताएँ उन्हें कहते हैं जो प्राणी के जीवित रहने के लिए आवश्यक होती हैं। इसके अन्तर्गत खाना, पानी, वस्त्र आदि।
2. गौण आवश्यकताएँ - वे आवश्यकताएँ गौण आवश्यकताएँ कहलाती हैं जिनका जन्म प्राथमिक आवश्यकताओं के परिणामस्वरूप होता है। गौण आवश्यकताओं के उदाहरण हैं- रचनात्मकता, खेल, निन्दा, आक्रामकता, सम्बन्ध, धन अर्जन करना, आदेश देना आदि।

मरे (Murray) ने अनेक परीक्षणों के आधार पर निम्नलिखित 27 आवश्यकताओं का वर्णन किया तथा उनके मापन हेतु परीक्षण भी बनाए हैं-

1. अपमान (Abusement)
2. निष्पत्ति (Achievement)
3. सम्बन्ध (Affiliation)
4. अभिग्रहण (Acquisition)
5. आक्रमण (Aggression)
6. स्वायत्ता (Autonomy)
7. निर्माण (Construction)
8. संज्ञान (बुद्धि/दृष्टि/पवद)
9. विपरीत क्रिया (Counter action)
10. दोष बचाव (Blame-Avoidance)

11. सम्मान (Deference)
12. प्रतिरक्षण (Defence)
13. स्पष्टीकरण (Exposition)
14. प्रदर्शन (Exhibition)
15. प्रभुत्व (Dominance)
16. पोषण (Nutrition)
17. पतन बचाव (In-avoidance)
18. हानि बचाव (Harm-Avoidance)
19. खेल (Play)
20. व्यवस्था (Order)
21. परित्याग (Rejection)
22. धारण (Retention)
23. समझ (Understanding)
24. काम (Sex)
25. संवेदनशीलता (Sensitise)
26. उच्चता (Superiority)
27. परिश्रम (Succorance)

5. अभिप्रेरणा-स्वास्थ्य सिद्धान्त (Motivation-Hygiene Theory)

अभिप्रेरणा स्वास्थ्य सिद्धान्त का प्रतिपादन फ्रेड्रिक हर्जबर्ग (Fredric Herzberg) ने 1966 में किया। इस सिद्धान्त में कार्य की परिस्थिति में व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों को स्पष्ट किया गया। वस्तुतः यह सिद्धान्त उद्योग तथा व्यापार जगत के लिए था परन्तु इसकी उपयोगिता शिक्षा के क्षेत्र में कम नहीं है।

इन्होंने अपने सिद्धान्त की निम्नलिखित दो कारकों के आधार पर व्याख्या की है-

1. स्वास्थ्य कारक (Hygiene Factors) इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कारक सम्मिलित होते हैं-
 - i. कार्य की परिस्थितियाँ
 - ii. विद्यालय नीति एवं प्रशासन
 - iii. निरीक्षण तथा पर्यवेक्षण के विभिन्न प्रकार
 - iv. विद्यालय का स्तर

यदि विद्यालय की उपरोक्त व्यवस्थाएँ निम्न स्तर की होती हैं तब छात्र अप्रसन्न रहता है उसे सन्तुष्टि प्राप्त नहीं होती तथा उसकी अधिगम उपलब्धि अत्यन्त कम होती है।

2. प्रेरक (Motivators) -प्रेरक छात्रों को प्रसन्न रखते हैं तथा छात्रों के अधिगम में वृद्धि करते हैं। इसमें निम्नलिखित तत्वों को सम्मिलित किया गया है।
 - i. निष्पत्ति
 - ii. मान्यता
 - iii. उत्तरदायित्व
 - iv. प्रगति तथा स्वतंत्रता
 - v. व्यक्तिगत विकास

प्रेरक स्थाई प्रभाव उत्पन्न करते हैं तथा अधिगम के परिणाम में वृद्धि करते हैं।

9.8 सीखने में अभिप्रेरणा (Motivation in Learning)

शिक्षा प्रक्रिया में अभिप्रेरणा (Motivation) के प्रत्यय का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। अभिप्रेरणा का उचित प्रयोग करके अध्यापक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को अधिक अच्छे ढंग से सम्पादित कर सकता है। अभिप्रेरित बालक (Motivated Children) ज्ञानार्जन के लिए तत्पर होते हैं तथा वे शीघ्रता, सरलता, सहजता तथा सुगमता से सीख सकते हैं। इसके विपरीत अ-अभिप्रेरित बालकों (Non-Motivated Children) को प्रायः नई बातों को सीखने में रुचि नहीं होती है तथा वे सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। अध्यापक आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार के अभिप्रेरकों का उपयोग करके बालकों को शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। शिक्षा प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की उपयोगिता स्वस्पष्ट ही है। कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त अन्य शैक्षिक परिस्थितियों में छात्रों के व्यवहारों को नियंत्रित करने के कार्य में भी अभिप्रेरणा महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है। चरित्र-निर्माण में भी अभिप्रेरणा सहायक सिद्ध होती है। अध्यापक बालकों को उच्च चारित्रिक गुणों तथा आदेशों को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित कर सकता है।

छात्रों को अभिप्रेरित करने की दृष्टि से निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं-

1. **सीखने की इच्छा (Will to Learn):** अभिप्रेरणा प्रदान करने का प्रथम कदम बालकों में सीखने की इच्छा जागृत करना है। सीखने की प्रक्रिया तब ही सरल, शीघ्र तथा स्थाई होती है, जब व्यक्ति सीखने का इच्छुक होता है यद्यपि कभी-कभी बालक बिना इच्छा के भी कुछ बातें सीख जाते हैं, परन्तु सीखने की इच्छा सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। इच्छा (will) एक अत्यन्त साधारण परन्तु प्रभावी अभिप्रेरक है तथा अध्यापक अत्यन्त सहजता से इसके उपयोग द्वारा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गति प्रदान कर सकता है।
2. **सीखने में आवेष्टन (Involvement in learning)** - किसी कार्य में आवेष्टित हो जाने पर व्यक्ति उस कार्य को सफलतापूर्वक करने का यथासम्भव प्रयास करता है। आवेष्टन से तात्पर्य किए जाने वाले कार्य से लगाव का अनुभव करने एवं उसकी सफलता की इच्छा से होता है।

आवेष्टन की स्थिति में व्यक्ति उस कार्य में मानसिक रूप से समाविष्ट हो जाता है। यदि बालकों का लगाव सीखने की प्रक्रिया में होता है, तो वे सरलता व शीघ्रता से नवीन बातों को सीख लेते हैं।

3. **आकांक्षा स्तर (Level of Aspiration)** आकांक्षा स्तर सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक का कार्य करता है। आकांक्षा स्तर व्यक्ति के जीवन लक्ष्यों को इंगित करता है। व्यक्ति अपने आकांक्षा स्तर के अनुरूप ही प्रयास करता है। सफलता प्राप्त हो जाने पर उसका भावी आकांक्षा स्तर प्रायः अधिक ऊंचा हो जाता है, जबकि असफलता प्राप्त करने पर व्यक्ति का आकांक्षा स्तर प्रायः नीचा हो जाता है। अध्यापक छात्रों से आकांक्षा स्तर को यथासम्भव ऊंचा निर्धारित करा कर उन्हें अधिकाधिक अध्ययन करने के लिए अभिप्रेरित कर सकते हैं।
4. **प्रतियोगिता (Competition)** - अभिप्रेरणा प्रदान करने की एक अन्य विधि बालकों में प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करना है अध्यापक को अपने छात्रों में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करना चाहिए। इससे छात्र अधिक समय तक तथा अधिक परिश्रम से कार्य करता है। परन्तु ईर्ष्या, क्रोध, घृणा आदि पर आधारित प्रतिद्वंद्विता को कदापि सराहनीय नहीं माना जाता है तथा इस प्रकार की अवांछनीय प्रतिद्वंद्विता से सदैव बचना चाहिए। प्रतियोगिता के फलस्वरूप बालक कठिन कार्यों को भी करने के लिए अभिप्रेरित होता है तथा सफलता प्राप्त करता है।
5. **सफलता का ज्ञान (Knowledge of Success)** -सफलता का ज्ञान भी व्यक्ति की अभिप्रेरित करता है। यदि बालकों को यह पता है कि उन्होंने क्या-क्या सफलताएँ प्राप्त की हैं तो वे अपनी इन सफलताओं के ज्ञान से आगे बढ़ने के लिए अधिक अभिप्रेरित होते हैं। परीक्षा के उपरान्त बालकों को अपनी शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान परीक्षाफल के द्वारा इसीलिए कराया जाता है ताकि सफल छात्र भविष्य में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करने के लिए तथा असफल छात्र अपनी कमियों को दूर करने के लिए अधिक परिश्रम करने के लिए प्रयासरत रहें।
6. **प्रशंसा (Praise)** -प्रशंसा एक सकारात्मक अभिप्रेरणा (Positive Motive) है। यदि किसी छोटे के अच्छे कार्यों की प्रशंसा की जाती है, तो उसके द्वारा उस प्रकार के कार्य को करने की सम्भावना हो जाती है। वास्तव में, अपने से बड़े तथा मान्य व्यक्तियों के द्वारा की जाने वाली प्रशंसा बालक को वांछित कार्य को अधिक अच्छे ढंग से करने के लिए उत्तेजित करती है। उचित समय तथा स्थान पर की जाने वाली प्रशंसा निःसंदेह अभिप्रेरणा का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होती है।
7. **निन्दा (Blame)**- निन्दा का निषेधात्मक अभिप्रेरक है। निन्दा को एक प्रकार का सामाजिक-मानसिक उत्पीड़न माना जा सकता है। निन्दा के भय से बालक अपने व्यवहार में सुधार लाते हैं। सामाजिक परिस्थितियों में की जाने वाली निन्दा बालकों के ऊपर अत्यन्त प्रभाव छोड़ती है। अध्यापकों को निन्दा का प्रयोग बड़ी सावधानीपूर्वक करना चाहिए। उदाहरण के लिए बच्चे के परीक्षा में अंक कम आने पर यह कह देना ही पर्याप्त है कि तुम्हारे जैसे बुद्धिमान बच्चे के इतने अंक आना बड़े आश्चर्य की बात है। शायद आपने परिश्रम से जी चुराया है।

8. **पुरस्कार (Reward)**- पुरस्कार प्रशंसा का अधिक स्पष्ट व प्रखर भौतिक रूप है। किसी वस्तु धन, छूट आदि के रूप में दिए जाने वाले पुरस्कार प्रायः बालकों के लिए अत्यन्त शक्तिशाली अभिप्रेरक सिद्ध होते हैं, किन्तु पुरस्कारों का प्रयोग अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। ऐसा न हो कि बालक पुरस्कार प्राप्ति के लिए अनुचित तरीकों का प्रयोग करके सफलता अर्जित करने लगे।
9. **दण्ड (Punishment)**- दण्ड भी निन्दा की तरह से एक निषेधात्मक अभिप्रेरक है, जो निन्दा से अधिक प्रखर होता है। दण्ड से अभिप्राय मानसिक पीड़ा देने से है, जिससे बालक भविष्य में उन कार्यों को करने से न बचे। दण्ड वास्तव में भय पर आधारित होता है। इसलिए इसका प्रयोग बड़ी सावधानी से करनी चाहिए। सही तो यह होता है कि दण्ड दिया ही न जाए।
10. **प्रतिष्ठा (Prestige)**- प्रतिष्ठा प्राप्त करना व्यक्ति की इच्छा होती है। वह चाहता है कि अपने समूह में अधिकाधिक प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त करे तथा इसके लिए वह सतत् चेष्टा करता है। बालक भी कक्षा तथा विद्यालय में प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं। प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न छात्रों की अपेक्षाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। बालक अपनी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुरूप कक्षा में प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। प्रतिष्ठा प्राप्ति की इच्छा बालकों को परिश्रम से कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करती है।

9.9 अधिगमकर्ता को अभिप्रेरित करने में शिक्षक की भूमिका

उत्तेजना के लिए शिक्षक का कार्य

शिक्षक के समक्ष छात्रों के लिए उत्तेजना की समस्या आती है। छात्र की कार्यशैली उसी समय अच्छी होती है जबकि छात्र न अधिक भावुक और न अधिक सुस्त। शिक्षक का कार्य छात्रों को सक्रिय रखना है। कक्षा की दैनिक क्रियाओं की नीरसता को कम करने के लिए नवीन कार्यों के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए। अमूर्त प्रकरण को उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट करना चाहिए। अज्ञात प्रकरण को सादृश्य अनुभव की सहायता से बोधगम्य बनाना चाहिए। उत्तेजना के कार्य का अर्थ शिक्षक के लिए छात्रों को सीखने में संलग्न रखने तथा सक्रिय बनाने हेतु प्रयुक्त करता है। इसके लिए शिक्षक को अन्वेषण तथा ब्रेन-स्टार्मिंग विधियों को प्रयुक्त करना चाहिए। छात्रों के पूर्व व्यवहार के आधार पर शिक्षक उनकी आवश्यकतानुसार उत्तेजना स्तर कम अथवा अधिक कर सकता है।

आकांक्षा स्तर का विकास

शिक्षक का मुख्य कार्य छात्रों की आकांक्षाओं को विस्तार देना है, जिससे वह अनुदेशन-उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके। छात्रों की तत्कालीन आकांक्षा को अन्तिम आकांक्षा से सम्बन्धित करना चाहिए, जिससे छात्र सीखने में पूर्णतः संलग्न हो सकें। आकांक्षाएँ पूर्व-अनुभवों तथा निष्पत्तियों पर आधारित होती हैं। शिक्षक का कर्तव्य होता है कि कक्षा के आकांक्षा स्तर को ऊंचा उठाए, क्योंकि आकांक्षा स्तर को ही निष्पत्ति

स्तर के लिए उत्तरदायी माना जाता है, इसके लिए शिक्षक को छात्रों की आकांक्षा में परिवर्तन लाना चाहिए, तभी वह अनुदेशन-उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सफल हो सकता है।

प्रोत्साहन

शिक्षक का कर्तव्य यह है कि छात्रों की अनुक्रियाओं को इस प्रकार पुनर्बलन प्रदान करे, जिससे वह अनुदेशन के उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके, इसके लिए प्रशंसा, उत्साहवर्द्धन, परीक्षाफल, प्रतियोगिता आदि को प्रयुक्त करना चाहिए। प्रशंसा करने से छात्रों का निष्पत्ति-स्तर ऊंचा होता है। परीक्षाफल पृष्ठपोषण के लिए अधिक प्रभावशाली माना जाता है। परीक्षाफल में आशा से अधिक अंक पाने पर उस विषय को सीखने के लिए प्रेरणा मिलती है तथा सीखने की प्रक्रिया की गति में भी वृद्धि होती है।

शिक्षक को गृह कार्यों का मूल्यांकन करने में उनका अंकन तथा अनुस्थित (Grading) करना चाहिए तथा उन्हें शीघ्र छात्रों को वापस लौटाना चाहिए। इससे अधिगम के कार्यों में छात्रों की रुचि बढ़ती है।

दण्ड

बी.एफ. स्किनर ने भी दण्ड को महत्व दिया है। छात्र के अवांछित व्यवहारों को रोकने के लिए दण्ड दिया जाना चाहिए। कक्षा में अनुशासन तथा विद्यालय में अनुशासन बनाए रखने के लिए दण्ड दिया जा सकता है। दण्ड अनुशासन का ही रूप होता है। दण्ड उस समय विशेष उपयोगी होता है, जबकि,

- क. पुरस्कार के साथ प्रयुक्त किया जाए, अच्छे व्यवहार को प्रशंसा तथा अवांछनीय व्यवहारों के लिए दण्ड दिया जाए।
- ख. अवांछित व्यवहार का परिणाम क्षतिपूर्ण हो।
- ग. अवांछित व्यवहार के लिए तत्काल ही दण्ड दिया जाए, जिससे छात्र यह अनुभव कर सके कि उसको अवांछनीय कार्य के कारण दण्ड दिया गया है।

स्किनर ने दण्ड को स्वस्थ संवेग नहीं माना है, क्योंकि इसका आधार भय होता है। उनका सुझाव है कि अवांछनीय कार्यों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, क्योंकि दण्ड देने पर अवांछनीय व्यवहारों को बल मिलता है। छात्रों में हीनभावना का विकास होता है, शिक्षक के प्रति सद्भावना नहीं रहती है। अतः इसका प्रयोग यदाकदा ही करना चाहिए।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

6. अभिप्रेरणा का मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त किसने प्रतिपादित किया है।
7. मूल प्रवृत्ति के प्रत्यय का सर्वप्रथम उपयोग _____ द्वारा किया गया।
8. मैकडूगल ने मूल प्रवृत्तियों की कौन सी विशेषताएँ बताई हैं?
9. अभिप्रेरणा के मांग सिद्धान्त का प्रतिपादन _____ ने किया।
10. मैस्लो ऐसे प्रथम मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने _____ को एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक बताया।

11. अभिप्रेरणा के _____ का प्रतिपादन सिंगमंड फ्रायड ने किया था।
12. फ्रायड के अनुसार व्यक्ति तो _____ के द्वारा ही संचालित व नियंत्रित होता है।
13. मरे ने आवश्यकताओं को किन दो क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है?
14. अभिप्रेरणा स्वास्थ्य सिद्धान्त का प्रतिपादन _____ ने किया।

9.10 सारांश

शिक्षण तथा अधिगम के लिए उत्प्रेरण एक आवश्यकता है। उत्प्रेरण के अभाव में अधिगम की क्रिया सम्भव नहीं है। अध्यापकों का दायित्व है कि बच्चों को अभिप्रेरणा प्रदान कर अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करें। प्रोत्साहन देने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका यह है कि हम बच्चों के अच्छे कार्यों की प्रशंसा करें। दण्ड को अभिप्रेरणा का अच्छा साधन नहीं माना जाता है। अभिप्रेरणा के प्रत्यय की व्याख्या कई घटकों, जैसे-आवश्यकता (Need), अन्तर्नोद या चालक (Drive) प्रोत्साहन या प्रलोभन (Incentives) तथा अभिप्रेरक (Motive) की चर्चा से स्पष्ट होती है।

सामान्य अर्थों में हम कह सकते हैं कि अभिप्रेरक कार्य करने की वे प्रवृत्ति हैं, जो किसी आवश्यकता अथवा अन्तर्नोद से प्रारम्भ होती हैं तथा समायोजन पर पूर्ण हो जाती है।

मानव व्यवहार की प्रक्रिया तथा क्रिया विधि का अभिप्रेरणा के सम्बंध में मनोवैज्ञानिकों द्वारा की गई व्याख्या या विचारों को अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों के नाम से जाना जाता है। अभिप्रेरणा के सिद्धान्त इस बात की व्याख्या करते हैं कि कोई व्यक्ति किसी व्यवहार को क्यों करता है। अभिप्रेरणा का कोई एक सिद्धान्त न होकर अनेक सिद्धान्त मनोवैज्ञानिकों द्वारा अभी तक प्रतिपादित किए गए हैं।

शिक्षा प्रक्रिया में अभिप्रेरणा (Motivation) के प्रत्यय का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। अभिप्रेरणा का उचित प्रयोग करके अध्यापक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को अधिक अच्छे ढंग से सम्पादित कर सकता है।

9.11 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. राजमार्ग
2. अभिप्रेरित व्यवहार की दो विशेषताएँ हैं -
 - i. व्यवहार की जागरूकता
 - ii. अभिप्रेरित व्यक्ति का दिशा निर्देशित होना
3. अभिप्रेरणा के कोई दो घटकों के नाम हैं- आवश्यकता, अन्तर्नोद
4. दैहिक असन्तुलन
5. स्किनर
6. अभिप्रेरणा का मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त मैक्डगल, जेम्स तथा बर्ट ।

7. विलियम जेम्स
8. मैकडूगल ने मूल प्रवृत्तियों की निम्न विशेषताएँ बताई हैं-
 - ये जन्मजात होती है।
 - ये प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान होती है।
 - ये व्यवहार को प्रेरित करती है।
9. अब्राहम मैस्लो
10. आत्मानुभूति
11. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त
12. अचेतन
13. मेरे ने आवश्यकताओं को निम्न दो क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है-
 - i. प्राथमिक आवश्यकताएँ
 - ii. गौण आवश्यकताएँ
14. फ्रेड्रिक हर्जबर्ग

9.12 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, शिरीषपाल (2009): शिक्षा मनोविज्ञान मेरठ, आर लाल बुक डिपो,
2. वर्मा, जी.एस. (2011) शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस
3. गुप्ता, एस.पी., गुप्ता अलका (2004): उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन,
4. शुक्ल, ओ.पी., (2002): शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ: भारत प्रकाशन
5. पाठक, पी.डी. (2002): शिक्षा मनोविज्ञान आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

9.13 निबन्धात्मक प्रश्न

1. अभिप्रेरणा को परिभाषित कीजिए।
2. अभिप्रेरकों के विभिन्न प्रकार बताइए।
3. अभिप्रेरणा के कौन-कौन से घटक हैं।
4. अभिप्रेरकों को परिभाषित कीजिए।
5. अभिप्रेरकों का वर्गीकरण कीजिए।
6. सीखने में अभिप्रेरणा का क्या योगदान है।
7. अभिप्रेरणा किसे कहते हैं? अभिप्रेरणा के घटकों को स्पष्ट कीजिए।

-
8. छात्रों को अभिप्रेरित करने के लिए उपयोग में लाई जाने वाली विभिन्न प्रविधियों को विस्तार से समझाइए।
 9. अधिगम में प्रेरणा के योगदान की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
 10. अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों की विस्तृत विवेचना कीजिए।

इकाई 10- समायोजन: - अर्थ एवं प्रक्रिया, समायोजित तथा कुसमायोजित व्यक्तियों के लक्षण, समायोजन के निर्धारक, समायोजन की विधियाँ अध्यापकों तथा परिवार के दायित्व

- 10.1 प्रस्तावना
- 10.2 उद्देश्य
- 10.3 समायोजन का अर्थ एवं परिभाषा
- 10.4 समायोजन की प्रक्रिया
- 10.5 समायोजन प्रक्रिया की विशेषताएँ
- 10.6 समायोजित तथा कुसमायोजित व्यक्ति के लक्षण
- 10.7 समायोजन के निर्धारक
- 10.8 समायोजन की विधियाँ
- 10.9 सुसमायोजन के विकास के लिए अध्यापकों तथा विद्यालयों के दायित्व
- 10.10 सुसमायोजन के लिए परिवार के दायित्व
- 10.11 सारांश
- 10.12 शब्दावली
- 10.13 स्वमूल्यांकहेतु प्रश्नों के उत्तर
- 10.14 संदर्भ ग्रंथ सूची
- 10.15 निबन्धात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

मानव की अनेकानेक आवश्यकताएँ एवं आकांक्षाएँ होती हैं। आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की मनोनुकूल प्राप्ति न होने पर मानव के मस्तिष्क में कुण्ठा, असंतोष, निराशा पैदा होती है। जब उसकी आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती है तब वह संतोष, तृप्ति, सुख तथा खुशी अनुभव करता है। परन्तु जब आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती तो कष्ट अनुभव करता है। सफलता तथा असफलता जीवन पर्यन्त व्यक्ति को मिलती हैं। कुछ व्यक्ति असफलताओं से इतने प्रभावित हो जाते हैं कि वे कि कर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। कुछ असफलताओं को चुनौती के रूप में स्वीकार कर, अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पुनः मनोयोगपूर्वक परिश्रम करके अपने कार्य में सफल हो जाते हैं। कर्तव्यविमूढ़ हो जाने पर व्यक्ति को समाज में समायोजन करने में बाधा उत्पन्न होती है। इस इकाई में हम विद्यालयों में छात्रों के समायोजन से

सम्बन्धित प्रमुख बातों का अध्ययन कर रहे हैं। ताकि हमारे छात्र परिवार, विद्यालय तथा समाज में अच्छी प्रकार समायोजित होकर अच्छे नागरिक बन सकें।

10.2 उद्देश्य

बच्चों तथा बड़ों के लिए समाज में समायोजन (adjustment) बहुत आवश्यक है। कुसमायोजित व्यक्ति न तो स्वयं के लिए उपयोगी होता है न वह समाज के लिए उपयोगी हो सकता है। बच्चों के सुसमायोजन में अध्यापकों तथा विद्यालय का महत्वपूर्ण दायित्व है। बच्चों के सुसमायोजन से ही राष्ट्र तथा विश्व में सुसमायोजन सम्भव है। अध्यापकों को बच्चों को सुसमायोजित करने का ज्ञान होना आवश्यक है। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. हम समायोजन का अर्थ तथा उसकी परिभाषाएँ समझ सकेंगे।
2. कुसमायोजित तथा सुसमायोजित व्यक्ति में अन्तर जान सकेंगे।
3. परिवार तथा अध्यापकों के द्वारा बच्चों के समायोजन के लिए किए जाने वाले कार्यों से परिचित हो सकेंगे।
4. विद्यार्थियों में सुसमायोजन का विकास करने के लिए, शिक्षण करते समय उपयोगी विधियों का उपयोग कर सकेंगे।

10.3 समायोजन का अर्थ एवं परिभाषा

समायोजन के अर्थ को समझने के लिए हम पहले समायोजन की कुछ परिभाषाओं का अध्ययन कर लें तो उचित रहेगा। परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

गेट्स के अनुसार: “समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।”

According to Gates “Adjustment is a continual process by which a person varies his behavior to produce a more harmonious relationship between himself and his environment.”

बोरिंग लैंगफील्ड व बेल्ड के अनुसार, “समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।

According to Boring, Langfield and Weld

“Adjustment is the process by which a living organism maintains a balance between its needs and the circumstances that influence the satisfaction of those needs.”

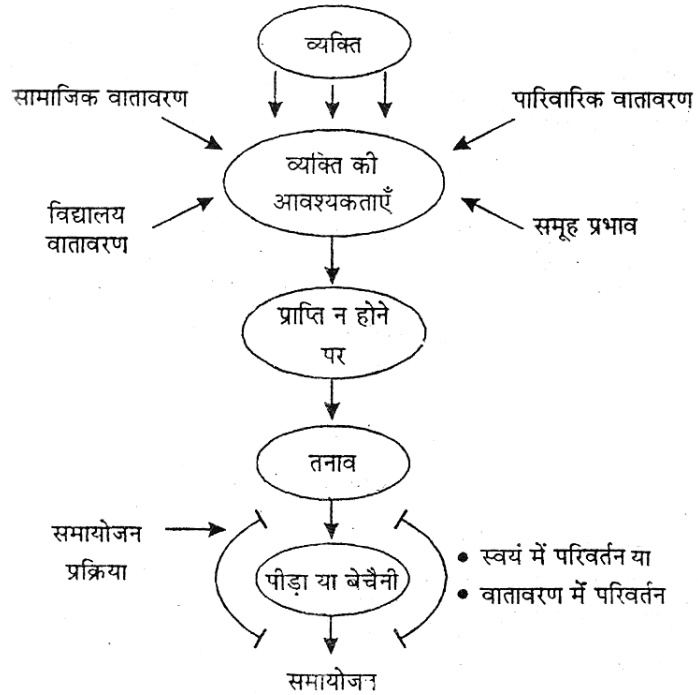
इन परिभाषाओं से प्रकट होने वाले प्रमुख तथ्य इस प्रकार हैं-

- समायोजन एक प्रक्रिया है।
- यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।
- व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन स्थापन के लिए अपने व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन करने होते हैं।

समायोजन को समझने के लिए समायोजन की प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। समायोजन की प्रक्रिया को आरेख 21.1 में रेखाचित्र के रूप में व्यक्त किया गया है।

10.4 समायोजन की प्रक्रिया (Process of Adjustment)

व्यक्ति समायोजन करने के लिए अपने पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने की कोशिश करता है या पर्यावरण के अनुरूप अपना अनुकूलन करके स्वयं बदल जाता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति अपने विचारों, सम्प्रत्ययों, अभिवृत्तियों, प्रत्यक्षण, भावनाओं, संवेग तथा क्रियाओं में परिवर्तन करता है। समायोजन की प्रक्रिया को हम निम्नलिखित आरेख द्वारा भी प्रदर्शित कर सकते हैं-



रेखाचित्र 10.1 समायोजन-प्रक्रिया

उपरोक्त रेखाचित्र से स्पष्ट है कि व्यक्ति की आवश्यकता प्राप्ति के लक्ष्य में उसके विभिन्न वातावरण प्रभाव डालते हैं। लक्ष्य प्राप्ति न होने पर व्यक्ति में तनाव उत्पन्न होता है। फलस्वरूप व्यक्ति तनाव कम करने के लिए स्वयं में अथवा वातावरण में परिवर्तन करने का प्रयास करता है। यदि वह इस क्रिया में सफल रहता है तो समायोजित हो जाता है।

10.5 समायोजन प्रक्रिया की विशेषताएँ **Characteristics of Adjustment Process**

1. समायोजन प्रक्रिया एक द्विमार्गी प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति पक्ष के साथ-साथ पर्यावरण पक्ष भी प्रभावित होता है।
2. समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है। इसमें व्यक्ति एक बार समायोजित हो जाने पर इस गुण का अनुप्रयोग आगे की परिवर्तनशील परिस्थितियों में करता है।
3. समायोजन एक उद्देश्यमुखी प्रक्रिया है, क्योंकि मानव की समंजन प्रक्रिया उसकी मूल आवश्यकताओं पर निर्भर करती है।
4. समायोजन की प्रक्रिया में उद्देश्य की प्राप्ति न होने पर कुंठा (Frustration) की उत्पत्ति होती है।
5. समायोजन की प्रक्रिया को तीव्र करने के लिए व्यक्ति की मनोसंरचना, अभिवृत्ति, आकांक्षास्तर, व्यक्तित्व तथा अभिप्रेरणा को समझाना आवश्यक होता है।
6. समायोजन के अभाव में व्यक्ति में अपचारिता, प्रमाद, आक्रामकता, का विकास हो सकता है। तथा आत्मविश्वास में न्यूनता आदि लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि सुमायोजित तथा कुसमायोजित व्यक्ति किसे कहेंगे कुसमायोजित तथा सुसमायोजित व्यक्ति के लक्षणों में जो अन्तर हैं उसे क्रमांक 21.6 में प्रस्तुत किया गया है।

10.6 सुसमायोजित तथा कुसमायोजित व्यक्ति के लक्षण

सुसमायोजित तथा कुसमायोजित व्यक्ति के लक्षणों का अध्ययन हम निम्नलिखित सारणी के रूप में कर रहे हैं।

सारणी 10.1

सुसमायोजित तथा कुसमायोजित व्यक्तियों के लक्षणों की तुलना

क्रम	सुसमायोजित व्यक्ति	कुसमायोजित व्यक्ति
1	ये परिस्थितियों के अनुकूल आचरण करते हैं	ये परिस्थितियों के अनुकूल आचरण नहीं करते।
2	ये पर्यावरण के अनुकूल अपने आप को परिवर्तित करते हैं।	ये पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने की सोचते हैं।
3	इनका समाज से समायोजन उच्च स्तर का होता है।	इनका समाज में समायोजन अच्छा नहीं होता
4	इनकी बुद्धि स्थिर होती है।	इनकी बुद्धि स्थिर नहीं होती है, कभी ये कुछ सोचते हैं कभी कुछ सोचते हैं।
5	इनमें सामाजिक भावना होती है।	इनमें सामाजिक भावना कम होती है।
6	इनके उद्देश्य स्पष्ट होते हैं।	इनके उद्देश्य स्पष्ट नहीं होते हैं।
7	ये कठिनाइयों को सामना नियोजित ढंग से करते हैं।	ये कठिनाइयों का सामना करने के स्थान पर परिस्थितियों को कोसते रहते हैं।
8	ये संवेगात्मक रूप में परिपक्व होते हैं।	ये संवेगात्मक रूप से अपरिपक्व होते हैं।
9	ये क्षमाशील होते हैं। सर्वेभवन्तु सुखिनः की भावना रखते हैं।	इनमें घृणा, द्वेष तथा बदले की भावना से ग्रस्त होते हैं।
10	ये मानसिक रूप से परिपक्व तथा तनाव से मुक्त रहते हैं।	ये मानसिक रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं और तनाव से युक्त हो जाते हैं।
11	असफलता को ये एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं।	असफलता में अपना संतुलन खो देते हैं।
12	इनमें मानसिक द्वन्द को शीघ्र समाप्त कर लेते हैं।	ये मानसिक द्वन्द से पीड़ित होकर अपने स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते हैं।

अब हम उन कारकों का अध्ययन करेंगे जो कि किसी व्यक्ति के सुसमायोजन के लिए उत्तरदायी होते हैं।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. गेट्स के अनुसार समायोजन की परिभाषा लिखिए।
2. समायोजन की प्रक्रिया में उद्देश्य की प्राप्ति न होने पर _____ की उत्पत्ति होती है।
3. सुसमायोजित व्यक्ति संवेगात्मक रूप में परिपक्व होते हैं। (सत्य/असत्य)
4. कुसमायोजित व्यक्ति के कोई तीन लक्षण लिखिए।

10.7 अच्छे समायोजन के निर्धारक **Determinants of Good Adjustment**

अच्छे समायोजन के पहलुओं का निर्धारण हमेशा के लिए नहीं किया जा सकता है, क्योंकि प्रत्येक समाज की संस्कृति तथा मूल्य भिन्न-भिन्न होते हैं और वे समय की मांग तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। समायोजन के कुछ पहलुओं का निर्धारण मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया है, उनमें से प्रमुख निर्धारक इस प्रकार हैं।

1. **शारीरिक स्वास्थ्य (Physical Health):** व्यक्ति को विभिन्न शारीरिक रोगों से मुक्त होना चाहिए। इन शारीरिक रोगों के कारण व्यक्ति की कार्य-कुशलता में कमी आती है। फलस्वरूप व्यक्ति का समायोजन प्रभावित होता है।
2. **कार्य की कुशलता (Ability to Work):** यदि व्यक्ति अपने कार्य को कुशलतापूर्वक पूर्ण करता है तो उद्देश्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती है। अतएव कार्य-कुशलता, समायोजन का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।
3. **मनोवैज्ञानिक शान्ति (Psychological Peace):** इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति में किसी प्रकार के मानसिक अथवा मनोवैज्ञानिक रोग नहीं होने चाहिए क्योंकि ये रोग व्यक्ति के समायोजन को प्रभावित करते हैं।
4. **सामाजिक स्वीकृति (Social Acceptance):** प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक स्वीकृति की अभिलाषा रखता है। यदि व्यक्ति समाज के मूल्यों, मानकों, विश्वासों आदि के अनुरूप आचरण करता है तो हम उसे सुसमायोजित कह सकते हैं। परन्तु यदि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज विरोधी क्रियाओं द्वारा करता है तो उसे हम कुसमायोजित व्यक्ति कहते हैं।

10.8 समायोजन की विभिन्न विधियाँ (Various Methods of Adjustment)

बालकों में समायोजन मुख्यतः तीन तरीकों से होता है-

1. **रचनात्मक समायोजन** - यदि व्यक्ति अपने सम्मुख प्रस्तुत समस्या का समाधान रचनात्मक या उचित तरीके से करता है, तो उसे रचनात्मक समायोजन कहा जाता है, जैसे-लक्ष्य प्राप्ति के प्रयत्नों में वृद्धि करना, समस्या पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करना, अन्य लोगों से उचित सलाह लेना आदि रचनात्मक कार्य व्यक्ति को समायोजन की ओर ले जाते हैं।
2. **स्थानापन्न समायोजन** - यदि व्यक्ति द्वारा किए गए प्रयत्नों से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पा रही है तो वह सम्भावित लक्ष्य का प्रतिस्थापन करके स्वयं को समायोजित कर सकता है, जैसे बालक के सामने कठिनाई उपस्थित होती है और कठिनाई के लिए यदि एक बालक पढ़ाई न करने के कारण कक्षा में कमजोर चल रहा है तो वह अपनी कमजोरी स्वीकार न करके दूसरों पर प्रतिस्थापित कर देता है, जैसे-अध्यापक रोज-रोज छुट्टी पर रहते हैं, पढ़ाते नहीं है, घर पर कार्य अधिक करना होता है। इत्यादि।

3. **मानसिक विरचनाएँ** - मानसिक विरचनाएँ जैसे इच्छा का दमन, प्रक्षेपण, औचित्य स्थापन का प्रयोग करके भी व्यक्ति कठिनाइयों से बच सकता है तथा समायोजित हो सकता है। इन मानसिक विरचनाओं को रक्षा युक्तियाँ (Defense Mechanism) भी कहते हैं।
- जे0एफ0 ब्राउन के अनुसार “ मनोरचनाएँ , वे चेतन एवं अचेतन प्रक्रियाएँ हैं, जिनसे आन्तरिक संघर्ष कम होता है अथवा समाप्त हो जाता है”

“The mental mechanisms are various conscious or unconscious processes whereby the conflict situation is eliminated or reduced in its severity”. -**J.F. Brown**

(1) रक्षा युक्तियों की विशेषताएँ (Characteristics of Defense Mechanism)

1. ये वास्तविकता को विकृत करती है।
2. मनोरचनाओं के उपयोग से आन्तरिक अन्तर्द्वन्द्व कम या समाप्त हो जाता है।
3. मनोरचनाएँ प्रतिक्रिया करने का ढंग है।
4. यह चेतन और अचेतन किसी भी स्तर पर हो सकती है।
5. इनकी सहायता से व्यक्ति प्रतिबल वाली परिस्थितियों का सामना करता है।
6. इनके उपयोग से उपयुक्त की भावना बनी रहती है।

(2) रक्षा युक्तियों के प्रकार (Types of Defense Mechanism)

रक्षा युक्तियों के निम्नलिखित प्रकार हैं-

1. **उदात्तीकरण (Sublimation)** जब व्यक्ति की कामप्रवृत्ति तृप्त न होने के कारण उसमें तनाव उत्पन्न करती है, तब वह कला, धर्म, साहित्य, पशुपालन, समाजसेवा आदि में रुचि लेकर अपने तनाव को कम करता है। अर्थात् मूल प्रवृत्तियों को सामाजिक स्वीकृति के रूप में व्यक्त करना उदात्तीकरण है। उदात्तीकरण से दमित इच्छाएँ वांछिनीय दिशाओं में प्रवृत्त हो जाती हैं। कहते हैं कि - महाकवि तुलसीदास अपने यौवन में कामुक प्रवृत्ति के थे। पत्नी के उपदेश से वे काम-भावना का उदात्तीकरण करके ही वे अतुलनीय राम भक्त हुए तथा उन्होंने रामचरितमानस जैसे ग्रन्थ सहित अन्य कई बहुत ही विलक्षण ग्रन्थों की रचना की।
2. **पृथक्करण या प्रत्याहार (Withdrawal)** इस विधि में व्यक्ति अपने को तनाव उत्पन्न करने वाली स्थिति से पृथक् कर लेता है। उदाहरणार्थ, यदि उसके मित्र उसका मजाक उड़ाते हैं, तो वह उनसे मिलना-जुलना बन्द कर देता है। जिस कारण उसका सामाजिक विकास अवरुद्ध हो जाता है और उसका सामाजिक व्यवहार असाधारण हो जाता है। इस के दो रूप हो सकते हैं - प्रतिगमन व दिवास्वपन

- **प्रतिगमन (Regression)**- इस विधि में व्यक्ति अपने तनाव को कम करने के लिए वैसा ही व्यवहार करता है, जैसा वह पहले कभी करता था। उदाहरणार्थ, जब दो वर्षीय बालक को अपने छोटे भाई के जन्म के कारण अपने माता-पिता का पूर्ण प्यार मिलना बन्द हो जाता है, तब वह छोटे बच्चे के समान घुटनों के बल चलने लगता है और केवल मां द्वारा भोजन खिलाए जाने की हठ करता है।
 - **दिवास्वप्न (Day Dreaming)**- इस विधि में व्यक्ति कल्पना जगत में विचरण करके अपने तनाव को कम करता है। उदाहरणार्थ, निराश प्रेमी अपने काल्पनिक संसार में किसी सुन्दरी को अपनी पत्नी या प्रेयसी बनाकर उसके साथ समागम करता है।
3. **आत्मीकरण (Identification)**-इस विधि में व्यक्ति किसी महान पुरुष, अभिनेता, राजनीतिज्ञ आदि के साथ एक हो जाने का अनुभव करता है। बालक अपने पिता से और बालिका अपनी माता से तादात्म्य स्थापित करके उनके कार्यों का अनुकरण करते हैं। ऐसा करके उन्हें आनन्द का अनुभव होता है, जिसके फलस्वरूप उनका तनाव कम हो जाता है।
 4. **निर्भरता (Dependence)** इस विधि में व्यक्ति किसी दूसरे पर निर्भर होकर अपने जीवन का उत्तरदायित्व उसे सौंप देता है। उदाहरणार्थ, सांसारिक कष्टों से परेशान होकर मनुष्य किसी महात्मा का शिष्य बन जाता है और उसी के आदेशों एवं उपदेशों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने लगता है।
 5. **औचित्य-स्थापन (Rationalization)**-इस विधि में व्यक्ति किसी बात का वास्तविक कारण न बताकर ऐसा कारण बताता है, जिसे लोग अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। जैसे एक बालक यह स्वीकार नहीं करता है कि वह स्वयं देर से आया है। इसके विपरीत वह कहता है कि उसकी घड़ी सुस्त हो गई थी या उसे कहीं भेज दिया गया था आदि।
 6. **दमन (Repression)**-इस विधि में व्यक्ति तनाव को कम करने के लिए अपनी इच्छाओं का दमन करता है। उदाहरणार्थ, वह अपनी काम-प्रवृत्ति को व्यक्त करके समाज के नैतिक नियमों के विरुद्ध आचरण नहीं कर सकता है। अतः इस प्रवृत्ति का पूर्ण रूप से दमन करने का प्रयास करता है।
 7. **प्रक्षेपण (Projection)**: इस विधि में व्यक्ति अपने दोष का आरोपण दूसरे पर करता है। उदाहरणार्थ, यदि बड़ई द्वारा बनाई गई किवाड़ टेढ़ी हो जाती है तो वह कहता है कि लकड़ी गीली थी। या अच्छे अंक न आने पर विद्यार्थियों का अध्यापकों को दोष देना।
 8. **क्षतिपूर्ति (Compensation)**-इस विधि में व्यक्ति एक क्षेत्र की कमी को उसी क्षेत्र में या किसी दूसरे क्षेत्र में पूरा करता है। उदाहरणार्थ, पढ़ने-लिखने में कमजोरी बालक दिन-रात परिश्रम करके अच्छा छात्र बन जाता है या पढ़ने-लिखने के बजाए खेलकूद की ओर ध्यान देकर उसमें यश प्राप्त करता है।

समायोजन के लिए बच्चों को रक्षा युक्तियों की आवश्यकता ही न पड़े इस के लिए उनका स्वाभाविक विकास हो यह बहुत आवश्यक है। कुसमायोजन तभी आता है जब पालन पोषण में कमी आ जाए इसलिए बच्चों में स्वतः स्फूर्त समायोजन हो, उसके लिए अध्यापकों को एसी युक्ति अपनानी चाहिए

जिससे समायोजन स्वाभाविक तथा अबाध रूप से पूर्ण हो सके। क्योंकि सुसमायोजित व्यक्ति सामाजिक भी होता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

5. समायोजन के प्रमुख निर्धारकों के नाम लिखिए।
6. समायोजन की विभिन्न विधियों के नाम लिखिए।
7. रक्षा युक्तियों की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
8. रक्षा युक्तियों के प्रकारों के नाम लिखिए।
9. प्रतिगमन क्या है?
10. कल्पना जगत में विचरण करके अपने तनाव को कम करने को क्या कहते हैं?

10.9 बच्चों में समायोजन के विकास में विद्यालयों तथा अध्यापकों के दायित्व

बच्चों में सुसमायोजन के विकास में विद्यालय तथा अध्यापक का महत्वपूर्ण स्थान है। सुसमायोजन के लिए किए जाने वाले प्रयासों को हम संक्षेप में आगे प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. विद्यालय को भयावहक न बनाया जाए, वह विद्यार्थी का घर के बाद दूसरा प्रिय स्थान होना चाहिए।
2. विद्यालय के समय में वृद्धि की जाए ताकि अधिक समय में अधिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकें ताकि छात्रों को अपना सर्वांगीण विकास करने का अवसर उपलब्ध हो सके। अल्प-समयविधि के विद्यालयों में केवल पुस्तकीय ज्ञान ही देना सम्भव रहता है। कई व्यक्ति मानते हैं कि प्रहर पाठशाला (तीन घंटे) से समुचित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है। परन्तु तीन घंटे की अवधि के विद्यालय में समाजीकरण का अवसर ही उपलब्ध नहीं हो सकता। विद्यालय समाजीकरण का एक आदर्श स्थान हो सकता है क्योंकि वहाँ पर व्यवस्थित ढंग से समाजीकरण की प्रक्रिया को सम्पन्न किया जा सकता है।
3. विद्यालयों में स्काउटिंग तथा गाइडिंग के प्रशिक्षण की व्यवस्था रहनी चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थी स्काउट या गर्ल गाइड का प्रशिक्षण प्राप्त करे। यह एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है जो बच्चों में प्रेम भावना, अन्तरराष्ट्रीय सद्भाव के विकास के साथ बच्चों के समाजीकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा उसमें आत्मनिर्भरता का विकास करके आत्म गौरव को विकसित करता है। स्काउटिंग के सामूहिक-कार्य बच्चों में समाजिकता का विकास करते हैं, तथा समाज के प्रति उनके दायित्वों का बोध कराते हैं। इससे बच्चों में समाजीकरण की क्रिया तीव्र गति से तथा सुविचारित सुव्यवस्थित ढंग से होती है।
4. विद्यालयों में खेलकूद की व्यवस्था पर्याप्त हो। खेल सामूहिक भावना का विकास करते हैं। खेल को खेल की भावना से खेला जाए उसमें स्वस्थ प्रतियोगिता तो हो सकती है परन्तु अस्वस्थ प्रतियोगिता तो होनी ही नहीं चाहिए। खेल ऊंच-नीच, छोटे-बड़े, धनी-निर्धन, जाति पाति, धर्म आदि की भावना

- से मुक्त रहते हैं। कहावत भी है “खेल में मियांजी नहीं। “यदि प्रतियोगिता विहीन खेल खेले जाएँ तो अधिक अच्छा रहता है।
5. विद्यालय की समूची प्रणाली लोकतांत्रिक होनी चाहिए।
 6. विद्यालय की अनुशासन प्रणाली दमनात्मक, मुक्तात्मक तथा अवरोधात्मक न होकर उपचरात्मक होनी चाहिए।
 7. बच्चों को निषेधात्मक आदेश (यह नहीं करें, ऐसे नहीं करते हैं आदि) नहीं देने चाहिए। इस से बच्चों में नकारात्मकता की वृद्धि होती है।
 8. बच्चे के व्यक्तित्व का सम्मान करें। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है।
 9. धर्म, जाति आदि के आधार पर बच्चों को प्रताड़ित अथवा प्रोत्साहित कदापि नहीं करें।
 10. बच्चों के नाम प्रत्येक अध्यापक को याद हों। ध्यान रखे स्वयं का नाम व्यक्ति का सर्वप्रिय शब्द होता है। इससे उनमें आत्मविश्वास का उदय होता है।
 11. बच्चों को विश्वास में लिया जाए।
 12. बच्चों को अपनी बात कहने का अवसर मिले।
 13. सरंक्षकों से अच्छे सम्बन्ध तथा सम्पर्क होना विद्यालय के लिए तथा अध्यापकों के लिए अच्छी बात है। इससे छात्र का विकास होता है।
 14. छात्र का अपमान तथा उपहास कभी नहीं करना चाहिए।
 15. छोटी-छोटी बातों को तूल नहीं देना चाहिए।
 16. साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करें। इन कार्यक्रमों में समस्त बच्चे भाग ले, ऐसी व्यवस्था करना बहुत आवश्यक है।
 17. अध्यापकों को बदले की भावना से काम नहीं करना चाहिए। शिष्य को अपने पुत्र-पुत्री की तरह ही मानना चाहिए।
 18. दिव्यांग बच्चों को सामूहिक कार्यों में विशेष प्रोत्साहन देना चाहिए इससे उनमें आत्मविश्वास का उदय होता है।
 19. दृष्टि-दोष, वाक-दोष वाले बच्चों को विशेष प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। वह उन्हें मिलना ही चाहिए।
 20. संकीर्णता के अवगुण को निकाल कर छात्रों में व्यापक दृष्टिकोण का विकास करना चाहिए। यही सनातन परम्परा है और यही हितकर भी है। विश्व बन्धुत्व (वसुधैव कुटुम्बकम्) की भावना का उदय हो ऐसे प्रयास अवश्य करने चाहिए।
 21. प्रत्येक अध्यापक को प्रतिदिन यह कथन सोचकर अपने रुमाल में गाँठ लगा लेनी चाहिए तथा अपने स्टॉफ रूम में इसे सुन्दर अक्षरों से लिखकर लटका देना चाहिए। ताकि कक्षा में जाने से पूर्व उसे प्रत्येक अध्यापक पढ़ सके। वह महत्वपूर्ण कथन इस प्रकार है- बच्चा, बच्चा ही है न इससे कम और न इससे अधिका। वह आदमी का छोटा रूप नहीं है। वह तो बच्चा ही है। उसके साथ, बच्चों के साथ किया जाने वाला व्यवहार ही किया जाना चाहिए।

10.10 सुसमायोजन में परिवार का दायित्व

एक बहुत प्रचारित उक्ति है जिसे प्रत्येक अध्यापक तथा बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ बार-बार दोहराता हैं।
“समस्यात्मक बच्चे नहीं, उनके माता-पिता होते हैं।”

इस कथन को निष्पक्ष माता-पिता भले ही मान लें वह भी समझाने के बाद। परन्तु कोई भी साधारण माता-पिता इस कथन को स्वीकार नहीं करेगा। लेकिन बात यह शत-प्रतिशत ठीक है। बच्चे का समाजीकरण ठीक प्रकार से सुचारु रूप से हो इसके लिए परिवार को निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान देना चाहिए-

1. बच्चे के शारीरिक दोषों का उपचार यथाशीघ्र ही नहीं बल्कि पता चलते ही किसी योग्य डॉक्टर से करना चाहिए।
2. बच्चे प्यार के भूखे होते हैं। परिवार से उन्हें प्यार मिले और इतना मिले कि उनकी प्यार की भूख पूरी हो जाए। अत्यधिक लाड़ करना भी बच्चे के हित में नहीं है।
3. माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के बीच पारस्परिक प्रेम होना चाहिए। यदि किन्हीं व्यक्तियों का कलह के बिना भोजन ही न पचता हो तो कलह लड़ाई-झगड़ा बच्चों की अनुपस्थिति में किया करें।
4. बच्चों को स्वालम्बन का पाठ पढ़ाएँ उनमें सहकारिता की भावना का उदय करें उनमें घर तथा समाज के प्रति दायित्व का बोध कराएँ ।
5. बच्चों में पारस्परिक तुलना कभी न करें। प्रत्येक बच्चे को महत्व दें। प्रत्येक बच्चे को अपना व्यक्तित्व होता है। पारस्परिक तुलना से बच्चों में हीन भावना तथा द्वेष की भावना जागृत होती है।
6. प्रत्येक बच्चे में अच्छाइयां खोजें तथा उसकी अच्छाइयों को प्रोत्साहन दें। बुराइयों को नजर अंदाज करें। ऐसा करने से अच्छाइयां विकसित होंगी तथा बुराइयां छूट जाएँगी। समस्यात्मक बच्चे के लिए इस उपचार में परिवार के सभी सदस्य हिस्सा लें।
7. घरेलू गोष्ठियों का आयोजन प्रत्येक घर में प्रतिदिन होना चाहिए। एक साथ बैठकर खाना खायें। प्रत्येक सदस्य को अपनी बात प्रस्तुत करने का अवसर मिले।
8. बच्चों के साथ उनके खेल भी खेलें, इससे इन्हें आनन्द की अनुभूति होती है। खेल में जीतने पर बच्चे को विशेष खुशी का आभास होता है। यह भी ध्यान में रखें कि बच्चों को खेल में हराएँ नहीं बल्कि जिताएँ ।
9. अपने सामाजिक आर्थिक स्तर के लोगों के साथ रहें ।
10. अनुशासन का आधार प्रेम है। क्रोध, अहंकार, कठोरता, क्रूरता से बच्चे बनते नहीं बल्कि बिगड़ते हैं।
11. अपने विचार बच्चों पर थोपे नहीं बच्चों को वस्तु स्थिति से परिचित करना आपका दायित्व है उसे पूरा करें। निर्णय लेना उनका स्वयं का कार्य है। उन्हें स्वयं ही निर्णय लेने दें।
12. बच्चे की बात को ध्यान पूर्वक सुनें और यदि वे आपकी सलाह मांगें तो अपनी सलाह भी दें।

13. निषेधात्मक आदेश न देकर सुझावात्मक निर्देश दें।
14. बच्चों के बारे में अपने प्रियकर अनुभवों को अपने सच्चे मित्रों को सुनाएँ ।
15. विद्यालय का चयन बहुत सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। क्योंकि परिवार के बाद विद्यालय ही एक प्रमुख स्थान है जहाँ बच्चों का समाजीकरण किया जाता है। विद्यालय बालक के सर्वांगीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं बच्चों के लिए विद्यालय का चयन करते समय यह ध्यान रखें कि विद्यालय में आपके अपने सामाजिक और आर्थिक स्तर के बच्चे ही आते हों। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चों के बीच बच्चा अपने में हीनभावना पनपा लेगा। तथा निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर के बालकों के बीच उच्च भावना से पीड़ित हो जाएगा। उच्च तथा निम्न दोनों भावनाएँ ही बच्चे के स्वाभाविक समाजीकरण को अवरुद्ध करती हैं। विद्यालय इस प्रकार का हो जहाँ पर बालकों में स्वावलम्बन, आत्माभिव्यक्ति, आत्मनिर्भरता, सामाजिकता, ईमानदारी, नियमितता का विकास किया जाता हो। जिस विद्यालय में बच्चे को प्रेम न मिले बच्चों के स्वाभिमान का सम्मान न होता हो उसमें बच्चे को कदापि भर्ती न कराएँ , भले ही उस विद्यालय का परीक्षाफल कितना भी शानदार क्यों न हो, तथा भले ही ख्याति के क्षितिज पर अपनी विजय पताका फहराने के लिए विख्यात ही क्यों न हो।
16. बच्चों को अतिथियों या नवागुंतकों तथा पराये लोगों के सामने दंड बिल्कुल न दे। शारीरिक दंड देना तो पाश्चिक वृत्ति है। इन कार्यों से बच्चे का 'स्व' आहत होता है। कठोरता को समझाने का रूप दीजिए। याद रखें कठोरता से बच्चे भीरु, विद्रोही, घृणा करने वाले तथा हीन भावना के शिकार होते हैं।
17. बच्चों को ऐसा कार्य कदापि न दें जिसके पूरा करने की उससे अपेक्षा न की जा सके। कठिन कार्यों के करने में उसे अपने साथ रखे ताकि व उस कार्य को करना सीख जाए।
18. थोपे गए कायदे कानून, नियम, उपनियम आदि शासन कहलाते हैं। अनुशासन स्वयं पर स्वयं का शासन है। बच्चों को स्वयं पर शासन करना सिखाएँ ।
19. कठोर दंड बच्चों को डीठ तो बनाता ही है साथ में बच्चे अवज्ञा करना भी शुरू कर देते हैं। क्रोध के वशीभूत होकर दिया गया दंड भयंकर विनाश का कारण होता है।
20. बच्चों को उपेक्षित न करें। देखने में यह आया है कि दूसरा बच्चों पैदा हो जाने पर पहले बच्चे के प्रति उपेक्षा हो जाती है। इससे बड़े बच्चे में छोटे बच्चे के प्रति ईर्ष्या तथा चिढ़ होने लगती है। इस चिढ़ का प्रदर्शन वह छोटे बच्चे के साथ नोच-खरोंच अथवा मारपीट के द्वारा करता है। यदि ऐसा करने पर उसे डाँट-फटकार या मारपीट मिल जाए तो उसका क्रोध अधिक प्रबल जाता है। असल में बच्चा पहले जैसे प्यार की अपेक्षा करता है और उसे पाने के लिए वह प्रतिगमन करता है। घुटनों के बल चलना, तोतला बोलना, अंगूठा चूसना आदि के द्वारा आपका ध्यान आपनी ओर आकृष्ट करता है। यदि आप फिर भी उसे पूरा प्यार नहीं दे पाते तो वह बिस्तर गीला करके आपके प्रति अपने क्रोध को प्रकट करता है। उपर्युक्त सुझावों को अपनाने से बच्चों में समायोजन सही दिशा में होगा ऐसी आशा ही नहीं बल्कि दृढ़ विश्वास है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

11. विद्यालय की समूची प्रणाली _____ होनी चाहिए।
12. विद्यालयों में _____ तथा _____ के प्रशिक्षण की व्यवस्था रहनी चाहिए।
13. अध्यापक को बच्चों को निषेधात्मक आदेश नहीं देने चाहिए। (सत्य/असत्य)

10.11 सारांश

अंत में हम यही कहना चाहेंगे की बच्चे के सुसमायोजन में यद्यपि अनेक बातों का योगदान है लेकिन यदि परिवारजन तथा विद्यालय इस दिशा में जागरूक रहे तो बच्चों का स्वाभाविक एवं उचित समाजीकरण किया जा सकता है। साथ ही बालकपन में यदि बच्चे में किसी प्रकार की कुसमायोजनता आ गई तो मिलकर उसमें सुधार कर सकते हैं। बच्चों के समायोजन के लिए अध्यापकों तथा परिवार को निरन्तर सजग रहना आवश्यक है। यदि समस्या अधिक बढ़ती है तो मनोचिकित्सक को दिखाना चाहिए। मनोचिकित्सक की सलाह बच्चों के लिए निश्चित रूप से लाभकारी रहेगी। कई व्यक्ति मानसिक चिकित्सकों से सलाह लेना नहीं चाहते। वे अलग तरह से सोचते हैं। जबकि मानसिक रोग भी वैसे ही रोग हैं जैसे कि खांसी, जुकाम, दस्त आदि रोग होते हैं जब हम इन रोगों की चिकित्सा करते हैं तो कुसमायोजन से ग्रस्त बालक की चिकित्सा कराना भी हमारा दायित्व है।

10.12 शब्दावली

1. समायोजन- अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन स्थापन के लिए अपने व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन करने को समायोजन कहते हैं।
2. उदात्तीकरण- मूल प्रवृत्तियों को सामाजिक स्वीकृति के रूप में व्यक्त करना उदात्तीकरण है।
3. दिवास्वप्न-कल्पना जगत में विचरण
4. आत्मीकरण-किसी महान् पुरुष, अभिनेता, राजनीतिज्ञ आदि के साथ एक हो जाने का अनुभव करना।
5. प्रक्षेपण-इस विधि में व्यक्ति अपने दोष का आरोपण दूसरे पर करता है।
6. क्षतिपूर्ति-एक क्षेत्र की कमी को उसी क्षेत्र में या किसी दूसरे क्षेत्र में पूरा करना।

10.13 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. गेट्स के अनुसार: “समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।”
2. कुण्ठा
3. सत्य
4. कुसमायोजित व्यक्ति के तीन लक्षण निम्न हैं-
 - i. ये परिस्थितियों के अनुकूल आचरण नहीं करते।
 - ii. ये पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने की सोचते हैं।
 - iii. इनकी बुद्धि स्थिर नहीं होती है, कभी ये कुछ सोचते हैं कभी कुछ सोचते हैं।
5. समायोजन के प्रमुख निर्धारकों के नाम निम्न हैं-
 - i. शारीरिक स्वास्थ्य
 - ii. कार्य की कुशलता
 - iii. मनोवैज्ञानिक शान्ति
 - iv. सामाजिक स्वीकृति
6. समायोजन की विभिन्न विधियों के नाम हैं-
 - i. रचनात्मक समायोजन
 - ii. स्थानापन्न समायोजन
 - iii. मानसिक विरचनाएँ
7. रक्षा युक्तियों की कोई दो विशेषताएँ निम्न हैं-
 - i. ये वास्तविकता को विकृत करती है।
 - ii. यह चेतन और अचेतन किसी भी स्तर पर हो सकती है।
8. रक्षा युक्तियों के प्रकारों के नाम निम्न हैं-

उदात्तीकरण, पृथक्करण या प्रत्याहार, आत्मीकरण, निर्भरता, औचित्य-स्थापन, दमन, प्रक्षेपण, क्षतिपूर्ति
9. अपने तनाव को कम करने के लिए वैसा ही व्यवहार करना, जैसा कोई पहले कभी करता था प्रतिगमन कहलाता है।
10. दिवास्वप्न
11. लोकतांत्रिक
12. स्काउटिंग तथा गाइडिंग
13. सत्य

10.14 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भोपाल सिंह 2010: जनसंख्या शिक्षा (बच्चों का समाजीकरण), मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस लायल बुक डिपो।
2. पाठक, पी.डी.(2002) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा-विनोद पुस्तक मन्दिर,
3. शुक्ल , ओ.पी. (2002) शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ, भारत प्रकाशन,
4. Murphy, and Murphy (1937) : Experimental social Psychology, New york Harper &Harper.
5. चौबे तथा चौबे (2007): शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल आधार, मेरठ, इण्टरनेशनलपब्लिशिंग हाउस,

10.15 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विद्यालय के समय में वृद्धि करने से क्या लाभ है?
2. बच्चों को खेलकूद में हिस्सा लेने से क्या लाभ हैं?
3. निषेधात्मक आदेश क्यों नहीं दिए जाने चाहिए?
4. स्काउट गाइडिंग कार्यक्रम से क्या लाभ होते हैं।
5. अध्यापक अभिभावक सम्बन्ध अच्छे होने से बच्चों को क्या लाभ होता है?
6. खेल में बच्चों को जिताना क्यों आवश्यक है?
7. शारीरिक दण्ड देने की हानियां लिखिए।
8. उन दुष्प्रभावों को लिखिए जो कि बच्चों में दण्ड देने के बाद पनपते हैं।
9. कुसमायोजित बच्चों के बारे में मनोचिकित्सक को दिखाना क्यों आवश्यक है?
10. असफलताएँ व्यक्ति के व्यवहार में कौन-कौन से परिवर्तन ला सकती है? सूची का निर्माण करें।